ऋग्वेद

यजुर्वेद

मानव संस्कार ग्रन्थमाला – चौदहवाँ पुष्प

वैदिक भजन का गायन व मनन

- हमारा ईश्वर भक्ति में मन लगाता है।
- हमें ईश्वर की सत्ता और उसकी अनुभूति कराता है।
- हमारे अन्दर सद्गुणों का विकास करता है।
- हमारा आत्म विश्वास जागृत करता है।
- हमारी आत्मा को आनन्दित करता है।
- हमें शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रूप से स्वस्थ रखता है।

भजनों द्वारा आध्यात्मिक चिंतन

संकलनकर्ता

मदन अनेजा

मो. 9873029000

सामवेद

अथर्ववेद

A word about

MANAV SANSKAR FOUNDATION

4A, 3rd floor, Street No. 12, New Gobind Pura, Delhi-110051

Dear Readers,

"Manav Sanskar Foundation" is a public charitable trust. It was set up on 4th December 2012 and registered with the Government of National Capital Territory of Delhi on 10th December 2012, wholly for charitable purposes. Its main objects are as under :-

(i) to work for educational and spiritual upliftment of the common man ;

(ii) to publish books and other material on educational, social and spiritual subjects including Vedas & Upanishads ;

(iii) to publish, run, support and grant financial assistance to the Gurukuls and children of under priviledged persons of society;

(iv) To establish and maintain old age homes;

(v) To open and establish charitable dispensaries and;

(vi) To open free legal aid and advice centres for the poor and the helpless people, particularly women. The Trust, in addition to the present book has published, so far several pamphlets, leaflets and books and distributed them free of cost for spiritual upliftment of the general public irrespective of caste, sex, creed or religion besides providing free legal advice to the needy.

(vii) The Trust is also distributing its books free of cost throughout India on payment of postel and packing charges only. However, no postal charge is taken from Arya Samaj Mandirs/Gurukuls/ Educational Institutions.

The trust shall appreciate your participation in the donations out of your hard-earned and sacred earnings for the social and noble cause. The Trust accepts only cheque/draft in the Foundation Account as under :-

Current Acccount No. : 0646002104049820

Punjab National Bank (RTGS/NEFT IFS Code :- PUNB0064600)

F-2/3, Krishna Nagar, Delhi-110051

Paytm No. 9873029000

Our website : www.manavsanskar.com

Our e-mail : manavsanskar.mla@gmail.com

(M.L. Aneja)
President
Manav Sanskar Foundation

The Author is a Joint Registrar (Retired), Supreme Court of India and Former Advisor (Law), National Human Rights Commission, New Delhi

ओ३म्

मानव संस्कार ग्रन्थमाला - चौदहवाँ पुष्प

वैदिक भजन का गायन व मनन

- ❖ हमारा ईश्वर भक्ति में मन लगाता है।
- ❖ हमें ईश्वर की सत्ता और उसकी अनुभूति कराता है।
- ❖ हमारे अन्दर सद्गुणों का विकास करता है।
- ❖ हमारा आत्म विश्वास जागृत करता है।
- ❖ हमारी आत्मा को आनन्दित करता है।
- ❖ हमें शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रूप से स्वस्थ रखता है।

भजनों द्वारा आध्यात्मिक चिंतन

संकलनकर्ता

मदन अनेजा

मो. 9873029000

पुस्तक मिलने का पता :-

1. मदन लाल अनेजा

कुटिया नं0 -179, मुख्य शाखा,
आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर, हरिद्वार
मो0- 09873029000

2. विक्रान्त अनेजा

सी-79, तक्षशिला अपार्टमेन्ट,
प्लाट नं0-57, आई0पी0
एक्सटेंशन, दिल्ली-110092

3. विशाल अनेजा

3 ए (तीसरी मंजिल) नया गोविन्द पुरा,
राम मन्दिर गली, दिल्ली-110051,

© सर्वाधिकार- मदन लाल अनेजा

All rights reserved. No part of this publication be reproduced, stored in a retrievel system, translated or transmitted in any form or by any means,electronic, mechanical, photocopying, recordng or otherwiese without the prior permission of the writer.

प्रथम संस्करण : नवम्बर - 2024

प्रकाशक :

मानव संस्कार फाउन्डेशन

दिल्ली-110051

प्रेरणा स्त्रोत

(15.06.1955– 27.04.2023)

श्रीमती स्वराज अनेजा

पत्नी

श्री मदन अनेजा

भूमिका

प्रभु ने मानव मात्र के कल्याण हेतु यह संसार बनाया है और संसार को समझने हेतु परम पावन वेद ज्ञान दिया है। वेद-ज्ञान द्वारा मनुष्य विभिन्न विषयों में पारंगत होकर ऐश्वर्यवान होता है। जीवन में आध्यात्मिक उन्नति के साथ-साथ कभी सुख, कभी दु:ख, कभी पाप-कभी पुण्य, कभी खुशी-कभी गम, अनेक उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। इन अवसरों पर विद्वान व ज्ञानी लोग अपने-अपने तरीके से, समाज में, प्रेरणाप्रद शिक्षा देते रहते हैं। यह शिक्षा यदि काव्यमय हो तो न केवल सुगमता से समझ आती है बल्कि अधिक रुचिकर व प्रभावशाली होती है।

प्रबुद्ध जनों को भजन की यह पुस्तक समर्पित करते हुए मुझे अति हर्ष का अनुभव हो रहा है। पुस्तक में प्रकाशित सामग्री में लेखक का अपना कुछ भी न के बराबर है, जो भी सामग्री प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है, वह लेखक के वानप्रस्थी जीवन में, दीर्घकाल के स्वाध्याय के दौरान, संकलित की गई सामग्री है।

भजन कीर्तन से चित्त प्रसन्न होता है। भजन गायन से स्वयं को व सुनने वाले को आनन्द मिलता है। मन की चंचलता दूर होती है, मनोबल बढ़ता है, स्वास्थ्य अच्छा रहता है। आध्यात्मिकता के भाव सुदृढ़ होते हैं। ईश्वर में आस्था दृढ़ से दृढ़तर होती जाती है। ईश्वर भक्ति व ध्यान में मन लगता है। शुभ संस्कारों का निर्माण होता है। अन्ध विश्वास नष्ट होता है और सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने में सहायता मिलती है।

भक्त सूरदास, तुलसीदास, तानसेन, बैजूबावरा, कबीर दास, मीराबाई, महाप्रभु चैतन्य आदि-सभी भक्ति गीतों द्वारा ईश्वर की भक्ति करते थे, सर्वशक्तिमान व सर्वव्यापक ईश्वर का स्मरण करते थे, गुणगान करते थे।

भजन गायन शक्ति है, सम्पदा है एवं प्रभुता है। भजन कीर्तन

व संगीत के बिना जीवन अपूर्ण है, अधूरा है। जब आप कष्ट व निराशा में हों, तब एक सार्थक (उद्‌देश्य वाला) भजन गुनगुनाएं, आपकी आत्मा में आनन्द का संचार होगा और ईश्वर आपको कष्ट पर विजय पाने की प्रेरणा देगा।

प्रात: व सायं, विशेषकर सन्ध्या व ध्यान के उपरान्त, प्रभु भक्ति सम्बन्धित भजनों की ध्वनियाँ, निसन्देह ईश्वरीय आनन्द की अनुभूति कराते हैं। यह मेरा व्यक्तिगत अनुभव है।

प्रस्तुत पुस्तक में प्राणपोषक, उत्साहवर्धक व भक्ति भाव से भरपूर 419 गीतों/भजनों को विषयानुसार चयनित कर उन्हें 54 विषयों में विभाजित किया गया है ताकि साधक अपनी मनोवृत्ति के अनुसार, भजन अथवा गीत के विषय का उचित चयन करके, अधिकतम लाभ ले सकें। इसके अतिरिक्त पुस्तक में विभिन्न धार्मिक, सामाजिक व राष्ट्रीय अवसरों से सम्बन्धित भजनों व गीतों को भी सम्मिलित किया गया है ताकि किसी भी विशेष अवसर पर सुगमता से उन्हें प्रस्तुत किया जा सके।

पुस्तक में संकलित सभी भजन व गीत आध्यात्मिक ज्ञान, शक्ति, भक्ति व वैराग्य से परिपूर्ण हैं।

पुस्तक में कविवर प्रकाश जी, लक्ष्मण सिंह जी बेमोल, नन्दलाल जी, सत्यपाल जी पथिक एवं नत्था सिंह जी निर्दोष आदि के भजनों को प्राथमिकता देते हुए कई जाने माने एवं ज्ञात-अज्ञात कवियों के भजन व गीत भी सम्मिलित किये गये हैं।

इन भजनों व गीतों को आप स्वयं गाएं तथा दूसरों को भी सुनाकर ईश्वर भक्ति का आनन्द उठाएं।

आशा करता हूँ कि यह दिव्य संकलन आपके जीवन में भक्ति, उमंग व तरंग लाकर जीवन को संजीवनी देने का कार्य करेगा।

मदन अनेजा

विषयानुक्रमणिका

भाग - 1

क्र.सं.	भजन/गीत की विषय सूची	पृष्ठ संख्या
1.	ओ३म् महिमा	5 - 23
2.	ईश महिमा	24 - 45
3.	प्रार्थना	47 - 67
4.	आस्था	68 - 84
5.	भक्ति	85 - 133
6.	सत्संग	134 - 146
7.	कृतज्ञता	147 - 165
8.	वैराग्य	166 - 175
9.	शिक्षा	176 - 205
10.	चेतावनी	206 - 221
11.	अध्यात्म	222 - 241
12.	वैराग्य	242 - 247
13.	आत्मज्ञान	248
14.	आत्म निरीक्षण	249 - 251
15.	ध्यान	252 - 257
16.	मुक्ति	250 - 260
17.	जीवात्मा	261

भाग - 2

क्र.सं.	भजन/गीत की विषय सूची	पृष्ठ संख्या
18.	सृष्टि रचना	262 - 269
19.	वेद	270 - 276
20.	वैदिक धर्म	277 - 281
21.	कर्म	282 - 301
22.	यज्ञ	302 - 307
23.	यज्ञोपवीत	308
24.	परोपकार	309
25.	दान	321

भाग-3

26.	सत्यार्थ प्रकाश	323 - 329
27.	अविद्या	330 - 332
28.	मूर्ति पूजा	333 - 339
29.	सुख-दु:ख	340 - 347
30.	जन्म-मरण	348 - 349
31.	मृत्यु	350 - 357

भाग - 4

क्र.सं.	भजन/गीत की विषय सूची	पृष्ठ संख्या
32.	महान पुरुष - मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम	358 - 361
33.	महान पुरुष - योगीराज कृष्ण	362 - 363
34.	ऋषि दयानन्द	364 - 394
35.	गुरु विरजानन्द	395 - 396
36.	श्रद्धानन्द	397 - 403
37.	आर्य समाज	404 - 409
38.	आर्य वीर	410 - 416

भाग-5

39.	देश भक्ति	417 - 427
40.	आदर्श गृहस्थ	428 - 429
41.	सुखी परिवार	430
42.	माता-पिता	432 - 436
43.	स्त्री	437 - 438
44.	गौ सेवा	439 - 440
45.	मांसाहार	441 - 444
46.	नव वर्ष	445
47.	मकर सक्रान्ति	446
48.	मानवता	447 - 449
49.	न्याय व्यवस्था	450
50.	बधाई गीत - ग्रह प्रवेश	451
51.	बधाई गीत - जन्म-दिवस	452 - 453
52.	बधाई - शुभ विवाह वर्षगांठ	454
53.	बधाई - याचक परिवार	455
54.	बधाई - मुण्डन	456
55.	विविध भजन/गीत	457-483

।। ओ३म्।।

गायत्री-मन्त्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यम्।
भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।
यजु0 36/3।।

भावार्थ - हे प्राणदाता, दु:खहर्त्ता, सुख-स्वरूप परमात्मन्! आप सकल जगत् के उत्पादक और ग्रहण करने योग्य हैं। हम आपके दिव्य तेज को धारण करते हैं। आप हमारी बुद्धियों को सन्मार्ग में प्रेरित कीजिए।

गायत्री गीत

तूने हमें उत्पन्न किया, पालन कर रहा है तू।
तुझ से ही पाते प्राण हम, दु:खियों के कष्ट हरता है तू।।

तेरा महान् तेज है, छाया हुआ सभी स्थान।
सृष्टि की वस्तु-वस्तु में, तू हो रहा है विद्यमान।।

तेरा ही धरते ध्यान हम, मांगते तेरी दया।
ईश्वर हमारी बुद्धि को, श्रेष्ठ मार्ग पर चला।।
दाता हमारी बुद्धि को, वेद मार्ग पर चला।।

ओ३म् महिमा

क्र.सं.	ओ३म् भजन/गीत के बोल	पृ. सं.
1.	ओ३म् है जीवन हमारा	6
2.	ओ३म् नाम के हीरे मोती मैं बिखराऊँ गली-गली	7
3.	सृष्टि से पहले अमर ओ३म् नाम था	8
4.	जीवन की घड़ियाँ वृथा न खो	
5.	ओ३म् प्यारा, ओ३म् प्यारा, ओ३म्-2 कहिए	10
6.	ओ३म् का सिमरन किया करो	11
7.	ओ३म् का सिमरन कर ले, कर दे भव से पार तुझे	12
8.	ओ३म् है परम पिता का नाम	13
9.	ओ३म् है जग का नियन्ता	14
10.	जो तू चाहे पार उतरना, ओ३म् नाम नित गाया कर	15
11.	जाप न किया तूने ओ३म् नाम का	16
12.	गाया कर नित्य गाया कर, तू गीत प्रभु के गाया कर	17
13.	भक्तिभाव लिये आठों याम, भज ले प्यारे ओ३म् का नाम	18
14.	ओ३म् की छाया तले, जीवन की जोत जले	19
15.	ओ३म् नाम जप ले मनवा, ओ३म् नाम जप ले	20
16.	माता-पिता, भाई-बन्धु, सखा वह हमारा है	21
17.	खुशियों का ग्राम है, सच्चा सुख धाम है	22
18.	मेरा सखा तो है वही जिसका कि ओ३म् नाम है	23

ओ३म् महिमा

ओ३म् है जीवन हमारा, ओ३म् प्राणाधार है।
ओ३म् है कर्ता विधाता, ओ३म् पालनहार है।।

ओ३म् है दु:ख का विनाशक, ओ३म् सर्वानन्द है।
ओ३म् है बल तेजधारी, ओ३म् करुणाकन्द है।।

ओ३म् सबका पूज्य है, हम ओ३म् का पूजन करें।
ओ३म् ही के ध्यान से, हम शुद्ध अपना मन करें।।

ओ३म् के गुरुमंत्र जपने से, रहेगा शुद्ध मन।
बुद्धि दिन-प्रतिदिन बढ़ेगी, धर्म में होगी लगन।।

ओ३म् के जप से हमारा, ज्ञान बढ़ता जाएगा।
अन्त में यह ओ३म् हमको मुक्ति तक पहुँचाएगा।।

ओ३म् महिमा

ओ३म् नाम के हीरे-मोती, मैं बिखराऊँ गली-गली।
ले लो रे कोई ओ३म् का प्यारा, आवाज लगाऊँ गली-गली।।

माया के दीवानों सुन लो, एक दिन ऐसा आयेगा।
धन-दौलत और रूप खजाना, धरा यहीं रह जायेगा।।
सुन्दर काया माटी होगी, चर्चा होगी गली-गली।।1।।
ले लो रे कोई ओ३म् का प्यारा ....

मित्र प्यारे सगे-सम्बन्धी, इक दिन तुझे भुलायेंगे।
कल जो कहते अपना-अपना आग में तुझे जलायेंगे।।
दो दिन का यह चमन खिला है, फिर मुरझाये कली-कली।।2।।
ले लो रे कोई ओ३म् का प्यारा ....

क्यों करता है मेरी-मेरी, तज दे इस अभिमान को।
छोड़ जगत् के झूठे धंधे, जप ले प्रभु के नाम को।।
गया समय फिर हाथ न आये, तब पछताये घड़ी-घड़ी।।3।
ले लो रे कोई ओ३म् का प्यारा ....

जिसको अपना कह करके, मूरख तू इतराता है।
छोड़ के बन्दे साथ विपद में, कभी न कोई जाता है।।
दो दिन का यह रैन बसेरा, आखिर होगी चला-चली।।4।।
ले लो रे कोई ओ३म् का प्यारा ....

ओ३म् महिमा

सृष्टि से पहले अमर ओ३म् नाम था, अमर ओ३म् नाम था,
आज भी है और कल भी रहेगा।
सूरज की किरणों में उसी का तेज समाया है।
और चाँद सितारों में उसी की शीतल छाया है।
पृथ्वी की गोद में उसी का दुलार था, उसी का दुलार था,
आज भी है और कल भी रहेगा।
सृष्टि से पहले ....
भवरों की तानों में मधुर संगीत उसी का है।
फूलों की यौवन में रंगीला गीत उसी का है।
आकाश जल थल में वही कलाकार था, वही कलाकार था,
आज भी है और कल भी रहेगा।
सृष्टि से पहले ....
सुख दु:ख का लम्बा लेखा विधाता ने रचाया है।
ऐ बन्दे! तेरे कर्मों का नक्शा सामने आया है।
तेरे पिछले कर्मों का उसी पे हिसाब था, उसी पे हिसाब था,
आज भी है और कल भी रहेगा।
सृष्टि से पहले ....
न कर अभिमान एक दिन जान निकल जायेगी।
ये सजी सजाई काया मिट्टी में मिल जायेगी।
मुक्ति का एक रास्ता प्रभु का ही ध्यान था प्रभु का ही ध्यान था,
आज भी है और कल भी रहेगा।
सृष्टि से पहले अमर ओ३म् नाम था, अमर ओ३म् नाम था,
आज भी है और कल भी रहेगा।

ओ३म् महिमा

जीवन की घड़ियां वृथा न खो; ओम् जपो ओम् जपो।
चादर न लंबी तान के सो; ओम् जपो ओम् जपो।।1।।

ओम् ही सुख का सार है; जीवन है जीवन आधार है;
प्रीती न इसकी मन से तजो; ओम् जपो ओम् जपो।।2।।

मन की गति सम्भालिए, ईश्वर की ओर डालिये।
धोना जो चाहो जीवन को; ओम् जपो ओम् जपो।।3।।

चोला मिला है कर्म का, करने को सौदा धर्म का;
इसके सिवाय मार्ग न कोय, ओम् जपो ओम् जपो।।4।।

दुनिया में आकर क्या किया, कभी न प्रभु का नाम लिया।
अज्ञान की निद्रा बन्दे न सो; ओम् जपो ओम् जपो।।5।।

साथी बना ले ओम् को; मन में बिठा ले ओम् को
'देश' रहा क्यों भाग्य को रो; ओम् जपो ओम् जपो।।6।।

ओ३म् महिमा

ओ३म् प्यारा, ओ३म् प्यारा, ओ३म् ओ३म् कहिए।
जाहि विधि राखे प्रभु, ताहि विधि रहिए।।

मुख में हो ओ३म् नाम, जग सेवा हाथ में।
तू अकेला नहीं बन्दे, प्रभु तेरे साथ में।
विधि का विधान जान, लाभ-हानि सहिए।।
जाहि विधि राखे प्रभु ....

किया अभिमान तो, फिर मान नहीं पाएगा।
होगा बन्दे वही जो, प्रभु जी को भाएगा।
फल आशा त्यागे, शुभ काम करते रहिए।।
जाहि विधि राखे प्रभु ....

जिन्दगी की डोर सौंप, हाथ दीनानाथ के।
महलों में राखे चाहे, झोंपड़ी में वास दे।
धन्यवाद निर्विवाद, ओ३म्, ओ३म् कहिए।।
जाहि विधि राखे प्रभु ....

आशा एक प्रभु जी से, दूसरी आशा छोड़ दे।
नाता एक प्रभु जी से, दूसरा नाता तोड़ दे।
सत्संग ओ३म् रंग, अंग-अंग रंगिए।।
जाहि विधि राखे प्रभु ....

ओ३म् महिमा

ओ३म् का सुमिरन किया करो, प्रभु के सहारे जिया करो।
जो दुनियाँ का मालिक है, नाम उसी का लिया करो।।

सुर दुर्लभ मानव तन तूने, बड़े भाग्य से पाया है।
विषयों में फँस करके बंदे, हीरा जनम गंवाया है।
दुष्ट संग न किया करो, सज्जनों से गुण लिया करो।।
जो दुनियाँ का मालिक है ....

पता नहीं कब रुक जाए, चलते चलते श्वासा।
एक पल में सब खतम हो जाए, जग का सभी तमाशा।
सुबह-शाम जप किया करो, याद प्रभु को किया करो।।
जो दुनियाँ का मालिक है ....

हर प्राणी से प्यार करो, सब में वही समाया है।
मिलकर रहना सब हैं अपने, कोई नहीं पराया है।
द्वेष भाव ना किया करो, दु:ख ना किसी को दिया करो।
जो दुनियाँ का मालिक है ....

सच्चा सुख है प्रभु भक्ति में, बात ना समझो झूठी।
वही अमर पद पाते हैं जो, पीते नाम की बूटी।
प्रभु नाम रस पिया करो, राघव भूल न किया करो।।
जो दुनियाँ का मालिक है ....

ओ३म् महिमा

ओ३म् नाम का सुमिरन कर ले, कर दे भव से पार तुझे।
कह लिया कितनी बार तुझे।। कह लिया कितनी बार तुझे।।
जिस नगरी में वास तेरा, ये ठग चोरों की बस्ती है।
लूट जाते हैं बड़े बड़े यहाँ, फिर तेरी क्या हस्ती है।
जिसको अपना समझ रहा ये, धोखा दे संसार तुझे।
कह लिया कितनी बार तुझे। कह लिया कितनी बार तुझे।।
ओ३म् नाम का सुमिरन कर ले, कर दे भव से पार तुझे।

हाथ पकड़ कर गली गली जो, मित्र तुम्हारे डोल रहे।
कोयल जैसी मीठी वाणी, कदम कदम पर बोल रहे।
बनी के साथी बिगड़ी में ना, गले लगाएं यार तुझे।।
कह लिया कितनी बार तुझे। कह लिया कितनी बार तुझे।।
ओ३म् नाम का सुमिरन कर ले, कर दे भव से पार तुझे।

धन दौलत का बना दीवाना, धर्म कर्म सब भूल गया।
सन्ध्या हवन और दान दिया ना, नींद नशे में टूल गया।
ईश्वर को भी नहीं मानता, कैसा चढ़ा खुमार तुझे।।
कह लिया कितनी बार तुझे। कह लिया कितनी बार तुझे।।
ओ३म् नाम का सुमिरन कर ले, कर दे भव से पार तुझे।

तुझसे पहले गए बहुत से, कितना धन ले साथ गए।
'लक्ष्मणसिंह बेमोल' कहे वो, सारे खाली हाथ गए।
तू भी खाली हाथ चलेगा, देखेंगे नर नार तुझे।।
कह लिया कितनी बार तुझे। कह लिया कितनी बार तुझे।।
ओ३म् नाम का सुमिरन कर ले, कर दे भव से पार तुझे।

ओ३म् महिमा

ओ३म् है परमपिता का नाम,
भज ले प्यारे ओ३म् का नाम।
चाहे सुबह हो चाहे शाम,
भज ले प्यारे ओ३म् का नाम।।

ओ३म् का नाम है अति पावन,
ओ३म् का मंत्र है मन भावन।
ओ३म् का सुमिरन है अनमोल,
ऋषि-मुनियों ने देखा तोल।।
ओ३म् है परम पिता का नाम ....

ओ३म् है वेदों का वरदान,
ओ३म् का नाद है ब्रह्म समान।
ओ३म् ही जीवन ओ३म् ही प्राण,
ओ३म् को सुमिरो आठों याम।।
ओ३म् है परम पिता का नाम ....

ओ३म् कहो या कहो ओंकार,
ओ३म् की महिमा अपरम्पार।
ओ३म् कहो तुम बारम्बार,
ओ३म् ही करते भव से पार।।
ओ३म् है परम पिता का नाम ....

ओ३म् महिमा

ओ३म् है जग का नियन्ता, ओ३म् ही करतार है।
ओ३म् राजा न्यायकारी, ओ३म् भव भरतार है।।1।।
ओ३म् है जग का नियन्ता ....

ओ३म् गुरु सर्वज्ञ माता, ओ३म् वेदागार है।
ओ३म् जनिता शक्ति सागर, ओ३म् प्रेमागार है।।2।।
ओ३म् है जग का नियन्ता ....

ओ३म् सर्वेश्वर अभय है, ओ३म् सर्वाधार है।
ओ३म् अजरामर अनन्ता, ओ३म् जीवन सार है।।3।।
ओ३म् है जग का नियन्ता ....

ओ३म् प्रियतम नित्य सत्-चित ओ३म् सुख भंडार है।
ओ३म् अनुपम निर्विकारी, ओ३म् खल संहार है।।4।।
ओ३म् है जग का नियन्ता ....

ओ३म् आकृति रहित विभु है, ओ३म् अपरम्पार है।
ओ३म् करुणा कन्द शिवतम, ओ३म् दुःख संहार है।।5।।
ओ३म् है जग का नियन्ता ....

ओ३म् महिमा

जो तू चाहे पार उतरना, ओ३म् नाम नित गाया कर।
चित चंचल और अपने मन को, ईश्वर भजन सिखाया कर।।
जो तू चाहे पार उतरना ....

अन्त:करण पवित्र होगा, विद्या और तपस्या से।
सभी कामना पूरी होगी, उस संग प्रीत लगाया कर।।
जो तू चाहे पार उतरना ....

ब्रह्म मुहूर्त में उठ करके, भिक्षा माँग भंडारी से।
काया शुद्ध बनेगी तेरी, प्रात: समय उठ नहाया कर।।
जो तू चाहे पार उतरना ....

न जा मथुरा न जा काशी, मक्के और मदीने में।
मन मंदिर में रहता प्रभु है, ज्ञान की ज्योति जलाया कर।।
जो तू चाहे पार उतरना ....

विषय भोग में खो दी आयु, मूरखराज जमाने में।
सन्ध्या हवन, गायत्री पढ़कर, वेद मंत्र कुछ गाया कर।।
जो तू चाहे पार उतरना ....

ओ३म् महिमा

जाप ना किया है तूने ओ३म् नाम का।
करुणानिधान प्यारे सुख धाम का।। टेक।।

जिन्दगी में कोई शुभ करम न किया।
धर्म ना किया, दूर भरम ना किया।।
बोल तेरा तन फिर किस काम का।।1।।
जाप ना किया है तूने ....

दिन-रात जिसको सजाने में लगा।
अपने ही मन को रिझाने में लगा।।
कुछ ना बनेगा तेरे गोरे चाम का।।2।।
जाप ना किया है तूने ....

उल्टे ही कर्म तू कमाये उमर भर।
पेड़ ही बबूल के लगाये उमर भर।।
कहाँ से मिलेगा तुझे फल आम का।।3।।
जाप ना किया है तूने ....

खुशी का पैगाम तो प्रभात लाई है।
और भी बेमोल कुछ साथ लाई है।।
जाने क्या संदेशा लाये वक्त शाम का।।4।।
जाप ना किया है तूने ....

ओ३म् महिमा

गाया कर नित्य गाया कर, तू गीत प्रभु के गाया कर।
प्रातः सायं प्रेमपूर्वक ओ३म् ही ओ३म् ध्याया कर।

गीतों में भर प्यार हृदय के वाणी से बिखराता चल,
जीवन की इस रागिनी से तू गीतों को गूँजाता चल,
कोई सुने न सुने तुम्हारी अपने को ही सुनाया कर।
गाया कर नित गाया कर तू ....

गीतों की पावन धारा में अन्तर-मल को मिटा के देख,
राग, द्वेष, छल, कपट से प्यारे अपना आप बचा के देख,
गीतों से फिर प्रेम सुधा का सबको पान कराया कर।
गाया कर नित गाया कर तू ....

एकाग्र करके मन अपना निज को मस्त बना लेना,
गीतों के आनंद में ही तू मन की जोत जगा लेना,
औरों की चिन्ता न कर तू अपने को समझाया कर।
गाया कर नित गाया कर तू ....

ओ३म् महिमा

भक्तिभाव लिये आठों याम, भजले प्यारे ओ३म् का नाम।।
ओ३म् नाम भले पल-पल में, मत फँस माया के दल-दल में।
जाने किस दिन की हलचल में, कब आ जाये दु:खप्रद शाम।।
भज ले प्यारे ओ३म् का नाम 2
ओ३म् नाम का पकड़ सहारा, विषयों से पाले छुटकारा।
भटक रहा क्यों मारा-मारा, नदी सरोवर बन गिरि ग्राम।।
भज ले प्यारे ओ३म् का नाम 2
ओ३म् पितु है ओ३म् है माता, ओ३म् मित्र है, ओ३म् है भ्राता।
जोड़ उसी से अपना नाता, केवल वो ही मुक्ति का धाम।।
भज ले प्यारे ओ३म् का नाम 2
ओ३म् सभी का रक्षक स्वामी, घट-घटवासी अन्तर्यामी।
सब नामों में है वह नामी, कहे ऋषि-मुनि अरु शास्त्र तमाम।।
भज ले प्यारे ओ३म् का नाम 2
ओ३म् नियन्ता ओ३म् विधाता, ओ३म् विश्व का है निर्माता।
ओ३म् अचल न आता-जाता, कर बिना कर्म करे निष्काम।।
भज ले प्यारे ओ३म् का नाम 2
उसने अद्भुत दृश्य दिखाये, सूर्य-चन्द्र से दीप जलाये।
यश 'कमलेश' उसी का गाये, लीला उसी की ललित ललाम।।
भज ले प्यारे ओ३म् का नाम 2
अवसर का अब लाभ उठाले, जीवन अपना सफल बना ले।
उससे पूरी प्रीति लगाले, उसके बिन कहीं नहीं विश्राम।।
भज ले प्यारे ओ३म् का नाम 2

ओ३म् महिमा

ओ३म् की छाया तले, जीवन की जोत जले
महिमा से उसकी सुबह आए, महिमा से शाम ढले।।
ओ३म् का नाम लेके, ओ३म् का ध्यान करके।
जीवन ये सरस चले।।
ओ३म् की छाया तले ....
न कोई अपना, न है पराया।
सबको लगाते गले।।
ओ३म् की छाया तले ....
न कोई ऊँचा, न कोई नीचा।
सब में ही ब्रह्म रमे।।
ओ३म् की छाया तले ....
हृदय में प्रेम डोले, मुख से मधुर बोले।
सत्य वचन तू कहे।।
ओ३म् की छाया तले ....
इस जीवन का क्या है भरोसा।
पल में पंछी उड़े।।
ओ३म् की छाया तले ....
न कोई बन्धु, न कोई बांधव।
स्वार्थ में सब हैं खड़े।।
ओ३म् की छाया तले ....

ओ३म् महिमा

ओ३म् नाम जप ले मनवा ओ३म् नाम ध्याले,
पीले ओ३म् अमृत प्याला, रत्नधन कमाले।।
ओ३म् नाम जप ले मनवा.........
ओ३म् नाम से प्रकाशित, संसार सारा,
मन बुद्धि चित्त आत्मा, ने ज्ञान को पसारा,
ओ३म् नाम गाके वर्षा, सुख की बरसाले।।
ओ३म् नाम जप ले मनवा.........
लगे रंग फीके सारे, ओ३म् रंग पाके,
मिले हर्ष निज आत्मा, को ओ३म् में समा के,
पाले सद्गुणों की शक्ति, अवगुण हटाले।।
ओ३म् नाम जप ले मनवा.........
करे ओ३म् जीवन सरल, नम्रता बढ़ाये
पल-पल, निशदिन, मद को हटाये,
ओ३म् के स्मरण से साधक, बन के मुक्ति पाले।।
ओ३म् नाम जप ले मनवा.........
ओ३म् सुधा की वेदों में, बहे अमृत धारा,
योगी ऋषि-ज्ञानियों का, तारन हारा,
ओ३मामृत के प्यासे मनवा, प्यास बुझा ले।।
ओ३म् नाम जप ले मनवा.........
ओ३म् की शरण में आजा, ओ३म् नाम प्यारा,
ओ३म् नाम दु:ख विसारे, सुख का सहारा,
ओ३म् ध्यान करके जीवन, यज्ञमय बना ले।।
ओ३म् नाम जप ले मनवा.........

ओ३म् महिमा

माता-पिता, भाई-बन्धु, सखा वह हमारा है।
ओ३म् नाम प्यारा है जी, ओ३म् नाम प्यारा है।।

निराकार है वह, जर्रे-जर्रे में समाया है।
महिमा है अपार अन्त, किसी ने ना पाया है।
पत्ता-पत्ता, डाली-डाली, करे यह इशारा है।।
ओ३म् नाम प्यारा है जी ....

पृथ्वी, पहाड़, नदी, नाले क्या बनाए हैं।
रंगदार फूल, बिना हाथों के खिलाए हैं।
लेता है प्रकाश उससे, सूर्य-चन्द्र-तारा।।
ओ३म् नाम प्यारा है जी ....

ऋषि, मुनि, योगी सारे, उसे ही ध्याते हैं।
गीत प्रभु भक्ति के, झूम-झूम गाते हैं।
तोता, मैना, कोयल ने, भी उसी को पुकारा है।
ओ३म् नाम प्यारा है जी ....

वेदानुसार जीवन, अपना जो बनाते हैं।
आत्मा को शुद्ध कर, मुक्ति को पाते हैं।
'नन्दलाल' उसी की जय-जय, करे जग सारा है।।
ओ३म् नाम प्यारा है जी ....

ओ३म् महिमा

खुशियों का ग्राम है, सच्चा सुखधाम है।
दुनियाँ में सबसे प्यारा, ईश्वर का नाम है।।
वेदों ने गाया है, ऋषियों ने ध्याया है।
सुमिरन परमात्मा का, हर दिल को भाया है।
नर तन का चोला पाया, सुन्दर ईनाम है।।
दुनियाँ में सबसे प्यारा ....
प्राणों का प्राण है, वह शक्तिमान है।
संकट की घड़ियों में भी, रक्षक भगवान है।
उसकी भक्ति में डूबी, हर सुबहो-शाम है।।
दुनियाँ में सबसे प्यारा ....
बादल घनघोर है, मनवा कमजोर है।
रस्ता भटकाने वाले, लोगों का शोर है।
ईश्वर का चिन्तन मन को, देता आराम है।।
दुनियाँ में सबसे प्यारा ....
सच्चा दरबार है, सच्ची सरकार है।
सुख-दु:ख फल पाने वाला, सारा संसार है।
अच्छे व्यवहार का ही, अच्छा परिणाम है।।
दुनियाँ में सबसे प्यारा ....
पहले तुम जान लो, उसको पहचान लो।
फिर उसकी भक्ति करना, जीवन में ठान लो।
ऋषियों-मुनियों का सब को, यह ही पैगाम है।।
दुनियाँ में सबसे प्यारा ....
निकले जो राह में, मंजिल की चाह में।
गड़बड़ न होने पाये, जिनके उत्साह में।
'पथिक' ना मेहनत उनकी, होती नाकाम है।।
दुनियाँ में सबसे प्यारा ....

ओ३म् महिमा

मेरा सखा तो है वही, जिसका कि ओ३म् नाम है।
उसके बिना न दूसरा, ढूँढा जहाँ तमाम है।।
मेरा सखा तो है वही ....

जाता नहीं हूँ ढूँढ़ने, काशी व काबा में कहीं।
दिल की सफाई से उसे, मिलने का मेरा काम है।।
मेरा सखा तो है वही ....

कहते सभी महात्मा, कर लो पवित्र आत्मा।
जिसको हो शौक खोजिए, अन्दर ही स्वर्गधाम है।।
मेरा सखा तो है वही ....

वश में हो जिसने मन किया, उसने आनन्द पा लिया।
लागी रहे लगन सदा, प्रातः चाहे शाम है।।
मेरा सखा तो है वही ....

रचना ही उसका रूप है प्रीतम जो सुन्दर रूप है।
उसके मिलाप के लिए कोई न रोकथाम है।।
मेरा सखा तो है वही ....

ईश महिमा

क्र.सं.	ईश महिमा भजन/गीत के बोल	पृ. सं.
1.	तेरी अपार महिमा, कैसे बयान होवे	25
2.	कण-कण में जो रमा है, हर दिल में है समाया	26
3.	दुनियाँ बनाने वाले, महिमा तेरी निराली	27
4.	दुनियाँ बनाने वाले कैसी तेरी माया है	29
5.	सत्ता तुम्हारी भगवन् जग में समा रही है	30
6.	प्रभु सारी दुनियाँ से ऊँची तेरी शान है	31
7.	ईश्वर तू महान है, सबका रखता ध्यान है	32
8.	सच्चा तू करतार है, सबका पालनहार है	33
9.	निराकार वह ईश है, हाथ पग न कान	34
10.	जरा तो इतना बता दो भगवन	35
11.	दुनिया बनाने वाला, दुनियाँ मिटाने वाला	36
12.	हे अनन्त देव तू महान् से महान् है	37
13.	तूने बनाया है, यह सब जहान	38
14.	ईश्वर तेरी महिमा का, न पाया पारावार है	39
15.	ईश्वर से महान कोई और नहीं है	40
16.	हम आये तेरे द्वार, नमस्कार-नमस्कार	41
17.	प्रणाम कोटि-कोटि सारे जहाँ के मालिक	42
18.	हे प्रभु! परमपिता! तुम गुणों की खान हो	43
19.	तेरी दया से हे प्रभु, कौन सी शै मिली नहीं	44
20.	हे जगदीश्वर! हे भगवन्! बहुत निराली तेरी शान	45

ईश महिमा

तेरी अपार महिमा, कैसे बयान होवे।
कुछ बोलने से पहले, गूंगी जबान होवे।।
भगवान तुम से बढ़ कर, दुनियाँ में कौन होगा।
अब तक नहीं मिला जो, तेरे समान होवे।।
तेरी अपार महिमा ....
तेरी महानता की, सीढ़ी को छू ना पाए।
दुनियाँ में कोई चाहे, कितना महान होवे।।
तेरी अपार महिमा ....
जिस आदमी के सर पर, करुणा का हाथ रख दे।
उसकी हर एक मुश्किल, पल में आसान होवे।।
तेरी अपार महिमा ....
किसकी मजाल कोई, तेरे खिलाफ बोले।
सारे जहाँ में लागू, तेरा विधान होवे।।
तेरी अपार महिमा ....
आँखों से देखने की, तू चीज ही नहीं है।
अन्त:करण में तेरा, प्रत्यक्ष ज्ञान होवे।।
तेरी अपार महिमा ....
जीवन में लोग तुझको, पहले नहीं बुलाते।
तब 'पथिक' याद करते, जब लब पे जान होवे।।
तेरी अपार महिमा ....

ईश महिमा

कण-कण में जो रमा है, हर दिल में है समाया।
उसकी उपासना ही कर्त्तव्य है बताया।।

दिल सोचता है खुद वो, कितना महान होगा।
इतना महान जिसने, संसार है बनाया।।
कण-कण में जो रमा है ....

देखो ये तन के पुर्जे, करते हैं काम कैसे।
जोड़ों के बीच कोई, कब्जा नहीं लगाया।।
कण-कण में जो रमा है ....

इक पल में रोशनी से, सारा जहान चमका।
सूरज का एक दीपक, आकाश में जलाया।।
कण-कण में जो रमा है ....

अब तक यह गोल धरती, चक्कर लगा रही है।
फिरकी बना के कैसी, तरकीब से घुमाया।।
कण-कण में जो रमा है ....

कठपुतलियों का हम ने, देखो अजब तमाशा।
छुप कर किसी ने सब को, संकेत से नचाया।।
कण-कण में जो रमा है ....

हर वक्त बन के साथी, रहता है साथ सब के।
नादान 'पथिक' उसको, तू जानने ना पाया।।
कण-कण में जो रमा है ....

ईश महिमा

दुनियाँ बनाने वाले, महिमा तेरी निराली।
चन्दा बनाया शीतल, सूरज में आग डाली।।

ऊँचे शिखर गिरी के आकाश चूमते हैं,
वृक्षों के झुरमुटे भी वायु में झूमते हैं,
सरिताऐं बहतीं कल-कल, निर्मल से नीर वाली।।
दुनियाँ बनाने वाले ....

पत्तों को खाके कीड़ा, रेशम बना रहा है,
है कौन जो उदर में, चरखा चला रहा है,
बुन-बुन के आ रहा है, रेशम का लच्छा जाली।।
दुनियाँ बनाने वाले ....

फूलों का चूस के रस, कैसा मधु बनाए,
मधुमक्खी में भी तूने, क्या यंत्र हैं लगाए,
मधु सबके मन को भाए, लाला हो चाहे लाली।।
दुनियाँ बनाने वाले ....

जुगनू की दुम में तूने, क्या बल्ब है लगाया,
बरसात की निशा में, जंगल है जगमगाया,

...... 28

बिजली की चमक कैसी, घन की घटा है काली।।
दुनियाँ बनाने वाले ....

बरसात के दिनों में, लैंटर टपकते देखा,
बैये के घोंसले में, पाई ना जल की रेखा,
क्या तकनीकी सिखाई, तूने ओ जग के माली।।
दुनियाँ बनाने वाले ....

मोरों के पंख देखो, क्या विचित्र चित्रकारी,
कोयल बनायी काली, आवाज प्यारी-प्यारी,
पंछी चकोर के क्या, आँखों में कशिश डाली।।
दुनियाँ बनाने वाले ....

बच्चे किसी के दर्जन, टुकड़ों के भी हैं लाले,
संतान बिन किसी के, घर में लगे हैं ताले,
जीवों के कर्म फल की, तेरे हाथ में है ताली।।
दुनियाँ बनाने वाले ....

माता पिता विधाता, बन्धु सखा न भ्राता,
महिमा का 'पथिक' तेरी, किसी को ना भेद पाता,
तेरे दर पे आए दाता, लेकर के झोली खाली।।
दुनियाँ बनाने वाले ....

ईश महिमा

दुनियाँ बनाने वाले कैसी तेरी माया है।
कहीं बरसात, कहीं धूप, कहीं छाया है।।

पर्वतों की चोटियाँ हैं, आसमां को चूमतीं।
रेशमी घटाएं काली, पर्वतों पे घूमतीं।
कहीं चांद-सूरज, कहीं सागर को बनाया है।।
कहीं बरसात कहीं धूप .... ।।1।।

गुजरते पलों की टोली, यह ही गुनगुना रही।
रुके न समय की गाड़ी, धीरे-धीरे जा रही।
कल आज और कल का, तूने चक्कर क्या चलाया है।।
कहीं बरसात कहीं धूप .... ।।2।।

अच्छे बुरे कर्मों की है, पूंजी सब के साथ में।
सभी वो खिलौने जिन की, चाबी तेरे हाथ में।
नाचना पड़ा है, तूने जैसे भी नचाया है।।
कहीं बरसात कहीं धूप .... ।।3।।

कौन-सी जगह है खाली, कहाँ तेरा वास है।
कहीं तू नहीं है लेकिन, फिर भी सबके पास है।
किसी ने भी 'पथिक' न इस, उलझन को सुलझाया है।।
कहीं बरसात कहीं धूप .... ।।4।।

ईश महिमा

सत्ता तुम्हारी भगवन् जग में समा रही है।
तेरी दया सुगन्धि हर गुल से आ रही है।
रवि चन्द्र और तारे तूने बनाये सारे,
इन सब में ज्योति तेरी, इक जग मगा रही है।
सत्ता तुम्हारी भगवन...............

विस्तृत वसुन्धरा पर सागर बहाये तूने,
तह जिनकी मोतियों से अब चमचमा रही हैं।
सत्ता तुम्हारी भगवन...............

दिन रात प्रातः सन्ध्या मध्यहान् भी बनाया,
हर ऋतु पलट-पलट कर करतब दिखा रही है।
सत्ता तुम्हारी भगवन...............

हे ब्रह्म! विश्वकर्ता, वर्णन हो तेरा कैसे,
जल-थल में तेरी महिमा, हे ईश! छा रही है।
सत्ता तुम्हारी भगवन...............

सत्ता तुम्हारी भगवन् जग में समा रही है।
तेरी दया सुगन्धि हर गुल से आ रही है।।
सत्ता तुम्हारी भगवन...............

ईश महिमा

प्रभु सारी दुनियाँ से ऊँची तेरी शान है।
कितना महान् है तू कितना महान् है।

यहाँ वहाँ कोने-कोने तू ही मशहूर है।
निकट से निकट और दूर से भी दूर है।
'तुझमें समाया हुआ सकल जहान है।'
कितना महान् है तू कितना महान् है ......

तू ही एक मालिक है सारी कायनात का।
फूलों भरी क्यारियों का तारों की जमात का।
तेरी ही जमीन है यह तेरा आसमान है।
कितना महान् है तू कितना महान् है ......

सबने जो रंक देखे सभी तेरे रंग हैं।
जग में अनेक तेरे पालने के ढंग हैं।
तुझको तो छोटे-बड़े सबका ही ध्यान है।
कितना महान् है तू कितना महान् है ......

जितने भी दुनियाँ में जीव देहधारी हैं।
सभी तेरे प्यार के समान अधिकारी हैं।
'पथिक' सभी को दिया तूने वरदान है।
कितना महान् है तू कितना महान् है ......

ईश महिमा

ईश्वर तू महान है,
सबका रखता ध्यान है।
तेरा ही एक आसरा,
सब सुखों की खान है।।

पृथ्वी और आकाश बनाये,
नदी और नाले खूब सजाये।
सूरज-चन्दा को चमकाये,
जो देते हमको प्राण हैं....।।1।।
ईश्वर तू महान है..........

पेड़ और पौधे उगाये तुमने,
फल और फूल लगाये तुमने,
मीठे रसों से सरसाये तुमने,
जो देते हमको जीवनदान हैं....।।2।।
ईश्वर तू महान है..........

जंगल, पर्वत बनाये तुमने,
जल और वायु बहाये तुमने,
चारों वेद रचाये तुमने,
जो देते हमको सच्चा ज्ञान हैं.....3।।
ईश्वर तू महान है..........

सच्चे मन से ध्याया तुमको,
तन और मन लगाया तुमको
हर वक्त हृदय में पाया तुमको,
'खुशहाल' बन किया अमृतपान है....
ईश्वर तू महान है..........

ईश महिमा

सच्चा तू करतार है सबका पालन हार है।
तेरा सबको आसरा सुखों का भंडार है।

नदियाँ नाले पर्वत सारे, तेरी याद दिलाते हैं, तेरी याद ......
ऋषि-मुनि और योगी सारे तेरे ही गुण गाते हैं, तेरे ही ....
सच्चा तू करतार है सबका 1

बादल गरजे बिजली चमके छमछम वर्षा आती है, छम ......
मीठी वाणी कोयल बोले, यह ही राग सुनाती है, यह ......
सच्चा तू करतार है सबका 2

सत्चित आनन्द प्रभु को, वेदों ने बतलाया है, वेदों ने ......
बिनकर कर्म करे विधि नाना रामायण में आया है, रामायण
सच्चा तू करतार है सबका 3

शुभ कर्मों से मानव का यह सुन्दर चोला पाया है, सुन्दर .....
विषय विकारों में फँस करके इसको दाग लगाया है इस .....
सच्चा तू करतार है सबका 4

'नन्दलाल' कहे श्रद्धा से चरणों में शीश झुकाते हैं, चरणों ...
बल, बुद्धि और विद्या का हम दान आपसे चाहते हैं, हम .....
सच्चा तू करतार है सबका 5

ईश महिमा

निराकार वह ईश है, हाथ पग न कान।
बिन जिह्वा बिन लेखनी, रचा वेद का ज्ञान।।
चलता-फिरता है नहीं, सभी ओर विद्यमान।
अचल अमूरत एक रस, केवल वह भगवान्।।
आदि अन्त उसका नहीं, नहीं नाश का मूल।
सुमिरन कर उस ईश को, हे प्राणी मत भूल।।
जिसकी छाया अमर है, जिसके परे विनाश।
वाणी जिसकी अजर है, हृदय करे प्रकाश।।
पालक पोषक जगत् का, सबका पिता महेश।
विद्यमान सर्वत्र है, अजर अमर अखिलेश।।
रूप रंग उसका नहीं, सब रंग रहा विराज।
मित्र शत्रु राखे नहीं, है जग का अधिराज।।
माता-पिता उसके नहीं, नहीं कुटुम्ब परिवार।
अवगुण उसमें है नहीं, गुण का है भंडार।।
जन्म-मरण उसका नहीं, बालक वृद्ध जवान।
भाई-बन्धु राखे नहीं, सब उसकी संतान।।
खाता-पीता है नहीं, पाँच तत्व से दूर।
दयावान् सबसे बड़ा, प्रेम करे भरपूर।।

ईश महिमा

जरा तो इतना बता दो भगवान।
लगन ये कैसी लगा रहे हो।
मुझी में रहकर मुझी से मेरी।
यह खोज कैसी करा रहे हो।।

हृदय भी तुम हो, तुम ही स्पंदन
प्रेम भी तुम हो तुम ही हो प्रियतम।
पुकारता मन तुम ही को क्यों है।
तुम ही जो मन में समा रहे हो।।

सीप भी तुम हो तुम्हीं हो मोती।
दीप भी तुम हो, तुम ही हो ज्योति।
तुम्हीं को लेकर तुम्हीं को ढूंढू।
नयी यह लीला बता रहे हो।।

मन भी तुम हो तुम्हीं हो रसना।
गीत तुम हो तुम ही हो रचना।।
स्तुति तुम्हारी तुम्हीं से गाऊँ।
नयी यह रीति बता रहे हो।।

कर्म भी तुम हो तुम ही हो कर्ता।
धर्म भी तुम हो, तुम ही हो धर्ता।।
निमित्त कारण मुझे बना कर।
यह नाच कैसा नचा रहे हो।।

ईश महिमा

दुनियाँ बनाने वाला, दुनियाँ मिटाने वाला,
सब का है दाता भगवान्, माने न माने इन्सान।
रंग-रंग के फूल खिलाए, सूरज और चाँद बनाए,
सागर व धरती आसमान, माने न माने इन्सान।।

आँखें न हाथ उस के, ना कोई आकार देखो।
ना ही औजार कोई, ना कोई आधार देखो।
फिर भी यह सुन्दर रचना, अद्‌भुत संसार देखो।

पतझड़ दिखलाने वाला, बादल बरसाने वाला,
सब का है दाता भगवान्, माने न माने इन्सान।।1।।

चलती न रिश्वतखोरी, उसके दरबार कोई।
अपना बेगाना उसका, ना रिश्तेदार कोई।
सुनता है वो तो सब की, कर ले पुकार कोई।
सज्जन हँसाने वाला, दुर्जन रुलाने वाला,
सब का है दाता भगवान्, माने न माने इन्सान।।2।।

निर्जन भयानक वन से, चाहो गर पार जाना।
तप और भक्ति के द्वारा, मुक्ति के द्वार जाना।
'पथिक' मंजिल से पहले, हिम्मत न हार जाना।
उलझन सुलझाने वाला, मार्ग दिखलाने वाला,
सब का है दाता भगवान्, माने न माने इन्सान।।3।।

ईश महिमा

हे अनन्त देव तू महान से महान है।
विश्व की हर एक चीज में विराजमान है।
हे अनन्त देव तू महान से ....

तू असीम अज अजर-अमर अनादि तत्व है।
अर्चनीय, वन्दनीय, अद्वितीय सत्व है।
सकल गुणनिधान, अतुल सर्वशक्तिमान है।
हे अनन्त देव तू महान से ....

तेजमय आदित्यवर्ण अन्धकार से परे।
दिव्य पुरुष दीन की समस्त दीनता हरे।
प्राणवान् प्राणियों के प्राण का भी प्राण है।
हे अनन्त देव तू महान से महान है
विश्व की हर एक चीज में विराजमान है।।

अगर आसमान वाले से आपके रिश्ते मजबूत हैं तो जमीन वाले आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकते।

ईश महिमा

तूने बनाया है, ये सब जहान।
तू है महान, प्रभु तू है महान।।
सारे जगत का मालिक, तू ही तो एक है।
कैसे संभाले जाने, कार्य अनेक हैं।
महिमा तेरी से हम, हैं अनजान।।
तू है महान, प्रभु ....
जमीन आसमान, पर्वत और समन्दर।
कैसे रमा है तू, इसके अन्दर।
हम करें कैसे तेरे, गुणों का बखान।।
तू है महान, प्रभु ....
हर कर्म का फल, भोगना पड़ेगा।
कोई जोड़ तोड़, और ना भोग चढ़ेगा।
तेरे यहाँ है सच्चे, न्याय का विधान।।
तू है महान, प्रभु ....
चारों दिशाओं में, तुझको निहारूँ।
सब कुछ अपना, तुझ पर वारूँ।
हर पल गाऊँ, प्रभु तेरा गुण गान।।
तू है महान, प्रभु ....
एक नाम की सत्ता, सारे जगत में।
सब कुछ नश्वर, 'ओ३म्' ही अन्त में।
आदि अनादि हो, सर्वशक्तिमान्।।
तू है महान, प्रभु ....

ईश महिमा

ईश्वर तेरी महिमा का न, पाया पारावार है।
तू ही है निर्माता जग का - तू ही सर्वाधार है।।
रंग-बिरंगे फूलों में तो - तेरी खुशबू आ रही,
तेरी खुशबू आ रही।
हरियाली पत्तों की सबके-मन को है हरषा रही।
मन को है हरषा रही।
पत्ता-पत्ता डाली-डाली का तू ही आधार है।
ईश्वर तेरी महिमा का न ....
सूर्य-चाँद पृथ्वी नभ तारे - करें ईशारा आपका,
पर्वत जंगल नदियों में - सौन्दर्य है भगवान आपका,
सौन्दर्य है भगवान आपका।
प्रातःसायं पक्षी गाते - अद्‌भुत यह संसार है।।
ईश्वर तेरी महिमा का न ....
नर तन सा अनमोल रत्न, यह देन तेरी भगवान है।
यह देन तेरी भगवान है।
सत्पथ से विचलित होकर, ठोकर खाता इन्सान है,
ठोकर खाता इन्सान है।
कृपा तेरी से रक्षित हो, गाऊँ तू सर्वाधार है।
ईश्वर तेरी महिमा का न ....
ऋषि-मुनि और योगी सारे, तेरी महिमा गा रहे।
तू ही तू बतला रहे।
उद्‌गाता वेदों को गाकर, तुझको ही दर्शा रहे।
तुझको ही दर्शा रहे।
इन्द्र कहे इस सारे जग में, तेरा ही विस्तार है।
तेरा ही विस्तार है।
ईश्वर तेरी महिमा का न ....

ईश महिमा

ईश्वर से महान, कोई और नहीं है।
उस प्रभु के समान, कोई और नहीं है।।
जग रचता पालन करता, वही एक संहर्ता है।
सृष्टि का सब वही, नियमाक एक नियन्ता है।।
समर्थ शक्तिमान कोई और नहीं है।।
ईश्वर से महान्.....।।
अखिल विश्व में व्यापक है, वो है सब जगह समाया।
जग में रहता किन्तु, जगत के बन्धन में ना आया।।
सर्वत्र विद्यमान कोई और नहीं है।।
ईश्वर से महान्.....।।
सभी सत्य विद्याओं का, केवल वो ही दाता है।
आदि सृष्टि के मानव को, वो ही बोध कराता है।।
पूरा ज्ञानवान कोई और नहीं है।।
ईश्वर से महान्.....।।
कैसी अद्‌भुत रचना, उसकी देती है दिखलाई।
सूर्य चन्द्र जैसी उसने, यह अनुपम ज्योति जलाई।।
स्वयं ज्योतिष्मान कोई और नहीं है।।
ईश्वर से महान्.....।।
सब प्राणियों को कर्मों का, देता फल बराबर है।
रहता है निष्पक्ष उसे, ना कभी किसी का डर है।।
दयालु न्यायवान कोई और नहीं है।।
ईश्वर से महान्.....।।
ठीक-ठीक उसका वर्णन, 'कमलेश' कौन कर पाये।
अनुभव में आता वह केवल, शास्त्र यही बतलाये।।
प्राणियों का प्राण कोई और नहीं है।।
ईश्वर से महान्.....।।

ईश महिमा

हम आये तेरे द्वार नमस्कार-नमस्कार
सूरज और चाँद में तेरा ही उजाला है - तेरा ही उजाला है,
तूने पहन रखी है सितारों की माला है - सितारों की माला है।
सब जग के आधार नमस्कार-नमस्कार
महिमा अपरम्पार, महिमा अपरम्पार ....
हम आये तेरे द्वार नमस्कार-नमस्कार.. (1)

पर्वतों की चोटियों को बादल हैं चूमते - बादल हैं चूमते
पृथ्वी, सूर्य, चांद, सितारे गा रहे हैं झूमते - गा रहे हैं झूमते।
नियम के अनुसार नमस्कार-नमस्कार
हम आये तेरे द्वार नमस्कार-नमस्कार.. (2)

कोयल की ये कुहु-कुहु सब के मन को भा रही
सबके मन को भा रही,
शीतल मंद पवन तेरा गीत मधुर गा रही - गीत मधुर गा रही।
जपत रही सौ बार नमस्कार-नमस्कार
हम आये तेरे द्वार नमस्कार-नमस्कार.. (3)

मानुष तन को देखो कितना सुन्दर बनाया है - सुन्दर बनाया है,
मन, बुद्धि, इन्द्रियों को देखो, किसने सजाया है - किसने सजाया है।
अष्ट चक्र नौ द्वार नमस्कार-नमस्कार
हम आये तेरे द्वार नमस्कार-नमस्कार.. (4)

ईश महिमा

प्रणाम कोटि–कोटि, सारे जहाँ के वाली।
अद्‌भुत है तेरी रचना, हर शै तेरी निराली।।

कण–कण में तू व्यापक, सूक्ष्म है रूप तेरा।
तारों में तू है रोशन, सूरज में तेरी लाली।।
अद्‌भुत है तेरी रचना, हर शै .....

फूलों में गन्ध तेरी, पत्तों में रंग तेरा।
अनुभव तेरा कराती, गुलशन की डाली–डाली।।
अद्‌भुत है तेरी रचना, हर शै .....

पालक है तू जगत का, दिन रात दे रहा है।
आया जो तेरे दर पर, लौटा कभी ना खाली।।
अद्‌भुत है तेरी रचना, हर शै .....

भक्ति की भीख माँगें, तुझसे हे ईश मेरे।
दामन को मेरे भर दो, चरणों में है सवाली।।
अद्‌भुत है तेरी रचना, हर शै .....

प्रणाम कोटि–कोटि, सारे जहाँ के वाली।
अद्‌भुत है तेरी रचना, हर शै तेरी निराली।।
अद्‌भुत है तेरी रचना, हर शै .....

ईश महिमा

हे प्रभु! परमपिता! तुम गुणों की खान हो।
तुम अनादि तुम अनन्त, पूर्ण तुम्हीं महान हो।।

सूर्य चन्द्र से विशाल, लोक तुम में हैं बसे।
प्राणियों के प्राण तुम, सर्वशक्तिमान हो।।
तुम अनादि तुम अनन्त ....

नित्य भोजन आदि से, प्राणियों को पालते।
तुम विधाता दाता तुम, तुम दया निधान हो।।
तुम अनादि तुम अनन्त ....

कौन ऐसा कार्य है, जो छिपाया जा सके।
सब जगह सदैव जब, आप विद्यमान हो।।
तुम अनादि तुम अनन्त ....

ढूँढ़ने तुम्हें ''प्रकाश'' क्यूँ गया प्रयाग में।
वो ही हृदय में पाएगा, जिसको सच्चा ज्ञान हो।।
तुम अनादि तुम अनन्त ....

ईश महिमा

तेरी दया से हे प्रभु, कौन सी शै मिली नहीं।
झोली ही मेरी तंग है, तेरे यहाँ कमी नहीं।।
जीने को जी रहा हूँ मैं, मालिक तेरे बगैर भी।
जिन्दगी जिस को कह सकूँ, ऐसी तो जिन्दगी नहीं।।
तेरी दया से है प्रभु ....
कब से पुकारता है दिल, सुनता मगर कोई नहीं।
मेरा तो इस जहान में, तेरे सिवा कोई नहीं।।
तेरी दया से है प्रभु ....
माना कि मैं गरीब हूँ, माना कि मैं फकीर हूँ।
मुझसे ना ऐसे रूठिये, कि जैसे मेरा कोई नहीं।।
तेरी दया से है प्रभु ....
सजदा करूँ किसको बता, जब तू ही सामने नहीं।
कायले बन्दगी तो हूँ, काबिले बन्दगी नहीं।।
तेरी दया से है प्रभु ....
गम पे गम उठाए जा, तीरों पे तीर खाए जा।
उफ न कर लबों को सी, आशिकी है दिल्लगी नहीं।।
तेरी दया से है प्रभु ....
इसकी नजर मिली तो क्या, उसकी नजर फिरी तो क्या।
जिस बन्दगी में होश हो, वो बन्दगी बन्दगी नहीं।।
तेरी दया से है प्रभु ....

ईश महिमा

हे जगदीश्वर हे भगवान! बहुत निराली तेरी शान।
विश्वविधाता ईश महान्! बहुत निराली तेरी शान।।

अमर अनादि अनन्त अनूपा, नित्य सनातन सत्य स्वरूपा।
अखल निरंजन शक्तिमान, बहुत निराली तेरी शान।।

मात-पिता, बन्धु और भ्राता।
रक्षक, पालक तू सुखदाता।
तू सबका प्राणों का प्राण।
बहुत निराली तेरी शान............

मंगल-जनक अमंगल हारी।
कष्ट-विदारक पर-उपकारी।
दीन-दयाकर कृपानिधान।
बहुत निराली तेरी शान............

पतित सुपावन शंकर स्वामी, परम सहायक अन्तर्यामी।
'पथिक' करे तेरा गुणगान, बहुत निराली तेरी शान......

प्रार्थना

क्र.सं.	प्रार्थना भजन/गीत के बोल	पृ. सं.
1.	हम सब मिलकर आये, दाता तेरे दरबार	47
2.	दाता तेरे सिमरन का, वरदान जो मिल जाये	48
3.	हे ज्ञानरूप भगवन हमको भी ज्ञान दे दो	49
4.	शरण में आये हैं हम तुम्हारी, दया करो	50
5.	इतनी शक्ति हमें देना दाता	51
6.	साथ ले लो पिता आगे बढ़ जाऊँगा	52
7.	भगवान् तुम्हारे मन्दिर में एक आस लगाकर आया हूँ	53
8.	प्रभु जी मेरे जीवन का उद्धार कर दो	54
9.	मुझे ऐसा बना दो मेरे पिता	55
10.	एक तेरी दया का दान मिले, एक तेरा सहारा मिल जाये	57
11.	प्रभु जी इतनी सी दया कर दो, हमको भी तुम्हारा प्यार मिले	58
12.	प्रभु तेरी भक्ति का वर माँगते हैं	59
13.	नाथ चरणों में अपने लगा लीजिए	60
14.	दयामय देव! सुखदाता, पिता तू ही हमारा है	61
15.	दया करो भगवान हम पर दया करो	62
16.	दया कर दान भक्ति का, हमें परमात्मा देना	63
17.	अपने भक्तों में हमको बिठा लीजिए	64
18.	प्रभो! बुद्धि निर्मल हमारी बना दो	65
19.	तुम्हीं दया करो, तुम बिन हमारा कौन है	66
20.	मेरा उद्देश्य हो प्रभु, आज्ञा को तेरी पालना	67

प्रार्थना

हम सब मिल के आये, दाता तेरे दरबार।
भर दे झोली सब की तेरे पूरण भण्डार।।
हम सब मिल के आये ....
होवे जब सन्ध्या काल, निर्मल हो के तत्काल।
अपना मस्तक झुका के, करके तेरा ख्याल।
तेरे दर पे आके बैठे, सारा परिवार।।
हम सब मिल के आये ....

ले के दिल में फरियाद, करते हम तुम को याद।
जब हों मुश्किल की घड़ियाँ, माँगें तुम से इमदाद।
सब से बढ़ के ऊँचा, जग में तेरा आधार।।
हम सब मिल के आये ....

चाहे दिन हों विपरीत, होवे तुमसे ही प्रीत।
सच्ची श्रद्धा से गायें, तेरी भक्ति के गीत।
होवे सब का प्रभु जी, तेरे चरणों में प्यार।।
हम सब मिल के आये ....

तू है सब जग का वाली, करता सब की रखवाली।
हम हैं रंग रंग के पौधे, तुम हो हम सब के माली।
'पथिक' बगीचा है, ये तेरा सुन्दर संसार।।
हम सब मिल के आये ....

प्रार्थना

दाता तेरे सिमरन का, वरदान जो मिल जाए।
मुरझाई कली दिल की, इक आन में खिल जाए।।
दाता तेरे सिमरन का ....

सुनते हैं तेरी रहमत, दिन रात बरसती है।
इक बूँद जो मिल जाए, तकदीर बदल जाए।।
दाता तेरे सिमरन का ....

ये मन बड़ा चंचल है, चिन्तन में नहीं लगता।
जितना इसे समझाऊँ, उतना ही मचल जाए।
दाता तेरे सिमरन का ....

हे नाथ मेरे दिल की, बस इतनी तमन्ना है।
पापों से बचा लेना, पाँव न फिसल जाए।।
दाता तेरे सिमरन का ....

देवत्व के फूलों से, दामन को मेरे भर दो।
जीवन ये सुगन्धित हो, दुर्गन्ध निकल जाए।।
दाता तेरे सिमरन का ....

ऐ! मानव तू दिल से, प्रभु नाम का सिमरन कर।
दोषों भरे जीवन का, काँटा ही बदल जाए।।
दाता तेरे सिमरन का ....

प्रार्थना

हे ज्ञानरूप भगवन् हमको भी ज्ञान दे दो,
करुणा के चार छींटे, करुणानिधान दे दो।
हे ज्ञानरूप भगवन्..... ।।1।।
सुलझा सकें हम अपने जीवन की उलझनों को,
प्रज्ञा ऋतम्भरा सी, बुद्धि का दान दे दो।।
हे ज्ञानरूप भगवन्..... ।।2।।
अपनी मदद हमेशा खुद आप कर सकें हम,
इन बाजुओं में शक्ति, हे शक्तिमान् दे दो।।
हे ज्ञानरूप भगवन्..... ।।3।।
उपकार भावना से निर्भीक सत्य वाणी,
मीठे ही शब्द बोलें, ऐसी जबान दे दो।
हे ज्ञानरूप भगवन्..... ।।4।।
दाता तुम्हारे घर में किस चीज की कमी है,
चाहो तो हम सभी को भक्ति का दान दे दो।
हे ज्ञानरूप भगवन्..... ।।5।।
तुम देवता हो सबकी बिगड़ी बनाने वाले,
जीवन सफल बने जो, थोड़ा सा ध्यान दे दो।
हे ज्ञानरूप भगवन्..... ।।6।।
डर है 'पथिक' तुम्हारा रास्ता न भूल जाएँ,
भक्तों की मण्डली में, हमको भी स्थान दे दो।
हे ज्ञानरूप भगवन्..... ।।7।।

प्रार्थना

शरण में आये हैं हम तुम्हारी, दया करो हे दयालु भगवन्।
संभालो बिगड़ी दशा हमारी, दया करो हे दयालु भगवन्।।1।।

न हममें बल है न हममें शक्ति, न हममें साधन न हममें भक्ति।
तुम्हारे दर के हैं हम भिखारी, दया करो हे दयालु भगवन्।।2।।

जो तुम हो स्वामी तो हम हैं सेवक, जो तुम हो पालक तो हम हैं बालक।
जो तुम हो ठाकुर तो हम हैं पुजारी, दया करो हे दयालु भगवन्।।3।।

सुना है हमने कि हम तुम्हारे, तुम्हीं हो सच्चे प्रभु हमारे।
तो सुध हमारी है क्यों बिसारी, दया करो हे दयालु भगवन्।।4।।

बुरे हैं जो हम तो हैं तुम्हारे, भले हैं जो हम तो हैं तुम्हारे।
तुम्हारे होकर के हैं हम दुःखारी, दया करो हे दयालु भगवन्।।5।।

प्रदान कर दो महान् शक्ति, भरो हमारे में ज्ञान भक्ति।
तभी कहलाओगे तापहारी, दया करो हे दयालु भगवन्।।6।।

प्रार्थना

इतनी शक्ति हमें देना दाता।
मन का विश्वास कमजोर हो ना।।
हम चलें नेक रास्ते पे हमसे।
भूलकर भी कोई भूल हो ना।।1।।
दूर अज्ञान के हों अँधेरे।
तू हमें ज्ञान की रोशनी दे।।
हर बुराई से बचते रहें हम।
जितनी भी दे भली जिन्दगी दे।।
बैर हो ना किसी का किसी से।
भावना मन में बदले की हो ना।।
हम चलें नेक रास्ते पे हमसे।
भूलकर भी कोई भूल हो ना।।2।।
हम ना सोचें हमें क्या मिला है।
हम ये सोचें किया क्या है अर्पण।।
फूल खुशियों के बाँटे सभी को।
सबका जीवन ही बन जाए मधुबन।।
हम चलें नेक रास्ते पे हमसे।
भूलकर भी कोई भूल हो ना।।3।।

प्रार्थना

।। स्थायी।।

साथ ले लो पिता आगे बढ़ जाऊँगा
वरना सम्भव है मैं भी फिसल जाऊँगा
साथ ले लो पिता आगे ....

।। अन्तरा।।

राहें चिकनी खड़ी और पथरीली हैं
कांटों झाड़ी भरी और जहरीली हैं।
दो सहारा कि उनमें मैं फँस जाऊँगा
साथ ले लो पिता आगे ....

भोग विषयों की उठती है इक-इक लहर
मुझको उलझा डुबाने चली हर प्रहर।
दे दो पतवार वरना मैं तर पाऊँगा
साथ ले लो पिता आगे ....

दुनियाँ इस ओर कहती है आ मौज ले
पर उधर धर्म कहता है दु:ख मोल ले।
तुम कहोगे मुझे जैसा कर पाऊँगा
साथ ले लो पिता आगे ....

सत्य कहता हूँ भूला जब भी मैं तुझे
पाई दुनियां मगर एक न पाया तुम्हें।
बिन तुम्हारे मैं आखिर किधर जाऊँगा
साथ ले लो पिता आगे ....

प्रार्थना

भगवान तुम्हारे मंदिर में, एक आस लगा कर आया हूँ।
अवगुणों को प्रभुजी दूर करो, सत्ज्ञान माँगने आया हूँ।।1।।

कुछ अश्रु के ये फूल चढ़ाकर,, तुम्हें मनाने आया हूँ।
तेरे नाम रत्न के कोष बढ़े, तेरी कृपा माँगने आया हूँ।।2।।
भगवान तुम्हारे मन्दिर में ....

तेरे चरणों में प्रभु जी प्रेम बढ़े, मन पात्र में ज्ञानामृत भर दो।
प्रसाद रूप दो नयनों में, तेरी छवि को देखने आया हूँ।।3।।
भगवान तुम्हारे मन्दिर में ....

लक्ष्य है मानव जीवन का, निज इष्ट के दर्शन करने का
इस योग्य बना दो प्रभु मुझे, यह आग्रह लेकर आया हूँ।।4।।
भगवान तुम्हारे मन्दिर में ....

'केवल' की विनय पुकार सुनो, गोरक्षा, का व्रत धारा है।
माता का करुणा चित्कार सुनो, गोकरुणानिधि में बतलाया है।।5।।
भगवान तुम्हारे मन्दिर में ....

भगवान तुम्हारे मंदिर में, यह आस लगा कर आया हूँ।
अवगुणों को प्रभु जी दूर करो, सत् ज्ञान माँगने आया हूँ।।6।।

प्रार्थना

प्रभु जी, मेरे जीवन का उद्धार कर दो।
भँवर में है नैया, इसे पार कर दो।।
मेरी इन्द्रियाँ हों, सदा मेरे वश में।
मेरे मन पे मेरा ही अधिकार कर दो।
प्रभु जी मेरे जीवन का ....
न शुभ कार्य करने में पीछे रहूँ मैं।
कुकर्मों से मुझको खबरदार कर दो।।
मैं गाऊँ सदा वेद की ही ऋचायें।
मेरे तन-मन में वेदों का संचार कर दो।।
प्रभु जी मेरे जीवन का ....
मेरा सर झुके तेरे ही दर पर।
मुझे ऐसा दुनियाँ में सरदार कर दो।।
मैं समझूँ न जग में, किसी को बेगाना।
मेरा विश्व भर के लिए प्यार कर दो।।
प्रभु जी मेरे जीवन का ....
'पथिक' राह में हो कोई दीन दु:खिया।
मदद के लिए, मुझको तैयार कर दो।।
प्रभु जी मेरे, जीवन का उद्धार कर दो।
भँवर में है नैया, इसे पार कर दो।।

प्रार्थना

मुझे ऐसा बना दो मेरे पिता,
जीवन में लगे ठोकर न कहीं।
जाने अनजाने भी मुझ से,
नुकसान किसी का हो न कहीं।।1।।
मुझे ऐसा बना दो मेरे पिता ....

उपकार सदा करता जाऊँ।
दुनिया अपकार भले ही करे।
बदनामी न हो जग में मेरी,
कोई नाम भले ही दे न कहीं।।2।।
मुझे ऐसा बना दो मेरे पिता ....

जो तेरा बनकर रहता है,
काँटों में फूल सा खिलता है।
कितने भी काँटे पांव चुभे
पर फूल भी हों काँटे न कहीं।।3।।
मुझे ऐसा बना दो मेरे पिता ....

तू ही बस मेरा ऐसा है,
दु:ख में भी साथ नहीं तजता।
दुनिया मुझे प्यार करे न करे,
खोऊँ तेरा भी न प्यार कहीं।।4।।
मुझे ऐसा बना दो मेरे पिता ....

मन को मधुपूर्ण कलश मेरा,
आँखों से ज्योति छलकती हो।
तुम से मधु ऐसा पीने को,
जागता ही रहूँ, सोऊँ न कहीं।।5।।
मुझे ऐसा बना दो मेरे पिता ....

मैं क्या हूँ, राह मेरी क्या है,
यह सत्य सदा मैं समझ सकूँ।
इस राह पे चलते-चलते कभी,
मेरे पाँव थके न, रूके न कहीं।।6।।
मुझे ऐसा बना दो मेरे पिता ....

वह जो ना प्रात: और ना सायं ईश्वर को याद करता है, उसे शूद्र समझना चहिए।

प्रार्थना

एक तेरी दया का दान मिले, एक तेरा सहारा मिल जाये।
भवसागर में बहती मेरी, नैया को किनारा मिल जाये।।1।।

जीवन की टेढ़ी राहों में, चलकर न तुझको जान सका।
आशाओं की झोली भर जाये, इक तेरा द्वारा मिल जाए।।2।।

मैं दीन हूँ दीनदयाल है तू, अल्पज्ञ हूँ मैं सर्वज्ञ है तू।
अज्ञान का पर्दा हट जाये, तेरा उजियारा मिल जाये।।3।।

इस दुर्लभ अवसर को पाकर, कोई उत्तम कर्म कमा न सका।
अब दिल की तड़प ये कहती है, यही प्रीतम प्यारा मिल जाये।।4।।

अपने मुझको अपना ना सके, औरों को उलाहना क्यों कर दूं।
तू सर्वकरों का दाता है, वरदान तुम्हारा मिल जाये।।5।।

मैं नर हूँ तू, नारायण है, इतना तो भेद जरूरी है।
यदि शरण तेरी मैं पा न सका, नर तन तो दुबारा मिल जाये।।6।।

है विनती एक यही मेरी, यही एक निवेदन मेरा।
इस जन्म मरण के बंधन से, अब तो छुटकारा मिल जाये।।

प्रार्थना

प्रभु जी इतनी सी दया कर दो, हमको भी तुम्हारा प्यार मिले।
कुछ और भले ही मिले न मिले, प्रभु दर्शन का अधिकार मिले।।1।।
जिस जीवन में जीवन ही नहीं, वह जीवन भी क्या जीवन है।
जीवन तब जीवन बनता है, जब जीवन का आधार मिले।।2।।
प्रभु जी इतनी सी दया कर दो............
सब कुछ पाया इस जीवन में, बस एक तमन्ना बाकी है।
हर प्रेम पुजारी के अपने, मन मंदिर में दातार मिले।।3।।
प्रभु जी इतनी सी दया कर दो............
जिसने तुमसे जो कुछ मांगा, उसने ही वही तुम से पाया।
दुनिया को मिले दुनिया लेकिन, भक्तों को तेरा दरबार मिले।।4।।
प्रभु जी इतनी सी दया कर दो............
हम जन्म जन्म के प्यासे हैं, और तुम करुणा के सागर हो।
करुणानिधि से करुणा रस की, एक बूँद हमें इक बार मिले।।5।।
प्रभु जी इतनी सी दया कर दो............
कब से प्रभु दर्शन पाने की, हम आस लगाए बैठे हैं।
पल दो पल भीतर आने की, अनुमति अनुपम सरकार मिले।।6।।
प्रभु जी इतनी सी दया कर दो............
इस मार्ग पर चलते-चलते, सदियाँ ही नहीं युग बीत गए।
मिल जाए 'पथिक' मंजिल अपनी, हमको भी तुम्हारा द्वार मिले।।7।।
प्रभु जी इतनी सी दया कर दो............

प्रार्थना

प्रभु तेरी भक्ति का वर मांगते हैं।
झुके तेरे दर पे वो सर मांगते हैं।।

बुरे भाव से जो न देखे किसी को।
हम आँखों में ऐसी नजर मांगते हैं।।
प्रभु तेरी भक्ति का ....

पड़े अगर मुसीबत न झोली पसारें।
हम हाथों में ऐसा हुनर मांगते हैं।।
पुकारे कोई दीन अबला हमें गर।
घड़ी पल में पहुँचे वो वर मांगते हैं।।
प्रभु तेरी भक्ति का ....

जो बेताब जुल्म और सितम देखकर हो।
तड़पता हुआ वो जिगर मांगते हैं।।
दु:खी या अनाथों की सेवा हो जिससे।
प्रभु अपने घर ऐसा जर मांगते हैं।।
प्रभु तेरी भक्ति का ....

प्रार्थना

नाथ चरणों में अपने लगा लीजिए,
भक्त को अपनी भक्ति का वर दीजिए।

भोग भोगें न तृष्णा मिटी पुनरपि,
काम की कामना कम पिता कीजिए।।
पाप चिन्तन में दिन-रात मन लिप्त है,
शुद्ध हों वृत्तियाँ, प्रेरणा दीजिए।
नाथ चरणों में अपने ....

लोभ की लालसा मोह ममता मिटे,
दानवों दोष दुर्गुण दवा दीजिए।
परम पावन प्रणव जाप करता रहूँ,
सात्विकी भावना हो कृपा कीजिए।
नाथ चरणों में अपने ....

शुद्ध आचार आहार व्यवहार हो,
आत्म-चिन्तन की ज्योति जगा दीजिए।
भक्त परमार्थ साधन का व्रत ले रहा,
दीनबन्धो! सफल साधना कीजिए।।
नाथ चरणों में अपने ....

प्रार्थना

दयामय देव ! सुखदाता, पिता तू ही हमारा है।
तुझे प्रभु छोड़कर जग में नहीं कोई सहारा है।।
दयामय देव ! सुखदाता, पिता तू ....

कृपा कर हे कृपा सागर ! हृदय में तू हमारे आ।
प्रकाशक पाप नाशक तू, तुम्हीं सबका सहारा है।।
दयामय देव ! सुखदाता, पिता तू ....

अविद्या–क्लेश–बन्धन का, पिता ! तू काटने हारा।
हमारे पर दया कर दे, तुझी ने विश्व धारा है।।
दयामय देव ! सुखदाता, पिता तू ....

न हमको चाह है यश की, नहीं कुछ कामना धन की।
तुझे बस चाहते हैं हम, न तेरे बिन गुजारा है।।
दयामय देव ! सुखदाता, पिता तू ....

दया का सिन्धु होकर भी, न देगा गर शरण हमको।
तो जायेंगे कहाँ भगवन् ! तू ही सबका सहारा है।।
दयामय देव ! सुखदाता, पिता तू ....

प्रार्थना

दया करो भगवान हम पर दया करो।
हे प्रभु कृपा निधान हम पर दया करो।।
हम सब बालक, शरण तुम्हारी।।
सुन लो भगवान विनय हमारी।।
दो बुद्धि का दान–हम पर दया करो।। दया करो भगवान .....
शुभ कर्मों में मन को लगायें।
दुष्कर्मों से चित्त हटायें।
हो सबका कल्याण – हम पर दया करो।। दया करो भगवान .....
तेरी भक्ति में तन मन हो।
शुद्ध सरल सबका जीवन हो।
जीवन बने महान – हम पर दया करो।।दया करो भगवान ...
राम कृष्ण की संस्कृति पालें।
सेवा अपना धर्म बना लें।
बने वीर हनुमान– हम पर दया करो।। दया करो भगवान ....
वीर बने हम श्रद्धानन्द से।
दयाशील हों दयानन्द से।
दो घातक को दान–हम पर दया करो।। दया करो भगवान ...
सकल विश्व को आर्य बनावें।
पावन वैदिक ज्योति जगावें।
करें वेद का गान – हम पर दया करो।। दया करो भगवान ..

प्रार्थना

दया कर दान भक्ति का, हमें परमात्मा देना।
दया करना हमारी आत्मा में शुद्धता देना।।
दया कर दान भक्ति का ....

सदा से आप दीनों का, प्रभु उद्धार करते हैं।
हमें भी दीन हालत से, पतित पावन उठा देना।।
दया कर दान भक्ति का ....

हमारे ध्यान में आओ, प्रभु आँखों में बस जाओ।
अन्धेरे दिल में आ करके, परम ज्योति जगा देना।।
दया कर दान भक्ति का ....

बहा दो प्रेम की गंगा, दिलों में प्रेम का सागर।
हमें आपस में मिलजुल कर, प्रभु रहना सिखा देना।।
दया कर दान भक्ति का ....

हमारा कर्म हो सेवा, हमारा धर्म हो सेवा।
सदा ही मान हो सेवा, यह सेवक दल बना देना।।
दया कर दान भक्ति का ....

वतन के वास्ते जीना, वतन के वास्ते मरना।
वतन पे जाँ फिदा करना, प्रभु हमको सिखा देना।।
दया कर दान भक्ति का ....

प्रार्थना

अपने भक्तों में हमको बिठा लीजिए,
ठोकरें खा रहे हैं बचा लीजिए,
नैया जीवन की है नाथ मझधार में,
करके करुणा किनारे लगा दीजिए।।

अपने भक्तों में हमको ....

छा रहा है अन्धेरा मेरे चारों ओर,
ज्ञान ज्योति का मन में जगा दीजिए।।
माना होगा किसी को किसी का पिता,
मेरा तू ही है मुझसे लिखा लीजिए।।

अपने भक्तों में हमको ....

वेद वाणी तेरी नाथ अमृत भरी,
भरके प्याला मुझे इक पिला दीजिए।
और पापों के है मेरे मन की गति,
और चरणों के अपने लगा लीजिए।।

अपने भक्तों में हमको ....

'देश' को है पिता! तेरा ही आसरा,
गोद अपनी में स्वामी बिठा लीजिए।
गोद तेरी से न बढ़कर कोई सुखदायी जगह,
पुत्र तेरा 'ध्रुव' वहीं बैठा रहे माता सदा।।

अपने भक्तों में हमको ....

प्रार्थना

प्रभो! बुद्धि निर्मल हमारी बना दो।
पिता, अपनी भक्ति का अमृत पिला दो।।

न मन में हमारे कभी हो अन्धेरा
न अज्ञान हो न अविद्या का डेरा
सदा आत्मा में हो प्रकाश तेरा
हमें धर्म की राह चलना सिखा दो।
प्रभु! बुद्धि निर्मल हमारी बना दो।।1।।

तेरे चरणों में ध्यान अपना लगायें,
न मन-रूपी शीशे को मैला बनायें,
कभी सत्य-मार्ग से पग न हटायें
सदाचार का पाठ हमको पढ़ा दो।
प्रभु! बुद्धि निर्मल हमारी बना दो।।2।।

न 'नंदलाल' ने भक्ति में मन लगाया
विषय-वासना में है जीवन गँवाया।
शरमसार होकर तेरे द्वार आया।
भंवर में है किश्ती, किनारे लगा दो।
प्रभु! बुद्धि निर्मल हमारी बना दो।।3।।

प्रार्थना

ईश्वर तुम्हीं दया करो, तुम बिन हमारा कौन है।
दुर्बलता दीनता हरो, तुम बिन हमारा कौन है।।
माता तू ही पिता तू ही, बन्धु तू ही सखा तू ही।
तू ही हमारा आसरा, तुम बिन हमारा कौन है।।
ईश्वर तुम्हीं दया करो, तुम बिन ....

जग को रचाने वाला तू, दु:ख को मिटाने वाला तू।
बिगड़ी बनाने वाला तू, तुम बिन हमारा कौन है।।
ईश्वर तुम्हीं दया करो, तुम बिन ....

तेरी दया को छोड़कर, कुछ भी नहीं हमें खबर।
जायें तो जायें हम किधर, तुम बिन हमारा कौन है।।
ईश्वर तुम्हीं दया करो, तुम बिन ....

तेरी लगन तेरा मनन, भक्ति तेरी तेरा भजन।
तेरी ही आते हम शरण, तुम बिन हमारा कौन है।।
ईश्वर तुम्हीं दया करो, तुम बिन ....

पुत्र हैं हम सभी तेरे, तू है पिता परमात्मा।
श्रेष्ठ मार्ग पर चला, तुम बिन हमारा कौन है।।
ईश्वर तुम्हीं दया करो, तुम बिन ....

प्रार्थना

मेरा उद्देश्य हो प्रभु, आज्ञा को तेरी पालना।
कर कर कमाई धर्म की, अर्पण तेरे कर डालना।।
मानव के नाते हे पिता, जाऊँ कहीं जो भूल मैं।
इतनी विनय है आपसे, बन कर सखा संभालना।।
मेरा उद्देश्य हो प्रभु, आज्ञा को ....

जितने भी यज्ञ कर्म हों, श्रद्धा व प्रेम से करूँ।
आएं अभद्र भाव जो, उनको सदा ही टालना।।
मेरा उद्देश्य हो प्रभु, आज्ञा को ....

रक्षा तो मेरी तू करे, रक्षा में तेरी मैं रहूँ।
अपने गुणों के सांचे में, जीवन को मेरे ढालना।।
मेरा उद्देश्य हो प्रभु, आज्ञा को ....

मृत्यु का मुझको भय न हो, मांगूँ यही वरदान मैं।
बुद्धि मेधावी की मेरी, झोली में भिक्षा डालना।
मेरा उद्देश्य हो प्रभु, आज्ञा को ....

आस्था

क्र.सं.	ओ३म् भजन/गीत के बोल	पृ. सं.
1.	मेरा नाथ तू है, मेरा नाथ तू है	69
2.	तू ही एक सबका सहारा प्रभु है	70
3.	डूबतों को बचा लेने वाले, मेरी नैया है तेरे हवाले	71
4.	प्रभु सारी दुनिया से ऊँची तेरी शान है	72
5.	साथ ले लो पिता आगे बढ़ जाऊँगा	73
6.	मुझे आसरा है प्रभु बस तुम्हारा	74
7.	इन्साफ का मंदिर है यह, भगवान का घर है	75
8.	तुम्हीं मेरे बन्धु, सखा तुम्हीं हो	76
9.	तेरे दर को छोड़कर, किस दर जाऊँ मैं	77
10.	जगत में चिन्ता मिटी उसी की जो तेरे चरणों में आ चुके हैं	78
11.	जिस नर में आत्म शक्ति है वह शीश झुकाना क्या जाने	79
12.	जीवन की रुलाती घड़ियों में, मिलता है तुम्हारा प्यार मुझे	80
13.	भगवान तुम्हारे दर पे, भक्त आन खड़े हैं	81
14.	सारे जहाँ के मालिक, तेरा ही आसरा है	82
15.	भरोसा कर तू ईश्वर पर, तुझे धोखा नहीं होगा	83
16.	हे निराधार, हे सर्वाधार, अधिकार तुम्हारे हाथों में	84

आस्था

मेरा नाथ तू है, मेरा नाथ तू है।
नहीं मैं अकेला मेरे साथ तू है।।

चला जा रहा हूँ मैं राह पे तुम्हारी
राहों में आएं जो तूफान भारी
थामे हुए जो मेरा हाथ तू है।।
मेरा नाथ तू है, मेरा नाथ तू है।
नहीं मैं अकेला मेरे साथ तू है।।

मेरा इष्ट तू है मैं तेरा पुजारी
तेरा खेल मैं हूँ तू मेरा खिलाड़ी
मेरी जिन्दगी की है वो हर बात तू है।।
मेरा नाथ तू है, मेरा नाथ तू है।।
नहीं मैं अकेला मेरे साथ तू है।।

तेरा दास हूँ मैं तेरे गीत गाऊँ
तुझे भूल कर ना कभी भूल पाऊँ
तू ही दीन बन्धु पितु मात तू है।।

मेरा नाथ तू है, मेरा नाथ तू है।
नहीं मैं अकेला मेरे साथ तू है।।

आस्था

तू ही एक सबका सहारा प्रभु है,
तू ही जन्म दाता हमारा प्रभु है।

तेरा नाम सुनते हैं सब दीन बन्धु,
इसी से तो तुझको पुकारा प्रभु है।
तू ही एक सबका सहारा ....

तू ही योनियों का है धन प्राण जीवन।
तेरी भक्ति अमृत की धारा प्रभु है।।
तू ही एक सबका सहारा ....

करूँ भेंट क्या वस्तु भगवन तुम्हारे,
सभी विश्व मण्डल तुम्हारा प्रभु है।
तू ही एक सबका सहारा ....

बिना देखे मरता है तुझ पर जमाना,
तेरा नाम भक्तों को प्यारा प्रभु है।
तू ही एक सबका सहारा ....

आस्था

डूबतों को बचा लेने वाले, मेरी नैया है तेरे हवाले।

लाख अपनों को मैंने पुकारा, सबके सब कर गए हैं किनारा।
और देता न कोई दिखाई, सिर्फ तेरा ही अब तो सहारा।
कौन तुझ बिन भँवर से निकाले।
मेरी नैया है तेरे हवाले।

जिस समय तू बचाने पे आए, आग में भी बचा कर दिखाए।
जिस पर तेरी दया दृष्टि होवे, उसपे कैसे कहीं आँच आए।
आँधियों में भी तू ही सँभाले।
मेरी नैया है तेरे हवाले।

पृथ्वी सागर व पर्वत बनाए, तूने धरती पे दरिया बहाए।
चाँद सूरज करोड़ों सितारे, फूल आकाश में भी खिलाए।
तेरे सब काम जग से निराले।
मेरी नैया है तेरे हवाले।

बिन तेरे चैन मिलता नहीं है, फूल आशा का खिलता नहीं है।
तेरी मर्जी बिना तो जहाँ में, 'पथिक' पत्ता भी हिलता नहीं है।
तेरे वश में अंधेरे उजाले।।
मेरी नैया है तेरे हवाले।

आस्था

प्रभु सारी दुनियाँ से, ऊँची तेरी शान है।
कितना महान् है तू, कितना महान है।।

यहाँ वहाँ कोने कोने, तू ही मशहूर है।
निकट से निकट और, दूर से भी दूर है।
तुझमें समाया हुआ, सकल जहान है।।
प्रभु सारी दुनियाँ से ऊँची ....

तू ही एक मालिक है, सारी कायनात का।
फूलों भरी क्यारियों का, तारों की जमात का।
तेरी ही जमीन है ये, तेरा आसमान है।।
प्रभु सारी दुनियाँ से ऊँची ....

सबने जो रंग देखे, सभी तेरे रंग हैं।
जग में अनेक तेरे, पालन के ढंग हैं।
तुझको तो छोटे बड़े, सबका ही ध्यान है।।
प्रभु सारी दुनियाँ से ऊँची ....

जितने भी दुनियाँ में, जीव देहधारी है।
सभी तेरे प्यार के, समान अधिकारी हैं।
'पथिक' सभी को तूने, दिया वरदान है।।

प्रभु सारी दुनियाँ से, ऊँची तेरी शान है।
कितना महान् है तू, कितना महान है।।

आस्था

साथ ले लो पिता, आगे बढ़ जाऊँगा।
वरना सम्भव है, मैं भी फिसल जाऊँगा।।

राहें जितनी खड़ी और पथरीली हैं,
कांटों झाड़ी भरी और जहरीली हैं,
दो सहारा कि इनमें मैं फँस जाऊँगा।।
वरना सम्भव है मैं भी ....

भोग विषयों की उठती है इक इक लहर
मुझ को उलझा डुबाने चली हर प्रहर
दे दो पतवार वरना न तन पाऊँगा।।
वरना सम्भव है मैं भी ....

दुनिया इस ओर कहती है आ मौज ले
पर उधर धर्म कहता है दु:ख मोल ले
तुम कहोगे मुझे जैसा कर पाऊँगा।।
वरना सम्भव है मैं भी ....

सत्य कहता हूँ भूला जभी मैं तुम्हें
पायी दुनिया मगर एक न पाया तुम्हें
बिन तुम्हारे मैं आखिर किधर जाऊँगा।।
साथ ले लो पिता, आगे बढ़ जाऊँगा।।
वरना सम्भव है मैं भी फिसल जाऊँगा

आस्था

मुझे आसरा है प्रभु बस तुम्हारा।
तुम्हें छोड़ अब कौन सा लूँ सहारा।
भँवर बीच चक्कर पड़ा खा रहा हूँ।
न देखा कभी शान्ति सुख का किनारा।।
मुझे आसरा है प्रभु ....

तिमिर घोर मानस-भवन में है छाया।
करो दूर अपनी परम-ज्योति द्वारा।।
नहीं कोई तुम सा सुना है हितैषी।
लिया देख मैंने है संसार सारा।
मुझे आसरा है प्रभु ....

सुखी वह तुम्हारा किया जिसने सुमिरन।
दु:खी वह है कि जिसने तुम्हें है बिसारा।।
हृदय कुँज उजड़ा हुआ फिर हरा हो।
बहा दो जो तुम स्नेह की वारि-धारा।।
मुझे आसरा है प्रभु ....

कहेगा तुम्हें कौन फिर करुणा-सिन्धु
'प्रकाश' आर्य को जो न तुमने उबारा।।
मुझे आसरा है प्रभु ....

आस्था

इंसाफ का मंदिर है ये, भगवान का घर है,
कहना है जो कहले, तुझे किस बात का डर है।
इंसाफ का मंदिर है ये भगवान का ....

है पास तेरे जिसकी, अमानत उसे दे दे
निर्धन भी है इंसान, मुहब्बत उसे दे दे,
जिस दर पे सभी एक हैं, बन्दे यह वह दर है,
इंसाफ का मंदिर है ये भगवान का ....

मायूस ना हो हार के, तकदीर की बाजी,
प्यारा है वह गम, जिसमें भगवान भी हो राजी,
दुख-दर्द मिले, दुख-दर्द मिले,
जिसमें वह प्यार अमर है,
यह सोच ले हर बात की, दाता को खबर है,

इंसाफ का मंदिर है ये भगवान का घर है
कहना है जो कहले, तुझे किस बात का डर है।

आस्था

तुम्हीं मेरे बन्धु, सखा तुम्हीं हो, तुम्हीं मेरी माता, तुम्हीं पिता हो,
तुम्हीं मेरे रक्षक, तुम्हीं मेरे पालक, तुम्हीं इष्ट मेरे तुम्हीं देवता हो।।
तुम्हीं मेरी माता, तुम्हीं पिता हो।

तुम्हें छोड़ किसकी शरण में मैं जाऊँ, है सब कुछ तेरा क्या तुम पर चढ़ाऊँ।
तुम्हीं मेरी विद्या तुम्हीं मेरी दौलत, मैं क्या-क्या बताऊँ कि तुम मेरे क्या हो।
तुम्हीं मेरी माता, तुम्हीं पिता हो।

तुम्हीं ने बनाए शशि भानु तारे, अगन और गगन जल हवा भूमि सारे।
तुम्हीं ने रचा यह संसार सारा, अजब कारीगर हो अजब रचयिता हो।।
तुम्हीं मेरी माता, तुम्हीं पिता हो।

जमाना तुझे ढूढ़ता फिर रहा है, न पाया किसी को छुपा तू कहाँ है।
पता मिल रहा है पत्ते-पत्ते से तेरा, गलत है जो कहते हैं तुम लापता हो।
तुम्हीं मेरी माता, तुम्हीं पिता हो।

अजब तेरी लीला अजब तेरी माया, सभी से अलग है सभी में समाया।
सत्ता से तेरी मुकर जाएँ कैसे ? की हर सूं 'वीरेन्द्र' रहे जगमगा रहे जगमगा हो।
तुम्हीं मेरी माता, तुम्हीं पिता हो।

आस्था

तेरे दर को छोड़कर, किस दर जाऊँ मैं,
सुनता मेरी कौन है, किसे सुनाऊं मैं।।

जब से याद भुलाई तेरी, लाखों कष्ट उठाए हैं,
क्या जानूं इस जीवन अन्दर, कितने पाप कमाए हैं।
हूँ शर्मिन्दा आपसे, क्या बतलाऊँ मैं।।
तेरे दर को छोड़कर ....।।1।।

मेरे पाप कर्म ही तुझसे, प्रीत न करने देते हैं,
कभी जो चाहूँ मिलूँ आपको, रोक मुझे ये लेते हैं।
कैसे स्वामी आपके, दर्शन पाऊँ मैं।।
तेरे दर को छोड़कर ....।।2।।

है तू नाथ! वरों का दाता, तुझसे सब वर पाते हैं,
ऋषि, मुनि और योगी सारे, तेरे ही गुण गाते हैं।
छींटा दे दो ज्ञान का, होश में आऊँ मैं।।
तेरे दर को छोड़कर ....।।3।।

जो बीती सो बीती लेकिन, बाकी उमर संभालूँ मैं,
प्रेमपाश में बंधा आपके, गीत प्रेम के गा लूँ मैं।
जीवन प्यारे 'देश' का, सफल बनाऊँ मैं।।
तेरे दर को छोड़कर ....।।4।।

आस्था

जगत में चिन्ता मिटी उसी की, जो तेरे चरणों में आ चुके हैं।
वही हमेशा हरे भरे हैं, जो तेरे चरणों में आ चुके हैं।।

ना पाया तुझको वजीर बनकर, ना पाया तुझको फकीर बन कर।
उन्हीं को दर्शन हुए हैं तेरे, जो तेरे चरणों में आ चुके हैं।।

ना पाया तुझको किसी ने बल से, ना पाया तुझको किसी ने छल से।
वही परम पद को पा गए हैं, जो तेरे चरणों में आ चुके हैं।।

किसी ने जग में करी भलाई, किसी ने जग में करी बुराई।
वही सुमारग पर चल पड़े हैं, जो तेरे चरणों में आ चुके हैं।।

प्रभु जी विनती सुनो हमारी, बनाओ बिगड़ी दशा हमारी।
निराश्रितों के हो आसरा तुम, तुम्हारे चरणों में आ चुके हैं।।

जगत में चिन्ता मिटी उसी की, जो तेरे चरणों में आ चुके हैं।
वही हमेशा हरे भरे हैं, जो तेरे चरणों में आ चुके हैं।।

आस्था

जिस नर में आत्म शक्ति है, वह शीश झुकाना क्या जाने।
जिस दिल में ईश्वर भक्ति है, वह पाप कमाना क्या जाने।।

मन मन्दिर में भगवान् बसा, जो उसकी पूजा करता है।
पत्थर के देवता पर जाकर, वह फूल चढ़ाना क्या जाने।।

माँ बाप की सेवा करता जो, और उनके दु:खों को हरता जो।
ईश्वर का है विश्वास जिसे, दुख में घबराना क्या जाने।।

जो खेला है तलवारों से और अग्नि के अंगारों से।
रणभूमि में जाकर आगे, वह कदम हटाना क्या जाने।।

जिस नर में आत्म शक्ति है, वह शीश झुकाना क्या जाने।
जिस दिल में ईश्वर भक्ति है, वह पाप कमाना क्या जाने।।

जिसने रसना और वासना पर नियन्त्रण कर लिया वही योगी है।

आस्था

जीवन की रूलाती घड़ियों में, मिलता है तुम्हारा प्यार मुझे।
कुछ चाह न बाकी रहती है, प्रभु आ के तेरे दरबार मुझे।।

मेरे दिल के गगन पर आ के कभी, जब गम की घटा छा जाती है।
इक पल में कहीं से दया तेरी, तब बन के हवा आ जाती है।
तुझे रक्षक सब का कहने में, फिर क्यों हो भला इनकार मुझे।।
जीवन की रूलाती घड़ियों में ....
प्रभु दर पे तेरे आने वाला, झोली अपनी भर लेता है।
तेरे दर से प्रभु मैं क्या माँगूँ, बिन माँगे तू सब कुछ देता है।
जो तेरी इच्छा है दाता, हरदम है वही स्वीकार मुझे।।
जीवन की रूलाती घड़ियों में ....
जन-जन को परख कर देख लिया, पर तेरे बराबर कोई नहीं।
दुनियाँ में बहुत से दर हैं मगर, तेरे दर से बड़ा दर कोई नहीं।
क्यों और किसी की चाह करूँ, जब तुझ सा मिला आधार मुझे।।
जीवन की रूलाती घड़ियों में ....
जब तक मैं 'पथिक' दुनियाँ में रहूँ, बस एक यही मेरा काम रहे।
मेरे दिल में तुम्हारी याद रहे, होठों पे प्रभु तेरा नाम रहे।
रहे प्यार तुम्हारे चरणों में, चाहे जन्म मिले सौ बार मुझे।।
जीवन की रूलाती घड़ियों में ....

आस्था

भगवान तुम्हारे दर पे, भक्त आन खड़े हैं।
संसार के बन्धन से परेशान खड़े हैं।
ओ मालिक मेरे! ओ मालिक मेरे ......
संसार के निराले, कलाकार तुम्हीं हो।
सब जीव जन्तुओं के, सृजनहार तुम्हीं हो।
तुझ परम प्रभु का मन में, लिए ध्यान खड़े हैं।।
संसार के बधन से परेशान खड़े हैं....
ओ मालिक मेरे! ओ मालिक मेरे ......
तुम वेद ज्ञान दाता, पिताओं के पिता हो।
वह राज कौन सा है, जो आपसे छिपा हो।
हम तो हैं अनाड़ी बालक, बिना ज्ञान खड़े हैं।।
संसार के बंधन से परेशान खड़े हैं....
ओ मालिक मेरे! ओ मालिक मेरे ......
सुनकर विनय हमारी, स्वीकार करोगे।
मझधार में है नैया, प्रभो पार करोगे।
हर कदम कदम पर आगे, ये तूफान खड़े हैं।।
संसार के बंधन से परेशान खड़े हैं....
ओ मालिक मेरे! ओ मालिक मेरे ......
दुनियाँ में आप जैसा, कोई और नहीं है।
इस ठौर के बराबर, कहीं ठौर नहीं है।
अपनी तो 'पथिक' मन्जिल है, जो पहचान खड़े हैं।।
संसार के बंधन से परेशान खड़े हैं....
ओ मालिक मेरे! ओ मालिक मेरे ......

आस्था

सारे जहाँ के मालिक, तेरा ही आसरा है,
राजी हैं हम उसी में, जिसमें तेरी रज़ा है।।
सारे जहाँ के मालिक, तेरा ही आसरा है....।।1।।

हम क्या बतायें तुझको, सब कुछ तुझे खबर है,
हर हाल में हमारी, तेरी तरफ नजर है।
किस्मत है वो हमारी, जो तेरा फैसला है,
सारे जहाँ के मालिक, तेरा ही आसरा है....।।2।।

हाथों को हम दुआ की, खातिर में लायें कैसे,
सजदे में तेरे आकर, सिर को झुकायें कैसे।
मजबूरियाँ हमारी, सब तू ही जानता है,
सारे जहाँ के मालिक, तेरा ही आसरा है....।।3।।

रो कर कटे या हँसकर, कटती है जिन्दगानी,
तू गम दे या खुशी दे, सब तेरी मेहरबानी।
तेरी खुशी समझकर, सब गम भुला दिया है,
सारे जहाँ के मालिक, तेरा ही आसरा है....।।4।।

दुनियाँ बना के मालिक, जाने कहाँ छिपा है,
आता नहीं नजर तू, बस एक यही गिला है।
भेजा है इस जहाँ में, जो तेरा शुक्रिया है,
सारे जहाँ के मालिक, तेरा ही आसरा है....।।5।।

आस्था

भरोसा कर तू ईश्वर पर, तुझे धोखा नहीं होगा।
यह जीवन बीत जाने पर, तुझे रोना नहीं होगा।।1।।

कभी सुख है कभी दुख है, यह जीवन धूप छाया है।
हँसी में ही बिता डालो, बिताना ही यह माया है।।2।।

जो सुख आए तो हँस देना, जो दुख आए तो सह लेना।
न कहना कुछ कभी जग से, प्रभु से ही तू कह लेना।।3।।

ये कुछ भी तो नहीं जग में, तेरे बस कर्म की माया।
तू खुद ही धूप में बैठा, लखे निज रूप की छाया।।4।।

कहाँ यह था कहाँ तू था, कभी तो सोच ऐ बन्दे।
झुका कर शीश को कह दे, प्रभु वन्दे प्रभु वन्दे।।5।।

भरोसा कर तू ईश्वर पर..........

सुविचार

जो सह नहीं सकता, वह रह नहीं सकता।

आस्था

हे निराधार, हे सर्वाधार, अधिकार तुम्हारे हाथों में।
सृष्टि कर्त्ता, पालन कर्त्ता, संहार तुम्हारे हाथों में।।1।।

हे सर्वेश्वर, हे योगेश्वर, हे ज्ञानेश्वर, हे प्राणेश्वर।
भक्ति मुक्ति शक्ति सब कुछ, दातार तुम्हारे हाथों में।।2।।

हम दीन हैं तुम दीनन बन्धु, हम बिन्दु हैं तुम हो सिन्धु।
दु:ख दूर करो सन्तान हरो, उद्धार तुम्हारे हाथों में।।3।।

जीवन नैय्या मझधार में है, चाहो तो पार लगा देना।
इस पार करो उस पार करो, पतवार तुम्हारे हाथों में।।4।।

हम तुमको कभी-कभी भजते, पर तुम तो कभी नहीं तजते।
हे उपकारी उपकार करो, उपकार तुम्हारे हाथों में।।5।।

उद्धार हमारा निश्चय है, करतार तुम्हारे हाथों में।
हे निराधार, हे सर्वाधार, अधिकार तुम्हारे हाथों में।।6।।

भक्ति

क्र.सं.	भक्ति भजन/गीत के बोल	पृ. सं.
1.	जगत में चिंता मिटी उन्हीं की	87
2.	एक बार भजन कर ले, मुक्ति का यत्न कर ले	88
3.	ओ३म् को न याद किया, जीवन बरबाद किया	89
4.	तू कर बन्दगी और भजन धीरे-धीरे	90
5.	दो घड़ी भगवान का ले नाम तू	91
6.	मेरा उद्देश्य है यही, आज्ञा को तेरी पालना	92
7.	तू ही इष्ट मेरा, तू ही देवता है	93
8.	परमेश्वर का कर गुणगान, वह ही है रक्षक भगवान	94
9.	प्रभु की याद में घड़ियाँ, जो जीवन की बितायेगा	95
10.	परम पिता से प्रीत लगा, भवसागर से पार हो जा	96
11.	आनन्द स्त्रोत बह रहा, पर तू उदास है	97
12.	जो करता रहेगा भजन धीरे-धीरे	98
13.	मिलता है सच्चा सुख, भगवान तुम्हारे चरणों में	99
14.	दाता तेरे चरणों का दीदार जो मिल जाये	100
15.	ईश्वर तुम्हीं दया करो, तुम बिन कौन हमारा है	101
16.	ईश्वर यही विनय है, एक आसरा तेरा हो	102
17.	मन में मिलन की चाह तो लाये कभी नहीं	103
18.	आओ, संग हमारे आओ, भक्ति करो भगवान की	104
19.	बैठ दो घड़ी कर प्रभु का भजन	106
20.	पावन प्रभात काल में, ईश्वर भजन किया करो	107
21.	प्रात: उठकर जो प्रभु के गुण गायेगा	108
22.	प्रभु को याद कर बन्दे, वही सबसे प्यारा है	109
23.	पाके सुन्दर बदन, कर प्रभु का भजन	110

24.	क्या लेकर आया जग में, क्या लेकर चले जाओगे	111
25.	नमस्ते नाथ अविनाशी, तुम्हें मस्तक नवाते हैं	112
26.	है पत्थरों वाली नदी संसार साथियों	113
27.	मानव जीवन पाकर बन्दे कर ले प्रभु से प्यार	114
28.	प्रभु भक्ति में मन को लगाइये, वह सबका पालनहार है	115
29.	कर ईश्वर से प्यार, मानव कर ईश्वर से प्यार	116
30.	कुछ नेक काम कर ले, दुनिया में आने वाले	117
31.	आओ ले लें नाम प्रभु का, जीवन बीता जाय	118
32.	जो ईश्वर में मन को लगाते रहेंगे	119
33.	ईश्वर का गुणगान किया कर, कष्ट क्लेश मिटाने को	120
34.	प्रेमी बनकर प्रेम में ईश्वर के गुण गाया कर	121
35.	आओ जगदीश्वर के गुण गाओ	122
36.	जिसने संसार है यह रचाया हुआ	123
37.	ईश्वर के गुण गाओ, वह सबका स्वामी है	124
38.	मन के संशय छोड़ के सारे आया तेरे द्वार	125
39.	मत भूल मनुज पछतायेगा, प्रभु नाम सुमर सुख पायेगा	126
40.	ईश्वर से संग जोड़ मानव, ईश्वर से संग जोड़	127
41.	आया हूँ तेरे दर पे भक्तिभाव को लिए	128
42.	अब सौप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में	129
43.	अचरज है जल में रहकर भी, मछली को प्यास है	130
44.	अजब हैरान हूँ भगवन्! तुम्हें कैसे रिझाऊँ मैं	131
45.	ये जीवन तुम्हारा तुम्हीं को है अर्पण	132
46.	प्रभु तुम अणु से भी सूक्ष्म हो	133

भक्ति

जगत में चिन्ता मिटी उन्हीं की।
जो तेरे चरणों में आ चुके हैं।
वो ही हमेशा हरे भरे हैं।
जो तेरे चरणों में आ चुके हैं।।1।।

न पाया राजा वजीर बनकर।
न पाया तुझ को फकीर बनकर।।
उन्हीं को दर्शन हुए हैं तेरे।
जो तेरे चरणों में आ चुके हैं।।2।।

न पाया तुझको किसी ने बल से।
न पाया तुझको किसी ने छल से।।
वहीं परमपद को पा गये हैं।
जो तेरे चरणों में आ चुके हैं।।3।।

किसी ने जग में करी भलाई।
किसी ने जग में करी बुराई।।
वही सुमार्ग पर चल पड़े हैं।
जो तेरे चरणों में आ चुके हैं।।4।।

प्रभु जी विनती सुनो हमारी।।
बनाओ बिगड़ी दशा हमारी।।
निराश्रितों के हो आसरा तुम।
तुम्हारे चरणों में आ चुके हैं।।

भक्ति

एक बार भजन करले, मुक्ति का यतन कर ले।
कट जायेंगे जन्म-मरण, प्रभु का चिन्तन कर ले।।
एक बार भजन कर ले ....

यह मानव का चोला, हर बार नहीं मिलता।
जो गिर गया डाली से, वो फूल नहीं खिलता।।
ये मौका जीवन का, गुलजार चमन कर ले।।
एक बार भजन कर ले ....

नर इन कानों से तू, सुन ऋषियों की वाणी।
मन को ठहरा करके, बन जा आत्मज्ञानी।
जिह्वा तो चले मुख में, अब ओ३म् जपन कर ले।।
एक बार भजन कर ले ....

इस मैली चादर में, हैं दाग लगे कितने।
पर ज्ञान की साबुन में, हैं झाग भरे इतने।
धुल जाएगी सब स्याही, उजला तन मन कर ले।।
एक बार भजन कर ले ....

वेदों में गूँज रहीं, मंत्रों की मधुर ध्वनियाँ।
बलिदान के इस युग में, तू गूँथ नई कड़ियाँ।
अब तो प्रभु के आगे, नीची गर्दन कर ले।।
एक बार भजन कर ले ....

भक्ति

ओ३म् को न याद किया जीवन बरबाद किया।
हाय रे मानव यह क्या किया तूने यह क्या किया।।

कोमल सा फूल प्यारे जिस ने बनाया तुझे,
उसके ना पास गया ले गई माया तुझे
विषयों ने वार किया पहले बीमार किया।
हाय रे मानव यह क्या किया .....

भंवरे की भाँति तूने हर गुल से प्यार किया,
एक फूल चम्पा का था उसके न पास गया।
यदि उसके पास जाता मुक्ति का आनंद पाता,
हाय रे मानव यह क्या किया .....

बन परवाना ऋषि दयानंद आया था,
सत् की शमां के ऊपर खुद को खपाया था।
जनता के लिये जीया और जीवन वार दिया।
'भूषण' तूने कुछ न किया केवल खाया-पिया।
हाय रे मानव यह क्या किया .....

भक्ति

तू कर बन्दगी और भजन धीरे-धीरे।
मिलेगी प्रभु की शरण धीरे-धीरे।।
तू कर बन्दगी और .... ।।1।।
दमन इन्द्रियों का तू करता चला जा।
फिर काबू में आयेगा मन धीरे-धीरे।।
तू कर बन्दगी और .... ।।2।।
सुनें कान तेरे सदा वेद वाणी।
तू कर वेद वाणी मनन धीरे-धीरे।।
तू कर बन्दगी और .... ।।3।।
सफर अपना आसान करता चला जा।
छूटेगा यह आवागमन धीरे-धीरे।।
तू कर बन्दगी और .... ।।4।।
तू दुनिया में शुभ काम करता चला जा।
तू कर शुद्ध अपना चलन धीरे-धीरे।
तू कर बन्दगी और .... ।।5।।

सुविचार

हे ईश्वर, हमें प्रतिदिन तुम्हारी समीपता प्राप्त हो।

भक्ति

दो घड़ी भगवान का ले नाम तू।
छोड़कर दुनियाँ के सारे काम तू।।
दो घड़ी का नाम ही रंग लायेगा।
दे समय थोड़ा सुबह और शाम तू।।
दो घड़ी भगवान का ....
अपने दिल को साफ कर आसन जमा।
मन की चंचलता को प्यारे थाम तू।।
दो घड़ी भगवान का ....
त्याग कर आलस्य को जा सत्संग में।
प्रेम रस का भक्तवर पी जाम तू।।
दो घड़ी भगवान का ....
देख तेरे काम की यह बात है।
पायेगा दुनियां में फिर आराम तू।।
दो घड़ी भगवान का ....

सुविचार

ओ३म् क्रतो स्मर।

हे जीव! तू ओ३म् का स्मरण कर।

भक्ति

मेरा उद्देश्य है यही, आज्ञा को तेरी पालना,
कर के कमाई धर्म की, चरणों में तेरे डालना।
मानव के नाते जो जाऊँ, तुझको भूल मैं कभी,
विनय है मेरी आपसे बनकर सखा संभालना।
मेरा उद्देश्य है यही ....।।1।।

जितने भी यज्ञ-कर्म हों, श्रद्धा, प्रेम से करूँ,
आयें अभद्र भाव जो, उनको सदा तू टालना।
मेरा उद्देश्य है यही ....।।2।।

रक्षा तो तुम मेरी करो, रक्षा में तेरी मैं रहूँ,
अपने गुणों के साँचे में, जीवन को मेरे ढालना।
मेरा उद्देश्य है यही ....।।3।।

मृत्यु का मुझको भय न हो, माँगू मैं तुझसे वर यही,
मेधा बुद्धि की भिक्षा भी, झोली में मेरी डालना।
मेरा उद्देश्य है यही ....।।4।।

सुविचार

नास्य क्षीयन्त ऊतयः।

ईश्वर की रक्षाएं कभी कम नहीं पड़तीं।

भक्ति

तू ही इष्ट मेरा, तू ही देवता है....
तू ही बन्धु सबका, तू माता-पिता है।
नहीं है कोई चाहना और दिल में....
तुझे चाहता हूँ, यही चाहना है।।1।।
तू ही इष्ट मेरा ....
ये क्यों ढूंढ़ता फिर रहा है जमाना?
तू दिल में है और दर्दे-दिल की दवा है।
खतावार हैं हम सभी दुनियाँ वाले -
मगर विश्व में एक तू बेखता है।।2।।
तू ही इष्ट मेरा ....
जहालत से हम तुझको देखें न देखें -
मगर तू हमें हर घड़ी देखता है।
पता पत्ता-पत्ता तेरा दे रहा है -
ये बिल्कुल गलत है कि तू लापता है।।3।।
तू ही इष्ट मेरा ....
अगर दर्द दिल है तो दिल को टटोलो -
कि दिल में ही इस दर्दे दिल की दवा है।
बहुत कोशिशें की बहुत सर खपाया -
समझ में न आया कि संसार क्या है।।4।।
तू ही इष्ट मेरा ....
जवानों जवानी में कुछ काम कर लो -
समझते हो जिसको जवानी हवा है।
'मुसाफिर' जरा इस मुसाफिर से पूछो
कहाँ से चला है? कहाँ जा रहा है।।4।।
तू ही इष्ट मेरा ....

भक्ति

परमेश्वर का कर गुणगान,
वह ही है रक्षक भगवान्।
ओ३म्-ओ३म् का जाप किये जा,
गायत्री का पाठ किये जा।
हो जाए तेरा कल्याण।।
वह ही है रक्षक भगवान...........
सत्संग में नित्य आया कर,
जीवन सफल बनाया कर,
माया का मत कर अभिमान।।
वह ही है रक्षक भगवान...........
सेवा अपना लक्ष्य बना ले,
दीन-दु:खी के कष्ट मिटा दे।
पर का तू कर कल्याण।।
वह ही है रक्षक भगवान...........
'नन्दलाल' तू होश में आ,
जीवन अपना सफल बना।
अपना आप करो कल्याण।।
वह ही है रक्षक भगवान...........

या वै भूमा तत्सुखम्।
सुख ईश्वर में है।

भक्ति

प्रभु की याद में घड़ियाँ, जो जीवन की बितायेगा।
कमाई का यह धन है, सफर में काम आएगा।
बिना इसके किसी धन ने, कभी न साथ जाना है,
सिकन्दर की दशा सबको, सुना कर के चेताना है।
गया जो चेत निश्चय ही, प्रभु को न भुलाएगा।।(1)
प्रभु की याद में घड़ियाँ ....
महाजन बन गये लाखों, प्रभु से नेह लगा करके,
निभाया धर्म याचक का, किसी के काम आ करके।
इसी यश को कमा करके, अमर यश को बनाएगा।।(2)
प्रभु की याद में घड़ियाँ ....
लगा श्वासों की पूँजी को, अमर साथी के चिन्तन में,
अनोखे काम कर डाले, ऋषि सेवा के जीवन में।
पढ़ेगा जो ऋषि-जीवन इसी शिक्षा को पायेगा।।(3)
प्रभु की याद में घड़ियाँ ....
कमाना ''देश'' इस धन को, कमाया जा सके जितना,
बुराइयों से बचा निज को, बचाया जा सके जितना।
विदाई के समय तू भी ऋषि सम मुस्कुराएगा।।(4)
प्रभु की याद में घड़ियाँ ....

भक्ति

परम पिता से प्रीत लगा, भवसागर से पार हो जा।
सत्संग दे विच आया कर, गुण ईश्वर के गाया कर।
जीवन वेद अनुसार बना, भवसागर से पार हो जा।
परम पिता से प्रीत लगा ....
अन्दर है प्रीतम तेरा, मन मन्दिर में है डेरा।
ज्ञान की सच्ची जोत जगा, भवसागर से पार हो जा।।
परम पिता से प्रीत लगा ....
चल रही विषयों की अंधेरी, जोत बुझाई जिसने तेरी।
उससे अपना आप छुड़ा, भवसागर से पार हो जा।।
परम पिता से प्रीत लगा ....
विषयों को 'नन्दलाल' तूं छोड़ परमपिता से नाता जोड़।
जीवन अपना शुद्ध बना, भवसागर से पार हो जा।।
परम पिता से प्रीत लगा ....

सुविचार

इन्द्राय पवते मदः

ईश्वर मनुष्य के लिए आनन्द बरसाता है।

भक्ति

आनन्द स्त्रोत बह रहा, पर तू उदास है।
अचरज है जल में रहकर भी, मछली को प्यास है।।1।।
फूलों में ज्यों सुवास है, ईख में मिठास है।
भगवान् का त्यों विश्व के, कण-कण में वास है।।2।।
आनन्द स्तोत्र बह रहा, पर ....
टुक ज्ञानचक्षु खोलकर, तू देख तो सही।
जिसको तू ढूँढ़ता है वह, सदा तेरे पास है।।3।।
आनन्द स्तोत्र बह रहा, पर ....
कुछ तो समय निकाल, आत्म शुद्धि के लिए।
नर जन्म का उद्देश्य न केवल विलास है।।4।।
आनन्द स्तोत्र बह रहा, पर ....
आनंद, मोक्ष को ना पा, सकेगा तब तलक तू।
जब तलक 'प्रकाश', इन्द्रियों का दास है।।5।।
आनन्द स्तोत्र बह रहा, पर ....

सुविचार

यत्र सोमः सदमित् तत्र भद्रम्

जहाँ परमेश्वर की ज्योति है, वहाँ कल्याण ही है।

भक्ति

जो करता रहेगा भजन धीरे-धीरे,
तो मिल जाए भगवन् उसे धीरे-धीरे।।1।।
जगत् में असम्भव है कुछ भी नहीं
जो करता रहेगा, यतन धीरे-धीरे।।2।।
जो करता रहेगा भजन ....
अगर उससे मिलने की दिल में लगन हो,
करो शुद्ध अन्तःकरण धीरे-धीरे।।3।।
जो करता रहेगा भजन ....
प्रभु एक है एक है उसकी वाणी,
कर उस पे अपना चलन धीरे-धीरे।।4।।
जो करता रहेगा भजन ....
चलो सत्य पथ पर प्रभु को पहिचानो,
जो कर लो उसी का मनन धीरे-धीरे।।5।।
जो करता रहेगा भजन ....

सुविचार

**वही दुःख उठाये जो प्रभु को भुलाये।
समय कीमती को भजन बिना बिताये।।**

भक्ति

मिलता है सच्चा सुख, भगवान् तुम्हारे चरणों में।
यह विनती है पल-पल छिन-छिन, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।1।।
मिलता है सच्चा सुख भगवान् ....

चाहे वैरी कुल संसार बने, चाहे जीवन मुझ पर भार बने।
चाहे मौत गले का हार बने, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।2।।
मिलता है सच्चा सुख भगवान् ....

चाहे कष्टों ने मुझे घेरा हो, चाहे चारों ओर अंधेरा हो।
पर चित्त न डगमगा मेरा हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।3।।
मिलता है सच्चा सुख भगवान् ....

मेरी जिह्वा पर तेरा नाम रहे, तेरी याद सुबह और शाम रहे।
बस काम यह आठों याम रहे, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।4।।
मिलता है सच्चा सुख भगवान् ....

चाहे कांटों में मुझे चलना हो, चाहे अग्नि में मुझे जलना हो।
चाहे छोड़ के देश निकलना हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।5।।
मिलता है सच्चा सुख भगवान् ....

भक्ति

दाता तेरे चरणों का, दीदार जो मिल जाये।
पापों भरे जीवन का, नक्शा ही बदल जाये।
मशहूर दया सिन्धु, प्रभु नाम तुम्हारा है।
हम पर भी दया कर दो, जीवन यह संवर जाये।।
दाता तेरे चरणों का दीदार ....

दुर्लभ मानव चोला, मुक्ति का खजाना है।
अनमोल सी चादर को, कहीं दाग न लग जाये।।
दाता तेरे चरणों का दीदार ....

मतलब के हैं सब नाते, बस तेरा सहारा है।
मोहमाया के बन्धन में, जीवन न उलझ जाये।।
दाता तेरे चरणों का दीदार ....

अनमोल जन्म हीरा - हर बार नहीं मिलता।
गठड़ी को सम्भाल अपनी - कहीं माल न लुट जाये।।
दाता तेरे चरणों का दीदार ....

इस भक्त की तो भगवन, बस एक तमन्ना है।
तेरा नाम हो होठों पर, और दम यह निकल जाये।।
दाता तेरे चरणों का दीदार ....

भक्ति

ईश्वर तुम्हीं दया करो, तुम बिन हमारा कौन है।
दुर्बलता दीनता हरो, तुम बिन हमारा कौन है।
माता तू ही पिता तू ही, बंधु तू ही सखा तू ही।
तू ही हमारा आसरा, तुम बिन हमारा कौन है।।1।।
ईश्वर तुम्हीं दया करो ....

जग को रचाने वाला तू, दुख को मिटाने वाला तू,
बिगड़ी बनाने वाला तू, तुम बिन हमारा कौन है।।2।।
ईश्वर तुम्हीं दया करो ....

तेरी दया को छोड़कर, कुछ भी नहीं हमें खबर।
जायें तो जायें हम किधर, तुम बिन हमारा कौन है।।3।।
ईश्वर तुम्हीं दया करो ....

तेरी लगन तेरा मनन, भक्ति तेरी तेरा भजन,
तेरी ही आते हम शरण, तुम बिन हमारा कौन है।।4।।
ईश्वर तुम्हीं दया करो ....

पुत्र हैं हम सभी तेरे, तू है पिता परमात्मा।
श्रेष्ठ मार्ग पर चला, तुम बिन हमारा कौन है।।5।।
ईश्वर तुम्हीं दया करो ....

भक्ति

ईश्वर यही विनय है, एक आसरा तेरा हो।
स्वामी पिता व माता, बस एक तू मेरा हो।
फूलों में गंध तेरी पत्तों में रंग तेरा
देखा न कोई जर्रा, जिस में न तू बसा हो।।1।।
ईश्वर यही विनय है ....

उस घर में सुख की वर्षा, होवें भला न क्यों कर।
जिस घर का बच्चा-बच्चा, प्रभु नाम में लगा हो।।2।।
ईश्वर यही विनय है ....

वर एक ही दयामय, मैं आप से ये पाऊँ।
बलिदान मेरा तन-मन, निज धर्म पे सदा हो।।3।।
ईश्वर यही विनय है ....

ममता के जाल में मैं, जकड़ा हुआ हूँ भगवन्।
करना उद्धार जबकि, अज्ञान में फंसा हूँ।।4।।
ईश्वर यही विनय है ....

सारा जगत् हो रोशन, वेदों की रोशनी से।
वैदिक धर्म का झंडा, हर देश में लगा हो।।5।।
ईश्वर यही विनय है ....

भक्ति

मन में मिलन की चाह तो, लाए कभी नहीं,
दर्शन तभी तो ईश के, पाए कभी नहीं।।1।।

वह फूल क्या बता सके, होती है क्या हँसी।
जिस पर पड़े बहार के, साए कभी नहीं।।2।।
मन में मिलन की चाह तो ....

हर वक्त बोलते रहे, क्या क्या जबान से,
नगमे प्रभु के झूम के, गाए कभी नहीं।।3।।
मन में मिलन की चाह तो ....

बातें हजार शौक से, सुनते हैं रात दिन,
ऋषियों के सदुपदेश ही, भाए कभी नहीं।।4।।
मन में मिलन की चाह तो ....

दु:खियों को देख राह में, बच कर निकल गए,
उनकी मदद में हाथ, हिलाए कभी नहीं।।5।।
मन में मिलन की चाह तो ....

दिल की जमी पै चैन की, बारिश कहाँ से हो,
बादल गगन में प्यार के, छाए कभी नहीं।।6।।
मन में मिलन की चाह तो ....

आखिर मिले तो क्यों मिले, मंजिल 'पथिक' तुझे,
मंजिल की ठीक राह पै, आए कभी नहीं।।7।।
मन में मिलन की चाह तो ....

भक्ति

आओ, संग हमारे आओ; भक्ति करो भगवान की।
समय निकालो थोड़ा-सा, और कर लो बातें ज्ञान की।।
प्रभु है अजर-अमर अविनाशी,
दुखड़े सबके हरता है।
जो भी सच्चे मन से ध्याये,
झोली उसकी भरता है।।
अगर तुम्हें सुख पाना है तो आदत डालो ध्यान की।।
आओ, संग हमारे आओ, भक्ति करो भगवान की।।1।।

परमेश्वर है सदा तुम्हारा,
खुद को उसके पास रखो।
सुख-दु:ख तो कर्मों का फल है,
ईश्वर पर विश्वास रखो।।
दु:ख में रोना, घबड़ा जाना, बातें हैं अज्ञान की।।
आओ, संग हमारे आओ, भक्ति करो भगवान की।।2।।

सांसों में, आँखों में, दिल की
धड़कन में प्रभु रहता है।

जारी पृष्ठ 105 पर ....

करने को शुभ कर्म निरन्तर,
वह तो हर पल कहता है।।
लेकिन झूठे सुख की खातिर हम सुनते शैतान की।।
आओ, संग हमारे आओ, भक्ति करो भगवान की।।3।।

बुरे कर्म का बुरा नतीजा,
सदा सभी को मिलता है।
परमेश्वर का बेटी-बेटा,
बुरे काम से डरता है।।
करता है नित सेवा वह तो हर दुखिया इन्सान की।।
आओ, संग हमारे आओ, भक्ति करो भगवान की।।4।।

अपना जीवन श्रेष्ठ बनाओ,
हर पल खुशियाँ पाओ रूप।
पंच-यज्ञ कर नित्य वेद पढ़,
फिर जग में छा जाओ रूप।।
वैदिक धर्मी ही रक्षा करता, माँ के सम्मान की।।
आओ, संग हमारे आओ, भक्ति करो भगवान की।।5।।

संसारी मानव सुखी होगा तब,
इदं न मम हृदयांगम करेगा तब।

भक्ति

बैठ दो घड़ी कर प्रभु का भजन।
बन्धनों से बच ले-2- करके भजन।।

रचा जिसने सुन्दर ये संसार सारा,
जगत् में उसी का है सब बसारा।
गीत गाओ उसी के-2 तू होकर मगन।।
बैठ दो घड़ी कर प्रभु ....
दया से है उसकी मनुज देह पाई
तेरे भोग की सारी चीजें बनाई।
किया कितना उपकार-2 जरा कर मनन
बैठ दो घड़ी कर प्रभु ....
तृष्णा न होगी कभी मन की पूरी,
करो लाख कोशिश रहती अधूरी।
संतोष सम ना-2 कोई और धन।।3।।
बैठ दो घड़ी कर प्रभु ....
अगर चाहता है तू उद्धार अपना,
बना ले प्रभु को ही आधार अपना।
मधुर जिन्दगी में-2 खिलेंगे सुमन।
बैठ दो घड़ी कर प्रभु ....

भक्ति

पावन प्रभात काल में, ईश्वर भजन किया करो।
श्रद्धा भरी भावना, भक्ति सुधा पिया करो।।
बचना अगर है पापों से, तीनो तरह के तापों से।
अन्तर्मुखी हो ओ३म का, चिन्तन सदा किया करो।।2।।
पावन प्रभात काल में ईश्वर ......
यज्ञमयी सुभावना बने, यही है साधना।
जो कुछ बने सुकर्म में, तन–मन व धन दिया करो।।3।।
पावन प्रभात काल में ईश्वर ......
पीड़ पराई देखकर, जो न पसीजे, नीच है।
दीन–दु:खी का दु:ख घटे, ऐसी कोई क्रिया करो।।4।।
पावन प्रभात काल में ईश्वर ......
कैसा कठोर काल हो, डरो नहीं संघर्ष से।
जीवन की जटिलताओं में, हँसते हुए जिया करो।।5।।
पावन प्रभात काल में ईश्वर ......
वैर विरोध व्यर्थ है, हृदय की हीन भावना।
फटे दिलों के वस्त्र को, स्नेह सहित सिया करो।।6।।
पावन प्रभात काल में ईश्वर ......
भौतिक भोग हेय है, ध्येय प्रभु का ध्यान है।
'पाल' पवित्र भाव से, आत्मप्रक्रिया करो।।7।।
पावन प्रभात काल में ईश्वर ......

भक्ति

प्रात: उठ के जो प्रभु गुण गाएगा।
वो ही जग में अमर फल पाएगा।
चलें आँधियाँ हजार, टूटें गमों के पहाड़,
कोई अपनी जगह से न हिलाएगा।।
प्रात: उठ के जो प्रभु गुण ....

दु:ख-दर्द सभी मिट जाएँ।
पग चूमती रहें सफलताएँ।
लिये मन में लगन, हुआ धुन में मगन,
उस प्रभु की शरण में जो आएगा।
प्रात: उठ के जो प्रभु गुण ....

यह दुनिया है किसने बनाई।
कोई कारीगर देवे न दिखाई।
इसे पालता है कौन व सम्भालता है कौन,
सभी उलझनों का भेद खुल जाएगा।
प्रात: उठ के जो प्रभु गुण ....

तुम चाहो जो 'पथिक' सुख पाना।
कभी और किसी द्वार पे न जाना।
भरे प्रभु के भण्डार, धुआँधार लगातार,
चहुँ ओर से आनंद बरसाएगा।
प्रात: उठ के जो प्रभु गुण ....

भक्ति

प्रभु को याद कर बन्दे वही सबसे प्यारा है।
वही है पूज्य हम सबका वही सबका सहारा है।।1।।
प्रभु को याद कर बन्दे वही ....
उसी का भजन रखने से दु:खों से पार होगा तू।
वही मंजिल वही साहिल, वही सबका किनारा है।।2।।
प्रभु को याद कर बन्दे वही ....
अकेला ही वह सब के काम पूरे कर रहा देखो।
छुपा बैठा वह सबमें है मगर सबसे न्यारा है।।3।।
प्रभु को याद कर बन्दे वही ....
उसी की ज्योति से रोशन है सूर्य, चन्द्र और तारे।
बरसते बादलों में भी उसी का ही नजारा है।।4।।
प्रभु को याद कर बन्दे वही ....
सुबह और शाम दिन और रात, हरदम नाम ले उसका।
करें प्रणाम सब मिलकर, वही दाता हमारा है।।5।।
प्रभु को याद कर बन्दे वही ....
समय जब बीत जाता है कहाँ फिर हाथ आता है।
पकड़ अब भी शरण उसकी, वही दु:ख भंजनहारा है।।6।।
प्रभु को याद कर बन्दे वही ....
है उसका ओम् ही शुभनाम, जिसका गीत गाया है।
भजो मन ध्यान से निशदिन, यही सबने पुकारा है।।7।।
प्रभु को याद कर बन्दे वही ....

भक्ति

पाके सुन्दर बदन, कर प्रभु का भजन,
दुनिया फानी का कोई भरोसा नहीं।
जो आया यहाँ, उसको जाना पड़ा,
जिन्दगानी का कोई भरोसा नहीं।।1।।

बालपन खेल और कूद में खो गया
फिर बुढ़ापे का आसार आने लगा,
इस सुघड़ वेला में, कर कमाई भली,
नौजवानी का कोई भरोसा नहीं।।2।।

जिन्दगानी का कोई ....

अरबों वाले गये, खरबों वाले गये,
कितने गोली व गोले रिसाले गये।
राजा गये, कितनी रानी गईं,
राजधानी का कोई भरोसा नहीं।।3।।

जिन्दगानी का कोई ....

श्रेष्ठ जीवन बना, कर सभी का भला,
तेरे जीवन में सुख शांति आ जायेगी।
गर करेगा भला, तेरा होगा भला,
बदगुमानी का कोई भरोसा नहीं।।4।।

जिन्दगानी का कोई ....

खाली हाथों यहां से सिकन्दर गया,
सब खजानों की चाबी धरी रह गयी।
वैद्य लुकमान को भी कजा खा गई,
लाभ हानि का कोई भरोसा नहीं।।5।।

जिन्दगानी का कोई ....

भक्ति

क्या लेकर आया जग में, क्या लेकर चले जाओगे।
प्रभु सिमरन और धन कर्मों का नरजीवन में ही पाओगे।।1।।
कुटुम्ब, कबीला, सोना, बंगला साथ न तेरे जायेंगे।
इनकी खातिर पाप क्यों करता यश ना तुझे दिलायेंगे।।2।।
समय गँवाया खान पान में जग के जाल में जकड़ा सब।
परमानन्द के पान का वक्त मिलेगा तुझको कब कब।।3।।
काम क्रोध को दिया बढ़ावा परहित धर्म कमाया ना।
इस कारण नर जीवन पाकर सच्चे सुख को पाया ना।।4।।
कुछ नहीं बिगड़ा संभल जा अब भी नेक कमाई कर ले तू।
प्रभु सिमर मन उज्ज्वल कर ले, सब से प्रीति कर ले तू।।5।।
झूठी खुशी विषयों में पायी, आनन्द लिया न भक्ति में,
प्रभु नाम जपा ना मानव, व्यर्थ जिया इस जगती में।।6।।

सुविचार

एतावनस्य महिमातो
ज्यायांश्च पुरुषः
ईश्वर की महिमा तीनों लोकों में है।

भक्ति

नमस्ते नाथ अविनाशी, तुम्हें मस्तक नवाते हैं।
तुम्हारे ध्यान चिन्तन में, सभी आनन्द पाते हैं।।
तुम्हीं सर्वेश स्वामी हो, तुम्ही भू: हो भुव: स्व: हो।
हृदय के तारे हिलते हैं, जभी तब गीत गाते हैं।।2।।
तुम्हारे ध्यान चिन्तन में सभी ....
तुम्हीं जल में तुम्हीं स्थल में, सभी मंडल में व्यापक हो।
तुम्हारे विरुद्ध वर्णन में, यह पक्षी चहचहाते हैं।।3।।
तुम्हारे ध्यान चिन्तन में सभी ....
मिलेगी आज अनुभूति हृदय में देव-दर्शन की।
अत: हम भक्ति-पुष्पों से हृदय-मन्दिर सजाते हैं।।4।।
तुम्हारे ध्यान चिन्तन में सभी ....
उन्हीं का आत्मिक व मानसिक उत्थान होता है।
हटा कर ध्यान विषयों से जो ईश्वर में लगाते हैं।।5।।
तुम्हारे ध्यान चिन्तन में सभी ....
वही प्यारे नारायण के जो नर सेवा में रत रहते।
दु:खी के दु:ख दूर करने में जो अपना घर लुटाते हैं।।6।।
तुम्हारे ध्यान चिन्तन में सभी ....
वही है धन्य नर-नारी, उन्हीं पै ईश अनुकम्पा।
प्रलोभन देखकर भी जो न नैतिक स्तर गिराते हैं।।7।।
तुम्हारे ध्यान चिन्तन में सभी ....
जिन्होंने पाप की गठरी उठाई वह दबे रहते।
सरल सच्चे सदाचारी सदा सुख 'पाल' पाते हैं।।
तुम्हारे ध्यान चिन्तन में सभी ....

भक्ति

है पत्थरों वाली नदी संसार साथियों,
मिलकर सभी कर जाओ इसे पार साथियों।
कर्मण्यता को छोड़, क्यों आलस्य में पड़े,
मन में नया उत्साह ले, हो जाओ अब खड़े।
दृढ़ निश्चय से निज को करो, तैयार साथियों।।1।।
है पत्थरों वाली नदी ....

जो भी अभद्र हैं, उन्हें यहीं पे छोड़ दो,
कल्याणकारी कर्मों से, अपने को जोड़ दो।
हों एक तुम्हारे सदा, विचार साथियों।।2।।
है पत्थरों वाली नदी ....

काँटे भी मिलेंगे कहीं, पै फूल खिलेंगे,
अनुकूल मिलेंगे कहीं, प्रतिकूल मिलेंगे।
साहस न किन्तु देना, तुम बिसार साथियों।।3।।
है पत्थरों वाली नदी ....

गर साधना में शक्ति है तो साध्य मिलेगा,
आराधना है सत्य तो, आराध्य मिलेगा।।
होंगे 'मधुर' सपने, सभी साकार साथियों।।4।।
है पत्थरों वाली नदी ....

भक्ति

मानव जीवन पाकर बन्दे कर ले प्रभु से प्यार
प्रभु के भजन बिन जीवन है बेकार -2
मानव जीवन पाकर बन्दे 1

कितने शुभ कर्मों से मानव देह मिली
जो शुभ अवसर खोता सुन्दर कली खिली-2
ढली जवानी वृद्ध हुआ तो टूट जाये सब तार
मानव जीवन पाकर बन्दे 2

जिसको कहता तू ये अपना-अपना है
लेकिन तेरी झूठी सभी कल्पना है।
सपना जैसा खेल जगत में कर ले जरा विचार
मानव जीवन पाकर बन्दे 3

सच्चे दिल से ईश्वर के गुण गाया कर
मन मंदिर में झाड़ू रोज लगाया कर-2
गाया कर उस प्रभु की महिमा - 2 जो है सर्वाधार
मानव जीवन पाकर बन्दे 4

''न तस्य प्रतिमा अस्ति, यस्य नाम महद यशः
उस प्रभु का यश स्वरूप सर्वत्र फैला हुआ है।
उसकी प्रतिमा नहीं हो सकती है।

भक्ति

प्रभु भक्ति में मन को लगाइये, वह सबका पालनहार है।
दु:ख दूर करेगा परमात्मा, वह सर्व सुखों का भण्डार है।।

खाली उसके द्वार से आए, ऐसा कभी ना हो सकता।
परम पिता को भूल के प्राणी, सुख से कभी ना सो सकता।
सारी सृष्टि का वह आधार, उसकी महिमा का पाया नहीं पार है।।
दु:ख दूर करेगा परमात्मा वह ....।।1।।

भाई-बन्धु-माल-खजाना, साथ तेरे ना जायेगा।
धर्म ही इक अन्त का साथी, काम तेरे जो आयेगा।
शुभ कर्मों से होता बेड़ा पार है, नाव पापी की डूबे मझधार है।।
दु:ख दूर करेगा परमात्मा वह ....।।2।।

विषयों में फंस कर के बन्दे, जीवन को बरबाद न कर।
नर-तन चोला जो उत्तम है, पाप न कर अपराध न कर।
'नन्दलाल' प्रभु निराकार है, नमस्कार उसे बारम्बार है।।
दु:ख दूर करेगा परमात्मा वह ....।।3।।

भक्ति

कर ईश्वर से प्यार, मानव कर ईश्वर से प्यार।
संकट मोचन विघ्न विनाशक, सुखदायक दातार।।
मानव! कर ईश्वर से प्यार ....।।1।।
जिस जगदीश्वर से उपजा है, यह अद्‌भुत संसार।
जो कण-कण में रमा हुआ है, जड़ चेतन आधार।
मानव! कर ईश्वर से प्यार ....।।2।।
तू अशक्त और नाव पुरानी, आन फंसी मंझधार।
खेवट एक वही भव सागर, पार उतारनहार।
मानव! कर ईश्वर से प्यार ....।।3।।
सदा किया कर प्यार परस्पर, पर हित पर उपकार।
धर्म धुरन्धर धन धरणीधर, दया धर्म उर धार।।
मानव! कर ईश्वर से प्यार ....।।4।।
तज कुपन्थ चल सरल सुपथ पर, तज कुवचन कुविचार।
'पथिक' समझ सब जीव स्वयं सम, कर सुमधुर व्यवहार।।
मानव! कर ईश्वर से प्यार ....।।5।।

ईश्वर को खोजने से वह प्राप्त नहीं होता, बल्कि उसमें खो जाने से प्राप्त होता है।

भक्ति

कुछ नेक काम कर ले, दुनियां में आने वाले।
दर छोड़ पाप का तू, जीवन सफल बना ले।।
कुछ नेक काम कर ले ....
जायेगा जब जहाँ से, कुछ भी न साथ होगा।
दो गज कफन का टुकड़ा, तेरा लिबास होगा।
बेहतर है इससे पहले, मन साफ तू बना ले।।1।।
कुछ नेक काम कर ले ....
आया है तू कहाँ से, जाना बता कहाँ है।
रहने को इस जहाँ में, तेरा मकां कहाँ है।
इक रात के मुसाफिर, चलना तुझे सबेरे।।2।।
कुछ नेक काम कर ले ....
सिफतें करेंगे तेरी, दुनियां के लोग सारे।
गर तू सही लगन से, प्रभु नाम को पुकारे।
भक्ति से अपनी 'दर्शन' अपना उसे बना ले।।3।।
कुछ नेक काम कर ले ....

कर्म ऐसे करो कि मरण के पश्चात् भी लोगों के स्मरण में आ सकें।

भक्ति

आओ ले लें नाम प्रभु का, जीवन बिता जाए।
जो पल बीत गया जीवन का, लौट के फिर नहिं आए।।
आओ ले लें नाम प्रभु का .... ।।1।।

जीवन डोर उसी के हाथों, जो सब करनी हारा।
कर्म हमारे न्याय उसी का, क्या है जोर हमारा।
हम सब उसके खेल खिलौने चाहे जहाँ ले जाए।।
आओ ले लें नाम प्रभु का .... ।।1।।

सुख की कलियाँ दु:ख के कांटे, हंस-हंस कर स्वीकारे।
सदा बहार रहे जीवन में, ओ३म् ही ओ३म् पुकारे।
जीवन नैय्या उसके हवाले, वो ही पार लगाए।।
आओ ले लें नाम प्रभु का .... ।।2।।

वो चाहे तो रंक बना दे, भिक्षा को तरसा दे।
चाहे राज सिंहासन दे दे, अनगिन सुख बरसा दे।
महिमा अपरम्पार प्रभु की, वो ही पाए लगाए।।
आओ ले लें नाम प्रभु का .... ।।3।।

भक्ति

जो ईश्वर में मन को लगाते रहेंगे,
सफल अपना जीवन बनाते रहेंगे।।1।।
जो ईश्वर में मन को ....
अन्धेरा मिटेगा तभी मन भवन का,
दिया ज्ञान का जो जलाते रहेंगे।।2।।
जो ईश्वर में मन को ....
नहीं बाँध पाये उन्हें जग के बन्धन,
जो अज्ञानता को मिटाते रहेंगे।।3।।
जो ईश्वर में मन को ....
मिटेगा यह झगड़ा आवागमन का,
जो मुक्ति के साधन जुटाते रहेंगे।।4।।
जो ईश्वर में मन को ....
खिला ही रहेगा चमन उनका हरदम,
जो सत्संग गंगा में नहाते रहेंगे।।5।।
जो ईश्वर में मन को ....
चुने जो मोती चुने हंस बनकर,
वे वेदों की दुनिया बसाते रहेंगे।।6।।
जो ईश्वर में मन को लगाते रहेंगे,
सफल अपना जीवन बनाते रहेंगे।।

भक्ति

ईश्वर का गुणगान किया कर, कष्ट क्लेश मिटाने को।
जीवन की यह नाव मिली है, भव सागर तर जाने को।
दाता ने हाथ दिये हैं, नेक कमाई कर प्यारे।
इन अपने पावन पाँवों को, पावन मग पर धर प्यारे।
नुस्खा है यह इस दुनिया में, जीवन अमर बनाने को।।
ईश्वर का गुणगान किया कर ....
दर्द पराया देख के तुझको, दर्द उठे अपने तन में,
हर्षित को लख वर्ष मनायें, भावना भर दे जन-मन में।
यत्न किया कर पतझड़ में भी मधुर बसंत खिलाने को।।
ईश्वर का गुणगान किया कर ....
सुख की शीतल छाया कर दे, दु:खिया जन की कुटिया में,
अपने घर में पड़ रहा गर, आलसी बन कर खटिया पर।
मानव चोला फिर न मिलेगा, तुझ को मौज उड़ाने को।।
ईश्वर का गुणगान किया कर ....
विश्व बगीचे के माली की, रचना प्यारी-प्यारी है,
रंग-बिरंगे पुष्प खिलावे शोभा जिनकी न्यारी है।।
अंत नहीं बेअंत है माया कह गये संत जमाने को।।
ईश्वर का गुणगान किया कर ....
परमेश्वर का भक्त वही जो शुभ गुण जीवन में धारे।
पाप के जहरीले कीटाणु, सब चुन-चुन करके मारे।
'हंस' तेरा मन मंदिर है, भक्ति की ज्योति जलाने को।।
ईश्वर का गुणगान किया कर ....

भक्ति

प्रेमी बनकर प्रेम में, ईश्वर के गुण गाया कर।
मन-मन्दिर में गाफिला, झाड़ू रोज लगाया कर।।1।।
प्रेमी बनकर प्रेम में ईश्वर ....
सोने में तो रात गुजारी, दिन भर करता पाप रहा।
इसी तरह बरबाद तू बंदे, करता अपने आप रहा।।
प्रात: समय उठ नित्यप्रति सत्संग में तू जाया कर।।2।।
प्रेमी बनकर प्रेम में, ईश्वर ....
नर तन के चोले का पाना, बच्चों का कोई खेल नहीं।
जन्म-जन्म के शुभ कर्मों का, होता जब तक मेल नहीं।
नर तन पाने के लिए उत्तम कर्म कमाया कर।।3।।
प्रेमी बनकर प्रेम में, ईश्वर ....
दुखिया पास तेरे है कोई, तूने मौज उड़ाई क्या ?
भूखा-प्यासा रहा पड़ोसी, तूने रोटी खाई क्या।
सबसे पहले पूछ कर, भोजन को तू खाया कर।।4।।
प्रेमी बनकर प्रेम में, ईश्वर ....
देख दया उस परमेश्वर की, वेदों का जिस ज्ञान दिया।
'देश' तू मन में सोच जरा तो, कितना है कल्याण किया।
सब कर्मों को छोड़कर, उसका नाम तू ध्याया कर।।5।।
प्रेमी बनकर प्रेम में, ईश्वर ....

भक्ति

आओ जगदीश्वर गुण गाओ।
मानव-जीवन सफल बनाओ।।
वश में कर लो मन चंचल को।
त्यागो द्वेष-भाव छल-बल को।।
सात्विक बुद्धि विवेक बढ़ाओ।
आओ जगदीश्वर गुण गाओ।।1।।

वेदों की शिक्षा चित्त धरिये।
यम-नियमों का पालन करिये।।
सब मिल सन्ध्या-हवन रचाओ।
आओ जगदीश्वर गुण गाओ।।2।।

निज कर्त्तव्य-विमुख मत होना।
अपयश-भार न सिर पर ढोना।।
जग में उज्ज्वल कीर्ति कमाओ।
आओ जगदीश्वर गुण गाओ।।3।।

चहुँ दिशि ज्ञान-प्रकाश पसारो।
असत् अविद्या-तम संहारो।।
दुर्गुण पातक पुञ्ज जलाओ।
आओ जगदीश्वर गुण गाओ।।4।।

भक्ति

जिसने संसार है यह रचाया हुआ,
हमने उस ईश से दिल लगाया हुआ।
सर्वव्यापक निराकार परमेश्वर वो,
इस निखिल विश्व में है समाया हुआ।
जिसने संसार है यह ....

रात दिन ध्यान उस ईश्वर का करो,
जिसने यह खेल अद्‌भुत रचाया हुआ।
पाप कर्मों में मन अब न उलझेगा यह,
पतित पावन का मन्दिर बनाया हुआ।
जिसने संसार है यह ....

सच्चिदानन्द की अर्चना मिल कर करो,
गान वेदों ने उसका ही गाया हुआ।
सम्पदा सब उसे मिल गई समझ लो,
जिसने उसको हृदय में बसाया हुआ।
जिसने संसार है यह ....

मिल गई शांति उसे उस समय,
आ गया ईश चरणों में मन यह सताया हुआ।
जिसने संसार है यह रचाया हुआ,
हमने उस ईश से दिल लगाया हुआ।

भक्ति

ईश्वर के गुण गाओ, वह सबका स्वामी है।
ओ३म् ओ३म् ही ध्याओ, वह सबका स्वामी है।।
मानुष का चोला है पाया, इसको है क्यों दाग लगाया।
मन को शुद्ध बनाओ, वह सबका स्वामी है।।1।।
वह ही माता-पिता हमारा, सभी बन्धुओं से है प्यारा।
उसको न बिसराओ, वह सबका स्वामी है।।2।।
उठो सबेरे मन्दिर जाके, सन्ध्या हवन करो चित ला के।
जीवन सफल बनाओ,वह सबका स्वामी है।।3।।
घर अपने को स्वर्ग बनाओ, बच्चों को तुम वेद पढ़ाओ।
आर्य जगत् बनाओ, वह सबका स्वामी है।।4।।
'नन्दलाल' न उसे भुलाना, मिलके अच्छे कर्म कमाना।
शरण प्रभु की आओ, वह सबका स्वामी है।।5।।

सुविचार

अगर आस्था है तो बन्द द्वार में भी रास्ता है।

भक्ति

मन के संशय छोड़ के सारे
आया तेरे द्वार ईश्वर, आया तेरे द्वार।।

यह धन अब तेरा ही धन है, वन्दन ही मेरा जीवन है।
अर्पण है तेरे चरणों में, मेरा सब संसार।।
आया तेरे द्वार ईश्वर, आया तेरे द्वार।।1।।

कैसी अद्‌भुत तेरी माया, देने वालों ने ही पाया।
मेरी झोली एक है दाता, तेरे हाथ हजार।।
आया तेरे द्वार ईश्वर, आया तेरे द्वार।।2।।

और सभी मतलब के पुतले, करें, अहित सब हित के बदले।
तू ही केवल सच्चा दानी, दाता विपुल उदार।
आया तेरे द्वार ईश्वर, आया तेरे द्वार।।3।।

सुविचार

मृत्योर्माऽमृतं गमय।

हे देव! मुझे मृत्यु से अमृत की ओर ले चल।

भक्ति

मत भूल मनुज पछताएगा, प्रभु नाम सुमर सुख पायेगा।
यह दौलत आनी-जानी है, यह दुनिया बहता पानी है।
नहीं काम और कुछ आयेगा, प्रभु नाम सुमर सुख पायेगा।।1।।

क्यों मोह के झूले झूल रहा, तन मन यौवन पर फूल रहा।
यह फूल तेरा कुम्हलायेगा, प्रभु नाम सुमर सुख पायेगा।।2।।

काया दो दिन की माया है, उड़ते पंछी की छाया है।
जो आया है सो जायेगा, प्रभु नाम सुमर सुख पायेगा।।3।।

यह झूठा तेरा मेरा है, तू प्रभु का है प्रभु तेरा है।
प्रभु बोलत ही तर जायेगा, प्रभु नाम सुमर सुख पायेगा।।4।।

सुविचार
या वै भूमा तत्सुखम्
सुख ईश्वर में है।

भक्ति

ईश्वर से संग जोड़, मानव-ईश्वर से संग जोड़।
विषयों से मुख मोड़, मानव विषयों से मुख मोड़।।
प्रातः सांय सन्ध्या कर ले, वेद ज्ञान जीवन में भर ले।
शुभ कर्मों को न छोड़, मानव ईश्वर से संग जोड़।।2।।
जिससे मानव पाप कमाता, जन्म-मरण बंधन में आता।
उस बाधक को तोड़, मानव ईश्वर से संग जोड़।।3।।
केवल धन संचय में रहना, विषय भोग संसार में बहना।
यह अंधों की दौड़, मानव ईश्वर से संग जोड़।।4।।
बिन ईश्वर के जाने माने, दूध और पानी के न छाने।
वृथा यत्न करोड़, मानव ईश्वर से संग जोड़।।5।।
अविद्या का नाश किया कर, सदा ईश संग वास किया कर।
छोड़ जगत् की होड़, मानव ईश्वर से संग जोड़।।6।।
उद्यम कर ले छोड़ उदासी, जनम-जन्म की पाप की राशि
पाप कलश को फोड़, मानव ईश्वर से संग जोड़।।7।।
फिरता है मारा-मारा, ईश्वर का ले पकड़ सहारा।
यह है एक निचोड़, मानव ईश्वर से संग जोड़।।8।।
अब भी जो तू चेत न पाया, तो फिर तुझको यह जग माया।
देगी तोड़-मरोड़, मानव ईश्वर से संग जोड़।।9।।

भक्ति

आया हूँ तेरे दर पे, भक्तिभाव को लिये
दस्तक मैं दे रहा हूँ, प्रभु द्वार खोलिए।।
जीवन में कितने कर्म, भले और बुरे हुए
अंजाने में कुछ, और जान-बूझ के किये
है आपकी खुशी, प्रभु कैसे भी तोलिए।।1।।
दस्तक मैं दे रहा हूँ प्रभु ....
होठों पर ओ३म् नाम है वो मन भी रहे
चातक के जैसी प्यास वही हूबहू रहे
धागा है जीवन ओ३म् के मोती पिरोलिये।।2।।
दस्तक मैं दे रहा हूँ प्रभु ....
जागा हूँ मैं जीवन में चाहे देर से भले
आशा के दीप कुछ तो मेरे मन में भी जले
अज्ञान वश जीवन में बहुत देर सो लिये।।3।।
दस्तक मैं दे रहा हूँ प्रभु ....

सुविचार

बलमसि बलं मयि धेहि।

बलवाला ईश्वर मुझे भी बल देवे।

भक्ति

अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में।
है जीत तुम्हारे हाथों में, है हार तुम्हारे हाथों में।।1।।
अब सौंप दिया इस जीवन का ....
मेरा निश्चय है एक यही, इक बार तुम्हें पा जाऊँ मैं।
अर्पण कर दूँ जगती भर का, सब प्यार तुम्हारे हाथों में।।2।।
अब सौंप दिया इस जीवन का ....
या तो मैं इस जग से दूर रहूँ, और जग में रहूँ तो ऐसे रहूँ।
इस पार तुम्हारे हाथों में, उस पार तुम्हारे हाथों में।।3।।
अब सौंप दिया इस जीवन का ....
यदि मानुष ही मुझे जन्म मिले, तब तब चरणों का पुजारी बनूँ।
मुझ पूजक की इक-इक रग का, हो तार तुम्हारे हाथों में।।4।।
अब सौंप दिया इस जीवन का ....
जब-जब संसार का बन्दी बन, दरबार तुम्हारे आऊँ मैं।
हो मेरे पापों का निर्णय, सरकार तुम्हारे हाथों में।।5।।
अब सौंप दिया इस जीवन का ....
मुझमें तुझमें है भेद यही, मैं नर हूँ तू नारायण है।
मैं हूँ संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में।।6।।
अब सौंप दिया इस जीवन का ....

भक्ति

अचरज है जल में रहकर भी, मछली को प्यास है,
फूलों में ज्यों सुवास, ईख मे मिठास है,
भगवन् का त्यों विश्व के, कण-कण में वास है।।
अचरज है जल में रहकर भी ....

टुक ज्ञान चक्षु खोल, के तू देख तो सही,
जिसको तू ढूँढ़ता है, सदा तेरे पास है।।
अचरज है जल में रहकर भी ....

कुछ तो समय निकाल, आत्म-शुद्धि के लिए,
नर-जन्म का उद्देश्य, न केवल विलास है।।
अचरज है जल में रहकर भी ....

आनन्द मोक्ष का, ना पा सकेगा तब तलक,
तू जब तलक 'प्रकाश' इन्द्रियों का दास है।।
अचरज है जल में रहकर भी ....

सुविचार

अग्ने मेधाविनं कुरुः

हे प्रभु! हमें बुद्धिमान बनाओ।

भक्ति

अजब हैरान हूँ भगवन्! तुम्हें कैसे रिझाऊँ मैं।
कोई वस्तु नहीं ऐसी, जिसे सेवा में लाऊँ मैं।।1।।
अजब हैरान हूँ भगवन् ....
करूँ किस तरह आवाहन, कि तुम मौजूद हो हर जा।
निरादर है बुलाने को, अगर घंटी बजाऊँ मैं।।2।।
अजब हैरान हूँ भगवन् ....
तुम्हीं हो मूर्ति में भी, तुम्हीं व्यापक ही फूलों में।
भला भगवान् पर भगवान् को कैसे चढ़ाऊँ मैं।।3।।
अजब हैरान हूँ भगवन् ....
लगाना भोग कुछ तुमको, यह इक अपमान करना है।
खिलाता है जो सब जग को, कैसे उसे खिलाऊँ मैं।।4।।
अजब हैरान हूँ भगवन् ....
तुम्हारी ज्योति रोशन है सूरज चाँद और तारे।
महा अंधेरा है, तुमको अगर दीपक दिखाऊँ मैं।।5।।
अजब हैरान हूँ भगवन् ....
भुजायें हैं न सीना है, न गर्दन है न पेशानी।
कि हो निर्लेप 'नारायण', कहाँ चन्दन लगाऊँ मैं।।6।।
अजब हैरान हूँ भगवन् ....

भक्ति

ये जीवन तुम्हारा, तुम्हीं को है अर्पण।
लगा दो किनारे, इसे मेरे भगवन्।।
लगा दो किनारे इसे मेरे भगवन्.....।।1।।
हो करुणा के सागर, दया के हो दाता।
तुम्हीं जग के पालक, तुम्हीं हो विधाता।।
यह सोया है मानव इसे तुम जगा दो।
ये जीवन तुम्हारा, तुम्हीं को है अर्पण।।
लगा दो किनारे इसे मेरे भगवन्.....।।2।।
मैं पथ से गिरूँ तो मुझे थाम लेना।
दया करके सद्ज्ञान देते ही रहना।
जो सच्चा है मार्ग, उसे तुम दिखा दो।।
ये जीवन तुम्हारा, तुम्हीं को है अर्पण।
लगा दो किनारे इसे मेरे भगवन्.....।।3।।
तुम्हारे भरोसे है जीवन की नैय्या।
लगा दो इसे पार, मेरे खिवैया।
कहीं डूब जाये न, इसको बचा दो।।
ये जीवन तुम्हारा, तुम्हीं को है अर्पण।।
लगा दो किनारे इसे मेरे भगवन्.....।।4।।
दरस दो, बड़ा होगा अहसां तुम्हारा।
भटकता ही रहता है, मनवा हमारा।।
इसे वश में करने की शक्ति बता दो।।
ये जीवन तुम्हारा, तुम्हीं को है अर्पण।।
लगा दो किनारे इसे मेरे भगवन्.....।।5।।

भक्ति

प्रभु तुम अणु से भी सूक्ष्म हो, प्रभु तुम गगन से विशाल हो।
मैं मिसाल दूँ तुम्हें कौन-सी, दुनिया में तुम बेमिसाल हो।।1।।
प्रभु तुम अणु से भी सूक्ष्म हो ....
हर दिल में तेरा धाम है, और न्याय ही तेरा काम है।
सबसे बड़ा तेरा नाम है, जगन्नाथ हो जगपाल हो।।2।।
प्रभु तुम अणु से भी सूक्ष्म हो ....
तुम साधकों की हो साधना, या उपासकों की उपासना।
किसी भक्त की मृदुभावना, या किसी कवि का ख्याल हो।।3।।
प्रभु तुम अणु से भी सूक्ष्म हो ....
मिले सूर्य को तेरी रोशनी, खिले चाँद में तेरी चाँदनी।
सब पर दया तेरी पावनी, प्रभु तुम तो दीन दयाल हो।।4।।
प्रभु तुम अणु से भी सूक्ष्म हो ....
तुझ पर किसी का न जोर है, तेरा राज्य ही सभी ओर है।
तेरे हाथ सबकी डोर है, तुम्हीं जिन्दगी तुम्हीं काल हो।।5।।
प्रभु तुम अणु से भी सूक्ष्म हो ....
जो खतम न हो वह किताब हो, बेशुमार हो बेहिसाब हो।
जिसका कहीं न जवाब हो, उलझा हुआ वह सवाल हो।।6।।
प्रभु तुम अणु से भी सूक्ष्म हो ....
कोई न तुझे रिझा सका, तेरा पार न कोई पा सका।
न 'पथिक' वह गीत ही गा सका, जिसमें तेरी सुर ताल हो।।7।।
प्रभु तुम अणु से भी सूक्ष्म हो ....

सत्संग

क्र.सं.	सत्संग भजन/गीत के बोल	पृ. सं.
1.	सत्संग ही ईश्वर का द्वार है	135
2.	सन्तों की संगत में जो नित्य नियम से जायेगा	136
3.	सदा जो सुसंगत में आते रहेंगे	137
4.	सत्संग नहीं करेगा, प्रभु को नहीं भजेगा	138
5.	जहाँ सत्संग होता है वहाँ पर नित्य जाओ तुम	139
6.	जिस तरह भी हो सके, सत्संग में आना चाहिए	140
7.	वेद ज्ञान के हीरे मोती, मैं बिखराऊँ सत्संग में	141
8.	सत्संग वाली नगरी चल रे मना	143
9.	बहे सत्संग की गंगा, अरे मन चल नहा आयें	144
10.	अब यहाँ सत्संग सजाया जायेगा	145
11.	चल सत्संग में, रंग जा रंग में	146

सुविचार

समय, सत्ता, सम्पत्ति और शरीर
सदा साथ नहीं देते।
परन्तु वैदिक सत्संग व ज्ञान
सदा साथ देते हैं।

सत्संग

सत्संग ही स्वर्ग का द्वार है।
चारों वेदों का यही सार है।।
सत्संग ही मानव को उठाता है,
बुरी संगत से बचाता है।
दूर हो जाता हर विकार है,
मन में जो आता सद् विचार है।।
सत्संग ही स्वर्ग का ......

जीवन में यश वह पाता है,
मान और अपमान त्याग जाता है।
करते रहना बस परोपकार है,
इससे ही होगा बेड़ा पार है।।
सत्संग ही स्वर्ग का ......

प्रभु भक्ति से शक्ति मिलती है,
दिल की मुरझाई कली खिलती है।
ईश्वर की माया अपरम्पार है,
क्योंकि वो प्रभु सर्वाधार है।।
सत्संग ही स्वर्ग का ......

नर-तन शुभ कर्मों का फल है,
मिलना इसका नहीं सरल है।
'सत्यम्' का सही ये विचार है,
ओ३म् ही सबका प्राणाधार है।।
सत्संग ही स्वर्ग का ......

सत्संग

सन्तों की संगत में जो, नित नियम से जाएगा।
भव सागर के कष्टों से, वह छुटकारा पाएगा।।
ये मन निर्मल करे, और शुद्ध भाव भरते,
दुर्गुण मिटाकर के, गुणी ज्ञानवान करते।
ऐसी रंगत में कौन, नहीं रंगना चाहेगा।।
सन्तों की संगत में जो नित ....
संसार में सुख-दु:ख, हैं साथ ही रहते,
कर्मानुसार मिलते, और हम उनको सहते।
उस परम प्रभु के न्याय से, कोई बच न पाएगा।।
सन्तों की संगत में जो नित ....
मानव कहता मन पर, मेरा अधिकार नहीं है,
पर योगी को यह बात, स्वीकार नहीं है।
योग विद्या पर चलने से ही, मन वश में आएगा।।
सन्तों की संगत में जो नित ....
जितनी मलिनता है, उतना समय लगेगा,
जन्मों-जन्मों का संस्कार, यूं ही नहीं मिटेगा।
शुद्ध आत्मा करके, अवगुण जो हटाएगा।।
सन्तों की संगत में जो नित ....
झूठे जग के रिश्ते, ना कोई तुम्हारा है,
वह 'ओ३म्' नाम ही तो, बस एक सहारा है।
कोई जानन हारा ही तो, ये ज्ञान कराएगा।।
सन्तों की संगत में जो नित ....

सत्संग

सदा जो सुसंगत में आते रहेंगे।
विवेकी स्वयं को बनाते रहेंगे।।
मिलेगी नहीं शान्ति उनको कभी भी।
जो परमात्मा को भुलाते रहेंगे।।
बनेंगे कभी मुक्त जीवन में वे ही।
जो चाहों को अपनी घटाते रहेंगे।।
सदा जो सुसंगत में आते रहेंगे ....
उन्हें ही वह सुख-सिन्धु स्वामी मिलेंगे।
जो दु:खियों को सुख देते जाते रहेंगे।।
उन्हीं की बनी और बनती रहेगी।
जो बिगड़ी किसी की बनाते रहेंगे।।
सदा जो सुसंगत में आते रहेंगे ....
जो कुछ दीखता है रहेगा ना सब दिन।
कहाँ तक यहाँ मन लगाते रहेंगे।।
'पथिक' अपने में अपने प्रीतम को पाकर।
महोत्सव निरन्तर मनाते रहेंगे।।
सदा जो सुसंगत में आते रहेंगे ....

सत्संग

सत्संग नहीं करेगा, प्रभु को नहीं भजेगा।
प्रभु के बिना ये जीवन, सूना पड़ा रहेगा।।
एक दिन का है यह बचपन, दो दिन है तेरा यौवन,
एक दिन का है बुढ़ापा, बस चार दिन का जीवन।
हीरा ये जन्म तेरा, फिर से नहीं मिलेगा।।
प्रभु के बिना ये जीवन ....

आया है बाँध मुट्ठी, जाएगा हाथ खाली,
गुलशन नहीं ये तेरा, तू तो है सिर्फ माली।
बोएगा बीज जैसे, वैसा ही फल चखेगा।।
प्रभु के बिना ये जीवन ....

कुछ सोच ले ओ पगले, जीवन में क्या किया है,
दुनियाँ से लिया कितना, दुनियाँ को क्या दिया है।
व्यवहार रूप तेरा, संग-संग तेरे चलेगा।।
प्रभु के बिना ये जीवन ....

परोपकाराय सतां विभुतयः
सज्जनों की सम्पत्तियाँ परोपकारार्थ होती हैं।

सत्संग

जहाँ सत्संग होता है, वहाँ पर नित्य जाओ तुम।
हमें फुरसत नहीं कहकर, यह मौका मत गंवाओं तुम।
अरे सत्संग करने की, ना कोई उम्र होती है,
अमर ये दीप है इसकी, कभी बुझती ना ज्योति है,
इसी ज्योति से जीवन की, सदा ज्योति जलाओ तुम।
जहाँ सत्संग होता है................
जरा अनुभव कर देखो, कि क्या बदलाव आया है,
कपट सब दूर होता है, हृदय निर्मल हो जाता है।
इन्हीं सत्संगियों के संग, सदा जीवन बिताओ तुम।
जहाँ सत्संग होता है................
करके एकाग्र मन को तुम, जाके सत्संग को सुनना।
होके तल्लीन भावों के, सुनहरे फूलों को चुनना।
इसी सत्संग सागर में, सदा डुबकी लगाओ तुम।
हमें फुरसत नहीं कहकर, यह मौका मत गंवाओ तुम।।
जहाँ सत्संग होता है................
चढ़े इक बार ना फिर उतरे, सत्संग का ये रंग।
बिना प्रभु की कृपा मिलता नहीं सत्संगियों का संग।
गुरु संतों की सेवा कर, सदा सान्निध्य पाओ तुम।
जहाँ सत्संग होता है, वहाँ पर नित्य जाओ तुम।
हमें फुरसत नहीं कहकर, यह मौका मत गंवाओं तुम।

सत्संग

जिस तरह भी हो सके, सत्संग में आना चाहिए।
प्रेम से नित ईश के, गुणगान गाना चाहिये।।
मन की शुद्धि के लिये, ईश्वर की कर उपासना।
पाप रूपी वासनाओं को मिटाना चाहिये।।
वेद के अनुसार जीवन के बिताना चाहिये।।
जिस तरह भी हो सके ....
यज्ञ और सन्ध्या हवन, नियम बना हर रोज का।
उस प्रभु से शान्ति का, वरदान पाना चाहिये।।
जिस तरह भी हो सके ....
सत्संग ऐसा है जो, मिटाता तीन तापों को।
आनन्द रूप भगवान् से, यह ज्ञान पाना चाहिये।।
जिस तरह भी हो सके ....

आदमी एक पत्थर को काट कर उसे शक्ल देता है, फिर उसे अपना भगवान मानता है, फिर उसी से डरता है, क्या यही पूजा है?

सत्संग

वेद ज्ञान के हीरे मोती, मैं बिखराऊँ सत्संग में।
लूट सके तो लूट ले, 'प्रेमी' आज सुनाऊँ सत्संग में।।
ब्रह्म मुहूर्त में उठकर जो, ओ३म् का ध्यान लगाता है,
सभी नित्य-कर्मों को करके, भ्रमण को भी जाता है।
आयु लंबी स्वाध्याय भी अच्छा, भेद बताऊँ सत्संग में।।
वेद ज्ञान के हीरे मोती ....
यम-नियमों का पालन करके, जीवन शुद्ध बनाता है,
कर सेवा उपकार सदा जो, जग में नाम कमाता है।
मिले सदा सुख-शांति उसको, यह बतलाऊँ सत्संग में।।
वेद ज्ञान के हीरे मोती ....
राग-द्वेष, छल-कपट जो छोड़े, वही मानव बन जाता है।
इसके विपरीत जो चलेगा, वह राक्षस कहलाता है।
ईश्वर का उपदेश यही है, ये समझाऊँ सत्संग में।।
वेद ज्ञान के हीरे मोती ....
कर पुरुषार्थ और सच्चाई से, जो कमाई खाता है,
इससे आत्मिक-शांति पाकर, जीवन सफल बनाता है।
पापों से वो बचकर रहता, ये जतलाऊँ सत्संग में।।
वेद ज्ञान के हीरे मोती ....
आज का मानव, दानव बनकर सबको दु:ख पहुँचाता है,
जो बीज दु:खों का बोता है, वो कभी नहीं सुख पाता है।
ऐसों को अभिशाप लगेगा, कहकर जाऊँ सत्संग में।।
वेद ज्ञान के हीरे मोती ....

क्रमश: 142

कभी किसी को दु:ख ना देना, विष का मत संचार करो,
वेदों का उपदेश यही है, हर एक से तुम प्यार करो।
विश्व निवासी सारे अपने, गले लगाऊँ सत्संग में।।
वेद ज्ञान के हीरे मोती ....
विश्व का प्रेमी कहे सभी को, विश्व का तुम उपकार करो,
ऋषियों का आदेश यही है, वेदों का प्रचार करो।
होगा भला इसी से सबका यह समझाऊँ सत्संग में।।
वेद ज्ञान के हीरे मोती ....
आज दु:खी घर-घर में देखो! सुख की नींद ना सोते,
चिन्ता घोर निराशा छाई, वे तो हरदम रोते।
बोया जैसा वैसा पाया, यह कहकर जाऊँ सत्संग में।।
वेद ज्ञान के हीरे मोती ....
परहित में अपना हित समझो, ऋषियों ने समझाया है,
जीवन का कल्याण इसी में, वेदों ने बतलाया है।
भूले को सन्मार्ग दिखा दो, ये बतलाऊँ सत्संग में।।
वेद ज्ञान के हीरे मोती ....
पंच महायज्ञों का करना, ये कर्त्तव्य हमारा है,
भव सागर से तर जाने का, प्रेमी यही सहारा है।
स्वर्ग का स्वामी बन जाएगा, सच बतलाऊँ सत्संग में।।
वेद ज्ञान के हीरे मोती ....
जिसने वेद ज्ञान के हीरे पाये, जीवन सफल हुआ,
धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष को पाकर, जग में ऊँचा नाम किया।
जैसा करो वैसा फल मिलता, कहकर जाऊँ सत्संग में।।
वेद ज्ञान के हीरे मोती ...
....

सत्संग

सत्संग वाली नगरी चल रे मना,
पी सद्ज्ञान का जल रे मना, सत्संग वाली नगरी ....(1)
इस नगरी में ज्ञान की गंगा,
जो भी नहाए जो जाए चंगा,
मल मल हो निर्मल रे मना, सत्संग वाली नगरी .....(2)
सत्संग के हैं अजब नजारे,
बहुत सुहाने बहुत ही प्यारे,
पा सुख-शान्ति का फल रे मना, सत्संग वाली नगरी ..(3)
सत्संग का ये असर हुआ है,
बाहर सब कुछ बदल गया है,
तू अन्दर से बदल रे मना, सत्संग वाली नगरी ......(4)
सत्संग का तो फल है निराला,
मन मंदिर में करके उजाला,
कर जीवन को सफल रे मना, सत्संग वाली नगरी ..(5)
किस्मत का चमका है सितारा,
उदय हुआ है भाग्य हमारा,
अवसर जाये ना निकल रे मना, सत्संग वाली नगरी ....(6)
चल रे 'पथिक' शुभ कर्म कमा ले,
इस अवसर से लाभ उठा ले,
देर ना कर इक पल रे मना, सत्संग वाली नगरी .....(7)

सत्संग

बहे सत्संग की गंगा, अरे मन चल नहा आएं।
बुझी ज्योति जो जीवन की, उसे फिर से जगा आएं।।
यही बेला है कर ले पान, प्यारे ज्ञान अमृत का।
लगा है धर्म का मेला, अरे मन चल दिखा आएं।।
बहे सत्संग की गंगा, अरे मन ....
तू ही योद्धा तू ही योगी, तू ही है रूप संतों का।
जिसे तू भूल बैठा है, उसे फिर से दिखा लाएं।।
बहे सत्संग की गंगा, अरे मन ....
भटकता फिर रहा दर-दर, धराया नाम क्यों चंचल।
करे विश्वास जग तेरा, तुझे ऐसा बना लाएं।।
बहे सत्संग की गंगा, अरे मन ....
ये सिक्के सोने चांदी के, इसी दुनियां में चलते हैं,
चले परलोक में सिक्का, कुछ ऐसा धन कमा लाएं।।
बहे सत्संग की गंगा, अरे मन ....
प्रभु के नाम का सिमरन, जो हर इक मन को हर्षाए,
उसी के नाम की ज्योति, हर दिल में जगा आएं।।
बहे सत्संग की गंगा, अरे मन ....
ये सन्तों का समागम है, बड़ी मुश्किल से मिलता है,
बहे जहाँ ज्ञान की धारा, चलो चल कर नहा आएं।।
बहे सत्संग की गंगा, अरे मन ....

सत्संग

अब यहाँ सत्संग सजाया जाएगा।
ऋषियों का सन्देश सुनाया जाएगा।
मीठा-मीठा साज बजाया जाएगा।
और मधुर संगीत सुनाया जाएगा।
अब यहाँ सत्संग ....।।1।।

मत करना यह आशा, होगी सतरंगी भाषा।
या सब लोग बुला कर कोई सिनेमा खेल तमाशा।
बिताया जाएगा, ऋषियों का सन्देश सुनाया जायेगा।।
अब यहाँ सत्संग ....।।1।।

सुन्दर कर्म कमाना, नर जीवन सफल बनाना।
देश धर्म जाति पर, अपना कर्त्तव्य निभाना -
बताया जाएगा, ऋषियों का सन्देश सुनाया जायेगा।।
अब यहाँ सत्संग ....।।2।।

सद्ग्रन्थों का पढ़ना, सीढ़ी दर सीढ़ी चढ़ना।
जीवन की राहों में, हिम्मत से आगे बढ़ना -
सिखाया जाएगा, ऋषियों का सन्देश सुनाया जायेगा।।
अब यहाँ सत्संग ....।।3।।

कहे 'पथिक' जो योगी, वह बात यहाँ पर होगी।
ज्ञान की दवा पिला कर, हर नया पुराना रोगी।
बचाया जाएगा, ऋषियों का सन्देश सुनाया जायेगा।।
अब यहाँ सत्संग ....।।4।।

सत्संग

चल सत्संग में, रंग जा रंग में, हंस-हंस जीवन जी ले।
अमृत बरसे, फिर क्यों तरसे, प्याले भर-भर पी ले।।
सत्संग में कर दे दूर अन्धेरे। काटे जन्म-जन्म के फेरे।।
भाग्य बनें चमकीले।
चल सत्संग में, रंग जा रंग में...।।1।।
बैठ यहाँ पर ध्यान लगा ले। परमेश्वर की महिमा गा ले।।
सत्संग की मस्ती ले।
चल सत्संग में, रंग जा रंग में..।।2।।
वेद प्रभु की अमृत वाणी।पतित पावनी शुभ कल्याणी।।
सुन ले मन्त्र रसीले।
चल सत्संग में, रंग जा रंग में.....।।3।।
फिर कुछ नहि बन पाएगा।हाथ मसलता रह जाएगा।।
अंग हुए जब ढीले।
चल सत्संग में, रंग जा रंग में.........।।4।।
इस दुनियाँ में हो गुजरे हैं। सुन्दर अवसर खो गुजरे हैं।।
कितने छैल छबीले।
चल सत्संग में, रंग जा रंग में.......।।5।।
कल का 'पथिक' भरोसा क्या है।
कल क्या होगा किसे पता है।।
सोच जरा गर्वीले।
चल सत्संग में, रंग जा रंग में.........।।6।।

कृतज्ञता

क्र.सं.	कृतज्ञता भजन/गीत के बोल	पृ. सं.
1.	हर हाल में दाता का जो शुकर मनाते हैं	148
2.	मुझे तूने मालिक बहुत कुछ दिया है	149
3.	न यह तेरा, न यह मेरा, मंदिर है भगवान का	150
4.	तेरी रहमतों का सहारा न होता	151
5.	मैं नहीं, मेरा नहीं, यह तन किसी का है दिया	152
6.	प्रभु! तुझसा ना कोई विश्व का रखवाल है	153
7.	अजब तेरी कारीगरी रे करतार-2	155
8.	तेरे नाम का सिमरन करके, मेरे मन में सुख भर आया	156
9.	तेरी मेहरबानी का है बोझ इतना	157
10.	जगत में उनकी मिटी है चिंता, जो तेरे चरणों में आ गये हैं	158
11.	हिम्मत न हारिए, प्रभु न बिसारिए	159
12.	सब जग के आधार, नमस्कार, नमस्कार	161
13.	नमस्कार भगवान तुम्हें, भक्तों का बारम्बार हो	162
14.	परम पिता से प्यार नहीं, शुद्ध रहा व्यवहार नहीं	163
15.	चलने को प्रभु ने पग दिये, काम करने को हाथ	164
16.	हे नाथ तुम्हारी महती दया	165

कृतज्ञता

हर हाल में दाता का, जो शुकर मनाते हैं।
उनके घर खुशियों की, होती बरसाते हैं।।
मुझे तूने मालिक ....

है याद जिन्हें दाता, हर दात मिले उनको।
बिन माँगे खुशियों की, सौगात मिले उनको।
सुख पाकर भी सुख में, नहीं मन भरमाते हैं।।
हर हाल में दाता का ....

ज्यादा में शुकर कीजे, थोड़े में सबर कीजे।
फिर उसकी रहमत को, दामन में भर लीजे।
ये बातें जो माने, वो ही सुख पाते हैं।।
हर हाल में दाता का ....

हर सुख देने वाले, दाता को याद करें।
जो हर पल साथ है मेरे, हम उसका ध्यान धरें।
आदर्श है जो वेदों का, इस मन में बसाते हैं।।
हर हाल में दाता का ....

कृतज्ञता

मुझे तूने मालिक बहुत कुछ दिया है।
तेरा शुक्रिया है, तेरा शुक्रिया है।।
मुझे तूने मालिक ....
ना मिलती अगर दी हुई दात तेरी,
तो क्या थी जमाने में औकात मेरी,
यह बन्दा तो तेरे सहारे जिया है।।
तेरा शुक्रिया है तेरा ....
यह जायदाद दी है ये औलाद दी है,
मुसीबत में हर वक्त इमदाद की है,
तेरा ही दिया मैंने खाया पिया है।।
तेरा शुक्रिया है तेरा ....
मेरा ही नहीं है, सभी का तू दाता
सभी को सभी कुछ है देता दिलाता
जो खाली था दामन, वह तूने भरा है
तेरा शुक्रिया है तेरा ....
मेरा भूल जाना तेरा ना भूलाना,
तेरी रहमतों का कहाँ है ठिकाना,
तेरी इस मोहब्बत ने पागल किया है।।
तेरा शुक्रिया है तेरा ....
तेरी बन्दगी से मैं बन्दा हूँ मालिक,
तेरे ही करम से मैं जिन्दा हूँ मालिक,
तुम्हीं ने तो जीने के काबिल किया है।।
तेरा शुक्रिया है तेरा ....

कृतज्ञता

न यह तेरा न यह मेरा, मंदिर है भगवान का।
पानी उसका भूमि उसकी, सब कुछ उसी महान का।।1।।
हम सब खेल खिलौने उसके, खेल रहा करतार रे।
उसकी ज्योति सबमें चमके, सबमें उसी का प्यार रे।।2।।
तीर्थ जाये मंदिर जाये, अनगिन देव मनाए रे।
दीन रूप में प्रभु खड़े हैं, देख के नैन चुराए रे।।3।।
मन मंदिर में दर्शन कर ले, उस प्राणों के प्राण का।
मन की आँखें खुल जाये तो, क्या करना और ज्ञान का।।4।।
कौन है ऊँचा कौन है नीचा, सब हैं एक समान रे।
प्रेम की ज्योति जगा हृदय में सब प्रभु पहचान रे।
सरल हृदय को शरण में राखे, प्रभु भोले नादान रे।।5।।
न यह तेरा न यह मेरा, मंदिर है भगवान का।
पानी उसका भूमि उसकी, सब कुछ उसी महान का।।6।।

सुविचार

ईशावास्यमिदं सर्वम्

ईश्वर विश्व के कण-कण में व्याप्त है।

कृतज्ञता

तेरी रहमतों का सहारा ना होता,
तो एक पल भी मेरा गुजारा न होता।
तेरी रहमतों से मैं जिन्दा हूँ मालिक,
तेरी बंदगी से मैं बन्दा हूँ मालिक।
अगर तू न होता तो कोई हमारा ना होता।
तो एक पल भी मेरा ....1।।
अल्पज्ञ हूँ मैं दाता, जो तुझे भूल जाऊँ,
जो ठोकर लगे तो तेरे पास आऊँ।
वरना मेरा यहाँ गुजारा ना होता।।
तो एक पल भी मेरा ....2।।
तेरे भक्त विष पीकर भी मुस्कुराते,
तेरी इच्छा पूर्ण हो यही गीत गाते।
तू अगर अपने भक्तों को प्यारा ना होता।
तो एक पल भी मेरा ....3।।
ये संसार सागर महाजाल घेरा,
मेरी जिन्दगी में है छाया अंधेरा।
देता न ज्योति तू, उजाला ना होता।
तो एक पल भी मेरा ....4।।

कस्मै देवाय हविषा विधेमः
सुख स्वरूप परमात्मा को नमन।

कृतज्ञता

मैं नहीं मेरा नहीं, यह तन किसी का है दिया।
जो भी अपने पास है, यह धन किसी का है दिया।।1।।
देने वाले ने दिया तो भी दिया किस शान से।
मेरा है यह लेने वाला कह उठा अभिमान से।
मैं, मेरी यह कहने वाला मन किसी का है दिया।
मैं नहीं मेरा नहीं, यह तन किसी का है दिया।।2।।
जो भी मिला है, यह हमेशा उसके पास रह सकता नहीं।
कब बिछुड़ जायें, यह कोई राज कह सकता नहीं।
जिन्दगानी का खिला मधुबन किसी का है दिया।
मैं नहीं मेरा नहीं, यह तन किसी का है दिया।।3।।
जग की सेवा खोज अपनी प्रीत उससे कीजिए।
जिन्दगी का राज है यह जानकर जी लीजिए।
साधना की राह पर यह साधन किसी का है दिया।
मैं नहीं मेरा नहीं, यह तन किसी का है दिया।।4।।

सुविचार

जो प्राप्त है, वही पर्याप्त है।

कृतज्ञता

हे प्रभु! तुझसा ना कोई, विश्व का रखवाल है।
एक तू सारे जगत् का, कर रहा प्रतिपाल है।।1।।
हे प्रभु! तुझसा न कोई ....

सर्वदा सर्वत्र व्यापक, शुद्ध और चेतन महा।
कान बिन सब सुन रहा, तू विश्व भर का हाल है।।2।।
हे प्रभु! तुझसा न कोई ....

है सभी कारीगरों में मुख्य कारीगर तू ही।
हाथ बिन सब रच रहा, सारे जगत् का जाल है।।3।।
हे प्रभु! तुझसा न कोई ....

आदि सृष्टि में दिया, उपदेश सब वेदों का ज्ञान।
वाक् इन्द्रिय के बिना, कितना बड़ा वाचाल है।।4।।
हे प्रभु! तुझसा न कोई ....

सर्वदृष्टा और तू सर्वज्ञ होने से प्रभो!
आँख बिन देखे सभी दुनिया की चालो-ढाल है।।5।।
हे प्रभु! तुझसा न कोई ....

क्रमशः...... 154

दौड़ने वालों से पहले है वहाँ मौजूद तू।
चल रहा बिन पद अहा! कैसी अनोखी चाल है।।6।।
हे प्रभु! तुझसा न कोई ....

भर रहा धन-धान्य से, तू ही सबके परिवार को।
पास कौड़ी है नहीं, पर सबसे मालामाल है।।7।।
हे प्रभु! तुझसा न कोई ....

तेरी सानी का कोई भी, दूसरा पाया नहीं।।
तू कभी जन्मा नहीं है, और न तेरा काल है।।8।।
हे प्रभु! तुझसा न कोई ....

है तेरी माया अलौकिक, किस तरह गायन करें।
तुच्छ बुद्धि यह तेरा सेवक 'किशोरी लाल' है।।9।।
हे प्रभु! तुझसा न कोई ....

इस नश्वर शरीर से प्रेम करने के बजाए हमें परमेश्वर से प्रेम करना चाहिए, सत्य और धर्म से प्रेम करना चाहिए, क्यों ये नश्वर नहीं है।

कृतज्ञता

अजब तेरी कारीगरी रे करतार -2
समझ में न आये माया तेरी, बदले रंग हजार,
अजब तेरी कारीगरी है करतार।
देने वाले तूने यह घर, खुशियों से भर डाला।
तेरी दया ने पल में दाता, क्या से क्या कर डाला।
तू सबसे बड़ा है दानी, तेरी महिमा किसी ने न जानी,
जग सोच-सोच गया हार।
अजब तेरी कारीगरी है करतार।
छोटा सा संसार हमारा, स्वर्ग बनाये रखना-2
इस बगिया में सदा खुशी के फूल खिलाये रखना।
चाहे राजा हो या भिखारी, तूने विपदा सबकी टाली,
अरे वाह रे पालन हार।
अजब तेरी कारीगरी है करतार।

सुविचार

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः

हमें सब ओर से श्रेष्ठ विचारों की प्राप्ति हो।

कृतज्ञता

तेरे नाम का सुमिरन करके, मेरे मन में सुख भर आया।
तेरी कृपा को मैंने पाया, तेरी दया को मैंने पाया।।1।।
तेरी कृपा को मैंने पाया ....

दुनिया की ठोकर खाकर, जब हुआ कभी बेसहारा।
न पाकर अपना कोई, तब मैंने तुम्हें पुकारा।
हे नाथ मेरे सिर ऊपर, तूने अमृत बरसाया।।2।।
तेरी कृपा को मैंने पाया ....

तू संग में था नित मेरे, ये नैना देख न पाए।
चंचल माया के रंग में, ये नैन रहे उलझाए।
जितनी भी बार गिरा हूँ, तूने पग-पग मुझे उठाया।।3।।
तेरी कृपा को मैंने पाया ....

भवसागर की लहरों में, भटकी मेरी जब नैया।
तट छूना भी मुश्किल था, नहीं दीखे कोई खिवैया।
तू लहर बना सागर की, मेरी नाव किनारे लाया।।4।।
तेरी कृपा को मैंने पाया ....

हर तरफ तुम्हीं हो मेरे, हर तरफ तेरा उजियारा।
निर्लेप प्रभु जी मेरे, हर रूप में रंग तुम्हारा।
तेरी शरण में दाता, मैंने तेरा ही तुमको चढ़ाया।।5।।
तेरी कृपा को मैंने पाया ....

कृतज्ञता

तेरी मेहरबानी का है बोझ इतना,
जिसे मैं उठाने के काबिल नहीं हूँ।
मैं तो आ गया हूँ मगर जानता हूँ,
तुझे मुँह दिखाने के काबिल नहीं हूँ।।1।।

जमाने की चाहत में खुद को मिटाया,
तेरा नाम हरगिज जुबां पर न लाया।
गुनाहगार हूँ मैं खतावार हूँ मैं,
तुझे मुँह दिखाने के काबिल नहीं हूँ।।2।।

तुम्हीं ने अदा की यह जिन्दगानी,
मगर तेरी महिमा मैंने न जानी।
करजदार हूँ तेरी दया का मैं इतना,
कि कर्जा चुकाने के काबिल नहीं हूँ।
तुझे मुँह दिखाने के काबिल नहीं हूँ।।3।।

माना कि दाता हो तुम कुल जहाँ के,
मगर कैसे झोली फैलाऊँ मैं आगे।
जो पहले दिया है वही कम नहीं है,
उसी को चुकाने के काबिल नहीं हूँ।

तेरी मेहरबानी का है बोझ इतना,
जिसे मैं उठाने के काबिल नहीं हूँ।
मैं तो आ गया हूँ मगर जानता हूँ,
तुझे मुँह दिखाने के काबिल नहीं हूँ।।4।।

कृतज्ञता

जगत् में उनकी मिटी है चिन्ता, जो तेरे चरणों में आ गये हैं,
वही हमेशा हरे-भरे हैं, जो तेरे चरणों में आ गये हैं।

न पाया तुझ को वजीर बनकर,
न पाया तुझको फकीर बनकर,
उन्हीं को दर्शन हुए हैं तेरे,
जो तेरे चरणों में आ गये हैं।
जगत् में उनकी मिटी है चिन्ता ....

न पाया तुझको किसी ने बल से,
न पाया तुझको किसी ने छल से।
वही परम-पद को पा गये हैं,
जो तेरे चरणों में आ गये हैं।
जगत् में उनकी मिटी है चिन्ता ....

किसी ने जग में करी बुराई,
किसी ने जग में करी भलाई।
वही सुमार्ग पर चल पड़े हैं,
जो तेरे चरणों में आ गये हैं।
जगत् में उनकी मिटी है चिन्ता ....

प्रभु जी विनती सुनो हमारी,
संवारो बिगड़ी दशा हमारी।
बे आसरों का तुम आश्रय हो,
हम तेरे चरणों में आ गये हैं।।
जगत् में उनकी मिटी है चिन्ता ....

कृतज्ञता

हिम्मत न हारिये, प्रभु न बिसारिये।
हँसते मुस्कुराते हुए जिन्दगी गुजारिये।।
हँसते मुस्कुराते हुए ....

हँसते मुस्कुराते हुए जीना जिसको आ गया।
टूटे हुए दिलों को सीना जिसको आ गया।
ऐसे देवताओं के चरणों को पखारिये
उनकी तरह नेक बनके जिन्दगी गुजारिये।।
हँसते मुस्कुराते हुए ....

काम ऐसे कीजिये कि जिनसे हो सबका भला
बातें ऐसी कीजिये जिनमें हो अमृत भरा
मीठी बोली बोल सबको प्रेम से पुकारिये,
कड़वे बोल-बोल के न जिन्दगी गुजारिये।।
हँसते मुस्कुराते हुए ....

मुश्किलों मुसीबतों का, करना है जो खात्मा
हर समय कहिये, तेरा शुक्र है परमात्मा
गिले शिकवे करके अपना, हाल न बिगाड़िये
जैसे प्रभु रखे वैसे जिन्दगी गुजारिये।।
हँसते मुस्कुराते हुए ....

जारी पृष्ठ 160 पर....

शुभ कर्म करते हुए, दु:ख भी अगर पा रहे,
पिछले पाप कर्मों का, भुगतान ही भुगता रहे
आगे मत उठाइये, पिछले बोझ उतारिये
गलतियों से बचते हुए, जिन्दगी गुजारिये।।
हँसते मुस्कुराते हुए ....

दिल की नोट बुक में बातें, नोट कर लीजिये
बनके सच्चे सेवक, सच्चे दिल से अमल कीजिए
करके अकल बनके कमल, तरिए और तारिए
जग में जगगमाती हुई, जिन्दगी गुजारिये।।
हँसते मुस्कुराते हुए ....

हिम्मत ने हारिये, प्रभु न बिसारिये।
हँसते मुस्कुराते हुए जिन्दगी गुजारिये।।

सुविचार

परिवार के साथ धैर्य प्यार कहलाता है।
औरों के साथ धैर्य सम्मान कहलाता है।
स्वयं के साथ धैर्य आत्मविश्वास कहलाता है।
भगवान् के साथ धैर्य आस्था कहलाती है।

कृतज्ञता

सब जग के आधार, नमस्कार नमस्कार।
आये तेरे द्वार, नमस्कार नमस्कार।।टेक।।
सुरज और चाँद में, तेरा ही उजाला, तूने पहन रखी है सितारों की माला।
महिमा अपरम्पार, नमस्कार-नमस्कार।।1।।
कोयल की कू-कू, सबको है भा रही,
पञ्चम के स्वर में, मधुर गीत गा रही।
यही रही पुकार, नमस्कार नमस्कार।।2।।
पर्वतों की चोटियों को, बादल हैं चूमते,
पृथ्वी, सूरज, चाँद सितारे, सारे ही हैं घूमते।
नियम अनुसार, नमस्कार नमस्कार।।3।।
फुलवाड़ी को देखो, कैसे फूल हैं निराले,
नीले पीले और गुलाबी, कोमल खुशबू वाले।
छाई है बहार, नमस्कार नमस्कार।।4।।
आत्मा का रथ कैसा, सुन्दर बनाया है,
मन, बुद्धि इन्द्रियों से, इसको सजाया है।
अष्ट चक्र नव छार, नमस्कार नमस्कार।।5।।
जगत् जननी माता हमको, तेरा ही सहारा है,
तेरे बिना और ना, कोई भी हमारा है।
भव से कर दो पार, नमस्कार नमस्कार।।6।।
प्रभु अपनी भक्ति का वरदान देना,
शिव संकल्प और सुविचार देना।
वेदों के अनुसार, नमस्कार नमस्कार।।7।।
कहे 'नन्द लाल' सबकी आत्मा पवित्र हो,
देह हो नीरोग और ऊँचा चरित्र हो।
विनती बारम्बार, नमस्कार नमस्कार।।8।।

कृतज्ञता

नमस्कार भगवान तुम्हें, भक्तों का बारम्बार हो।
श्रद्धा रूपी भेंट हमारी, मंगलमय स्वीकार हो।।
तुम कण-कण में बसे हुए हो, तुझ में जगत समाया है।
तिनका हो चाहे पर्वत हो, सभी तुम्हारी माया है।
तुम दुनियाँ में हर प्राणी के, जीवन का आधार हो।
श्रद्धा रूपी भेंट हमारी ....

सब के सच्चे पिता तुम्हीं हो, तुम्हीं जगत की माता हो।
भाई बन्धु सखा सहायक, रक्षक पोषक दाता हो।
चींटी से लेकर हाथी तक, सब के सिरजनहार हो।।
श्रद्धा रूपी भेंट हमारी ....

ऋषि मुनि योगी जन सारे, तुझ से ही वर पाते हैं।
क्या राजा क्या रंक तुम्हारे, दर पे शीश झुकाते हैं।
परम दयालु परम कृपालु, करुणा के भण्डार हो।।
श्रद्धा रूपी भेंट हमारी ....

तूफानों से घिरे 'पथिक' प्रभु, तुम ही एक सहारा हो।
डगमग डगमग नैया डोले, तुम ही नाथ किनारा हो।
तुम खेवट हो इस नैया के, और तुम ही पतवार हो।।
श्रद्धा रूपी भेंट हमारी ....

कृतज्ञता

परम पिता से प्यार नहीं, शुद्ध रहा व्यवहार नहीं,
इसीलिए तो आज देख लो, सुखी कोई परिवार नहीं।।1।।
फल और फूल अन्न इत्यादि, समय-समय पर देता है,
लेकिन अचरज ऐसा, बदले में कुछ नहीं लेता है।।2।।
करता है इनकार नहीं, भेद-भाव तकरार नहीं,
ऐसे दानी का ओ बन्दे, करता जरा विचार नहीं।।3।।
इसीलिए तो आज देख लो.................
मानव चोले में न जाने, कितने यंत्र लगाए हैं,
कीमत कोई आँक सका न, ऐसे अमूल्य बनाए हैं।।4।।
कोई चीज बेकार नहीं, पा सकता कोई पार नहीं,
ऐसे कारीगर का बन्दे, माने तू उपकार नहीं।।5।।
जलवायु और अग्नि का वह, लेता नहीं सहारा है।
सर्दी गर्मी वर्षा का अति सुन्दर चक्र चलाया है।।6।।
लगा कहीं दरबार नहीं, कोई सिपाह-सालार नहीं,
कर्मों का फल देवे सभी को, रिश्वत की सरकार नहीं।।7।।
इसीलिए तो आज देख लो.............
सूरज चाँद सितारों का तो, बिजली घर नहीं बना हुआ,
पल भर को नहीं देते धोखा, कहाँ कनैक्शन लगा हुआ।।8।।
खम्भा और कोई तार नहीं, खड़ी कोई दीवार नहीं,
ऐसे शिल्पकार का करता, ओ 'नरदेव' विचार नहीं।।9।।

कृतज्ञता

चलने को प्रभु ने पग दिए, काम करने को हाथ।
मनन करने को मन दिया है प्रभु! जग के नाथ।।1।।
देखने को चक्षु दिए, श्रवण को कान।
धन्यवाद निशदिन करूँ, हे प्रभु! दयानिधान।।2।।
जीवन के हित आपने, दिया अन्न-जल दान।
सर्व सुखों के हेतु से, दिए हमें धन धान।।3।।
रोग निवारण के लिए, दीन्हीं औषध मूल।
नाना विध मेवे दिए, और सुगंधित फूल।।4।।
सूर्य चाँद तारे दिए, हमरे सुख के काज।
धन्यवाद है कोटिशः, तुमको हे महाराज।।5।।
धातु नाना भाँति के, और रत्न अनमोल।
सुख हेतु पैदा किए, बिन संख्या बिन तोल।।6।।
बुद्धि तेज और बल दिया, निज रक्षा के काज।
धन्यवाद है कोटिशः, तुमको हे महाराज।।7।।
सत्य आपका नाम है, सत्य आपके काम।
तेरे सत्य स्वरूप को, करता सदा प्रणाम।।8।।
सुख स्वरूप संकट हरण, सुख स्वरूप तब धाम।
तुझ उपास्य जगदीश को, बारम्बार प्रणाम।।9।।

कृतज्ञता

हे नाथ तुम्हारी महती दया,
मानव-तन हमें प्रदान किया,
तुम धन्य अहो जग के स्वामी,
हम पर उपकार महान् किया।।1।।
हे नाथ तुम्हारी महती दया ....
जग के तुम कर्त्ता-धर्ता हो,
सुख के दाता दुःख हर्त्ता हो।
तेरा गुण कीर्तन करने को,
वेदों ने विधि विधान किया।।2।।
हे नाथ तुम्हारी महती दया ....
हे ईश तुम्हें हम ध्याते हैं,
तुमको ही शीश नवाते हैं।
ऋषि-मुनियों और योगियों ने,
सतत् तेरा ही गुणगान किया।।3।।
हे नाथ तुम्हारी महती दया ....
कर्त्तव्य के हम में भाव भरो,
हमको भव से शिव पार करो।
कृत-कृत हुआ वह जन जिसने,
तन प्रेम सुधा रस पान किया।।4।।
हे नाथ तुम्हारी महती दया,
मानव-तन हमें प्रदान किया।।

वैराग्य

क्र.सं.	वैराग्य भजन/गीत के बोल	पृ. सं.
1.	जीवन बीत रहा पल-पल में	167
2.	छोड़कर संसार जब तू जायेगा	168
3.	कोई दुनियां में आता है, कोई दुनियां से जाता है	169
4.	जीवन खत्म हुआ तो, जीने का ढंग आया	170
5.	कुछ काम करके जाना, दुनियां से जाने वाले	171
6.	किसी दिन देख लेना, तुझको ऐसी नींद आयेगी	172
7.	ओ भोले पंछी सोच जरा, तेरा असली कहाँ ठिकाना है	173
8.	गाए जा, गाए जा, भगवान की महिमा गाए जा	174
9.	माटी कहे कुम्हार से तू क्यों रौंधे मोय	175

सुविचार

वैराग्य का सरल सा अर्थ है सुख और दु:ख, लाभ और हानि, काम, क्रोध, लोभ, मोह और मत्सर में एक जैसा बना रहना।

वैराग्य

जीवन बीत रहा पल-पल में।
किसे पता है, कौन जगे ना, आने वाले कल में।।

महाकाल विकराल खड़ा है, अपना फंदा डाल खड़ा है।
कौन बचा है कौन बचेगा, मृत्यु की हलचल में।।
जीवन बीत रहा पल-पल में, किसे पता है ......

भरत कहाँ है राम कहाँ है, धर्मराज घनश्याम कहाँ है।
है कोई उनका पता बताए, सारे भूमण्डल में।।
जीवन बीत रहा पल-पल में, किसे पता है ......

टिम-टिम करते नभ में तारे, छुप जाऐंगे इक दिन सारे।
नहीं बिजुरिया चमकेगी इस, काले से बादल में।।
जीवन बीत रहा पल-पल में, किसे पता है ......

मोह माया में भटक रहा है, किस उलझन में अटक रहा है।
फँसा दिया 'बेमोल' ये जीवन, दुनियाँ की दलदल में।।
जीवन बीत रहा पल-पल में, किसे पता है ......

वैराग्य

छोड़कर संसार, जब तू जाएगा,
कोई ना साथी, तेरा साथ निभाएगा।।
गर प्रभु का भजन किया ना, सत्संग किया ना दो घड़ियाँ।
यमदूत लगाकर तुझको, ले जाएगा हथकड़ियाँ,
कौन छुड़ाएगा।।
कोई न साथी, तेरा साथ ....
क्यों करता मेरा मेरा, ये दुनियाँ रैन बसेरा।
यहाँ कोई नहीं है तेरा, है चन्द दिनों का डेरा,
हंस उड़ जाऐगा।।
कोई न साथी, तेरा साथ ....
इस पेट भरन की खातिर, तू पाप कमाता निशदिन।
शमशान में लकड़ी रखकर, तुझे आग लगेगी इक दिन,
खाक हो जाएगा।।
कोई न साथी, तेरा साथ ....
सत्संग की है ये गंगा, तू इसमें लगा ले गोता।
वरना इस दुनियाँ से, जाएगा इक दिन रोता,
बाद पछताऐगा।।
कोई न साथी, तेरा साथ ....
अब प्रभु चरणों में निशदिन, तू प्रीत लगा ले बन्दे।
कट जाऐंगे तेरे ये सब, जन्म मरण के फन्दे,
पार हो जाएगा।।
कोई न साथी, तेरा साथ ....

वैराग्य

कोई दुनियाँ में आता है, कोई दुनियाँ से जाता है।
ये चक्कर रूक नहीं सकता, प्रभु इसको चलाता है।।
भलाई कर भला होगा, बुराई कर बुरा होगा।
जो जैसा बीज बोता है, वो फल वैसा ही पाता है।।
कोई दुनियाँ में आता है कोई...........
प्रभु का ध्यान करने से, सभी दु:ख दूर हो जाएं।
कभी सुख पा नहीं सकता, जो ईश्वर को भुलाता है।।
कोई दुनियाँ में आता है कोई...........
वो कण-कण में समाया है, नजर लेकिन नहीं आता।
वही सृष्टि का कर्त्ता है, वही मुक्ति का दाता है।।
कोई दुनियाँ में आता है कोई...........
जिसे हर दम मुनि योगी, तपस्वी याद करते हैं।
उसी के ही मगन मन से, 'पथिक' ये गीत गाता है।।
कोई दुनियाँ में आता है कोई...........

सुविचार

अंतवन्तः इमे देहाः

सभी शरीर नाशवान् होते हैं।

वैराग्य

जीवन खतम हुआ तो, जीने का ढंग आया।
जब शमां बुझ गई तो, महफिल में रंग आया।।
गाड़ी निकल गई तब, घर से चला मुसाफिर।
मायूस हाथ मलते, वापस बैरंग आया।।
जीवन खतम हुआ तो जीने ....
मन की मशीनरी ने, तब ठीक चलना सीखा।
जब बूढ़े तन के हर इक, पुर्जे ने जंग खाया।।
जीवन खतम हुआ तो जीने ....
फुरसत के वक्त में ना, सिमरन का वक्त माँगा।
उस वक्त वक्त माँगा, जब वक्त तंग आया।।
जीवन खतम हुआ तो जीने ....
आयु ने 'नत्थासिंह' जब, हथियार फेंक डाले।
यमराज फौज ले के, करने को जंग आया।।
जीवन खतम हुआ तो जीने ....

सुविचार

आचारः परमो धर्मः

सदाचार परम धर्म है।

वैराग्य

कुछ काम करके जाना, दुनियाँ से जाने वाले।
जाते हैं रोज लाखों, बेकार खाने वाले।।
चौरासी लाख खोये, हर जन्म-मरण रोये।
अब व्यर्थ मत गंवाना, दिन चार जीने वाले।।
कुछ काम करके जाना............
हिंसा असत्य चोरी, कर कर के माया जोड़ी।
क्या साथ ले चलेगा, सब छोड़ जाने वाले।।
कुछ काम करके जाना............
झूठे जगत के रिश्तों से, करता है क्या मोहब्बत।
सब छोड़ने पड़ेंगे, नहीं साथ जाने वाले।।
कुछ काम करके जाना............
मर कर भी गम ना होगा, कुछ नेक काम कर ले।
अब बेखबर ना रहना, दुनियाँ से जाने वाले।।
कुछ काम करके जाना............

सुविचार

जो अपने लिए जीते हैं, वो मर जाते हैं।
जो समाज के लिए जीते हैं, वो जिन्दा रहते हैं।

वैराग्य

किसी दिन देख लेना, तुझको ऐसी नींद आएगी।
तू सोया फिर ना जागेगा, तुझे दुनियाँ जगाएगी।।
तुझे संसार के खूँटे से, जिसने बाँध रक्खा है।
तेरे सोते ही ममता की, वो रस्सी टूट जाएगी।।
किसी दिन देख लेना तुझको ....
तेरे घर वाले जिस सूरत से, इतना प्यार करते हैं।
यही सूरत उन्हें फिर, भूत बन करके डराएगी।।
किसी दिन देख लेना तुझको ....
तेरी हस्ती को जिस खलकत, ने पस्ती में गिराया है।
वो ही बेकदर दुनिया, तुझको कंधों पर बिठाएगी।।
किसी दिन देख लेना तुझको ....
तू आँखे फेरेगा तो, दुनियाँ भी मुँह फेर जाएगी।
जो आँखों पर बिठाती थी, वो ही आँखे दिखाएगी।।
किसी दिन देख लेना तुझको ....
जो कहते थे मरेंगे साथ, वो थोड़े कदम चलकर।
वो मोह मटकी भी तिनके, तोड़ते ही टूट जाएगी।।
किसी दिन देख लेना तुझको ....
जिन्हें समझा है 'नत्थासिंह', वो तो लौट जाएंगे।
तेरी नेकी बदी ही, अन्त में तेरे काम आएगी।।
किसी दिन देख लेना तुझको ....

वैराग्य

ओ भोले पंछी सोच जरा,
तेरा असली कहाँ ठिकाना है।
इस दुनियाँ की रंगरलियों पे,
तू क्यों हो गया दीवाना है।।
ओ भोले भाले पंछी सोच जरा, तेरा ....
तू इस माया के फूलों को,
क्यों देख-देख कर फूला है,
इस चमन की मस्त बहारों में,
खुद अपने आपको भूला है।
जो फूल खिले हैं आज यहाँ,
कल उनको भी मुरझाना है।।
ओ भोले भाले पंछी सोच जरा, तेरा ....
ये जीवन एक कहानी है
बस दो दिन की जिन्दगानी है,
यहाँ टिककर कोई रहा ही नहीं,
यह दुनियाँ आनी जानी है।
इस बात को भूलना मत पगले,
तुझको भी एक दिन जाना है।।
ओ भोले भाले पंछी सोच जरा, तेरा ....
कुछ सोच ले उठ नादान जरा,
कर ले सुमिरन भगवान जरा,
पुण्य पाप की गठरी जो बांधी,
उस पर भी कर ले ध्यान जरा।
ये वक्त अमोलक जीवन का,
फिर लौट के हाथ ना आना है।।
ओ भोले भाले पंछी सोच जरा, तेरा ....

वैराग्य

गाए जा, गाए जा, भगवान की महिमा गाए जा।
सुबह शाम इस मन मन्दिर में, झाड़ू रोज लगाए जा।।
गाए जा, गाए जा, भगवान की ....
तरह तरह के खेल हैं इसमें, दुनियाँ एक तमाशा है।
कहीं खुशी है कहीं गमी है, आशा कहीं निराशा है।
चाहे वो हँसाए चाहे वो रूलाए, अपना फर्ज निभाए जा।।
गाए जा, गाए जा, भगवान की ....
चिन्ता और चिता इस जग में, एक समान कहाती हैं।
इक जिन्दे को इक मुर्दे को, दोनों सदा जलाती हैं।
दुःख को दिखाए वही दुखड़े मिटाए, चिंता दूर भगाए जा।।
गाए जा, गाए जा, भगवान की ....
कौन हमेशा रहा जगत में, किसका यहाँ ठिकाना है।
बाँध ले अपना बिस्तर बाबा, ये तो देश बेगाना है।
ये दुनियाँ सराय, कोई आए कोई जाए, 'पथिक' यही समझाए जा।
गाए जा, गाए जा, भगवान की ....

ये शरीर नश्वर है। हमें इस शरीर के जरिए सिर्फ एक मौका मिला है खुद को साबित करने का कि मनुष्यता और आत्म विवेक क्या है।

वैराग्य

माटी कहे कुम्हार से, तू क्या रूँदे मोय,
इक दिन ऐसा आएगा, मैं रूँदूँगी तोय।।

आए हैं सो जाऐंगे, राजा रंक फकीर,
एक सिंहासन चढ़ि चले, एक बंधे जंजीर।।

मेरा मुझमें कुछ नहीं, जो कुछ है सो तोर,
तेरा तुझको सौंपते, क्या लागे है मोर।।

पत्ता टूटा डाली से, ले गई पवन उड़ाय,
अब के बिछड़े कब मिलें, दूर पड़ेंगे जाय।।

तुमरी चाही में प्रभो, है मेरा कल्याण,
मेरी चाही मत करो, मैं मूरख नादान।।

चलती चक्की देख के, दिया कबीरा रोय,
दो पाटन के बीच में, साबुत बचा न कोय।।

कबिरा जब पैदा हुए, जग हँसे हम रोए,
ऐसी करनी कर चलो, हम हँसे जग रोए।।

हाड़ जले ज्यूँ लाकड़ी, केश जले ज्यूँ घास,
सब जग जलता देख के, भये कबीर उदास।।

निर्बल को ना सताइए, जाकी मोटी हाय,
बिना जीव की खाल से, लोहा भस्म हो जाय।।

शिक्षा

क्र.सं.	शिक्षा भजन/गीत के बोल	पृ. सं.
1.	दो घड़ी भगवान का ले नाम तू	177
2.	पाके सुन्दर बदन, कर प्रभु का भजन	178
3.	तू कर बन्दगी और भजन धीरे-धीरे	179
4.	जागो रे, ऐ दौलत के दीवानों	180
5.	ऐसी कमाई कर लो जो संग जा सके	181
6.	इक बार भजन कर ले, मुक्ति का यत्न कर ले	182
7.	अनमोल है जीवन, तो फिर इसको गंवा नहीं	183
8.	कर्मों की खेती बन्दे, खुद ही तू काटेगा	184
9.	उठ नाम सिमर, मत सोय रहो	185
10.	जिसे नाम ईश्वर का भाता नहीं है	186
11.	ईश्वर से करते जाना प्यार, ओ नादान मुसाफिर	187
12.	नहीं चाहिए दिल दुखाना किसी का	188
13.	उस प्रभु की है कृपा बड़ी, याद कर ले घड़ी दो घड़ी	189
14.	माँग बन्दे माँग तू भगवान से	190
15.	रोते हुए आये थे हँसते हुए जाना है	191
16.	ज्योति से ज्योति जलाते चलो	192
17.	पानी से तन शुद्ध करो, मन शुद्ध करो सच्चाई से	193
18.	ईश्वर को ढूंढ़ने का वैदिक स्वरूप क्या है	194
19.	ईश्वर से प्यार न किया, तो प्यार क्या किया	195
20.	अरे प्राणी क्यों सोया है, यह जीवन ढलता जाता है	196
21.	इस नर तन चोले को पाकर जीवन बर्बाद न कर	197
22.	परमेश्वर के गुण गान से	199
23.	साधना की राह पर है चलना कठिन	200
24.	ये नर तन जो तुझको मिला है	201
25.	बिना अमल के ज्ञान व लैक्चर	202
26.	ईश्वर का गुणगान किया कर	203
27.	जिन्दगी का सफर करने वाले	204
28.	प्रेमी भरकर प्रेम में, ईश्वर के गुण गाया कर	205

शिक्षा

दो घड़ी भगवान का ले नाम तूँ।
छोड़ कर दुनियाँ के सारे काम तू।।
दो घड़ी का नाम भी रंग लाएगा।
दे समय थोड़ा सुबह और शाम तू।।
दो घड़ी भगवान का ....
दिल का शीशा साफ कर आसन जमा।
मन की चंचलता को प्यारे थाम तू।।
दो घड़ी भगवान का ....
त्याग कर आलस्य आ सत्संग में।
प्रेम रस का भक्तवर पी जाम तू।।
दो घड़ी भगवान का ....
देख तेरे काम की यह बात है।
पाऐगा दुनियाँ में फिर आराम तू।।
दो घड़ी भगवान का ....

सुविचार

वेदों का निन्दक और न मानने वाला नास्तिक कहलाता है।

शिक्षा

पाके सुन्दर बदन, कर प्रभु का भजन,
दुनियाँ फानी का कोई भरोसा नहीं।
जो आया यहाँ उसको जाना पड़े,
जिन्दगानी का कोई भरोसा नहीं।।

बालपन खेल और कूद में खो गया,
फिर बुढ़ापे का आसार आने लगा,
इस सुघड़ बेला में कर कमाई भली,
नौजवानी का कोई भरोसा नहीं।।
पाके सुन्दर बदन, कर प्रभु का ....

अरबों वाले गए खरबों वाले गए,
कितने गोली व गोले रिसाले गए।
कितने राजा गए कितनी रानी गईं,
राजधानी का कोई भरोसा नहीं।।
पाके सुन्दर बदन, कर प्रभु का ....

श्रेष्ठ जीवन बना, कर सभी का भला,
तेरे जीवन में सुख शान्ति आ जाएगी।
गर करेगा भला तेरा होगा भला,
बदगुमानी का कोई भरोसा नहीं।।
पाके सुन्दर बदन, कर प्रभु का ....

खाली हाथों यहाँ से सिकन्दर गया,
सब खजानों की चाबी धरी रह गई।
वैद्य लुकमान को भी कजा खा गई,
लाभ हानि का कोई भरोसा नहीं।।
पाके सुन्दर बदन, कर प्रभु का ....

शिक्षा

तू कर बन्दगी और भजन धीरे-धीरे।
मिलेगी प्रभु की शरण धीरे-धीरे।।
दमन इन्द्रियों का तू करता चला जा,
फिर काबू में आएगा मन धीरे-धीरे।।
तू कर बन्दगी और भजन ....
सुनें कान तेरे सदा सन्त वाणी,
तू कर वेद वाणी का मनन धीरे-धीरे।।
तू कर बन्दगी और भजन ....
सफर अपना आसान करता चला जा,
छूटेगा यह आवागमन धीरे-धीरे।।
तू कर बन्दगी और भजन ....
तू दुनियाँ में शुभ काम करता चला जा,
तू कर शुद्ध अपना चलन धीरे-धीरे।।
तू कर बन्दगी और भजन ....

सुविचार

न रिष्यत्त्वातः सखा।

हे सोम! तेरा सखा कभी दुःखी नहीं होता।

शिक्षा

जागो रे, ऐ दौलत के दीवानों।
जागो रे, ऐ दौलत के दीवानों।।

दौलत लड़का दे सकती, पर पुत्र दिलाना मुश्किल है।
दौलत नौकर दे सकती, पर सेवक पाना मुश्किल है।।
दौलत औरत दे सकती, पर पत्नि नहीं दिला सकती।
दौलत बिस्तर दे सकती, पर नींद कभी नहीं ला सकती।।

ऐनक मिलती दौलत से, पर नैन कहाँ से लाओगे।
रोटी मिलती दौलत से, पर भूख कहाँ से पाओगे।।
दौलत से बादाम मिलेंगे, पर ताकत ना आएगी।
सुख दिलाएगी ये दौलत, पर शांति नहीं दिलाएगी।।

कुछ पैसे में जाकर सज्जनों, जहर अभी ले आओगे।
बीस करोड़ में भी अमृत की, बूँद एक ना पाआगो।।
दौलत गीता दे सकती, पर ज्ञान नहीं दे सकती है।
दौलत मंदिर दे सकती, भगवान नहीं दे सकती है।।

धन से सुर्खी पाउडर ले लो, सुन्दरता ना पाओगे।
बाजा ले लो दौलत से पर, कंठ कहाँ से लाओगे।।
लाख सितारे चमकें रवि बिन, दूर अंधेरा ना होगा।
आत्म ज्ञान के बिना सुखों का, कभी सवेरा ना होगा।।

शिक्षा

ऐसी कमाई कर लो, जो संग जा सके।
मुश्किल पड़े तो राह में, कुछ काम आ सके।।
ऐसी कमाई कर लो ....

संसार में आता कोई, साथी नजर नहीं,
बस नाम के साथी हैं ये, साथी मगर नहीं।
साथी बनाओ उसको जो, साथी कहा सके।।
ऐसी कमाई कर लो ....

पापों में सदा मन को, लगाते चले गए,
बदियों का ही सामान, बढ़ाते चले गए।
लेकिन कभी ना धर्म को, अपना बना सके।।
ऐसी कमाई कर लो ....

दुनियाँ की चकाचौंध में, जीवन बिता दिया,
अनमोल रतन पा के भी, यूँ ही गँवा दिया।
मानव वही है इसका जो, फायदा उठा सके।।
ऐसी कमाई कर लो ....

चिन्ता की नहीं बात जो, चिन्तन से काम लो,
शुभ कर्म करो अब से ही, ईश्वर का नाम लो।
सम्भव है 'पथिक' आपके, बन्धन छुड़ा सके।।
ऐसी कमाई कर लो ....

शिक्षा

इक बार भजन कर ले, मुक्ति का यतन कर ले।
कट जायेंगे जनम मरण, प्रभु का चिन्तन कर ले।।
इक बार भजन कर ले ....
यह मानव का चोला, हर बार नहीं मिलता,
जो गिर गया डाली से, वो फूल नहीं खिलता,
मौका है ये जीवन का, गुलजार चमन कर ले।।
इक बार भजन कर ले ....

नर इन कानों से सुन, तू ऋषियों की वाणी,
मन को ठहरा कर के, बन जा आत्मज्ञानी,
जिह्वा तो चले मुख में, अब ओ३म् जपन कर ले।।
इक बार भजन कर ले ....

इस मैली चादर में, हैं दाग लगे कितने,
पर ज्ञान के साबुन में, हैं झाग भरे इतने,
धुल जाएगी सब स्याही, उजला तन मन कर ले।।
इक बार भजन कर ले ....

वेदों में गूँज रहीं, मंत्रों की मधुर ध्वनियाँ,
बलिदान के इस युग में, तू गूँध नई कड़ियाँ,
अब तो प्रभु के आगे, नीची गर्दन कर ले।।
इक बार भजन कर ले ....

शिक्षा

अनमोल है जीवन, तो फिर इसको गवाँ नहीं
जब तक हैं प्राण तन में, प्रभु को भुला नहीं।।
मन में क्यूँ मोह माया है, और क्यों हैं राग द्वेष
गर आत्मा मलिन है, तो क्या है जीवन में शेष
संयम में रह तू, विषयों में मन को लगा नहीं।।
जब तक है प्राण तन में, प्रभु ....
कर्मों की बाजी जीत के, पाया मानुष जनम
जीवन बना तू ऐसे, के छूटे जनम-मरण
आनंद मुक्ति का मिले, प्रभु के सिवा नहीं।।
जब तक है प्राण तन में, प्रभु ....
जीवन प्रकाश शक्ति का, ईश्वर है आत्मरूप
दुष्टों का रुद्ररूप है, शिष्टों का सुख स्वरूप
प्रभुहीन जो हृदय हैं, उनमें दिव्यता नहीं।।
जब तक है प्राण तन में, प्रभु ....
पावन है गंगा ज्ञान की, और स्त्रोत तुम प्रभु
लहरें उठा हृदय में, हे ज्ञान के सिन्धु
वो मन क्या जिसमें, ज्ञान का दीपक जला नहीं।।
जब तक है प्राण तन में, प्रभु ....
जिनके हृदय पवित्र हैं, उनके हृदय में तुम
और दूर उस हृदय से, जिसमें भरे दुर्गुण
पाना है पूज्य प्रभु को, तो पापों में जा नहीं।।
जब तक है प्राण तन में, प्रभु ....

शिक्षा

कर्मों की खेती बन्दे, खुद ही तू काटेगा।
सुख-दु:ख तेरे कोई, और नहीं बाँटेगा।।

बचपन खोया तून, खेल और कूद में।
मस्त जवानी बीती, वो भी तेरी भूल में।
समय यूँ गंवा ना देना, अपने बुढ़ापे का।।
सुख-दु:ख तेरे कोई और नहीं बाँटेगा।।

कर-कर काम खोटे, नाम कमा लिया।
पापों वाली गठरी का, बोझा बढ़ा लिया।
जो भी काम किया तूने, वो भी सब घाटे का।।
सुख-दु:ख तेरे कोई और नहीं बाँटेगा।।

एक दिन बन्दे, जब तू जाएगा जहान से।
दूर खड़े होंगे वो जो, चाहते हैं जान से।
होगा हिसाब तेरे, सारे कर्म खाते का।।
सुख-दु:ख तेरे कोई और नहीं बाँटेगा।।

करना है क्या तुझको, मानव विचार कर।
पाना है प्रभु को तो, सबसे तू प्यार कर।
जितने भी दिन तू, दुनियां में काटेगा।।
सुख-दु:ख तेरे कोई और नहीं बाँटेगा।।

शिक्षा

उठ नाम सिमर, मत सोय रहो,
मन अन्त समय पछतायेगा।
जब चिड़ियों ने चुग खेत लिया,
फिर हाथ कुछ न आयेगा।।

हास विलास में बीती उमरिया,
बहुत गयी रही थोड़ी उमरिया।
बुझ गया दीपक जल गई बाती,
कोई राह तुझको दिखायेगा।।
उठ नाम सिमर मत सोय रहो ....

पाप बोझ से भर ली गगरिया,
जाना रे तुझ को दूर नगरिया।
जैसा करेगा वैसा भरेगा,
कोई साथ न तेरा निभाएगा।।
उठ नाम सिमर मत सोय रहो ....

ओ३म नाम धन भर लो खजाना।
रहना नहीं ये देश वीराना।।
प्रभु के चाकर होकर रहियो।
भव सागर से तर जायेगा।।
उठ नाम सिमर मत सोय रहो ....

शिक्षा

जिसे नाम ईश्वर का भाता नहीं है,
वह आनंद जीवन का पाता नहीं है।
यह माना कि सागर में मोती भरे हैं,
जो असली हैं सच्चे हैं बिल्कुल खरे हैं।
न कुछ पा सका वह किनारे पे आके,
कदम जिसने लौटा के पीछे धरे हैं।
जो सागर में गोता लगाता नहीं है,
वह आनंद जीवन का पाता नहीं है।।1।।
आनंद वन में सब ही खड़े हैं,
अमृत के जिसमें लाखों घड़े हैं।
भटकता रहे मगर आदमी यह,
अंधेरे में कैसे दिखाई पड़े हैं।
जो भक्ति का दीपक जलाता नहीं है,
वह आनंद जीवन का पाता नहीं है।।2।।
जहाँ पर न हो कर्म के सिलसिले,
वहाँ फूल आशा के कैसे खिलें।
जो बैठा रहे आलसी ओट में,
मिले उसे मंजिल तो कैसे मिले।।3।।
'पथिक' पथ में जो पग बढ़ाता नहीं है,
वह आनंद जीवन का पाता नहीं है।
जिसे नाम ईश्वर का भाता नहीं है,
वह आनंद जीवन का पाता नहीं है।।4।।

शिक्षा

ईश्वर से करते जाना प्यार, ओ नादान मुसाफिर,
नैय्या लगाते जाना पार, ओ नादान मुसाफिर
प्रीति न तोड़ देना, हिम्मत न छोड़ देना
वरना डूबेगा विच मझधार, ओ नादान मुसाफिर
ईश्वर से करते जाना प्यार, ओ नादान मुसाफिर,
नेकों की संगत करना, बदियों से हरदम डरना,
जीना जो चाहे दिन-चार, ओ नादान मुसाफिर,
ईश्वर से करते जाना प्यार, ओ नादान मुसाफिर
जब तक है जोश जवानी, हर बिगड़ी बात बनानी।
होने न पावे अत्याचार, ओ नादान मुसाफिर,
ईश्वर से करते जाना प्यार, ओ नादान मुसाफिर
जीवन में सुरभि भर ले, जग को सुगन्धित कर ले,
करना जो चाहे मौज बहार, ओ नादान मुसाफिर,
ईश्वर से करते जाना प्यार, ओ नादान मुसाफिर,

सुविचार

तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः

उस ज्येष्ठ परमेश्वर को नमन।

शिक्षा

नहीं चाहिए दिल दुखाना किसी का,
सदा न रहा है, सदा न रहेगा, यह जमाना किसी का,
आवेगा बुलावा तो जाना पड़ेगा,
सिर उसके आगे झुकाना पड़ेगा,
वहाँ न चला है, वहाँ न चलेगा, बहाना किसी का
नहीं चाहिए दिल दुखाना किसी का
पहले तुम अपने आपको सम्भालो,
हक नहीं है औरों की बुराई निकालो,
बुरा जग में है बुरा, बुरा जग में है बुरा, बताना किसी का
नहीं चाहिए दिल दु:खाना किसी का,
दौलत तुम्हारी साथ नहीं जायेगी,
शौहरत तुम्हारी भी यहीं रह जायेगी,
साथ नहीं जाता है साथ नहीं जायेगा, खजाना किसी का।
नहीं चाहिए दिल दुखाना किसी का
बचपन गया जवानी भी जायेगी,
बुढ़ापे में याद किये कर्मों की आयेगी,
काम नहीं आता है, काम नहीं आयेगा, पछताना किसी का
नहीं चाहिए दिल दुखाना किसी का
प्रभु का भजन कर जीवन सुधार ले,
जिन्दगी के पथ को शुभ कर्मों में बुहार ले,
काम आये नेक राह, काम आये नेक राह, चलाना किसी का
नहीं चाहिए दिल दुखाना किसी का

शिक्षा

उस प्रभु की है कृपा बड़ी, याद करले घड़ी दो घड़ी।
घण्टी बज जाये कब कूच की, मौत हरदम सिरहाने खड़ी।

।। अन्तरा।।

किन्हीं शुभ कर्मों का फल है ये।
तुझे मानव का चोला मिला।।
जो आया है जायेगा वो।
बन्द होगा न ये सिलसिला।।
वेद की कहानी है हर इक कड़ी।।
याद कर ले घड़ी ....

इस जवानी में इतरा ना तू।
बातों बातों में फंस जाएगा।।
उभरा सीना सिकुड़ जायेगा।
और कमर तेरी झुक जायेगी।।
टेक करके चलेगा छड़ी।।
याद कर ले घड़ी ....

जो करना है ले आज कर।
कुछ खबर प्यारे कल की नहीं।
मानव चोला करले सफल।
ढील दे इसमें पल की नहीं।।
टूटे श्वासों की जाये लड़ी।।
याद कर ले घड़ी ....

शिक्षा

माँग बन्दे माँग तू भगवान से।
क्या मिलेगा माँग कर इन्सान से।।

मिल गया जो जिन्दगी की राह में।
सब को ना दाता समझ अज्ञान से।।
माँग बन्दे माँग तू भगवान से ....
है वही सारे जमाने का पिता।
उसका ही दामन पकड़ जी जान से।।
माँग बन्दे माँग तू भगवान से ....
ले बना साथी सखाओं का सखा।
फिर तुझे डर खौफ क्या तूफान से।।
माँग बन्दे माँग तू भगवान से ....
देख ले घर में ही बैठा है कोई।
मिल जरा इक बार उस मेहमान से।।
माँग बन्दे माँग तू भगवान से ....
तब कहो श्रीमान बैठोगे कहाँ।
भर लिया कश्ती को जब सामान से।।
माँग बन्दे माँग तू भगवान से ....
तज सुपथ को, क्यों कुपथ पर चल पड़ा।।
हो गई गलती 'पथिक' नादान से।।
माँग बन्दे माँग तू भगवान से।

शिक्षा

रोते हुए आए थे, हँसते हुए जाना है।
रोतों को हंसाना है, गिरतों को उठाना है।।

तुम धर्म भी करते रहो, तुम कर्म भी करते रहो
असुरों से लड़ते रहो और ईश से डरते रहो,
न कुछ ले आए थे, न साथ ही जाना है
रोते हुए आए थे, हँसते हुए जाना है।।1।।

जीवन यह होम बने, हर मानव सौम्य बने
खुशियाँ जो बिखेरोगे, खुशियाँ ही बटोरोगे
फूलों पर काँटों पर, बढ़ते ही जाना है।
रोते हुए आए थे, हँसते हुए जाना है।।2।।

क्यों शंख बजाना है, क्यों भोग लगाना है,
दु:खियों की करो सेवा, जो ईश रिझाना है।
सन्देश यह वेदों का, घर-घर में सुनाना है।।3।।

रोते हुए आए थे, हँसते हुए जाना है
रोतों को हंसाना है, गिरतों को उठाना है।।

सुविचार

कर्मों की आवाज शब्दों से भी ऊँची होती है।

शिक्षा

ज्योति से ज्योति जलाते चलो
प्रेम की गंगा बहाते चलो
राह में आये जो दीन–दु:खी
सबको गले से लगाते चलो ......

।। अन्तरा।।

जिसका न कोई संगी न साथी, ईश्वर है रखवाला।
जो निर्धन है जो निर्गुण है, वो है प्रभु का प्यारा।
प्यार के मोती लुटाते चलो .....
ज्योति से ज्योति ....।।

आशा टूटी ममता रूठी, छूट गया है किनारा
बन्द करो मत द्वार दया का, दे दो कुछ तो सहारा
दीप दया के जलाते चलो....।।
ज्योति से ज्योति................।।

छाया है चारों ओर अंधेरा, भटक गई हैं दिशाएँ
मानव बन बैठा है दानव, किस को व्यथा सुनाएँ
धरती को स्वर्ग बनाते चलो....।।
ज्योति से ज्योति................।।

सुविचार

विद्या ददाति विनयम्

विद्या नम्रता प्रदान करती है।

शिक्षा

पानी से तन शुद्ध करो, मन शुद्ध करो सच्चाई से।
विद्या तप से शुद्ध आत्मा, बुद्धि ज्ञान पढ़ाई से।।
विद्या और तपस्या से, शुद्ध आत्मा होती है।
वेदज्ञान की पावन धारा, भीतर के मल धोती है।
अन्दर बाहर की शुद्धि हो, कर लो कमाई सफाई से।।1।।
पानी से तन शुद्ध करो मन शुद्ध करो ....

बोल चाल में भी शुद्धि हो, शुद्धि सदा विचारों में।
हो गुण कर्म स्वभाव में शुद्धि, और सभी संस्कारों में।
जीवन शुद्ध बने मेहनत की, असली नेक कमाई से।।2।।
पानी से तन शुद्ध करो मन शुद्ध करो ....

थोड़ी बहुत किसी कारण से, जहाँ मलिनता आ जाये।
कोशिश करो वहाँ वह ज्यादा, देर नहीं टिकने पाये।
झाड़ू मन में रोज लगाया कर, बचते रहो बुराई से।।3।।
पानी से तन शुद्ध करो मन शुद्ध करो ....

कभी किसी का बुरा न चाहो, तुम जीवन की राहों में।
सदा रहो गंगाजल जैसे, सबकी खुली निगाहों में।
'पथिक' लोक परलोक सुधारो, जनकल्याण भलाई से।।4।।
पानी से तन शुद्ध करो मन शुद्ध करो ....

शिक्षा

ईश्वर को ढूँढ़ने का वैदिक स्वरूप क्या है।
अनजान है यह दुनियां, किसी को खबर नहीं है।
तप-त्याग भावना से, निष्काम काम करना,
ऊँचे चरित्र वाला इन्सान देवता है।
ईश्वर को ढूँढ़ने का वैदिक ....
जब हो प्रभु से मिलना, इच्छा हो दर्शनों की,
इसका सही तरीका सन्ध्या उपासना है।
ईश्वर को ढूँढ़ने का वैदिक ....
अन्त:करण शुद्ध कर ले और शरीर निर्मल,
उसके समीप जाना ऋषियों का रास्ता है।
ईश्वर को ढूँढ़ने का वैदिक ....
एकान्त मन हो, घर हो या नदी किनारे,
उसका जप निरन्तर कण-कण में जो बसा है।
ईश्वर को ढूँढ़ने का वैदिक ....
यम नियमों का निभाना, कर्तव्य नित्य मानों,
इसके बगैर कोई रास्ता न दूसरा है।
ईश्वर को ढूँढ़ने का वैदिक ....
तप ध्यान मगन होके ऐसी लगे समाधि,
यह भी पथिक न समझे, संसार चीज क्या है।
ईश्वर को ढूँढ़ने का वैदिक स्वरूप क्या है।
अनजान है यह दुनियां, किसी को नहीं खबर है।

शिक्षा

ईश्वर से प्यार न किया, तो प्यार क्या किया।
जीवन सुधार न किया, तो सुधार क्या किया।।
ईश्वर से प्यार न किया ....
कहते हैं सभी योनियों में, यह श्रेष्ठ योनि क्यों,
बाकी लघु हैं योनियाँ, यह ज्येष्ठ योनि क्यों,
इतना विचार न किया, तो विचार क्या किया।।1।।
ईश्वर से प्यार न किया ....

निश्चय है मोक्ष पाने का, न द्वार और है,
उसका आधार भजन है, न आधार और है,
उसका आधार न लिया तो आधार क्या लिया।।2।।
ईश्वर से प्यार न किया ....

दुनिया के मोह जाल को, यंत्रों से तोड़ दे,
सम्बन्ध जिन्दगी का तू ईश्वर से जोड़ ले,
सच्चा व्यवहार न किया, तो व्यवहार क्या किया।।3।।
ईश्वर से प्यार न किया ....

देवों की शरण जाके, तू प्रेम रस को पा,
जग में पवित्र वेद का सन्देश दे सुना,
ऐसा प्रचार न किया, तो प्रचार क्या किया।।4।।
प्यार न किया ....

शिक्षा

अरे प्राणी क्यों सोया है, यह जीवन ढलता जाता है।
मिला अनमोल था हीरा, वृथा इसको गँवाता है।।

हुआ अब तो सबेरा है- तुझे आलस्य ने घेरा है।
जिन्हें अपना समझता है , न इनमें कोई तेरा है।।
यह दुनिया एक सराय है, कोई आता कोई जाता है।।
अरे प्राणी क्यों सोया है यह जीवन ....
न सम्पत्ति न यह परिवार, तेरे साथ जाएँगे।
किये शुभ कर्म जो तूने, अन्त में काम आएँगे।।
हैं सब शमशान तक साथी, जगत स्वार्थ का नाता है।
अरे प्राणी क्यों सोया है यह जीवन ....
गर्भ में किया जो वायदा, उसे क्यों भूलता बंदे।
ये इक दिन छूट जाएँगे-सभी संसार के धंधे।।
तू क्यों मकड़ी की भाँति जाल, दुनिया में बिछाता है।।
अरे प्राणी क्यों सोया है यह जीवन ....
तू कर ले साधना साधक, यदि मुक्ति को पाना है।
पड़ी मझधार में किश्ती, किनारे जो लगाना है।।
ले आनंद उसकी गोद का, जगत जननी जो माता है।
अरे प्राणी क्यों सोया है यह जीवन ....
हवन सन्ध्या समाधि में, जो मन अपना लगायेगा।
जो परोपकार में 'नंदलाल' जीवन को बितायेगा।।
वह ही इतिहास के पन्नों में, नाम अपना लिखाता है।।
अरे प्राणी क्यों सोया है यह जीवन ....

शिक्षा

इस नर तन चोले को पाकर जीवन बर्बाद न कर,
प्रभु से डर, प्रभु से डर
मनरूपी मंदिर के अंदर दुर्गुण आबाद न कर,
प्रभु से डर, प्रभु से डर

परमपिता से प्यार कर, शुद्ध आचार विचार कर।
इन्द्रियों को वश में करके, मन अपने को मारकर।
जप ओम् नाम तू सुबह-शाम, इसमें प्रमाद न करे।।
प्रभु से डर, प्रभु से डर

जैसा कर्म कमायेगा, वैसा ही फल पायेगा
खिला जो फूल जवानी का, है इक दिन वो मुरझायेगा।
तू दुष्टजनों से दूर ही रह, उनकी इमदाद न कर।।
प्रभु से डर, प्रभु से डर

बिल्डिंग आलीशान बना, फर्नीचर से खूब सजा।
बिजली के पंखे फिट करके रेडियो बढ़िया-सा मंगवा।
पर अपने सुख के लिये किसी का घर बर्बाद न कर।।
प्रभु से डर, प्रभु से डर

जारी 198

यदि है नौकर सरकारी, भूमिपति या व्यापारी।
मास्टर, डॉक्टर, बैरिस्टर है या नेता खद्दरधारी।
दुनियां में आ करके बन्दे कोई अपराध न कर।।
प्रभु से डर, प्रभु से डर

सेवा अपना लक्ष्य बना, दीन-दु:खी के कष्ट मिटा।
हीरा जन्म अमोलक है यह, मिट्टी में न इसे मिला।
मन को संभाल तू 'नंदलाल', इसको आजाद न कर।।
प्रभु से डर, प्रभु से डर

इस नर चोले को पाकर, जीवन बर्बाद न कर -2
मनरूपी मंदिर के अंदर दुर्गुण आबाद न कर,
प्रभु से डर, प्रभु से डर

सुविचार

जिस प्रकार ईश्वर ने सूर्य, पानी, पृथ्वी, अग्नि, वायु, आकाश, चन्द्रमा सभी को प्रदान किये हैं; इसी प्रकार वेदों का पवित्र ज्ञान भी समस्त मानव जाति के लिए है।

शिक्षा

परमेश्वर के गुण गाने से, खुशियों की वर्षा होती है।
मन में छल कपट मिटाने से, खुशियों की वर्षा होती है।।
दिन-रात संवारते रहते हो तुम, अपने बिगड़े काम सदा।
औरों की बिगड़ी बनाने से, खुशियों की वर्षा होती है।।
परमेश्वर के गुण गाने से ....
सुखियों से तो बातें करते हो, दु:खियों से भी बातें किया करो।
दु:खियों से बातें करने से, खुशियों की वर्षा होती है।।
परमेश्वर के गुण गाने से ....
धन जोड़-जोड़ कर रखने से, सौ चिन्ताएँ उत्पन्न होती हैं।
धन को शुभ काम में लाने से, खुशियों की वर्षा होती है।।
परमेश्वर के गुण गाने से ....
निर्धन की सेवा करने से, बल-बुद्धि आयु बढ़ती है।
सत्संग में सदा ही जाने से, खुशियों की वर्षा होती है।।
परमेश्वर के गुण गाने से ....

सुविचार

जो सदा नम्र, सुशील, विद्वान और गरीबों की सेवा करता है उसकी आयु, विद्या, कीर्ति और बल-ये चार सदा ही बढ़ते हैं।

शिक्षा

साधना की राह पर है चलना कठिन,
रोकेंगे साधक तुझे लाखों ही विघ्न।
जिन्दगी के मोड़ पर हैं इम्तिहाँ,
चप्पे-चप्पे पर खड़े रहजन यहाँ।
आँख झपकी तो लुटा जीवन का धन।।
साधना की राह पर है ....

रास्ते में आग है अभिमान की,
जल गया है जिसने ना पहचान की।
चलने वाले देखना अपना चलन।।
साधना की राह पर है ....

साधना के पथ पर रूकना छोड़ दे,
जो तुझे रोके वे बन्धन तोड़ दे।
टूटे ना विश्वास छूटे ना लगन।।
साधना की राह पर है ....

सह लेगा गर तू सभी कठिनाईयाँ,
पार कर लेगा जो सारी खाईयाँ,
तो प्रभु प्यारे से होवेगा मिलन।।
साधना की राह पर है ....

शिक्षा

ये नर तन जो तुमको मिला है,
ये गंवाने के काबिल नहीं है।
तेरा हर श्वास अनमोल हीरा,
यूँ लुटाने के काबिल नहीं है।।

पशु जीते जी सेवा कमाऐ,
बाद मरने के भी काम आए।
पर तेरा जिस्म मरकर किसी के,
काम आने के काबिल नहीं है।।
ये नर तन जो तुमको मिला है ....

तू कुकर्मों में लट्टू है ऐसा,
खर्च करता उसी पर है पैसा।
मिले बिना मोल अनमोल सत्संग,
जो गंवाने के काबिल नहीं है।।
ये नर तन जो तुमको मिला है ....

जो ना समझा तो रोना पड़ेगा,
नर्क में गर्क होना पड़ेगा।
तेरा होगा बुरा हाल ऐसा,
जो बताने के काबिल नहीं है।।
ये नर तन जो तुमको मिला है ....

शिक्षा

बिना अमल के ज्ञान व लैक्चर, बातें हैं बातों का क्या।
कर्म नहीं तो ब्राह्मण क्षत्री, जाति हैं जातों का क्या।।

सारा दिन निन्दा चुगली का, कारोबार पसन्द किया।
शाम को माँस और मदिरा, खाने-पीने का प्रबन्ध किया।
रात को नाच और लैक्चर सुन, कल्चर और बुलन्द किया,
पर भजन बिना बेकार यह दिन, और रातें हैं रातों का क्या।।
बिना अमल के ज्ञान व लैक्चर ....

कोई कहे ईश्वर ही नहीं है, बेशक मौज-बहार करो,
कोई कहता है मैं हूँ ईश्वर, मेरा सब दीदार करो।
कोई कहे यह झूठे हैं, मुझ, सच्चे पर एतबार करो,
अपने-अपने दाँव पेंच और, घाते हैं घातों का क्या।।
बिना अमल के ज्ञान व लैक्चर ....

उसका रंग चढ़ेगा जग पर, जो मेहंदी बन पिसता है,
सादगी, सदाचार है जिसमें, वह इनसान फरिश्ता है।
अपना देश, धर्म और तीसरा, ईश्वर सच्चा रिश्ता है,
'नत्थासिंह' बाकी सब फर्जी, नाते हैं नातों का क्या।।
बिना अमल के ज्ञान व लैक्चर ....

शिक्षा

ईश्वर का गुणगान किया कर, कष्ट और क्लेश मिटाने को।
जीवन की ये नाव मिली तुझे, भव सागर तर जाने को।।
ईश्वर का गुणगान किया कर.............
विश्व बगीचे के माली की, रचना प्यारी प्यारी है।
रंग बिरंगे फूल हैं इसमें, खुशबू न्यारी न्यारी है।
अन्त नहीं बेअन्त है माया, कह गये सन्त जमाने को।।
ईश्वर का गुणगान किया कर.............
उस दाता ने हाथ दिये हैं, नेक कमाई कर प्यारे।
इन अपने पावन पाँवों को, पावन पग पर धर प्यारे।
नुस्खा है यह इस दुनियाँ में, जीवन सफल बनाने को।।
ईश्वर का गुणगान किया कर.............
दर्द पराया देख के तुझको, दर्द उठे अपने तन में।
हर्षित को लख हर्ष मनाए, भावना भर दे जन मन में।
यत्न किया पतझड़ में भी, मधुर बसन्त खिलाने को।।
ईश्वर का गुणगान किया कर.............
सुख की शीतल छाया कर दे, दु:खिया जन की कुटिया में।
अपने घर में पड़ा रहा जो, आलसी बन कर खटिया में।
मानव चोला फिर न मिलेगा, तुझको मौज उड़ाने को।।
ईश्वर का गुणगान किया कर.............
परमेश्वर का भक्त वही जिसने, शुभ गुण जीवन में धारे।
पाप के जहरीले कीटाणु, सब चुन-चुन करके मारे।
'हंस' तेरा मन मन्दिर है, भक्ति की ज्योति जलाने को।।
ईश्वर का गुणगान किया कर.............

शिक्षा

जिन्दगी का सफर करने वाले।
अपने मन का दिया तो जला ले।।
वक्त की धार यह कह रही है।
कष्ट क्यों आत्मा सह रही है।।
देख ऐसी जगह तू खड़ा है।
ज्ञान गंगा जहां बह रही है।।
बढ़ के गंगा में डुबकी लगा ले।
अपने मन का दिया तो ....।।1।।
रात लम्बी है गहरा अन्धेरा।
कौन जाने कहाँ हो बसेरा।।
तू है अनजान मंजिल का राही।
चलते रहना ही है काम तेरा।।
रोशनी से डगर जगमगा ले।
अपने मन का दिया तो ....।।2।।
सूनी-सूनी ये मंजिल की राहें।
चूमना तेरे कदमों को चाहें।।
गहन वन में कहीं खो न जाना।
भटक जाएं न तेरी निगाहें।।
हर कदम सोच कर तू उठा ले।
अपने मन का दिया तो ....।।2।।
बस तुझको अकेले ही चलना।
बहुत मुमकिन है गिरना फिसलना।
गिर के गिरना नहीं बात कुछ भी।
है बड़ी बात गिर के सम्भलना।।
यह 'पथिक' बात दिल में बसा ले।
अपने मन का दिया तो ....।।5।।

शिक्षा

प्रेमी भरकर प्रेम में, ईश्वर के गुण गाया कर।
मन-मन्दिर में गाफिला, झाड़ू रोज़ लगाया कर।।
प्रेमी भरकर प्रेम में, ईश्वर ....
सोने में तो रात गुजारी, दिन-भर करता पाप रहा,
इसी तरह बरबाद तू बंदे, करता अपना आप रहा,
प्रात: समय उठ ध्यान से, सत्संग में तू जाया कर।।
प्रेमी भरकर प्रेम में, ईश्वर ....।।1।।

नर तन के चोले का पाना, बच्चों का कोई खेल नहीं,
जन्म-जन्म के शुभ कर्मों का होता जब तक मेल नहीं,
नर तन पाने के लिए, उत्तम कर्म कमाया कर।
प्रेमी भरकर प्रेम में, ईश्वर ....।।2।।

पास तेरे है दुखिया कोई, तूने मौज उड़ाई क्या ?
भूखा प्यासा पड़ा पड़ोसी, तूने रोटी खाई क्या ?
पहले सबसे पूछकर, फिर तू भोजन खाया कर।।
प्रेमी भरकर प्रेम में, ईश्वर ....।।3।।

देख दया उस परमेश्वर की, वेद का जिसने ज्ञान दिया,
'देश' तू मन में सोच जरा तो, कितना है कल्याण किया ?
सब कामों को छोड़कर, ईश्वर को तू ध्याया कर।।
प्रेमी भरकर प्रेम में, ईश्वर ....।।4।।

चेतावनी

क्र.सं.	चेतावनी भजन/गीत के बोल	पृ. सं.
1.	कभी प्यासे को पानी पिलाया नहीं	207
2.	उस प्रभु की है कृपा बड़ी	208
3.	जिस दिन घमण्ड अपने, सर से उतर जायेगा	209
4.	कण-कण में बसा प्रभु देख रहा	210
5.	जैसा तुम कर्म कमाओगे, वैसा ही फल तुम पाओगे	211
6.	छोड़ कर संसार जब तू जायेगा	212
7.	ईश्वर जो कुछ करता है, अच्छा ही करता है	213
8.	खाली आया, खाली जाये, न लाया न ले जायेगा	214
9.	जिन्दगी में भूलकर न पाप कर	215
10.	यदि नहीं जान पाये, अपने आप को	216
11.	परमपिता से प्यार नहीं, शुद्ध रहा व्यवहार नहीं	217
12.	उसके चरणों में तो हुआ ध्यान तुम्हारा ही नहीं	218
13.	गर भला किसी का कर न सको	219
14.	छुप नहीं सकते पाप तुम्हारे ऐ मूर्ख इन्सान	220
15.	सृष्टि से पहले, अमर ओ३म् नाम था -	221

चेतावनी

कभी प्यासे को पानी पिलाया नहीं।
बाद अमृत पिलाने से क्या फायदा।
कभी गिरते हुए को उठाया नहीं
बाद आंसू बहाने से क्या फायदा।।

मैं तो मंदिर गया पूजा आरती की,
पूजा करते हुए ये ख्याल आ गया।
कभी माँ-बाप की सेवा की ही नहीं,
फिर पूजा के करने से क्या फायदा।।
कभी प्यासे को पानी पिलाया नहीं।
बाद अमृत पिलाने से क्या फायदा।।1।।
मैं तो सत्संग गया गुरुवाणी सुनी
गुरुवाणी को सुनकर ख्याल आ गया।
जन्म मानव का लेके दया न करी
फिर मानव कहलाने से क्या फायदा।।
कभी प्यासे को पानी पिलाया नहीं।
बाद अमृत पिलाने से क्या फायदा।।।2।।
मैंने दान किया, मैंने जप तप किया
दान करते हुए ये ख्याल आ गया।
कभी भूखे को भोजन खिलाया नहीं
दान लाखों का करने से क्या फायदा।।
कभी प्यासे को पानी पिलाया नहीं।
बाद अमृत पिलाने से क्या फायदा।।।3।।

गंगा नहाने हरिद्वार काशी गया
गंगा नहाते हुए ये ख्याल आ गया।
तन को धोया मगर मन को धोया नहीं
फिर गंगा नहाने से क्या फायदा।।
कभी प्यासे को पानी पिलाया नहीं।
बाद अमृत पिलाने से क्या फायदा।।।4।।

मैंने वेद पढ़े मैंने शास्त्र पढ़े
शास्त्र पढ़ते हुए ये ख्याल आ गया।
मैंने ज्ञान किसी को दिया ही नहीं,
फिर ज्ञानी कहाने से क्या फायदा।।
कभी प्यासे को पानी पिलाया नहीं।
बाद अमृत पिलाने से क्या फायदा।।।5।।

माता-पिता के ही चरणों में चारों धाम है
आजा-आजा यह मुक्ति का धाम है।
माता-पिता की सेवा की ही नहीं,
फिर तीर्थों में जाने से क्या फायदा।।
कभी प्यासे को पानी पिलाया नहीं।
बाद अमृत पिलाने से क्या फायदा।।।6।।

चेतावनी

उस प्रभु की है कृपा बड़ी, याद कर ले घड़ी दो घड़ी।
घण्टी बज जाए कब कूच की, मौत हरदम सिरहाने खड़ी।।

किन्हीं शुभ कर्मों का फल है ये, तुझे मानव का चोला मिला।
जो आया है जायेगा वो, बन्द होगा ना ये सिलसिला।
वेद की कहती इक इक कड़ी।।
याद कर ले घड़ी दो घड़ी ....
इस जवानी पे इतरा ना तू, ये बातों बातों में मुक जाएगी।
उभरा सीना सिकुड़ जाऐगा, और कमर तेरी झुक जाएगी।
टेक कर के चलेगा छड़ी।।
याद कर ले घड़ी दो घड़ी ....
जो करना है ले आज कर, कुछ खबर प्यारे कल की नहीं।
मानव चोले को कर ले सफल, ढील दे इसमें पल की नहीं।
टूट श्वासों की जाऐ लड़ी।
याद कर ले घड़ी दो घड़ी ....
भौतिकवाद चकाचौंध में, भूल प्रभु को ना मतीमन्द तू।
सच्चिदानन्द सुखकन्द की, आ शरण में ले आनन्द तू।
वीर 'कवि' भागे विपदा अड़ी।।
याद कर ले घड़ी दो घड़ी ....

चेतावनी

जिस दिन घमण्ड अपने, सर से उतार देगा।
उस दिन तुझे विधाता, अनमोल प्यार देगा।।

उसके समान जग में, दाता ना और कोई।
देने पर जब वो आए, तो बेशुमार देगा।।
जिस दिन घमण्ड अपने ....
मन वचन कर्म उसकी, आज्ञानुसार कर ले।
वह तो पिता है तुझ पर, सर्वस्व वार देगा।।
जिस दिन घमण्ड अपने ....
भगवान छोड़ साथी, इन्सान को बनाया।
सुख में ये साथ देगा, दुख में बिसार देगा।।
जिस दिन घमण्ड अपने ....
खुद ही ना चैन जिसने, पाया हो जिन्दगी में।
वो क्या किसी के दिल को, सब्रोकरार देगा।।
जिस दिन घमण्ड अपने ....
भेजा था उस ने जग में, करने को कुछ कमाई।
किस को पता था जीवन, यों ही गुजार देगा।।
जिस दिन घमण्ड अपने ....
अन्तिम समय कहेगा, नेकी कमा लूँ लेकिन।
इक पल 'पथिक' ना कोई, जीवन उधार देगा।।
जिस दिन घमण्ड अपने ....

चेतावनी

जैसा तुम कर्म कमाओगे, वैसा ही फल तुम पाओगे।
सुख दोगे तो सुख पाओगे, दु:ख दोगे तो कष्ट उठाओगे।।
जैसा तुम कर्म कमाओगे ....

यह जग कर्मों की खेती है, जो बीजोगे सो काटोगे।
बदनाम करेगी बदी तुम्हें, कर नेकी यश फैलाओगे।।
जैसा तुम कर्म कमाओगे ....

गर किसी का पैसा मारोगे, कुछ दिन तो कटेगी ऐश बड़ी।
फिर बीज बनेगा वृक्ष जभी, फिर रोओगे पछताओगे।।
जैसा तुम कर्म कमाओगे ....

छल, कपट, झूठ, चतुराई से, सोने की बना लोगे लंका।
फिर याद करो रावण की तरह, कौड़ी भी साथ न ले जाओगे।।
जैसा तुम कर्म कमाओगे ....

मनुष्य के चोले को पाकर, कुछ नेक कमाई न की तूने।
फिर करके लाख चौरासी में, जन्मों तक धक्के खाओगे।।
जैसा तुम कर्म कमाओगे ....

चेतावनी

छोड़कर संसार जब तू जाएगा, कोई न साथी तेरा साथ निभायेगा
गर प्रभु का भजन किया न, सत्संग किया न दो घड़ियां।
यमदूत लगाकर तुझको ले जाएगा हथकड़ियाँ।
कौन छुड़वाएगा।। कोई न साथी.........
क्यों करता मेरा मेरा, ये दुनिया रैन बसेरा।
यहां कोई नहीं है तेरा, है चन्द दिनों का डेरा।
हंस उड़ जाएगा।। कोई न साथी.........
इस पेट भर की खातिर, तू पाप कमाता निशदिन।
शमशान में लकड़ी रखकर, तुझे आग लगेगी एक दिन।
खाक हो जाएगा।। कोई न साथी.........
सत्संग की है ये गंगा, तू इसमें लगाले गोता।
वरना इस दुनिया से, जाएगा एक दिन रोता।।
बाद पछताएगा।। कोई न साथी..........
अब प्रभु चरणों में निशदिन, तू प्रीत लगा ले बन्दे।
कट जाएंगे तेरे ये सब, जनम-मरण के फन्दे।।
पार हो जाएगा।। कोई न साथी...........

सुविचार

अथातो ब्रह्मजिज्ञासा:

मन में निरन्तर ब्रह्म प्राप्ति की जिज्ञासा हो।

चेतावनी

ईश्वर जो कुछ करता है, अच्छा ही करता है।
मानव तू परिवर्तन से, काहे को डरता है।

जब से दुनिया बनी है, तब से रोज बदलती है
जो शै आज यहां है, कल वो आगे चलती है।
देख के अदला-बदली, तू आहें क्यों भरता है
मानव तू परिवर्तन से .... (1)
दु:ख सुख आते जाते रहते, सबके जीवन में,
पतझड़ और बहारें, दोनों जैसे गुलशन में,
चढ़ता है तूफान कभी और कभी उतरता है
मानव तू परिवर्तन से .... (2)
कितनी लम्बी रात हो, फिर भी दिन तो आयेगा,
जल में कमल खिलेगा, फिर से वो मुस्करायेगा
देता है जो कष्ट वही कष्टों को हरता है।
मानव तू परिवर्तन से .... (3)
वह ही दाना फलता है जो मिट्टी में मिल जाये,
सहे मानव जो कांटे वो ही मंजिल अपनी पाये,
भट्टी में पड़कर सोने का रंग निखरता है।
मानव तू परिवर्तन से .... (4)
ईश्वर जो कुछ करता है, अच्छा ही करता है।
मानव तू परिवर्तन से, काहे को डरता है।

चेतावनी

खाली आया, खाली जाए, न लाया, न ले जाएगा।
यश-अपयश इस दुनियां में, बन्दे तेरा रह जाएगा।।
खाली आया, खाली जाए, न लाया, ...
भाई, बन्धु, मित्र, सम्बन्धी, मरघट तक संग जाएंगे।
स्वार्थ के दो आंसू दे कर, सभी घर लौट आएंगे।
ये कुटुम्ब कबिला कुछ दिन में, सब तेरी याद भुलाएगा।।
खाली आया, खाली जाए, न लाया, ...

जैसा तूने कर्म किया है, वैसा ही फल आएगा।
कर्मों के अनुसार भविष्य में, भोग तुझे मिल जाएगा।
कभी शिखर पर पहुँचेगा तू, कभी तले गिर जाएगा।।
खाली आया, खाली जाए, न लाया, ...

राजा, रंक, वजीर, बादशाह, सबको इक दिन जाना है।
आंख खोलकर देख तू 'सत्यम्' जगत मुसाफिरखाना है।
पाप-पुण्य का लेखा-जोखा, सब आगे आ जाएगा।।
खाली आया, खाली जाए, न लाया, ...

चेतावनी

जिन्दगी में भूल कर ना पाप कर।
हर घड़ी परमात्मा का जाप कर।।
भक्ति शक्ति मुक्ति मिलती मोल ना।
जितना भी करना है अपने आप कर।।
जिन्दगी में भूल कर ना पाप कर ....
भूल से हो जाये कोई भूल तो।
बैठ कर कुछ काल पश्चाताप कर।।
जिन्दगी में भूल कर ना पाप कर ....
आएगा परमात्मा तुझको नजर।
आईना दिल का तू पहले साफ कर।।
जिन्दगी में भूल कर ना पाप कर ....
राह में काँटे बहुत मंजिल कठिन।
हर कदम चलना सँभल कर नाप कर।।
जिन्दगी में भूल कर ना पाप कर।
हर घड़ी परमात्मा का जाप कर।।

सुविचार

धर्मो रक्षति रक्षतिः

धर्मानुकूल आचरण करने से मनुष्य रक्षित रहता है।

चेतावनी

यदि नहीं जान पाए, अपने आप को।
फिर कैसे जानोगे, भैया पुण्य पाप को।।

कौन हो कहाँ से आए, और कहाँ जाओगे।
यह भी ना जान पाए, फिर पछताओगे।
प्रायश्चित में-2, बदला नहीं पश्चाताप को।।
यदि नहीं जान पाए..........................

वेद, स्मृति, सदाचार, के विचार को।
आचरण में ढाला नहीं, सद्विचार को।
धर्म समझा-2 कण्ठीमाला तिलक छाप को।।
यदि नहीं जान पाए..........................

चित्त वृत्तियों का यदि, विरोध न किया।
विषय वासनाओं का यदि, निरोध न किया।
भावना से - 2, जपा नहीं, यदि ओ३म् नाम को।।
यदि नहीं जान पाए..........................

सरगम सीखी नहीं, जीवन के संगीत की।
ले स्वर तान रागों के, रीत नीत की।
कहते हो वरदान-2, 'प्रेमी' कैसे अभिशाप को।।
यदि नहीं जान पाए..........................

कृतज्ञता

परम पिता से प्यार नहीं, शुद्ध रहा व्यवहार नहीं,
इसीलिए तो आज देख लो, सुखी कोई परिवार नहीं।।1।।
फल और फूल अन्न इत्यादि, समय-समय पर देता है,
लेकिन अचरज ऐसा, बदले में कुछ नहीं लेता है।।2।।
करता है इनकार नहीं, भेद-भाव तकरार नहीं,
ऐसे दानी का ओ बन्दे, करता जरा विचार नहीं।।3।।
इसीलिए तो आज देख लो..................
मानव चोले में नजाने, कितने यंत्र लगाए हैं,
कीमत कोई आँक सका न, ऐसे अमूल्य बनाए हैं।।4।।
कोई चीज बेकार नहीं, पा सकता कोई पार नहीं,
ऐसे कारीगर का बन्दे, माने तू उपकार नहीं।।5।।
जलवायु और अग्नि का वह, लेता नहीं सहारा है।
सर्दी गर्मी वर्षा का अति सुन्दर चक्र चलाया है।।6।।
लगा नहीं दरबार नहीं, कोई सिपाह-सालार नहीं,
कर्मों का फल देवे सभी को, रिश्वत की सरकार नहीं।।7।।
इसीलिए तो आज देख लो.............
सूरज चाँद सितारों का तो, बिजली घर नहीं बना हुआ,
पल भर को नहीं देते धोखा, कहाँ कनैक्शन लगा हुआ।।8।।
खम्भा और कोई तार नहीं, खड़ी कोई दीवार नहीं,
ऐसे शिल्पकार का करता, ओ 'नरदेव' विचार नहीं।।9।।

चेतावनी

उसके चरणों में, तो हुआ ध्यान तुम्हारा ही नहीं।
तुझको धन प्यारा है, भगवान तो प्यारा ही नहीं।।

क्यों सुनेगा भला, परमात्मा आवाज तेरी।
तूने उसको कभी, दिल से तो पुकारा ही नहीं।।
उसके चरणों में, तो हुआ ध्यान ....

क्या हुआ कितने ही, मैदान अगर मार लिए।
अपने इस मन को तो, अब तलक तूने मारा ही नहीं।।
उसके चरणों में, तो हुआ ध्यान ....

यह हवा आज तो, उलटी ही जमाने में चली।
भले इंसान का, दुनियाँ में गुजारा ही नहीं।।
उसके चरणों में, तो हुआ ध्यान ....

वह क्या उस पार, किनारे पे भला पहुँचेगा।
जिसने मझधार में, कश्ती को उतारा ही नहीं।।
उसके चरणों में, तो हुआ ध्यान ....

तू है जिसने कभी, उसको ना 'पथिक' याद किया।
वह है जिस ने कभी, तुझको तो बिसारा ही नहीं।।
उसके चरणों में, तो हुआ ध्यान ....

चेतावनी

गर भला किसी का कर न सको, तो बुरा किसी का मत करना।
अमृत का घूँट पिला न सको, तो जहर पिलाते भी डरना।।

अच्छा है कि तुम अपने मन से, नाशाद दिलों को शाद करो।
जिसके ना आंसू पोंछ सको, उस आँख में आँसू मत भरना।।

खामोश रहो तो बेहतर है, गर बोलो तो मीठा बोलो।
मीठा भी अगर न बोल सको, तो जहर की बारिश मत करना।।

देवता अगर नहीं बन सकते, अच्छे इन्सान ही बन जाओ।
यदि सन्मार्ग अपना न सको, तो पापों में पग मत धरना।।

अच्छा है किसी उजड़े घर को, आबाद करो इमदाद करो।
आबाद नहीं कर सकते तो, बरबाद कभी मत करना।।

हमदर्दी का मरहम रख करके, घायल के घाव को ठीक करो।
जख्मों पर छिड़ककर खारा नमक, सुख-चैन किसी का मत हरना।।

नन्हा-सा चिराग किसी कुटिया में, जलता है तो उसको जलने दो।
महलों की हवा खा करके कभी, कुटिया में अंधेरा मत करना।।

जगती में 'प्रकाश' हैं धन्य वही, नर जो गिरतों को संभालते हैं।
तज के पर निन्दा जो जीवन को, सदाचार के साँचे में ढालते हैं।।

लगती मुख कालिमा है उनके, शुभ कार्य में विघ्न जो डालते हैं।
उनके घर ही सनते पहले, जो औरों पे कीचड़ उछालते हैं।।

चेतावनी

छुप नहीं सकते पाप तुम्हारे ऐ मूर्ख इन्सान,
सब कुछ देख रहा भगवान, सब कुछ देख रहा भगवान्
मन मन्दिर में देख ले बन्दे, बैठे हैं भगवान
सब कुछ देख रहा भगवान, सब कुछ देख रहा भगवान्
छुप नहीं सकते पाप तुम्हारे.............(1)
उपरों दा तूं भोला भाला, मुंह दा मिठा दिल दा काला।
सूरत दा इन्सान बना तू, सीरत दा हैवान
सब कुछ देख रहा भगवान, सब कुछ देख रहा भगवान्
छुप नहीं सकते पाप तुम्हारे .... (2)
चाहे कितने यज्ञ रचा ले, चाहे कितने पाठ करा ले,
बिना भजन भगवान के साधन, सारे निष्फल जान
सब कुछ देख रहा भगवान्, सब कुछ देख रहा भगवान्
छुप नहीं सकते पाप तुम्हारे .... (3)
इक दिन ऐसा आयेगा, भेद सारा खुल जायेगा
देह तेरी से निकलेंगे, जब तड़प तड़प कर प्राण
सब कुछ देख रहा भगवान, सब कुछ देख रहा भगवान्
छुप नहीं सकते पाप तुम्हारे .... (4)
छुप नहीं सकते पाप तुम्हारे ऐ मूर्ख इनसान,
सब कुछ देख रहा भगवान, सब कुछ देख रहा भगवान्
छुप नहीं सकते पाप तुम्हारे .... (5)

चेतावनी

सृष्टि से पहले, अमर ओ३म् नाम था....2
आज भी है और कल भी रहेगा....2

सूरज की किरणों में, उसी का नेत्र समाया है,
और चाँद-सितारों में, उसी की शीतल छाया है,
धरती की गोद में, उसी का दुलार था.....2
आज भी है और ....

भँवरों के गानों में, मधुर संगीत उसी का है,
फूलों के यौवन में, रसीला गीत उसी का है,
आकाश, जल, स्थल का, वही कलाकार था......2
आज भी है और ....

सुख-दु:ख का ये लम्बा खेल, विधाता ने जो रचाया है,
ओ बन्दे तेरी करनी का, नक्शा सामने आया है,
तेरे पिछले कर्मों का, उसी पे हिसाब था 2
आज भी है और ....

तू मत कर इतना गुमां, कि इक दिन जान निकल जाएगी,
तेरी सजी सजाई काया, मिट्टी में मिल जाएगी,
मुक्ति का इक रास्ता, प्रभु का ही ध्यान था......2
आज भी है और ....

अध्यात्म

क्र.सं.	अध्यात्म भजन/गीत के बोल	पृ. सं.
1.	जिस आदमी का सर झुके, भगवान के आगे	223
2.	कर कुछ नेकी पास प्रभु के जाने के लिए	224
3.	कण-कण में बस प्रभु देख रहा	225
3.	हिम्मत न हारिये, प्रभु न बिसारिये	226
4.	किसी से न कीजे बुराई किसी की	227
5.	छुक-छुक-छुक रेल चली है जीवन की	228
6.	जो भी बुरा भला है, ईश्वर ही जानता है	229
7.	जग में जन्म लिया है बन्दे, जग के संग मिलता जा	230
8.	निर्धनता से बड़ा कोई इस दुनिया में अभिशाप नहीं	231
9.	जगत साकार बनाया है निराकार प्रभु	232
10.	जिन्दगी में तूने कभी किया न विचार	233
11.	मानव सोचो जग के सुख का विस्तार रहेगा कितने दिन?	234
12.	सुख के अभिलाषी प्राणी को	235
13.	चराचर जगत का स्वामी, जगत का पिता एक है	236
14.	प्रभु दर्शन पाने आये थे प्रभु दर्शन पाना	237
15.	सुख चाहे तो बुराइयों के जाना बन्दे नजदीक नहीं	238
16.	सोचा उस प्रभु सर्वव्यापी का, अवतार भला कैसे होगा	239
17.	तेरे दर को छोड़कर, किस दर जाऊँ मैं	240
18.	प्रभु निराकार है, महिमा अपरम्पार है	241

अध्यात्म

जिस आदमी का सर झुके भगवान् के आगे।
सारी दुनियाँ झुकती है उस इन्सान के आगे।।
जिस आदमी का सर झुके .... ।।1।।
खुले आकाश में, उड़ती पतंगे साथ में डोरी।
मगर क्या डर उसे, जिसकी प्रभु के हाथ में डोरी।
ताकत फीकी पड़ती हे, उस बलवान् के आगे।
जिस आदमी का सर झुके .... ।।2।।
बड़े से भी बड़ा संकट, उसे फिसला सकता नहीं,
मुसीबत के दिनों में वह, कभी घबरा सकता नहीं।
उसको ठहरा पाओगे, हर तूफान को आगे।।
जिस आदमी का सर झुके .... ।।3।।
बसे वह देवता बनकर, जमाने के खयालों में,
उसी के नाम की चर्चा, अन्धेरों में उजालों में।
सूरज भी क्या चमकेगा, उसकी शान के आगे।।
जिस आदमी का सर झुके .... ।।4।।
सारे इम्तिहानों में, हमेशा पास होता है,
'पथिक' जीवन की राहों में, कभी न उदास होता है।
मंजिल खुद आ जाती है, उस मेहमान के आगे।।
जिस आदमी का सर झुके .... ।।5।।

अध्यात्म

कण-कण में बसा प्रभु देख रहा, चाहे पुण्य करो चाहे पाप करो।
कण-कण में बसा प्रभु देख रहा .... ।।1।।
यह जगत् रचा है ईश्वर ने, जीवों के कर्म करने के लिए।
कुछ कर्म नए करने के लिए, जो पहले किए भरने के लिए।
यह आवागमन का चक्र चला, चाहे पुण्य करो चाहे पाप करो।।
कण-कण में बसा प्रभु देख रहा .... ।।2।।
इन्सान शुभाशुभ कर्म करे, अधिकार मिला है जमाने में।
कर्मों में स्वतन्त्र बना है मगर, परतन्त्र सदा फल पाने में।
है न्याय प्रभु का बहुत कड़ा, चाहे पुण्य करो चाहे पाप करो।।
कण-कण में बसा प्रभु देख रहा .... ।।3।।
सब पुण्य का फल तो चाहते हैं, पर पुण्य कर्म नहीं करते हैं।
फल पाप का लोग नहीं चाहते, जिसमें दिन-रात विचरते हैं।
मिलता है सभी को अपना किया, चाहे पुण्य करो चाहे पाप करो।।
कण-कण में बसा प्रभु देख रहा .... ।।4।।
इस दुनियाँ में कृत कर्मों का, फल हरगिज माफ नहीं होता।
जब तक न यहाँ भुगतान करो, यह दामन साफ नहीं होता।
रहे याद 'पथिक' यह नियम सदा, चाहे पुण्य करो चाहे पाप करो।।
कण-कण में बसा प्रभु देख रहा .... ।।5।।

अध्यात्म

कर कुछ नेकी, पास प्रभु के जाने के लिए।
आया नहीं तू खाने, और मर जाने के लिए।।

मस्त हुआ विषयों में ऐसे, मौन को पगले भूल रहा,
धन यौवन ना रहे हमेशा, जिस पर इतना फूल रहा,
खिला ये फूल जवानी का, मुरझाने के लिए।।1।।
कर कुछ नेकी, पास प्रभु के ....
विषय विकारों में फंस कर के, जीवन को बरबाद न कर,
समय मिला अनमोल ए मानव, अंत को तू फरियाद न कर।
आया है दुनिया में, कुछ कर जाने के लिए।।
कर कुछ नेकी, पास प्रभु के ....
चार दिनों का है ये उजाला, रात अँधेरी आए फिर,
इस पर इतना मान न कर तू, आ करके तू जाए फिर।
महल बना है मिट्टी का, गिर जाने के लिए।।3।।
कर कुछ नेकी, पास प्रभु के ....
सद्गुरुओं के सत्संग में जा, ज्ञान से मन को शुद्ध बना,
यम-नियम का पालन कर, और नित ईश्वर में ध्यान लगा।
यही मार्ग है मुक्ति पद को, पाने के लिए।।4।।
कर कुछ नेकी, पास प्रभु के ....

अध्यात्म

हिम्मत न हारिए, प्रभु न बिसारिये,
हंसते मुस्कराते हुए, जिन्दगी गुजारिये।
हंसते मुस्कराते हुए, जीना जिसको आ गया।
दु:खियों के दिलों को, सीना जिसको आ गया।
ऐसे देवता के चरण सदा पसारिये,
उनकी तरह नेक बन जिन्दगी गुजारिये
हिम्मत न हारिए ....
काम ऐसे कीजिए, जिसमें हो सबका भला
बातें ऐसी कीजिए, जिसमें हो अमृत भरा।
मीठी बोली बोल के, प्रेम से पुकारिये,
कड़वे बोल बोल के, न जिन्दगी गुजारिये
हिम्मत न हारिए ....
मुश्किलों मुसीबतों का, करना है मुकाबला,
हर समय कहिये, तेरा शुक्र है परमात्मा।
जैसे प्रभु राखे वैसी, जिन्दगी गुजारिये,
हिम्मत न हारिए ....
अच्छे कर्म करते हुए, दु:ख अगर हैं पा रहे,
पिछले पाप कर्मों का, भुगतान ही भुगता रहे।
आगे मत उठाइये, पिछला बोझ उतारिये,
गलतियों से बचते हुए, जिन्दगी गुजारिये,
हिम्मत न हारिए ....
दिल की नोटबुक पर, यह बातें नोट कीजिये।
करके अमल, बनके कमल, जिन्दगी गुजारिये।
जग में जगमगाती हुई, जिन्दगी गुजारिये
हिम्मत न हारिए ....

अध्यात्म

किसी से न कीजे बुराई किसी की।
यदि बन न पाए भलाई किसी की।।
करो सत्य है जो बड़ों की बड़ाई।
करो पर न झूठी बड़ाई किसी की।।
रहो सत्य के सर्वदा सब ही साथी।
निरर्थक न लो पर लड़ाई किसी की।।
कमाओ विपुल धन परिश्रम से अपने।
ठगो ढोंग से पर न पाई किसी की।।
सदा अपने भुजबल से खाओ कमाकर।
महापाप खाना कमाई किसी की।।
वरो नार सुन्दर सियानी सुशिक्षित।
तको पर न विनीता पराई किसी की।
नहीं इससे बढ़कर है आनन्द जग में।
कि टालें बला सिर पै आई किसी की।।

सुविचार

कड़ी मेहनत करें और सब्र करें।
आपको आपका फल जरूर मिलेगा।।

अध्यात्म

छुक-छुक, छुक-छुक रेल चली है जीवन की।
हंसना, रोना, जागना, सोना, खोना, पाना, सुख, दुख।

छोटी-छोटी बातों से, मोटी-मोटी खबरों तक।
ये गाड़ी ले जाएगी हमको, माँ की गोद से कबरों तक।
सब चिल्लाते रह जाएंगे, रूक-रूक रूक-रूक रूक।।
छुक-छुक छुक-छुक रेल चली है ....

सामां बांध के रखो लेकिन, चोरों से होशियार रहो।
जाने कब चलना पड़ जाए चलने को तैयार रहो।
जाने कब सीटी बज जाए, सिगनल जाए झुक।।
छुक-छुक छुक-छुक रेल चली है ....

पाप और पुण्य की गठरी बांधे, सत्य नगर को जाना है।
जीवन नगरी छोड़ के हमको, दूर सफर पे जाना है।
ये भी सोच ले हमने क्या-क्या, माल किया है बुक।।
छुक-छुक छुक-छुक रेल चली है ....

रात और दिन इस रेल के डिब्बे, और सांसों का इंजन है।
उम्र है इस गाड़ी के पहिए, और चिता स्टेशन है।
जैसे दो पटरी हों ऐसे, साथ चले सुख-दु:ख।।
छुक-छुक छुक-छुक रेल चली है ....

अध्यात्म

जो भी बुरा-भला है, ईश्वर ही जानता है।
सृष्टि में क्या छिपा है, ईश्वर ही जानता है।।

जाकर जहाँ से कोई, वापिस नहीं आता।
वो कौन सी जगह है, ईश्वर ही जानता है।।

नेकी बदी के बन्दे, तू कितना ही छिपाले।
ईश्वर को सब पता है, ईश्वर ही जानता है।।

सुबह-शाम देखो, ये धूप-छाँव देखो।
क्यों सब हो रहा है, ईश्वर ही जानता है।।

किस्मत का नाम तो, सब जानते हैं लोग।
किस्मत में क्या लिखा है, ईश्वर ही जानता है।।

सुविचार

यज्ञ का संदेश

इदं न मम

मेरा कुछ भी नहीं है, जो कुछ है उस परमात्मा का ही है।

अध्यात्म

जग में जन्म लिया है बन्दे, जग के संग मिलता जा।
श्रेय, प्रेय दो मार्ग हैं, तू चाहे जिस पर चलता जा।।
श्रेय मार्ग पर चलने से तो प्रथम संकट आवेंगे,
ऊबड़-खाबड़ जंगल और घनघोर अंधेरे पावेंगे।
पार अंधेरा कर लेगा तो फिर सूरज सा खिलता जा।
जग में जन्म लिया है बन्दे जग के ....
सीधे और सुगम रास्ते, वहाँ अच्छी तरह दिखाई दें,
देव पुरुष और ऋषि-मुनियों की, वाणी सदा सुनाई दे।
जिसको सुनकर करे आचरण, सदा फूलता-फलता जा।
जग में जन्म लिया है बन्दे जग के ....
प्रेय मार्ग पहले दिखने में, आकर्षक और सुन्दर है,
रंग-बिरंगी लगी रोशनी, इत्तर सुगंधी अन्दर है।
मोहित होकर दौड़ पड़े, पर आगे सूरज ढलता जा।
जग में जन्म लिया है बन्दे जग के ....
महा विषैला जंगल होगा, घोर अन्धेरा पावेगा,
कंटक भरी हुई राहों का, अन्त नहीं फिर आवेगा।
पश्चाताप की अग्नि में, फिर धीरे-धीरे जलता जा।
जग में जन्म लिया है बन्दे जग के ....
श्रेय मार्ग है सेवा का, दुखियों के कष्ट मिटाने का,
प्रेय मार्ग है स्वार्थ का, बस अपने आप बनाने का।
कहे 'लालमन' सुनो भाइयों, बोवे सो फल मिलता जा।
जग में जन्म लिया है बन्दे जग के ....

अध्यात्म

निर्धनता से बड़ा कोई इस दुनिया में अभिशाप नहीं।
सत्य बराबर पुण्य नहीं और झूठ बराबर पाप नहीं।।
निर्धनता से बड़ा कोई इस ....
एक पेड़ पर दो पक्षी रहते हैं, वेद यही बताता है।
दोनों नित्य अभिन्न सखा हैं, ऐसा गहरा नाता है।
एक पेड़ के फल खाता है, एक देखता जाता है।
पड़ा बीच अज्ञान का परदा, होता मेल-मिलाप नहीं।
निर्धनता से बड़ा कोई इस ....
यों तो इस दुनिया के अन्दर, कष्ट हजारों आते हैं।
जो हर वक्त रुलाते हैं सुलगाते हैं तड़पाते हैं।
इस पर भी इक बात अनोखी सज्जन लोग बताते हैं।
जीवन में चिन्ता से बढ़कर और कोई सन्ताप नहीं।
निर्धनता से बड़ा कोई इस ....
दृढ़ता और लगन से मानव, मंजिल हासिल करता है।
जहाँ कहीं आलस्य आ गया, वहीं पे खेल बिखरता है।
ढीले काम अधूरे रहते, कच्चा रंग उतरता है।
तब तक बात नहीं बनती है, जब तक लगती छाप नहीं।
निर्धनता से बड़ा कोई इस ....
जिह्वा अमृत रस में भीगी हरदम रहती गीली है।
न लकड़ी न लोहा इसमें कोमल और लचीली है।
रैन दिवस हरकत में रहती ऐसी यह फुर्तीली है।
'पथिक' यह कड़वे बोल बोलती, करे मधुर आलाप नहीं।
निर्धनता से बड़ा कोई इस ....

अध्यात्म

जगत् साकार बनाया है निराकर प्रभु।
क्या अजब खेल रचाया है निराकार प्रभु।।1।।

लेता अवतार है भगवान, कई कहते हैं,
साफ वेदों ने बताया है, निराकार प्रभु।।2।।

कर्म करता है, बिना हाथ बिना पावों के,
देखो रामायण में आया, है निराकार प्रभु।।3।।

चाँद सूर्य व सितारों में है, और जल थल में,
तेज ब्रह्माण्ड में छाया है - निराकार प्रभु।।4।।

देखना चाहे उसे, बाहर की आँख से जो,
उसकी दृष्टि में न आया है, निराकार प्रभु।।5।।

है कहा स्पष्ट श्रुति ने कि 'न तस्य प्रतिमास्ति'।
किसी बन्धन में न आया है, निराकार प्रभु।।6।।

ज्ञान चक्षु ही उसे 'हंस' देख सकते हैं।
मन के मन्दिर में समाया है-निराकार प्रभु।।7।।
जगत् साकार बनाया है निराकर प्रभु।
क्या अजब खेल रचाया है निराकार प्रभु।।

अध्यात्म

जिन्दगी में तूने कभी किया ना विचार।
छोड़ के चलेगा एक दिन संसार।।टेक।।

कहाँ गये तख्त कहाँ ताज चले गये।।
कहाँ गये राजा कहाँ राज चले गये।।
कहाँ गई रानियाँ वो करके श्रृंगार।।1।।
जिन्दगी में तूने कभी ....
अवध नरेश श्रीराम कहाँ है।
द्वारका के नाथ घनश्याम कहाँ है।।
कहाँ गया कौरवों का बड़ा परिवार।।2।।
जिन्दगी में तूने कभी ....
ऐश की अटारिया ये माया के मकान
देख-देख जिसको तू करें है गुमान।।
मन से निकाल दे ये मन का विकार।।3।।
जिन्दगी में तूने कभी ....
भूल से भी कभी ना तू पाप किया कर।
एक परमात्मा का जाप किया कर।
ढूँढ़ ले बेमोल तू भी मुक्ति का द्वार।।4।।
जिन्दगी में तूने कभी ....

अध्यात्म

मानव सोचो जग के सुख का, विस्तार रहेगा कितने दिन ?
सत्कार रहेगा कितने दिन, यह प्यार रहेगा कितने दिन ?

चाहे पितु हो या माता हो, अपनी हो या सुत भ्राता,
जिनको अपना कहते उन पर, अधिकार रहेगा कितने दिन ?
मानव सोचो जग के सुख का, विस्तार ....

कोई आता है कोई जाता है, थोड़े ही दिन का नाता है,
जिसका आश्रय लेते हो तुम, आधार रहेगा कितने दिन ?
मानव सोचो जग के सुख का, विस्तार ....

जो जग में सच्चे ज्ञानी हैं, परमात्म-तत्व के ध्यानी हैं।
उनसे पूछो मन का माना, संसार रहेगा कितने दिन ?
मानव सोचो जग के सुख का, विस्तार ....

तुम प्रेम करो अविनाशी से, मिल जाओ सब उर वासी से।
मैं 'पथिक' यहाँ पर मेरा क्या ? व्यापार रहेगा कितने दिन ?
मानव सोचो जग के सुख का, विस्तार ....

अध्यात्म

सुख के अभिलाषी प्राणी को, भगवान् भुलाना ठीक नहीं।
सीधे पथ जाने वाले को, उलटे पथ जाना ठीक नहीं।।

सम्भव है मानव भूल करे, इसका फल संकट भोग मिले।
परिणाम मिले जब करनी का, तो फिर घबराना ठीक नहीं।
सुख के अभिलाषी प्राणी को, भगवान ....

माना कि घड़ियां आती हैं, उत्थान पतन की जीवन में।
उत्थान पतन की घड़ियों में, कोई भेद जताना ठीक नहीं।।
सुख के अभिलाषी प्राणी को, भगवान ....

आदेश यही समदर्शी का, हर काल में जीवन समा रखना।
स्वामी के सच्चे सेवक को, आज्ञा ठुकराना ठीक नहीं।।
सुख के अभिलाषी प्राणी को, भगवान ....

सुख चाहते हो यदि 'देश' सभी तो बात खरी एक कहते हैं।
रोते आये इस दुनियाँ में, रोते अब जाना ठीक नहीं।।
सुख के अभिलाषी प्राणी को, भगवान ....

अध्यात्म

चराचर जगत का स्वामी, जगत का पिता एक है।
सबके शुभ-अशुभ कर्मों का, जिसे पूरा विवेक है।
पृथ्वी, सूरज, नभ, तारे, चन्द्र आकाश बनाये।
वेद में परमेश्वर के, असंख्य नाम बताये।
मुख्य नाम है ओ३म् प्रभु का, वही है आनन्द धाम।।1।।
ईश्वर की करें उपासना रोज सवेरे शाम
विश्व के सर्वेश्वर का, एक ही संविधान है।
अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा को दिया ज्ञान है।
ज्ञान ऋग्वेद के अन्दर, यजुर्वेद कर्म प्रधान है।
उपासना सामवेद में, अथर्व में विज्ञान है।
सबसे पहले वेद की रचना, जाने जगत तमाम।।2।।
ईश्वर की करें उपासना रोज सवेरे शाम
हिमालय से विंध्याचल, अटक ब्रह्मपुत्र बताया।
इनका जो मध्य भाग है, वही आर्यावृत कहाया।
वेद अनुकूल जीवन, करता जो श्रेष्ठ कार्य है।
वही ईश्वर का पुत्र है, कहाता वही आर्य है।
आर्य कहाते थे अपने को, श्रीराम घनश्याम।।3।।
ईश्वर की करें उपासना रोज सवेरे शाम
महाभारत की फूट से, भाग्य भारत का फूटा।
पाखण्ड और अन्ध विश्वास में, कर्म से नाता टूटा।
रक्षक सोमनाथ है, निकला विश्वास ये झूठा।
महमूद गजनवी ने, सभी मन्दिरों को लूटा।
अपनी गलती समझा 'नरेश' पाखंड का ये परिणाम।।4।।
ईश्वर की करें उपासना रोज सवेरे शाम

अध्यात्म

प्रभु दर्शन करने आये थे, प्रभु दर्शन पाना भूल गए।
जिस पथ पर हमको जाना था, उस पथ पर जाना भूल गए।।1।।

मानव जीवन को पाकर भी, यह उलझन हमसे न सुलझी।
उस अन्तर्यामी के अन्दर, हम ध्यान लगाना भूल गए।।2।।

यम नियमों के साधन द्वारा, अपने को निर्मल कर न सके।
ऋषियों की भाँति ज्योति से, ज्योति को मिलाना भूल गए।।3।।

अपनी ही अविद्या के कारण, भगवान् को समझा दूर सदा।
हम खुल कर खेले पापों से, शुभ कर्म कमाना भूल गए।।4।।

धरती के मानव हैं जितने, भाइयों सा सबसे नाता है।
हम हिंसावादी बन बैठे, देवों का जमाना भूल गए।।5।।

भूलें सुलझाने देश की फिर, प्रभु भक्त दयानन्द जी आए।
ऐसे उपकारी नेता की, आज्ञा को निभाना भूल गए।।6।।

सुविचार

अभ्यास से उबना लक्ष्य से दूर हो जाना है।

अध्यात्म

सुख चाहे तो बुराइयों के जाना बन्दे! नजदीक नहीं,
बचकर रहना इस दुनिया में, पग-पग पर ठग घूम रहे।
दम लगा चरस-गाँजे की, जो हाथी-से मद में झूम रहे।।
ऐसे नितंग, मूरख, पलंग, देंगे सुखकारी सीख नहीं।
उलटे पथ जाना ठीक नहीं।।

लोगों के धन से उड़ा रहे हैं, मौज लफंगे हुड़दंगे।
भूख बिन, वस्त्र दीन-दुखिया, सरदी में सुकड़ रहे नंगे।
देना सुपात्र को सदा, कभी देना कुपात्र को भीख नहीं।
उलटे पथ जाना ठीक नहीं।।

ग्रह राहु, केतु कहकर, जो लोगों को खूब डराते हैं।
सोना, वस्त्र आदि लेकर, फौरन फरार हो जाते हैं।।
सँभलो ये शूल-भरे वन हैं! ये हैं उपवन रमणीक नहीं।
उलटे पथ जाना ठीक नहीं।।

धर्मार्थ, काम, मोक्षफल, जो प्राप्त नहीं कर पाते हैं।
सुर-दुर्लभ मानव-तन को, वे अज्ञानी वृथा गंवाते हैं।
'राघव' बिन वेद-ज्ञान, मिलती सुख-शान्ति प्रदर्शन लीक नहीं।
उलटे पथ जाना ठीक नहीं।।

अध्यात्म

सोचो उस प्रभु सर्वव्यापी का, अवतार भला कैसे होगा।
जिसका कोई आकार नहीं, साकार भला कैसे होगा।

वेद और शास्त्र आर्ष ग्रन्थ, सब इसका खण्डन करते हैं,
बिन युक्ति और प्रमाणों के, स्वीकार भला कैसे होगा।

धोखे में साधारण जनता को, डाला है पाखण्डी लोगों ने,
लम्बे अरसे तक धोखे का, व्यापार भला कैसे होगा।

वक्ता जहाँ मिथ्याभाषी हो, हठधर्मी से ले काम सदा,
बतलाओ भोली जनता का, उद्धार भला कैसे होगा।

जब स्वयं वेद यह कहते हैं, ईश्वर अवतार नहीं लेता,
फिर ''देश'' सच्चाई का तुझको, इन्कार भला कैसे होगा।

सुविचार

असतो मा सद् गमय।
हे ईश्वर! मुझे असत् से दूर कर।
सत् की ओर ले चल।

अध्यात्म

तेरे दर को छोड़ कर किस दर जाऊं मैं ?
सुनता मेरी कौन है, किसे सुनाऊं मैं ?

जब से याद भुलाई तेरी, लाखों कष्ट उठाये हैं।
क्या जानूं इस जीवन के अन्दर, कितने पाप कमाये हैं।
हूं शर्मिन्दा आपसे क्या बतलाऊं मैं ?
तेरे दर को छोड़ कर................
मेरे पाप कर्म ही तुझसे, प्रीति न करने देते हैं।।
कभी जो चाहूं मिलू आपसे, रोक मुझे ये लेते हैं।
कैसे स्वामी आपका दर्शन पाऊँ मैं,
तेरे दर को छोड़ कर................
तू है नाथ वरों का दाता, तुझसे सब वर पाते हैं।
ऋषि, मुनि और योगी सारे, तेरे ही गुण गाते हैं।
छींटा दे दो ज्ञान का, होश में आऊँ मैं।।
तेरे दर को छोड़ कर................
जो बीती सो बीती लेकिन, बाकी उम्र संभालूं मैं।
चरणों में ही बैठ प्रभु के, गीत प्रेम के गा लूं मैं।।
जीवन अपने आपका सफल बनाऊं मैं।।
तेरे दर को छोड़ कर........................

अध्यात्म

प्रभु निराकार है, महिमा अपरम्पार है,
शरण में जो आयेगा, उसका बेड़ा पार है।

सूरज चाँद बनाया उसने, तारे खूब सजाये हैं, तारे खूब ....
हाथों बिना पहाड़ बनाये, सुन्दर फूल खिलाये हैं, सुन्दर फूल ....
प्रभु निराकार है, महिमा अपरम्पार है,
शरण में जो आयेगा, उसका बेड़ा पार है।

शुभ कामों से मानव का यह सुन्दर चोला पाया है, सुन्दर चोला ......
विषय-विकारों में फँस करके इसको दाग लगाया है, इसको दाग ....
प्रभु निराकार है, महिमा अपरम्पार है,
शरण में जो आयेगा, उसका बेड़ा पार है।

बुद्धि निर्मल करो हमारी, शरण तुम्हारी आता है, शरण ....
भक्ति का दो दान हमें, श्रद्धा से शीश झुकाते हैं, श्रद्धा से ....
प्रभु निराकार है, महिमा अपरम्पार है,
शरण में जो आयेगा, उसका बेड़ा पार है।

भजनों द्वारा आध्यात्मिक चिन्तन

वैराग्य

क्र.सं.	वैराग्य भजन/गीत के बोल	पृ. सं.
1.	यह जीवन तुम्हारा, तुम्हारे ही अर्पण	243
2.	ना चांदी, ना सोना, न रतन चाहिए	244
3.	गाये जा, गाये जा, भगवान की महिमा गाये जा	246
4.	कुछ सोच समझ प्राणी, एक दिन दुनिया से है जाना	247
	आत्म ज्ञान भजन/गीत के बोल	
1.	बिना आत्मज्ञान के दुनियाँ में	248
	आत्म निरीक्षण भजन/गीत के बोल	
1.	आओ मिलकर विचार करें	249
2.	इक बार भजन कर ले	250
3.	हे प्रभु वर दीजिए, धारण करें सन्तोष हम	251
	ध्यान भजन/गीत के बोल	
1.	कर ध्यान उस ईश्वर का	252
2.	क्या कहें, क्या भक्त पाता, है प्रभु के ध्यान में	253
3.	क्या कहूँ क्या-क्या मिला, मुझको प्रभु के ध्यान में	254
4.	साधक बनकर करो साधना	255
5.	भीतर है सखा तेरा, जरा मन टिका के देख	256
6.	प्रातःकाल सन्ध्या वन्दन, परमेश्वर का ध्यान करो	257
	मुक्ति भजन/गीत के बोल	
1.	धर्म को छोड़ मत भाई, तुझे मुक्ति को पाना है	258
2.	सुबह-शाम भजन कर ले	259
2.	करो मन ओ३म् का चिन्तन, अगर मुक्ति को पाना है	260
	जीवात्मा भजन/गीत के बोल	
1.	गति जीव आत्मा की कोई समझाये	261

वैराग्य

यह जीवन तुम्हारा तुम्हारे ही अर्पण।
इसे अपने चरणों के काबिल बना दो।।

हो करुणा के सागर दया के हो दाता।
तुम्हीं जग के पालक तुम्हीं हो विधाता।
यह सोया है मनवा इसे तुम जगा दो।।
इसे अपने चरणों के काबिल ....
मैं पथ से गिरूँ तो मुझे थाम लेना।
दया करके सद्बुद्धि देते ही रहना।
जो सच्चा हो मार्ग वही तुम दिखा दो।।
इसे अपने चरणों के काबिल ....

तुम्हारे हवाले है जीवन की नैया।
इसे पार कर दो ऐ मेरे खिवैया।
कहीं डूब जाये ना इसको बचा लो।।
इसे अपने चरणों के काबिल ....

दरश को मैं आया हूँ जन्मों का मारा।
भटकता है मनवा यह अब भी हमारा।
इसे वश में करने की युक्ति बता दो।।
इसे अपने चरणों के काबिल ....

वैराग्य

ना चाँदी, ना सोना, ना रतन चाहिए
ना कांटे, ना कलियाँ, ना चमन चाहिए
मुझे और कुछ भी नहीं मांगना
पिता एक तेरी शरण चाहिए।

सदा सत्य के पथ पे चलता रहूं
बचाने में औरों के जलता रहूं
गिरूँ, गिर के फिर मैं सम्भलता रहूं
लिये हाथ मरहम निकलता रहूं

किसी का ना मुझको नमन चाहिए
ना रेशम का मुझको कफन चाहिए
लड़ूँ मैं सदा दुष्ट, अन्याय से
मुझे न्याय पथ में मरण चाहिए।
मुझे और कुछ भी नहीं मांगना
पिता एक तेरी शरण चाहिए।

किसी के अगर काम मैं आ सकूं
जहां भेजना हो वहां जा सकूं।

क्रमशः पृष्ठ 245 पर ....

तुम्हारी कृपा दृष्टि अगर पा सकूं।।
सफल जिन्दगी की गजल गा सकूं।
　　　　　　　　ना दूषित कुटिल से नयन चाहिए।
　　　　　　　　ना छल के कपट के नयन चाहिए।
　　　　　　　　पिता झूठ के तीर नित भेंदते।
　　　　　　　　मुझे सत्य का आचरण चाहिए
　　　　　　　　मुझे और कुछ भी नहीं मांगना
　　　　　　　　पिता एक तेरी शरण चाहिए।
ना मुझमें बनावट का व्यवहार हो
ना अपमान हो सिर्फ सत्कार हो
कहीं भी लहू का ना व्यापार हो
सकल विश्व संयुक्त परिवार हो
　　　　　　　　ना उड़ने को मुझको गगन चाहिए
　　　　　　　　किसी और से ना मिलन चाहिए
　　　　　　　　नहीं चाहिए चिमनियों का धुआँ
　　　　　　　　मनीषियों को सन्ध्या हवन चाहिए।
　　　　　　　　मुझे और कुछ भी नहीं मांगना
　　　　　　　　पिता एक तेरी शरण चाहिए।

वैराग्य

गाए जा गाए जा, भगवान की महिमा गाए जा।
सुबह शाम इस मन मन्दिर में, झाड़ू रोज लगाए जा।

तरह-तरह के खेल हैं इसमें, दुनिया एक तमाशा है।
कहीं खुशी और कहीं गमी है, आशा कहीं निराशा है।
चाहे यह हँसाए तुझे, चाहे यह रुलाए, बस अपना फर्ज निभाए जा........
गाए जा, गाए जा, भगवान की ....

चिन्ता और चिता इस जग में, एक समान कहाती है।
इक जिन्दा को, इक मुर्दे को, दोनों सदा जलाती है।
दु:ख जो दिखाये, वो ही दु:खड़े मिटाये, तू चिन्ता दूर हटाए जा।
गाए जा, गाए जा, भगवान की ....

कौन हमेशा रहा जगत में, किस का यहाँ ठिकाना है।
बाँध ले अपना बिस्तर बाबा, यह तो देश बेगाना है।
दुनिया सराय, कोई आए कोई जाए।
यह सब को 'पथिक', समझाए जा।
गाए जा, गाए जा, भगवान की महिमा गाए जा।

वैराग्य

कुछ सोच समझ प्राणी एक दिन दुनिया से है जाना.....
कुछ सोच समझ प्राणी, एक दिन ....

जिसे समझता है तू अपनी, यह है एक सराये,
चार दिनों का मेला है यहाँ कोई आये कोई जाये
मोह माया के जाल में फंसकर ओ३म् को क्यों बिसराये.....
तेरी यह जागीर नहीं है यह है मुसाफिर खाना।।1।।
कुछ सोच समझ प्राणी, एक दिन ....

ठोकर खाता क्यों फिरता है परमेश्वर को भूल,
काँटा बनकर क्यों चुभता है, बन जा सुन्दर फूल
जिस जीवन में नहीं है सुगन्धि, उसका क्या है मूल
लाखों योनियों में होगा फिर निरंतर चक्कर लगाना।।2।।
कुछ सोच समझ प्राणी, एक दिन ....

प्रातः सायं-सन्ध्या कर ले, ओ३म्-ओ३म् गुण गा ले,
भूखे नंगों की कर सेवा, तू जीवन सफल बना ले
'नंदलाल' कहे मानव चोला, जो है सफल बनाना।।3।।
कुछ सोच समझ प्राणी, एक दिन ....

आत्मज्ञान

बिन आत्मज्ञान के दुनियाँ में, इंसान भटकते देखे हैं।
आम बशर की बात ही क्या, सुलतान भटकते देखे हैं।1।

जो सबरों सकूँ की दौलत है, मिलती है आत्मज्ञानी को।
तसकीन के तो देखा है, धनवान भटकते देखे हैं।2।

सब ज्ञान तो उसने सीख लिया, पर आत्मज्ञान ही सीखा ना।
यह कारण है कि पंडित भी, अनजान भटकते देखे हैं।3।

जो भटकाते दुनियाँ को, वे आप भटकते देखे हैं।
गुणवान भटकते देखे हैं, साइंसदान भटकते देखे हैं।4।

जिस महफिल में देखा है, हर एक को भटका पाया है।
हर मेम्बर की तो बात ही क्या, प्रधान भटकते देखे हैं।5।

जो आत्म ज्ञानी होता है, बलवान है सारी दुनियाँ में।
वैसे तो 'पथिक' इस दुनिया में, बलवान भटकते देखे हैं।6।

अज्ञान के कारण देह धारी, मानव को ही ईश्वर मान लिया।
अब जाने माने लोगों के, भगवान भटकते देखे हैं।7।

आत्म निरीक्षण

आओ मिल के विचार करें।
पहले हम आप सुधरें, फिर औरों का सुधार करें,
बचें पाप की कमाई से, सदा शुभ कर्म करें।
रहें दूर बुराई से, आओ मिलके विचार करें।।1।।

यहाँ सब रह जायेगा, यहाँ सब रह जायेगा,
दिया हुआ जो हाथ से, वही साथ निभायेगा।
आओ मिल के विचार करें।।
पहले हम आप सुधरें फिर ....।।2।।

हैं सभी मेहमान यहाँ, हैं सभी मेहमान यहाँ,
करके भलाई जो गये हैं, उनके निशान यहाँ।
हम भी ऐसे काम करें, हम भी ऐसे काम करें,
जब तक दुनियाँ रहे, सूरज की तरह चमकें।
आओ मिल के विचार करें।।
पहले हम आप सुधरें फिर ....।।3।।

भगवान् को याद करें, भगवान को याद करें।
जीवन कीमती है, न उसे बरबाद करें।
यह कामना सेवक की, यह कामना सेवक की,
प्रभु हमें दो सुमति, यह विनती है सबकी।
आओ मिल के विचार करें।।
पहले हम आप सुधरें फिर ....।।4।।

आत्म निरीक्षण

इस बार भजन कर ले, मुक्ति का यतन कर ले।
छुट जाएँगे जन्म-मरण, प्रभु का सिमरण कर ले।

यह मनुष्य का चोला, हर बार नहीं मिलता,
जो गिर गया डाली से, वह फूल नहीं खिलता।
मौका है यह जीवन का, गुलजार चमन कर ले।।1।।
इस बार भजन कर ले, मुक्ति का ....
नर इन कानों से, तू सुन सन्तों की वाणी,
मन को ठहरा करके, बन जा आत्मज्ञानी।
जिह्वा न चले मुख में, अब प्रभु नाम रटन रट ले।।2।।
इस बार भजन कर ले, मुक्ति का ....
मस्तानों की टोली में, ले नाम लिखा अपना,
तब आयेगी साफ नजर, है दुनिया इक सपना।
धुल जायेगी सब स्याही, उजला तन मन कर ले।।3।।
इस बार भजन कर ले, मुक्ति का ....
जो सन्तों ने गाया है, मैं भी हूँ उस धुन में,
उस धुन को सुन-सुनकर, जग रमा उसी धुन में।
प्रभु के आगे अब तो, नीची गरदन कर ले।।4।।
इस बार भजन कर ले, मुक्ति का ....

आत्म-निरीक्षण

हे प्रभु वर दीजिये ,धारण करें सन्तोष हम,
दूसरों के गुण निहारें, और अपने दोष हम।
सत्य शुद्धाचार, सद्व्यवहार के होवें धनी,
शुभ गुणों से कर सकें, भरपूर अपना कोष हम।
हे प्रभु वर दीजिए, धारण करें ....
हो सदा नि:स्वार्थ मन, अभिमान कोसों दूर हो,
मन वचन और कर्म से, होवें सभी निर्दोष हम।
हे प्रभु वर दीजिए, धारण करें ....
देश जाति धर्म रक्षा, के हम प्रहरी बनें,
और सजग होकर रहें, न हों कभी मदहोश हम।
हे प्रभु वर दीजिए, धारण करें ....
काँप जायें वेद निंदक, नास्तिकों की टोलियाँ,
ऊँचे स्वर से बोलें, वैदिक धर्म का जयघोष हम।
हे प्रभु वर दीजिए, धारण करें ....
दुर्गुणों को छोड़ देवें, अपना मन हम जीत लें,
इन्द्रियों के दमन में, पूरा दिखायें जोश हम।
हे प्रभु वर दीजिए, धारण करें ....

ध्यान

कर ध्यान उस ईश्वर का, जिसने है किया उत्पन्न तुमको।
धन्यवाद करो परमेश्वर का, खाने को दिया जिसने अन्न तुमको।।

तुम पापी हो, अपराधी हो, जो ध्यान नहीं उसका करते।
वह दयालु है उसने है दिया, तन भी, मन भी और धन तुमको।।
कर ध्यान उस ईश्वर का ....

वह है माता-पिता है, दाता है, त्राता है सारे जीवों का।
हम ध्यान करें उस स्वामी का, चाहिए करना यह प्रण तुमको।।
कर ध्यान उस ईश्वर का ....

निज जीवन को करना चाहो, जो सफल जगत में ऐ मित्रों।
तो प्रात: उठकर श्रद्धा से, चाहिए गाना प्रभु-गुण तुमको।।
कर ध्यान उस ईश्वर का ....

गर पामर पतित भी चाहे तो, आओ तुम शरण में ईश्वर की।
वह शरणागत प्रतिपालक है, प्रभु कर देंगे पावन तुमको।।
कर ध्यान उस ईश्वर का ....

ऐ 'पाल' पुकारो प्रेम सहित सब, परम पिता उस प्रभुवर को।
सुन पुत्रों के इस क्रन्दन को, आ पकड़ेंगे भगवान् तुमको।।
कर ध्यान उस ईश्वर का ....

ध्यान

क्या कहें क्या भक्त पाता है, प्रभु के ध्यान में।
कुछ अलौकिक रस मिले, जब मन लगे भगवान में।।

ज्ञान के आलोक से, तब जगमगाता है हृदय।
रंग-बिरंगे फूल खिलते, आत्मिक उद्यान में।।
क्या कहें क्या भक्त पाता है, प्रभु ....

संशयों का नाश होता, पाप के बन्धन कटें।
साधना का मार्ग मिलता, आत्मिक उत्थान में।।
क्या कहें क्या भक्त पाता है, प्रभु ....

विषय-विष से जान पड़ते, वासना की प्यास ना।
तब न आकर्षण रहे, कुछ काम मद अभिमान में।।
क्या कहें क्या भक्त पाता है, प्रभु ....

यों लगे सर्वत्र ही, आनंद वर्षा हो रही।
भक्त जब हो मग्न लगता, ओ३म् के गुणगान में।।
क्या कहें क्या भक्त पाता है, प्रभु ....

'पाल' गूँगा किस तरह, गुड़ की मधुरता कह सके।
मधुरता-अनुभूति रहती, मगर उसके ज्ञान में।।
क्या कहें क्या भक्त पाता है, प्रभु ....

ध्यान

क्या कहूँ क्या-क्या मिला, मुझको प्रभु के ध्यान में।
एक अलौकिक-सुख मिला, जब मन लगा भगवान में।
जब भी उसके गीत गाए, शुद्ध अन्तर्मन हुआ,
सद्गुणों का कोष पाया, ईश के गुणगान में।।
क्या कहूँ क्या-क्या मिला, मुझको ....
जैसे एक व्याकुल नदी, सागर से मिलकर तृप्त हो,
तृप्ति ऐसी ही अवर्णनीय, पाई ध्यान में।।
क्या कहूँ क्या-क्या मिला, मुझको ....
जैसे पतझड़ में बसंत, आ जाए मस्ती संग ले,
पुष्प अनगिन खिल गए, त्यों आत्मिक उद्यान में।।
जिसको देखो, बस उसी को, मन समर्पित हो गया,
भेद कुछ भी न रहा, फिर मान और अपमान में।।
क्या कहूँ क्या-क्या मिला, मुझको ....
अहम् सारा मिट गया, भय-भ्रम भी सारा हट गया,
लग गई सब इंद्रियाँ ही, आत्मिक उत्थान में।।
क्या कहूँ क्या-क्या मिला, मुझको ....
मुस्कुराहट रहती है, होठों पर हरदम ही मेरे,
रूप जब से कह गया, प्रभु जाने क्या इस कान में।।
क्या कहूँ क्या-क्या मिला, मुझको ....
अब भला संसार का, वैभव मुझे क्या चाहिए?
पा लिया है रूप मैंने, प्रभु के ही वरदान में।।
क्या कहूँ क्या-क्या मिला, मुझको ....

ध्यान

साधक बन कर करो साधना, अमृत का भण्डार मिलेगा।
मानव जीवन सफल बनेगा, परमेश्वर का प्यार मिलेगा
साधक बन कर करो साधना, अमृत ....
सत्य अहिंसा को अपनाना, ब्रह्मचर्य को धारण करना।
चोरी तजना, लोभ त्यागना, अपने दोष निवारण करना।
परम प्रभु के पावन पथ पर, बढ़ने का अधिकार मिलेगा।
साधक बन कर करो साधना, अमृत ....
शौच तथा सन्तोष संवारें, तन का चोला मन का दर्पण।
तप, स्वाध्याय निरन्तर होवे, ईश्वर के प्रति आत्म समर्पण।
यम नियमों का पालन करिए, भक्ति को आधार मिलेगा।
साधक बन कर करो साधना, अमृत ....
आसन, प्राणायाम के द्वारा स्वस्थ निडर बलवान बनोगे।
करके प्रत्याहार, धारणा, योगनिष्ठ इन्सान बनोगे।
अन्त:करण पवित्र बनेगा, शुद्ध सरल व्यवहार मिलेगा
साधक बन कर करो साधना, अमृत ....
लीन हुए जब ध्यान लगाकर, प्रभु द्वार तक आ जाओगे।
लगी समाधि, मिली सफलता, परम तत्त्व को पा जाओगे।
करो 'पथिक' अष्टांग योग, फिर समय न बारम्बार मिलेगा।
साधक बन कर करो साधना, अमृत ....

ध्यान

भीतर है सखा तेरा, जरा मन टिका के देख।
अन्त:करण में ज्ञान की, ज्योति जगा के देख।।

हैं इन्द्रियों की शक्तियाँ, बाहर की ओर जो।
बाहर की ओर से इन्हें, भीतर को मोड़ दो।
कर द्वार सकल बन्द, समाधि लगा के देख।।
भीतर है सखा तेरा, जरा मन ....
शुद्ध आत्मा से उसकी, तू रचना का ध्यान कर।
निश्चय ही झूम जाएगा, महिमा का गान कर।
श्रद्धा की देवी रूठी हुई है, मना के देख।।
भीतर है सखा तेरा, जरा मन ....
साथी पवित्र देव हों, बिगड़ी बने न क्यों।
जीवन यह तेरा भक्ति-रस में, सने न क्यों।
आदर्श भक्तों जैसा तू, जीवन बना के देख।।
भीतर है सखा तेरा, जरा मन ....
मिलता है सखा तेरा, इसी ही उपाय से।
मिलता नहीं कदापि, वह अन्यत्र जाये से।
ईश्वर की वाणी वेद कहें, आजमा के देख।।
भीतर है सखा तेरा, जरा मन ....

ध्यान

प्रात:काल संध्या वन्दन, परमेश्वर का ध्यान करो।
जिस मालिक ने जन्म दिया है, उसका सब गुणगान करो।
उस की दिव्य शरण में आ के।
आत्म समर्पण भाव जगा के।
परम पवित्र परम सुखदायक, भक्ति रस का पान करो।
प्रात:काल सन्ध्या वन्दन, परमेश्वर का ध्यान करो।
पृथ्वी सूरज चाँद सितारे
सभी बनाये न्यारे न्यारे।
चिंतन और मनन से उस की ताकत का अनुमान करो।
प्रात:काल संध्या वन्दन, परमेश्वर का ध्यान करो।
सब का सिरजनहार वही है।
रक्षक प्राणाधार वही है।
अपने अन्त:करण के अन्दर, गहरा अनुसंधान करो,
प्रात:काल संध्या वन्दन, परमेश्वर का ध्यान करो।
कौन तुम्हें बंधन में लावे।
बंधन से फिर कौन छुड़ावे।
कौन बड़ा अधिकारी वह, जरा जान पहचान करो।
प्रात:काल संध्या वन्दन, परमेश्वर का ध्यान करो।
बचपन यौवन कौन दिखावे।
तन पर कौन बुढ़ापा लावे।
इस परिवर्तन के कारण का, हासिल कुछ तो ज्ञान करो।
प्रात:काल संध्या वन्दन, परमेश्वर का ध्यान करो।
ऋषियों का पैगाम यही है।
चिंतन का परिणाम यही है।
कर के भजन 'पथिक' दुनियां में जीवन का उत्थान करो।
प्रात:काल संध्या वन्दन, परमेश्वर का ध्यान करो।

मुक्ति

धर्म को छोड़ मत भाई, तुझे मुक्ति को पाना है।
दो दिन की जिन्दगी है, यहाँ से सबको जाना है।।
धर्म को छोड़ मत भाई तुझे ....

फँसा है क्यों अरे मानव, यहाँ कुछ भी न अपना है।
न कोई तेरा मेरा है, यहाँ सब कुछ बेगाना है।
अरे तू चेत तो मानव, यह जग अस्थिर ठिकाना है।।
धर्म को छोड़ मत भाई तुझे ....

आकुलता को हटा मन से, तू तज दे मोह ममता को।
सदा सच बोल, संयम धर, बसा ले उर में समता को।
हटा दे पाप का पर्दा, तुझे शिवपुर जो जाना है।।
धर्म को छोड़ मत भाई तुझे ....

दिये उपदेश ऋषिवर ने, तू उनको ध्यान में धर ले।
यह अवसर फिर न आयेगा, यह नर तन सार्थक कर ले।
तू आजा उसके चरणों में, यही सच्चा ठिकाना है।।
धर्म को छोड़ मत भाई तुझे ....

मुक्ति

सुबह-शाम भजन कर ले, मुक्ति का यतन कर ले।
छूट जायेगा जन्म-मरण, प्रभु का सुमिरन कर ले।।
यह मानव का चोला, हर बार नहीं मिलता,
जो गिर गया डाली से, वह फूल नहीं खिलता।
मौका है यह जीवन का, गुलजार चमन कर ले।।1।।
सुबह-शाम भजन कर ले, मुक्ति ....

नर इन कामों से सुन, तू संतों की वाणी।
मन को ठहरा करके, बन जा आत्म ज्ञानी।
जिह्वा तो चले मुख में, अब ओ३म् जपन कर ले।।2।।
सुबह-शाम भजन कर ले, मुक्ति ....

इस मैली चादर में, हैं दाग लगे कितने।
पर ज्ञान के साबुन में, हैं झाग भरे इतने।
धुल जायेगी सब स्याही, उजला तन मन कर ले।।3।।
सुबह-शाम भजन कर ले, मुक्ति ....

सुन वेदों में गूँज रही, मंत्रों की मधुर ध्वनियाँ।
बलिदान की कड़ियों में, तू गूँथ नयी कड़ियाँ।
प्रभु के आगे अब तो, नीची गर्दन कर ले।।4।।
सुबह-शाम भजन कर ले, मुक्ति ....

मुक्ति

करो मन ओ३म् का सिमरन, अगर मुक्ति को पाना है।
अरे बाबा ये वो घर है, जो, एक दिन छोड़ा जाना है।।
करो मन ओ३म् का सिमरन...............
न पाँवों से गया सत्संग, किया न दान हाथों से।
जुबाँ से न किया सुमिरन, तेरा किस जाँ ठिकाना है।।
करो मन ओ३म् का सिमरन...............
अवस्था जा रही तेरी, बचा ले ओ३म् सुमिरन से।
तेरे कर्मों का सब परिचय, तेरे दर पेश आना है।।
करो मन ओ३म् का सिमरन...............
जो रिश्तेदार हैं तेरे, जिन्हों से है तेरी उल्फत।
उन्होंने रख के अग्नि में, तुझे एक दिन जलाना है।।
करो मन ओ३म् का सिमरन...............
तेरे दम में जो दम आता, तुझे खुद ही नजर आता।
बना ले खर्च ए बन्दे, वहाँ जो पहुँच खाना है।।
करो मन ओ३म् का सिमरन...............

सुविचार

स्वर्ग कामो यजेत्

स्वर्ग की कामना के लिए यज्ञ करें।

जीवात्मा

गति जीव आत्मा की कोई समझाये,
कहाँ से ये आये और कहाँ लौट जाये।
कभी इस का आना-जाना, किसी ने न जाना
कहाँ का निवासी है ये, कहाँ है ठिकाना।
किसी से भी कोई अपना, पता न बताये।
कहाँ से ये आये, और कहाँ लौट जाये।
गति जीव आत्मा की .... (1)
मिली एक नगरी इसको अयोध्या निराली,
जो है आठ चक्रों और नौ द्वारों वाली।
सिर्फ चार दिन ही इसका शहंशाह कहाए।
कहाँ से ये आये और कहाँ लौट जाये।
गति जीव आत्मा की .... (2)
प्रभु ने हजारों तोहफे बना के दिये हैं,
कुदरती न जाने जग में इसी के लिये है।
इन्हें छोड़ के क्यों जाना समझ में न आये,
कहाँ से ये आये और कहाँ लौट जाये।
गति जीव आत्मा की .... (3)
पथिक यह प्रभु की माया, प्रभु जानता है।
प्रभु के सिवा, न कोई पहचानता है।
जो है महान् शक्ति, सारे विश्व को चलाये।
कहाँ से ये आये, और कहाँ लौट जाये।
गति जीव आत्मा की कोई समझाये,
कहाँ से ये आये और कहाँ लौट जाये।।4।।

सृष्टि रचना

क्र.सं.	सृष्टि रचना भजन/गीत के बोल	पृ. सं.
1.	सत्ता तुम्हारी भगवन जग में समा रही है	263
2.	ईश्वर बिना विचारिये, सृष्टि रचाये कौन ?	264
3.	दुनियाँ बनाने वाले, कैसी तेरी माया है	265
4.	कर दी जगत की रचना, बिना हस्त बिना खाल	266
5.	कैसा सुन्दर जगत रचाया है तूने भगवन्	267
6.	विश्वपति जगदीश तुम, तेरा ही ओ३म् नाम है	268
7.	दुनियाँ की हर वस्तु भगवन्, तेरी याद दिलाती है	269

वेद

क्र.सं.	वेद भजन/गीत के बोल	पृ. सं.
1.	ज्ञान का सागर चार वेद, यह वाणी है भगवान की	270
2.	बिना वेद विद्या का न कल्याण होगा	271
3.	वेद को पढ़ना पढ़ाना चाहिए	272
4.	जीवन सफल बनाना है तो वेद पढ़ो और वेद पढ़ाओ	273
5.	वेद पढ़ों व पढ़ाया करो	274
6.	मधुर वेद वाणी बजाये चला जा	275
7.	वेद ही जग में हमारा, ज्योति जीवन-सार है	276

सृष्टि रचना

सत्ता तुम्हारी भगवन् जग में समा रही है।
तेरी दया सुगन्धि हर गुल से आ रही है।।1।।

रवि, चन्द्र और तारे, तूने बनाये सारे।
इन सबमें ज्योति तेरी, इक जगमगा रही है।।2।।
सत्ता तुम्हारी भगवन, जग में ....

विस्तृत वसुन्धरा पर सागर बहाये तूने।
वह जिनकी मोतियों से, अब चमचमा रही है।।3।।
सत्ता तुम्हारी भगवन, जग में ....

दिन-रात, प्रातः-सायं मध्यान्ह भी बनाये।
हर ऋतु पलट-पलट कर करतब दिखा रही है।।4।।
सत्ता तुम्हारी भगवन, जग में ....

सुन्दर सुगन्धि वाले, पुष्पों में रंग है तेरा।
यह ध्यान फूल-पत्ती, तेरा दिला रही है।।5।।
सत्ता तुम्हारी भगवन, जग में ....

हे ब्रह्म विश्व कर्ता, वर्णन हो तेरा कैसे।
जल-थल में तेरी महिमा, हे ईश! छा रही है।।6।।
सत्ता तुम्हारी भगवन, जग में ....

सृष्टि रचना

ईश्वर बिना विचारिये, सृष्टि रचाये कौन ?
नियमों में प्राणीमात्र को, क्रम से चलाये कौन ?
हाँ क्रम से चलाये कौन ?
कहते हैं जो कि जगत्, अपने आप बन गया,
नक्षत्र-ग्रहों पर, कभी विचार ना किया।
अम्बर संभाल आश्रय के, बिन दिखाये कौन ?
नियमों में प्राणीमात्र को, क्रम ....
माता के गर्भ में हुई तैयार मूर्ति,
अंगों की ठीक-ठाक हो रही पूर्ति।
निर्माण-शाला में भला साधन-जुटाये कौन ?
नियमों में प्राणीमात्र को, क्रम ....
व्यवस्था कौन कर्म के, फल की है कर रहा,
किसके प्रबन्ध में है प्राणी, फल को पा रहा ?
नियंत्रणकर्ता है, नियंता के सिवाय कौन ?
नियमों में प्राणीमात्र को, क्रम ....
नीचे तो जल है, जल पे थल की सृष्टि दी रचाय,
सागर के सीने पर ही, मानों नाव दी चलाय।
ऐ 'देश' जल पै माटी की, नैया चलाये कौन ?
नियमों में प्राणीमात्र को, क्रम ....

सृष्टि रचना

दुनियाँ बनाने वाले, कैसी तेरी माया है।
कहीं बरसात, कहीं धूप, कहीं छाया है।
कहीं बरसात, कहीं धूप...... ।।1।।
पर्वतों की चोटियाँ हैं, आसमाँ को चूमतीं।
रेशमी घटाएँ काली, पर्वतों पे घूमतीं।
कहीं चाँद-सूरज कहीं, सागर को बनाया है।
कहीं बरसात, कहीं धूप...... ।।2।।
गुजरते पलों की टोली, यही गुनगुना रही।
रूके न समय की गाड़ी, धीरे-धीरे जा रही।
कल आज और कल का, तूने चक्कर क्या चलाया है।
कहीं बरसात कहीं धूप...... ।।3।।
अच्छे-बुरे कर्मों की है, पूँजी सब के साथ में।
सभी वह खिलौने जिनकी, चाबी तेरे हाथ में।
नाचना पड़ा है, तूने जैसे भी नचाया है।
कहीं बरसात, कहीं धूप...... ।।4।।
कौन सी जगह है खाली, कहाँ तेरा वास है।
कहीं तू नहीं है लेकिन, फिर भी सब के पास है।
किसी ने भी 'पथिक' न, इस उलझन को सुलझाया है।
कहीं बरसात, कहीं धूप...... ।।5।।

सृष्टि रचना

कर दी जगत की रचना, बिना हस्त बिना भाल
हे सृष्टि के रचयिता, तूने कर दिया कमाल

इक क्षण को भी न रुकते, तेरे सूर्य चन्द्र लाल
समय पर सदा चलते हैं, ये बड़े ही बेमिसाल
हे सृष्टि के रचयिता, तूने ....
मानव अजब बनायी, तूने करके भलाई
आकृति सबकी अलग है, कितनी चतुराई
आकृति अलग बनाकर, तूने कर दिया निहाल।
हे सृष्टि के रचयिता, तूने ....

सब पर तू दया करता, किसी की न बुराई
वाह रे प्रभु, क्या तूने करामात दिखाई
हे सृष्टि के रचयिता, तूने ....

पल भर में ही तू करता, अपने भक्तों को निहाल
हे सृष्टि के रचयिता, तूने कर दिया कमाल
हे सृष्टि के रचयिता, तूने ....

सृष्टि रचना

कैसा सुन्दर जगत रचाया है तूने भगवान।
करते हैं तेरा गुणगान, करते हैं तेरा गुणगान।।

पृथ्वी, सूरज, चाँद, सितारे, पर्वत और आसमान।
करते हैं तेरा गुणगान, करते हैं तेरा गुणगान।।

सेब, अंगूर, अनार बनाए, रंग-बिरंगे फूल खिलाए।
छम-छम, छम-छम वर्षा आए, कोयल मीठे राग सुनाए।
ऋषि-मुनि और योगी सारे, धरते तेरा ध्यान।।
करते हैं तेरा गुणगान - 2 ....

मानव चोला अजब बनाया, सूई न धागा हाथ लगाया।
नस नाड़ी का जाल बिछाया, आत्मा को इसमें बिठलाया।
द्वार बनाए तूने इसके, आँख-नाक और कान।।
करते हैं तेरा गुणगान - 2 ....

द्वार तेरे पर जो भी आऐ, जीवन अपना सफल बनाए
पर उपकार वो करता, 'नन्दलाल' वो न घबराए।
तन मन धन वह देश पर, कर देते कुर्बान।।
करते हैं तेरा गुणगान - 2 ....

सृष्टि रचना

विश्वपति जगदीश तुम, तेरा ही ओम् नाम है,
मस्तक झुका के प्रेम से, ईश्वर तुम्हें प्रणाम है।
सृष्टि बना के पालना, दाता है तेरे हाथ में,
करना प्रलय भी अन्त में, तेरा ही नाथ काम है।।1।।
मस्तक झुका के प्रेम से, ईश्वर ....
ऋतुएँ बदल के आ रहीं, नदियाँ सिन्धु में जा रहीं,
शाम के बाद है सुबह, सुबह के बाद शाम है।।2।।
मस्तक झुका के प्रेम से, ईश्वर ....
सूरज समय पै ढल रहा, वायु नियम से चल रहा,
झुकता है सर यह देखकर, तेरा जो इन्तजाम है।।3।।
मस्तक झुका के प्रेम से, ईश्वर ....
आता नजर नहीं मगर, कण-कण में तू समा रहा,
जग में जहाँ पे तू न हो, ऐसा न कोई धाम है।।4।।
मस्तक झुका के प्रेम से, ईश्वर ....
होता है न्याय सर्वदा, ईश्वर तेरे दरबार में,
चलती नहीं सिफारिशें, चढ़ता न कोई दाम है।।5।।
मस्तक झुका के प्रेम से, ईश्वर ....
तेरे पदार्थ हैं प्रभो, 'पथिक' सभी के वास्ते,
सबके लिए हैं वेद भी, जिनमें तेरा पैगाम है।।6।।
मस्तक झुका के प्रेम से, ईश्वर ....

सृष्टि रचना

दुनिया की हर वस्तु भगवन्, तेरी याद दिलाती है।
पत्ता-पत्ता, डाली-डाली, तेरे ही गुण गाती है।
सुन्दर है तेरी यह माया, पृथ्वी सूरज चाँद बनाया।
पी-पी करे पपीहा, कोयल सुन्दर राग सुनाती है।।
पत्ता-पत्ता, डाली-डाली तेरे ही ....
ऋषियों-मुनियों ने है ध्याया, मन-मन्दिर में तुझको पाया।
जर्रे-जर्रे में आप समाया, ऋतु यही बतलाती है।।
पत्ता-पत्ता, डाली-डाली तेरे ही ....
रंग-बिरंगे फूल खिलाये, नदियाँ नाले खूब चलाये।
हाथों बिना पहाड़ बनाये, समझ नहीं कुछ आती है।
पत्ता-पत्ता, डाली-डाली तेरे ही ....
दुनिया है सुन्दर फुलवारी, फूल हैं जिसमें सब नर-नारी।
देख के रचना जनता सारी, जय-जयकार मनाती है।।
पत्ता-पत्ता, डाली-डाली तेरे ही ....
नदियों में सब जल ही जल है, बागों में सब फल ही फल हैं।
जंगल में सब हरियावल है, बदली मेह बरसाती है।।
पत्ता-पत्ता, डाली-डाली तेरे ही ....
आत्मा अपनी शुद्ध बनायें, वेद ज्ञान से लाभ उठायें।
मन-मन्दिर से 'नन्दलाल', आवाज यही अब आये।।
दुनिया की हर वस्तु भगवन् तेरी याद दिलाती है।
पत्ता-पत्ता, डाली-डाली, तेरे ही गुण गाती है।

वेद

ज्ञान का सागर चार वेद यह वाणी है भगवान की।
इसी से मिलती सब सामग्री जीवन के कल्याण की।
ज्ञान का सागर चार वेद यह वाणी 1
सब सच्ची विद्याएँ जग में, प्रकट वेद से होती हैं।
यहीं से जाकर सब नदियाँ, पृथ्वी का आँगन धोती है।
उसी को जीवन सार मिला, जिसने इसकी पहचान की।
ज्ञान का सागर चार वेद यह वाणी 2
सृष्टि एक अदालत है, और न्यायाधीश विधाता है।
यहीं पे हर प्राणी, अपने कर्मों का फल पाता है।
वेद के अन्दर सब रचना है, विधि के अमर विधान की।
ज्ञान का सागर चार वेद यह वाणी 3
वेद का पढ़ना और पढ़ाना परम धर्म कहलाता है।
सुनना और सुनाना भी कर्त्तव्य बताया जाता है।
वेद ही असली दौलत है, दुनियाँ के हर इन्सान की।
ज्ञान का सागर चार वेद यह वाणी 4
धन्य-धन्य भारत भूमि, जिस पर वेदों का गान हुआ।
वेद का अमृत पिया पिलाया, तब यह देश महान् हुआ।
'पथिक' पुण्य भूमि है यह, तो ऋषियों की सन्तान की।
ज्ञान का सागर चार वेद यह वाणी 5

वेद

बिना वेद विद्या न कल्याण होगा,
न सुख शान्ति होगी न उत्थान होगा।(1)

नहीं प्राप्त होगी सुमेधा सुप्रज्ञा,
न वेदों का जब तक हमें ज्ञान होगा। (2)

परब्रह्म की पावनी वेद वाणी,
पढ़ो वेद तो ब्रह्म का ज्ञान होगा।।(3)

वही धर्म के तत्त्व को पा सकेगा,
जो वेदों का वेत्ता व विद्वान होगा।।(4)

वहाँ नीचता नास्तिकता बढ़ेगी,
जहाँ वेद विद्या का अपमान होगा।।(5)

जटिलतम हुई विश्व जीवन समस्या,
न विज्ञान से कुछ समाधान होगा।।(6)

बिना वेद विद्या न कल्याण होगा,
न सुख शान्ति होगी न उत्थान होगा।

वेद

वेद को पढ़ना पढ़ाना चाहिए।
वेद का सुनना सुनाना चाहिए।
वेद के अनुकूल ही हे आर्यों।
आचरण अपना बनाना चाहिए।।
वेद को पढ़ना पढ़ाना ....
यज्ञ, उत्सव, धार्मिक सत्संग में,
नित, सहित परिवार आना चाहिए।।
छल कलह से पूर्ण वातावरण में,
प्रेम की गंगा बहाना चाहिए।।
वेद को पढ़ना पढ़ाना ....
हो सदा आरुढ़ निज कर्त्तव्य पर,
पूज्य ऋषि का ऋण चुकाना चाहिए।।
जो भटकते फिर रहे हैं मोहवश।
सत्य पथ उनको बताना चाहिए।।
वेद को पढ़ना पढ़ाना ....
मत भलाई तुम किसी की भूलना,
हाँ भला कर भूल जाना चाहिए।।
मनुज का निर्माण हो जिससे चरित्र
गान ऐसा शुद्ध गाना चाहिए।।
वेद को पढ़ना पढ़ाना ....
लाभ कहने से न कुछ होगा प्रकाश।
कार्य कुछ करके दिखाना चाहिए।।
वेद को पढ़ना पढ़ाना चाहिए।
वेद को सुनना सुनाना चाहिए।

वेद

जीवन सफल बनाना है तो, वेद पढ़ो और वेद पढ़ाओ।
नर तन का लाभ उठाना है तो, वेद पढ़ो और वेद पढ़ाओ।।
जीवन सफल बनाना है तो ....
वेद प्रभु की अमृत वाणी, पावन सुखद सदा कल्याणी।
धन बल यश को पाना है तो, वेद पढ़ो और वेद पढ़ाओ।।
जीवन सफल बनाना है तो ....
चार वेद सद्ज्ञान-ग्राम हैं, ऋग्, यजु, साम, अथर्व नाम हैं।
सोया भाग्य जगाना है तो, वेद पढ़ो और वेद पढ़ाओ।।
जीवन सफल बनाना है तो ....
सूरज चढ़े अंधेरा जाए, ज्ञान बढ़े अज्ञान मिटाए।
मन-मंदिर चमकाना है तो, वेद पढ़ो और वेद पढ़ाओ।।
जीवन सफल बनाना है तो ....
जीवन-धारा सरस बहेगी, कोई समस्या नहीं रहेगी।
उलझन को सुलझाना है तो, वेद पढ़ो और वेद पढ़ाओ।।
जीवन सफल बनाना है तो ....
ऊँच-नीच और जात-पाँत को, भेद-भाव और छूत-छात को।
जड़ से मार मिटाना है तो, वेद पढ़ो और वेद पढ़ाओ।।
जीवन सफल बनाना है तो ....
मानवता बस यहीं मिलेगी, और कहीं पर नहीं मिलेगी।
'पथिक' सत्य अपनाना है तो, वेद पढ़ो और वेद पढ़ाओ।।
जीवन सफल बनाना है तो ....

वेद

वेद पढ़ों व पढ़ाया करो, वेद सुनो और सुनाया करो।
तन मन से चहुँ ओर सदा, वेद का डंका बजाया करो।
वेद पढ़ो व पढ़ाया करो ....
जीव कहाँ से जग में आवे, और कहाँ फिर जावे।
ईश्वर क्या है सृष्टि क्या है, वेद हमें समझावे।
सबको यही समझाया करो, वेद सुनो और सुनाया करो।
वेद पढ़ो व पढ़ाया करो ....
नर व पशु में अन्तर क्या है, किसने यह जगत बनाया।
मानव जीवन क्यों मिलता है, वेद में है दर्शाया।
भरम सच्ची यह मिटाया करो, वेद सुनो और सुनाया करो।
वेद पढ़ो व पढ़ाया करो ....
वेद सिखावे इस दुनियां में, क्या जीना क्या मरना।
माता-पिता गुरु इष्टजनों की, विधिवत सेवा करना।
भक्ति में मन को लगाया करो, वेद सुनो और सुनाया करो।
वेद पढ़ो व पढ़ाया करो ....
वेद ज्ञान है परमेश्वर का, ऋषि-मुनियों का प्यारा।
सारे जगत में सबसे ऊँचा, वैदिक धर्म हमारा।
'पथिक' यह नारा लगाया करो, वेद सुनो और सुनाया करो।
वेद पढ़ो व पढ़ाया करो ....

वेद

मधुर वेद वीणा बजाये चला जा।
जो सोते हैं उनको जगाए चला जा।
निराकार प्रभु है सभी में समाया
सभी जन हैं अपने न कोई पराया।
घृणा फूट मन से मिटाए चला जा।।
मधुर वेद वीणा ....
चुराना नहीं लोभवश धन किसी का,
दुखाना नहीं तुम कभी मन किसी का।
ये संदेश घर-घर सुनाए चला जा।।
मधुर वेद वीणा ....
जगत् युद्ध की ज्वाला में, जल रहा है,
प्रबल चक्र अन्याय का चल रहा है।
मनुजता जगत् को सिखाए चला जा।।
मधुर वेद वीणा ....
अखिल विश्व में भावना भव्य करके,
स्वकर्त्तव्य उद्देश्य को पूर्ण करके।
तू ऋषिराज का ऋण चुकाए चला जा।।
मधुर वेद वीणा ....
'प्रकाश' आर्य ग्रामों गली हाट में,
नगर देश देशान्तरों विश्व भर में।
दयानन्द की जय मनाए चला जा।।
मधुर वेद वीणा ....

वेद

वेद ही जग में हमारा, ज्योति जीवन-सार है।
वेद ही सर्वस्व प्यारा, पूज्य प्राणाधार है।। टेक।।
सत्य विद्या का विधाता, ज्ञान का गुरु गेय है।
मानवों का मुक्तिदाता, धर्मधी का ध्येय है।
वेद ही परमेश प्रभु का, प्रेम-पारावार है।।1।।
वेद ही जग में हमारा ....
ब्रह्मकुल का देवता है, राजकुल रक्षक रहा।
वैश्य-वंश विभूषिता है, शूद्र-कुल-स्वामी महा।
वेद ही वर्णाश्रमों का, आदि है आधार है।।2।।
वेद ही जग में हमारा ....
श्रावणी का श्रेष्ठ उत्सव, पुण्य पावन पर्व है।
वेद-व्रत-स्वाध्याय वैभव, आज ही सुख सर्व है।
वेदपाठी विप्रगण का, दिव्य दिन दातार है।।3।।
वेद ही जग में हमारा ....
वेद का पाठन-पठन हो, वेद-वाद विवाद हो।
आर्य जन का आज से, व्रत विश्व वेद-प्रचार है।।4।।
वेद ही जग में हमारा ....
विश्व भर को आर्य करना, वेद का संदेश है।
मृत्यु से किंचित न करना, ईश का आदेश है।
सृष्टि-सागर में हमारा, वेद ही पवार है।।5।।
वेद ही जग में हमारा ....
रोज रोज सरोज सम, श्रुति 'सूर्य से खिलते रहें।
वेद-चंद्र चकोर हम, द्युति मोद से मिलते रहें।
वेद ही स्वामी सखा सब, वेद ही परिवार है।।6।।
वेद ही जग में हमारा ....

भजनों द्वारा आध्यात्मिक चिन्तन

वैदिक धर्म

क्र.सं.	वैदिक धर्म भजन/गीत के बोल	पृ. सं.
1.	वैदिक धर्म का जग में जब तक प्रचार नहीं होगा	278
2.	भगवान् आर्यों को पहली लगन लगा दे	279
3.	आर्यवर्त के वीर सपूतों आगे कदम बढ़ाओ तुम	280
4.	यदि वैदिक धर्म का देश में प्रचार हो जाये	281

कर्म

क्र.सं.	कर्म-भजन/गीत के बोल	पृ. सं.
1.	ऐसी कमाई कर लो, कि जो संग जा सके	282
2.	आया है इस जगत में तो, शुभ कर्म कमा ले	283
3.	इक झोली में फूल पड़े हैं, इक झोली में काँटे रे	284
4.	मेरे दाता के दरबार में, सब लोगों का खाता	285
5.	कर्म बन्धन छुड़ाने से, छुड़ाये नहीं जा सकते	286
6.	कहीं पर जीत होती है, कहीं पर हार होती है	287
7.	आप सौ साल जीने की इच्छा करो	288
8.	आया है जहाँ में शुभ कर्म कमा के जा	289
9.	जन्म से नहीं, मनुष्य कर्म से महान	290
10.	दुनियाँ वालों पढ़कर देखो, दुनिया खुली किताब है	291
11.	जल तक जग में शुभ कर्मों का संचित सामान नहीं होगा	292
12.	जन्म-जन्म के चक्कर खाकर हीरा जीवन मिलता है	293
13.	जैसा तुम कर्म कमाओगे, वैसा ही फल तुम पाओगे	294
14.	जो आया है यहाँ, उसको जाना पड़ेगा	295
15.	सच्चाई छुप नहीं सकती, बनावट के असूलों से	296
16.	श्वासों का क्या भरोसा, रूक जाये कहाँ पर	297
17.	प्राणों का क्या भरोसा, वे आयें या न आयें	298
18.	ईश्वर जो करता है अच्छा ही करता है	299
19.	कर्मों की जंजीर न तोड़ी, प्यार प्रभु का तोड़ दिया	300
20.	शुभ कर्म न कमाया, प्रभु नाम भी न गाया	301

वैदिक धर्म

वैदिक धर्म का घर-घर में, जब तक प्रचार नहीं होगा,
दुनियां वालों दुनियां का, तब तक उद्धार नहीं होगा।।
प्रातःकाल अमृत बेला में, जंगल में प्रस्थान करें,
शौचादि से निवृत्त होकर, तेल लगा स्नान करें।।
आसन, प्राणायाम द्वारा वश में अपने प्राण करें,
योग के द्वारा लगा समाधि परमेश्वर का ध्यान करें।।
जब तक घर में यज्ञ हवन का धुंआधार नहीं होगा।।1।।
वैदिक धर्म का घर-घर में ....
ब्रह्मचर्य का पालन करके, फिर सारे घरबारी हों,
संशय नियम निभाने वाले, सारे सतव्रत धारी हों।
माता-पिता, गुरुदेव प्रभु के, सब जन आज्ञाकारी हों,
हरिश्चन्द्र दशरथ जैसा, जब तक परिवारी नहीं होगा।।2।।
वैदिक धर्म का घर-घर में ....
काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह को ना अपनावें जीवन में,
अर्थ कमाना बुरा नहीं है, ना आसक्ति हो धन में।
विश्व शान्ति हो जायेगी, प्रीत लगेगी जन-जन में,
तज दे बुरे विचार हमेशा, शुद्ध भावना हो मन में।।
हर प्राणी का सत्य सरल, जब तक व्यवहार नहीं होगा।।3।।
वैदिक धर्म का घर-घर में ....
जितने भी सृष्टि में प्राणी, उन सबको जीने दो,
धरती की छाती की अमृत, हर प्राणी को पीने दो।
सर्दी गर्मी धूप छांव, मौसम दिन-रात महीने दो,
दूर नीर सा प्यार बढ़ेगा, फटे हुए दिल सीने में।।
लक्ष्मणसिंह 'बेमोल' शुद्ध, जब तक आहार नहीं होगा।।4।।
वैदिक धर्म का घर-घर में ....

वैदिक धर्म

भगवान आर्यों को पहली लगन लगा दे।
वैदिक धर्म के खातिर मिटना इन्हें सिखा दे।
फिर राम-कृष्ण निकले घर-घर गली-गली से।
अर्जुन व कर्ण जैसे योद्धा रणस्थली से।
भीष्म से ब्रह्मचारी और भीम महाबली से।
गौतम कणाद जैमिनि ऋषिवर पतंजलि से।
फिर से कोई दयानन्द जैसा ऋषि दिखा दे।
भगवान आर्यों को पहली ....

ऐसे हों लाल पैदा खेले जो गोलियों से।
भूमि को तृप्त कर दे श्रद्धा की झोलियों से।
गूंजे ये देश मेरा शेरों की बोलियों से।
बिस्मिल गुरु भगत सिंह वीरों की टोलियों से।
इनके वतन की खातिर फांसी पे भी हंसा दे।
भगवान आर्यों को पहली ....

कोई लेखराम जैसा गुरुदत्त दयाल होवे।
कोई श्रद्धानंद होवे कोई हंसराज होवे।
बढ़ती बीमारियों का फिर से इलाज होवे।
नेतृत्व जिनका पाकर उन्नत समाज होवे।
बेधड़क लाजपत-सा फिर से 'पथिक' बना दे।।
भगवान आर्यों को पहली ....

वैदिक धर्म

आर्यावर्त के वीर सपूतों, आगे कदम बढ़ाओ तुम।
करो वेद प्रचार जगत् में, वैदिक धर्म निभाओ तुम।।1।।

वैदिक धर्म महान जगत को सत्य मार्ग दर्शाता है।
सत्य, अहिंसा, सदाचार का, जग को पाठ पढ़ाता है।।
जीव मात्र की करो भलाई, पाप कर्म छुड़ाता है।
जन्म-जाति को, छूआ-छूत को वेद विरुद्ध बताता है।।
दुर्गुण त्यागो सद्गुण धारों, जीवन श्रेष्ठ बनाओ तुम।
करो वेद प्रचार जगत् में, वैदिक धर्म निभाओ तुम।।2।।

सकल जगत में वेद विरोधी, पाखंडी हैं घूम रहे।
ऊँचे-ऊँचे भवन खलों के, आसमान को चूम रहे।।
चेला-चेली बना रहे हैं, लग जिनके हज्जूम रहे।
लूट रहे भोली जनता को, मचा कुलाची घूम रहे।।
अंगराई ले उठो आर्यों! पोपों के गढ़ ढाओ तुम।
करो वेद प्रचार जगत् में, वैदिक धर्म निभाओ तुम।।3।।

पाखंड अविद्या की आंधी जब भू-मण्डल पर छाई थी।
जब धूर्त स्वार्थी लोगों ने, सारी दुनिया बहकाई थी।।
तब तुम्हीं बढ़े समरांगण में, दुष्टों को धूल चटाई थी।
श्रद्धानन्द अरु लेखराम बन, जग में धूम मचाई थी।
बन जाओ पंडित रामचन्द्र, जग को पांडित्य दिखाओ तुम।
करो वेद प्रचार जगत् में, वैदिक धर्म निभाओ तुम।।4।।

अगर समय पर न जागोगे, याद रखो पछताओगे।
हंसी उड़ाएगा जग सारा, कहीं न आदर पाओगे।
आलस अरु प्रमाद त्याग दो बनकर नारायण स्वामी।
मुनिवर, गुरुवर बन जाओ, वैदिक प्रचारक नामी।।
'नन्दलाल' ऋषि दयानन्द का कुछ तो कर्ज चुकाओ तुम।
करो वेद प्रचार जगत् में, वैदिक धर्म निभाओ तुम।।5।।

वैदिक धर्म

यदि वैदिक धर्म का देश में, प्रचार हो जाये,
मिटे दु:ख दर्द सारा, फिर सुखी संसार हो जाये।

हवन सन्ध्या हो घर-घर में, पढ़ें सब वेद की वाणी।
बहे फिर प्रेम की गंगा, हृदय हरिद्वार हो जाये।
यदि वैदिक धर्म का देश में ......

यदि इस मन के मन्दिर में, ज्ञान की ज्योति जग जाये,
मिटे अन्धकार सारा, ओ३म् से फिर प्यार हो जाये।
यदि वैदिक धर्म का देश में ......

चलें वेदों के मार्ग पर, यदि इस देश की वासी,
तो देवी देवता, भारत का हर नर-नार हो जाये।
यदि वैदिक धर्म का देश में ......

चरित्रवान् बन जाये यदि 'नन्दलाल' हम सारे,
तो फिर निश्चय है, बेड़ा पार हो जाये।
यदि वैदिक धर्म का देश में ......

कर्म

ऐसी कमाई कर लो, कि जो संग जा सके।
मुश्किल पड़े तो राह में, कुछ काम आ सके।
संसार में आता कोई, साथी नजर नहीं।
बस नाम के साथी हैं, यह साथी मगर नहीं।
साथी बनाओ उसको, जो साथी कहा सके।।1।।
ऐसी कमाई कर लो ....
पापों में सदा मन को, लगाते चले गये।
बंदियों का ही सामान, बढ़ाते चले गये।
लेकिन कभी न धर्म को, अपना बना सके।।2।।
ऐसी कमाई कर लो ....
दुनिया की चकाचौंध में, जीवन बिता दिया।
अनमोल समय पाके भी, यों ही गंवा दिया।
मानव वही है इसका जो, फायदा उठा सके।।3।।
ऐसी कमाई कर लो ....
चिन्ता की बात नहीं तो, चिन्तन से काम लो।
शुभ कर्म करो अब से ही, ईश्वर का नाम लो।
सम्भव है 'पथिक' आपके, बन्धन छुड़ा सके।।4।।
ऐसी कमाई कर लो ....

कर्म

आया है इस जगत् में तो शुभ कर्म कमा ले।
गुण ईश के गा ले, गुण ईश के गा ले।

दर-दर भटक रहा है क्यों ? उठ ज्ञान-चक्षु खोल।
घट-घट निवासी को तू, अपने घट में ही पा ले।।
मन शुद्ध बना ले, शुभ कर्म कमा ले।।

क्या रंग रहा बावले, कपड़ों को रंग में।
मन पहले अपना प्रेम के, रंग में तू रंगा ले।।
हठ-दम्भ मिटा ले, शुभ कर्म कमा ले।।

वह आँख ही क्या जो देख के, दुखियों को तर न हो।
वह हाथ ही क्या, जो नहीं गिरतों को उठा ले।
सीने से लगा ले, शुभ कर्म कमा ले।।

भर लेते अपना पेट, श्वान भी हैं जगत् में।
अच्छा तो यही खा ले, और को भी खिला ले।।
आया है इस जगत् में, तो शुभ कर्म कमा ले।

इस दुनियां में बिना स्वार्थ के प्यार
सिर्फ माँ ही कर सकती है।

कर्म

इक झोली में फूल पड़े हैं, इक झोली में काँटे रे,
रे कोई कारण होगा, हाँ रे कोई कारण होगा।
तेरे बस में कुछ भी नहीं, ये तो बाँटने वाला बाँटे रे,
अरे कोई कारण होगा। हाँ रे कोई .... ।।1।।
पहले बनती हैं तकदीरें, फिर बनते हैं शरीर,
यह साँई की कारीगरी है, तू क्यों है गम्भीर
अरे कोई कारण होगा। हाँ रे कोई .... ।।2।।
नाग भी डस ले तो किसी को, मिल जाए जीवन दान,
चींटी से भी मिट सकता है, किसी का नामों निशान।
अरे कोई कारण होगा। हाँ रे कोई .... ।।3।।
धन से बिस्तर मिल जाए, पर नींद को तरसे नैन,
काँटों पर भी सोकर आए, किसी के मन को चैन।
अरे कोई कारण होगा। हाँ रे कोई .... ।।4।।
सागर से भी बुझ न पाए, कभी किसी की प्यास,
एक बूँद से भी हो जाए, कभी किसी की आस।
अरे कोई कारण होगा। हाँ रे कोई .... ।।5।।
मंदिर मस्जिद में भी जाकर, कभी न आए ज्ञान,
कभी मिले मिट्टी से मोती, पत्थर से भी ज्ञान।।
अरे कोई कारण होगा। हाँ रे कोई .... ।।6।।

कर्म

मेरे दाता के दरबार में, सब लोगों का खाता।
जो कोई जैसी करनी करता, वैसा ही फल पाता।।
मेरे दाता के दरबार में, सब ......
क्या साधु, क्या सन्त, गृहस्थी, क्या राजा क्या रानी,
प्रभु की पुस्तक में लिखी है, सब की कर्म कहानी।
अन्तर्यामी अन्दर बैठा, सब का हिसाब लगाता।।1।।
मेरे दाता के दरबार में, सब ......
बड़े-बड़े कानून प्रभु के, बड़ी-बड़ी मर्यादा,
किसी को कौड़ी कम नहीं मिलती, मिले न पाई ज्यादा।
इसीलिए वह दुनिया का, जगत् पति कहलाता।।2।।
मेरे दाता के दरबार में, सब ......
चले न उस के आगे रिश्वत, चले नहीं चालाकी,
उस की लेन देन की बन्दे, रीति बड़ी है बांकी
समझदार तो चुप है रहता, मूरख शोर मचाता।।3।।
मेरे दाता के दरबार में, सब ......
उजली करनी कर ले बन्दे, कर्म न करयो काला,
लाख आँख से देख रहा है, तुझे देखने वाला।
उसकी तेज नजर से बन्दे, कोई नहीं बच पाता।।4।।
मेरे दाता के दरबार में, सब ......

कर्म

कर्म बंधन छुड़ाने से, छुड़ाये जा नहीं सकते
यह वो अक्षर हैं जो अक्षर, मिटाये नहीं जा सकते।
जो कहते हैं पकड़ कर हाथ, तुमको पार कर देंगे।
वचन कहनें यह संभव हैं, निभाये जा नहीं सकते।।
कर्म बंधन छुड़ाने से छुड़ाये ....
करो गुरुओं की तुम सेवा, मगर यह मान लो दिल से।
कि गुरुवर की सिफारिश से, छुड़ाये जा नहीं सकते।।
कर्म बंधन छुड़ाने से छुड़ाये ....
किये कर्मों का सब खाता, प्रभु के पास रहता है।
छुपाओ लाख तुम उससे, छुपाये जा नहीं सकते।।
कर्म बंधन छुड़ाने से छुड़ाये ....
करो तुम तीर्थों पर स्नान, मन के मैल धोने को।
मगर सद्ज्ञान के बिन, मिटाये जा नहीं सकते।।
कर्म बंधन छुड़ाने से छुड़ाये ....
जो कर्मों से उठे ऊँचे, उन्हें संसार झुकता है,
गिराने से किसी के वह, गिराये जा नहीं सकते।।
कर्म बंधन छुड़ाने से छुड़ाये ....
कर्म करते हैं पीछा 'हंस', ऋषियों का यह कहना है,
बुरे पाते हैं दु:ख, सज्जन सताये जा नहीं सकते।।
कर्म बंधन छुड़ाने से छुड़ाये ....

कर्म

कहीं पर जीत होती है, कहीं पर हार होती है।
यही है जिन्दगी प्यारे, जो दिन दो-चार होती है।
जो पेड़ों को लगाते हैं, सभी तो फल नहीं खाते,
यहाँ प्रारब्ध भी कोई चीज, आखिरकार होती है।
कहीं पर जीत होती है, कहीं पर ....
किसी भी काम में जब तक, न हो मरजी विधाता की,
बड़ी कोशिश करे कोई, मगर बेकार होती है।
कभी खिलवाड़ फूलों से, कभी आकाश से बातें,
कभी तूफान में नैया, पड़ी मंझधार होती है।
कहीं पर जीत होती है, कहीं पर ....
यह बचपन ही सहारा है, जवानी और बुढ़ापे का,
अजीब यह नींव है, जिस पर खड़ी दीवार होती है।
यह जीवन एक नदिया है, तो सुख-दु:ख दो किनारे हैं,
ये दोनों साथ रहते हैं, जहाँ जलधार होती है।
कहीं पर जीत होती है, कहीं पर ....
यह दौलत नाव ही समझी, जो आती और जाती है,
कभी इस पार होती है, कभी उस पार होती है।
'पथिक' मंजिल पे सब पहुँचे, कोई आगे कोई पीछे,
कि हर इंसान की जग में, अलग रफ्तार होती है।
कहीं पर जीत होती है, कहीं पर ....

कर्म

आप सौ साल जीने की इच्छा करो।
पर सदा नेक शुभ कर्म करते हुए।
पाप में लिप्त होने से बच जाओगे।
इस चराचर जगत में विचरते हुए।
आप सौ साल जीने की इच्छा ....

कर्म करते हुए जो जियेगा यहाँ
जिन्दगी में हमेशा रहेगा सुखी।
दुष्ट कर्मों से नाता जुड़ेगा नहीं
इनके फल से भी होगा कभी न दु:खी।
इस तरह पाप से पाप के ताप से
छूट जाओगे सजते संवरते हुए।
आप सौ साल जीने की इच्छा ....

कर्म बंधन का कारण ही न बन सके
उलझनों में पड़े न कभी वास्ता।
कर्म निष्काम करते रहो उम्र भर
इसके अतिरिक्त कोई नहीं रास्ता।
कर्म आराधना, कर्म ही साधना
होवे रणक्षेत्र में भी उतरते हुए।
आप सौ साल जीने की इच्छा ....

कर्म

आया है जहाँ में, शुभ कर्म कमा के जा,
देख निराली दुनियाँ, मत जीवन व्यर्थ गँवा।
प्रातः सायं ओ३म् को गा ले
परमपिता से प्रीत लगा ले
जीवन में उपकार किया कर, मत ना पाप कमा।
आया है जहाँ में, शुभ कर्म कमा के जा।।1।।

मननशील ही व्यक्ति कहलावे,
ऐसा लेख वेद बतलावे,
मनुर्भव उच्चारण करके वेद रहा बतला।
आया है जहाँ में, शुभ कर्म कमा के जा।।2।।

सहस्त्र कर से दान किया कर,
अमृत बाँट अमृत तू पिया कर,
जीवन से जीवन बन जाये, ऐसी क्रान्ति ला।
आया है जहाँ में, शुभ कर्म कमा के जा।।3।।

अमृतमयी वेद की वाणी,
'राघव' पढ़कर देख तू प्राणी,
परम धर्म वेदों का पढ़ना, मिथ्या नहीं जरा।
आया है जहाँ में, शुभ कर्म कमा के जा।।4।।

कर्म

जन्म से नहीं मनुष्य कर्म से महान है।
अन्यथा तो पशु–पक्षियों के समान है।
जन्म से नहीं मनुष्य कर्म से ....
नींद, खान–पान, विषय–वासना की दौड़ में,
आदमी व जानवर की एक–सी उड़ान है,
जन्म से नहीं मनुष्य कर्म से ....
धर्म, कर्म, दान, पुण्य, सभ्यता, उदारता,
इन गुणों से आदमी की जान व पहचान है।
जन्म से नहीं मनुष्य कर्म से ....
बेमिसाल बुद्धि रूप रत्न प्रभु ने दिया,
जिसकी चमक सूझ–बूझ, तर्क और ज्ञान है।
जन्म से नहीं मनुष्य कर्म से ....
एकमात्र यह मनुष्य जन्म, ही विशेष है।
जिसमें मिले हाथ, हँसी, भाषा का वरदान है।
जन्म से नहीं मनुष्य कर्म से ....
हैं अनन्त योनियाँ, विशाल विश्वलोक में,
सर्वश्रेष्ठ योनि, इस मनुष्य को प्रदान है।
जन्म से नहीं मनुष्य कर्म से ....
कर भविष्य के लिए, प्रबन्ध तू निवास का,
'पथिक' यह मकान तो, सराय का मकान है।
जन्म से नहीं मनुष्य कर्म से ....

कर्म

दुनियाँ वालों पढ़ कर देखो, दुनियाँ खुली किताब है
हर प्राणी के हर सवाल का, मिलता यहीं जवाब है।।
दुनियाँ वालों पढ़ कर देखो ....
इस दुनियाँ में ही मिलता है, एक सबक लासानी।
प्रभु दूध का दूध बनाता, और पानी का पानी।
भले-बुरे सब के कर्मों का, उसके पास हिसाब है।।
दुनियाँ वालों पढ़ कर देखो ....
कर्म क्षेत्र में हर प्राणी का, इम्तिहान होता है।
जब निकले परिणाम, कोई हँसता कोई रोता है।
किसी का पर्चा ठीक हुआ तो, किसी का हुआ खराब है।
दुनियाँ वालों पढ़ कर देखो ....
एक सुखी और एक दुःखी, बन पैदा हुआ जनम से।
अन्तर क्यों हैं अभी तो दोनों, वाकिफ नहीं करम से।
पूर्व जन्म के पुण्य-पाप का, फल ही मिला जनाब है।
दुनियाँ वालों पढ़ कर देखो ....
यहाँ हमेशा परमेश्वर का, न्याय चक्र है चलता।
वह अपने निश्चित नियमों को, हरगिज नहीं बदलता।
'पथिक' धतूरे की टहनी पर, खिलता नहीं गुलाब है।।
दुनियाँ वालों पढ़ कर देखो ....

कर्म

जब तक जग में शुभ कर्मों का, संचित सामान नहीं होगा।
तब तक भव पार उतरने का, पूरा अरमान नहीं होगा।।1।।
जब तक जग में शुभ कर्मों का ....
अच्छे व बुरे सब कर्मों से, जाने पहचाने जाएँगे।
जग में है कौन भला ऐसा, जिसका इम्तिहान नहीं होगा।।2।।
जब तक जग में शुभ कर्मों का ....
दुनियाँ में लाख हवन सन्ध्या, और पूजा पाठ करे कोई।
जीवन में शुद्धाचरण बिना, हरगिज कल्याण नहीं होगा।।3।।
जब तक जग में शुभ कर्मों का ....
जीवन की सुन्दर खेती में, जो बोओगे वो काटोगे।
मिर्ची का बीज अगर बोया, बदले में धान न पाओगे।।
दर्शन उस विश्व विधाता के, होंगे तो इसी दिल में होंगे।
मंदिर मस्जिद गुरुद्वारे में, बैठा भगवान नहीं होगा।।4।।
जब तक जग में शुभ कर्मों का ....
करने का समय यही है प्यारे, कर ले कुछ नेक कमाई तू।
वर्ना फिर मानव जीवन का, मिलना आसान नहीं होगा।।5।।
जब तक जग में शुभ कर्मों का ....
बिल्ली को देख कबूतर तो, कर लेता आँखें बंद 'पथिक'।
तू तो इंसान कहाता है, इतना नादान नहीं होगा।।6।।
जब तक जग में शुभ कर्मों का ....

कर्म

जन्म-जन्म के चक्कर खाकर, हीरा जीवन मिलता है।
शुभ कर्मों के फल स्वरूप, यह फूल चमन में खिलता है।
शुभ कर्मों के फलस्वरूप, यह ....
अजर, अजन्मा, अमर जीव का, नर तन उत्तम चोला है।
उपलब्धि का आज तलक नहीं, भेद किसी ने खोला है।
न तो कहीं यह मोल बिके, और न दरजी से सिलता है।
शुभ कर्मों के फलस्वरूप, यह ....
सृष्टि के अनमोल पदार्थ, जो भगवान् बनाता है।
वही कुशल कारीगर ही, इस चोले का निर्माता है।
जिसकी मर्जी बिना जगत् में, पत्ता तक नहीं हिलता है।
शुभ कर्मों के फलस्वरूप, यह ....
कुन्दन बनता है सोना, जब इसको आग तपाती है।
छेनी से छिल कर हीरे की, चमक और बढ़ जाती है।
प्रभु मिले तो हँस कर झेलो, जितना संकट झिलता है।
शुभ कर्मों के फलस्वरूप, यह ....
सदा जवानी नहीं रहेगी, ले शुभ कर्म कमा प्यारे।
तन के पुर्जे ढीले होंगे, समय न व्यर्थ गँवा प्यारे।
'पथिक' आखिरी पहर में जीवन, ठेले से नहीं मिलता है।
शुभ कर्मों के फलस्वरूप, यह ....

कर्म

जैसा तुम कर्म कमाओगे, वैसा ही फल तुम पाओगे।
सुख दोगे तो सुख पाओगे, दु:ख दोगे कष्ट उठाओगे।।1।।

यह जग कर्मों की खेती है, जो बीजोगे सो काटोगे।
बदनाम करेगी बदी तुम्हें, कर नेकी यश फैलाओगे।।2।।

गर किसी का पैसा मारोगे, कुछ दिन तो कटेगी ऐश बड़ी।
फिर बीज बनेगा वृक्ष जभी, फिर रोओगे पछताओगे।।3।।

छल झूठ कपट चतुराई से, सोने की बना लोगे लंका।
फिर याद रखो रावण की तरह, कौड़ी भी न साथ ले जाओगे।।4।।

मनुष्य के चोले को पाकर, कुछ नेक कमाई न की तूने।
फिर करके लाख चौरासी में, जन्मों तक धक्के खाओगे।।5।।

सुविचार

इस दुनियां में बिना स्वार्थ के प्यार सिर्फ माँ ही कर सकती है।

कर्म

जो आया है यहाँ उसको जाना पड़ेगा।
जो बोया है उसको तो पाना पड़ेगा।।

अगर तू किसी को यहाँ सुख पहुँचाए।
तो परलोक में तेरे काम वो आए।
यहाँ दु:ख दिया , दु:ख उठाना पड़ेगा।
जो बोया है उसको तो पाना पड़ेगा।।

भला आक बोकर क्यों आम खाए।
पिला जहर अमृत की आस लगाए।
दिया जहर तो जहर खाना पड़ेगा।
जो बोया है, उसको तो पाना पड़ेगा।

किसी रोते को तूने कभी न हँसाया।
तो रोता चला जा, जैसे रोता है आया।
अपने किए को भुगतना पड़ेगा।
जो बोया है, उसको तो पाना पड़ेगा।

दरबार में जब प्रभु के तू जाए।
तेरे पापों की लिस्ट जब आगे आए।
यह लेखा तुझे चुकाना पड़ेगा।
जो बोया है, उसको तो पाना पड़ेगा।

कर्म

सच्चाई छुप नहीं सकती, बनावट के असूलों से।
कि खुशबू आ नहीं सकती, कभी कागज के फूलों से।
सच्चाई छुप नहीं सकती, बनावट के ....
न अग्नि खेत को सींचे, न जल कपड़े सुखाता है।
न पर्वत बल से हिलता है, न नभ मुट्ठी में आता है।
हवाएँ किसने रोकी हैं, भला तिनकों से धूलों से।
सच्चाई छुप नहीं सकती, बनावट के ....
यह दुनियाँ कायम है अब तक, प्रभु के सत्य नियमों पर।
हमारी जिन्दगी भी है, तो है यह सत्य पर निर्भर।
कहीं पर डगमगाती है, तो बस अपनी ही भूलों से।
सच्चाई छुप नहीं सकती, बनावट के ....
यहाँ हर एक प्राणी को, कर्म फल प्राप्त होते हैं।
कई हँस हँस के खाते हैं, कई चख चख के रोते हैं।
मिलेंगे फूल क्या उनको, मुहब्बत जिन की शूलों से।
सच्चाई छुप नहीं सकती, बनावट के ....
छुपा कर लाख परदों में, करोगे काम जो काला।
वहाँ भी देख ही लेगा, 'पथिक', वह देखने वाला।
बचाए बच न पाओगे, देवताओं रसूलों से।
सच्चाई छुप नहीं सकती, बनावट के ....

कर्म

श्वासों का क्या भरोसा, रुक जाये कहाँ पर।
कर जाओ काम ऐसा, हो शान इस जहाँ पर।।

मत हँस कभी किसी पर, न सता कभी किसी को -2
न जाने कल को तेरा, क्या हाल हो यहाँ पर।।
श्वासों का क्या भरोसा, रुक ....

जो हंस जैसा जीवन, चाहता है बशरता -2
चुन लो गुणों के मोती, बिखरे जहाँ-जहाँ पर।
श्वासों का क्या भरोसा, रुक ....

कर कर्म इतना ऊँचा, जो बुलन्दियों को छूले -2
इज्जत से नाम तेरा, आ जाये हर जुबां पर।।
श्वासों का क्या भरोसा, रुक ....

सुविचार

यदि किसी की संगति से आपके विचार और व्यवहार शुद्ध होने लग जायें, तो समझ लीजिए कि वह कोई साधारण व्यक्ति नहीं है।

कर्म

प्राणों का क्या भरोसा, वे आयें या न आयें।
फिर क्यों जगत् के कर्ता जगदीश को भुलाये।
प्राणों का क्या भरोसा, वे आयें या न आयें........

घट-घट में रम रहा है, सर्वत्र वह प्रभु है।
फिर दुष्ट कर्म करके, कैसे उन्हें छुपायें।।
प्राणों का क्या भरोसा, वे आयें या न आयें........

देता है बल जो सबको, संसार जिसको ध्याये।
छाया है जिसकी अमृत, गुणगान उसके गायें....
प्राणों का क्या भरोसा, वे आयें या न आयें........

आए यदि मुसीबत, दिल में यह जान लेना।
मिलती है हमको अपने, दुष्कर्मों की सजायें....
प्राणों का क्या भरोसा, वे आयें या न आयें........

सन्मार्ग पर चला दो, अपनी झलक दिखा दो।
सब दूर कर दो भगवन, गम की जो हैं घटायें....
प्राणों का क्या भरोसा, वे आयें या न आयें।....

कर्म

ईश्वर जो करता है अच्छा ही करता है।
मानव तू परिवर्तन से काहे को डरता है।

जब से दुनिया बनी है, तब से रोज बदलती है।
जो शै आज यहाँ है, कल वो आगे चलती है।
देख के अदला-बदली तू, क्यों आहे भरता है।।
ईश्वर जो करता है, अच्छा ....
दु:ख सुख आते जाते रहते, सबके जीवन में।
पतझड़ और बहारें दोनों, जैसे गुलशन में।
चढ़ता है तूफान कभी, और कभी उतरता है।।
ईश्वर जो करता है, अच्छा ....
कितनी लम्बी रातें हों, फिर भी दिन तो आयेगा।
जल में कमल खिलेगा, फिर से वो मुस्कराएगा।
देता है जो कष्ट, वही कष्टों को हरता है।।
ईश्वर जो करता है, अच्छा ....
वो ही दाना फलता है, जो मिट्टी में मिल जाए।
सहे 'पथिक' जो कांटे, वो ही मंजिल अपनी पाए।
भट्टी में पड़कर सोने का रंग, निखरता है।।
ईश्वर जो करता है, अच्छा ....

कर्म

कर्मों की जंजीर न तोड़ी, प्यार प्रभु का तोड़ दिया।
मोहमाया में अंधा बनकर, पाप से नाता जोड़ लिया।

आया था तू इस दुनिया में, जीवन ज्योति जलाने को,
तजकर आया झूठे धंधे, प्रभु के दर्शन पाने को।
पर पग तेरे नहीं उठते हैं, प्रभु के दर तक जाने को।
प्रभु भक्ति को दिल से भुलाकर, सच्चा रास्ता छोड़ दिया।।1।।
कर्मों की जंजीर न तोड़ी ....
गई जवानी आया बुढ़ापा, अब क्यों बैठा रोता है,
बीत गई सो जाने दे अब, शेष बची क्यों खोता है।
सफल है जग में जीवन उसका, धर्म के बीज जो बोता है,
गंदे कर्मों में फँसकर, अनमोल जन्म क्यों खो दिया।।2।।
कर्मों की जंजीर न तोड़ी ....
शाम-सवेरे हरदम दिल में, रहती तेरे माया है,
सोना-चाँदी देख-देखकर, डोली तेरी काया है।
मोह अज्ञान का घोर अँधेरा, तेरे तन पर छाया है,
होके दीवाना इस दुनिया में, प्रभु से मुखड़ा मोड़ लिया।।3।।
कर्मों की जंजीर न तोड़ी ....

कर्म

शुभ कर्म ना कमाया, प्रभु नाम भी न गाया।
कुछ तो समझ ले प्राणी, दुनियां में क्यों है आया।।

दुनिया है एक झमेला, है चंद रोज का मेला।
आया था खाली हाथों, और जायेगा अकेला।
क्या होगा कल न सोचा, जीवन है धन पराया।।
शुभ कर्म न कमाया, प्रभु नाम ....

ये जग है भूल भूलैयां, अब भी समझ ले भैया।
कुछ बन्दगी तू कर ले, तर जाए तेरी नैया।
पर दर रहा भटकता, फिर भी समझ न पाया।।
शुभ कर्म न कमाया, प्रभु नाम ....

कोई नहीं है तेरा, न करना मेरा मेरा।
शुभ कर्म कर ले प्राणी, छंट जाएगा अंधेरा।
खाया-पिया, तू सोया, विषयों में मन लगाया।।
शुभ कर्म न कमाया, प्रभु नाम ....

अच्छे व्यक्ति की पहचान, उसकी अच्छी बातें नहीं, बल्कि उसका अच्छा आचरण है क्योंकि अच्छी बातें तो बुरे लोग भी कर लेते हैं।

भजनों द्वारा आध्यात्मिक चिन्तन

यज्ञ

क्र.सं.	यज्ञ भजन/गीत के बोल	पृ. सं.
1.	यज्ञ जीवन का हमारे श्रेष्ठ सुन्दर कर्म है	303
2.	ऋषि देव दयानन्द की पद्धति हमें सिखलानी है	304
3.	ओ३म् हमको सदा, सद्बुद्धि सम्पन्न कीजिये	305
4.	ऐसी कृपा हो भगवन, घर-घर में यज्ञ हवन हो	306
5.	होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से	307
	यज्ञोपवीत भजन के बोल	
1.	यज्ञोपवीत लेकर खुद का निहारना है	308
	परोपकार	
1.	किसी के काम जो आये, उसे इन्सान कहते हैं	309
2.	ईश हमें देते हैं सब कुछ, हम भी तो कुछ देना सीखें	310
3.	अपने दु:ख में रोने वाले मुस्कुराना सीख ले	311
4.	है वह इन्सान सच्चा, जो किसी के काम आता है	312
5.	ऐ दुनियाँ में रहने वालों, नाम प्रभु का लिया करो	313
6.	कर जा तू भला कुछ दुनियाँ का	314
7.	जीवन है यह क्या जीवन	315
8.	ओ३म् नाम लिये जा, तू दान दिये जा	316
9.	परमेश्वर से प्रीत कर, मन अपने को जीत कर	317
10.	पागल सब संसार देखा, पागल सब संसार	318
11.	है वह सच्चा इन्सान, जो किसी के काम	319
12.	जब में आकर, विद्या पाकर, जीवन में उपयोग करें	320

यज्ञ

यज्ञ जीवन का हमारे, श्रेष्ठ सुन्दर कर्म है।
यज्ञ का करना कराना, आर्यों का धर्म है।।1।।

यज्ञ से दिशा हो सुगन्धित, शान्त हो वातावरण।
यज्ञ से सद्ज्ञान हो, हो यज्ञ से शुद्धाचरण।।2।।

यज्ञ से हो शुद्ध काया, व्याधियाँ सब नष्ट हों।
यज्ञ से सुख सम्पदा हों, दूर सारे कष्ट हों।।4।।

यज्ञ से दुष्काल मिटते, यज्ञ से जल-वृष्टि हो।
यज्ञ से धन-धान्य हो, बहु भांति सुखमय सृष्टि हो।।4।।

यज्ञ है प्रिय मोक्षदाता, यज्ञ शक्ति अनूप है।
यज्ञमय यह विश्व है, और विश्व यज्ञ स्वरूप है।।5।।

यज्ञमय अखिलेश! ऐसी, आप अनुकम्पा करें।
यज्ञ के प्रति आर्य जनता, में अमित श्रद्धा भरें।।6।।

यज्ञ-पुण्य-प्रकाश से, सब पाप-ताप-तिमिर हटे,
यज्ञ-नौका से अगम, संसार सागर को तरें।।7।।

पंच महायज्ञों का महत्व

ऋषिवर देव दयानन्द की पद्धति हमें सिखलानी है।
पंच महायज्ञों की महिमा घर-घर में पहुँचानी है।
पंच महायज्ञों की महिमा, घर-घर ....
प्रात: सायं-सन्ध्या और स्वाध्याय वेद बतलाता है।
यह है पहला महायज्ञ जो ब्रह्मयज्ञ कहलाता है।
आत्म चिन्तन प्रभु मिलन की, विधि अत्यन्त पुरानी है।
पंच महायज्ञों की महिमा, घर-घर ....(1)
देव यज्ञ है अग्निहोत्र और महायज्ञ यह दूजा है।
इसी से होती समस्त जड़ चेतन देवों की सच्ची पूजा है।
नित्य नियम से किया करो, यदि काया स्वस्थ बनानी है।
पंच महायज्ञों की महिमा, घर-घर ....(2)
जीवित मात-पिता की सेवा करना जो फरमाया है।
यही तीसरा महायज्ञ है, पितृ यज्ञ कहलाया है।
नर नारी अबाल वृद्ध को बात यही समझानी है।
पंच महायज्ञों की महिमा, घर-घर ....(3)
महायज्ञ बलिवैश्वदेव को चौथा यज्ञ समझ लेना।
पका अन्न पहले अग्नि और जीव-जन्तुओं को देना।
फिर आपस में बाँट कर खाना, प्रीत की रीत निभानी है।
पंच महायज्ञों की महिमा, घर-घर ....(4)
'पथिक' पाँचवें महायज्ञ को अतिथियज्ञ कहते सारे।
संन्यासी विद्वानों की, घर पर सेवा करना प्यारे।
जहाँ पे पाँचों महायज्ञ हों, वह घर स्वर्ग निशानी है।
पंच महायज्ञों की महिमा, घर-घर ....(5)

यज्ञ

ओ३म् हमको सदा, सद्बुद्धि सम्पन्न कीजिये।
यज्ञमय जीवन बने, वह शक्ति हमको दीजिये।।
यज्ञ से लेकर के शिक्षा, सर्वहितैषी हम बनें।
भावना उपकार की, प्रदान भगवन् कीजिये।।1।।
यज्ञमय जीवन बने, वह शक्ति ....
पापों से बचते रहें तो, दु:ख भी सारे दूर हों।
शुभ कामनायें ऐसी प्रभु जी, अब तो पूर्ण कीजिये।।2।।
यज्ञमय जीवन बने, वह शक्ति ....
यज्ञ से सुख शान्ति पावें, जीव सारे विश्व के।
गोद में भक्तों को अपनी, दु:ख भञ्जन कीजिये।।3।।
यज्ञमय जीवन बने, वह शक्ति ....
यज्ञ के प्रेमी बनें और, यज्ञ दैनिक हम करें।
हृदय मन्दिर में दयालु, आप दर्शन दीजिये।।4।।
यज्ञमय जीवन बने, वह शक्ति ....
यज्ञहित जीवन मरण हो, यज्ञ अन्तिम ध्येय हो।
प्रार्थना स्वीकार सबकी, करुणानन्दन कीजिये।।5।।
यज्ञमय जीवन बने, वह शक्ति ....
दीन-दु:खियों की सेवा में, हम सदा तत्पर रहें।
ऐसी कृपा और अनुग्रह, हम पर भगवन कीजिये।।6।।
यज्ञमय जीवन बने, वह शक्ति ....

यज्ञ

ऐसी कृपा हो भगवन, घर-घर में यज्ञ-हवन हो।
वर्षा हो शान्ति की, सुख की भरी पवन हो।।
उपकार हो सभी का, पूजा हो देवताओं की।
अरु वेद की ध्वनि से, छाया हुआ गगन हो।।1।।
ऐसी कृपा हो भगवन्, घर-घर............
मिलकर सभी तुझे हम, सत्प्रेम से रिझावें।
सत्संग में तेरे ही, गुण ज्ञान का कथन हो।।2।।
ऐसी कृपा हो भगवन्, घर-घर............
भक्ति तेरी की निश-दिन, लहरा रही हो क्यारी।
सन्ध्या उपासना का, फला-फूला चमन हो।।3।।
ऐसी कृपा हो भगवन्, घर-घर............
सूखे न वह विषय की, जलती हुई हवा से।
रक्षा में बस इसी की, सच्ची लगन हो।।4।।
ऐसी कृपा हो भगवन्, घर-घर............
श्रद्धा व प्रेम-जल से, सींचा करें इसे हम।
चारों फलों को पायें, ऐसा कोई यतन हो।।5।।
ऐसी कृपा हो भगवन्, घर-घर............
कुल इष्ट मित्र मिलकर, परिवार संग अपने।
सबका उसी चमन में, दोनों समय भ्रमण हो।।6।।
ऐसी कृपा हो भगवन्, घर-घर............

यज्ञ

होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से।
मिलता है आशीर्वाद हमें नित्य यज्ञ से।
ऋषियों ने ऊँचा माना है स्थान यज्ञ का।
भगवान् का यह यज्ञ, है भगवान यज्ञ का।
जाता है देवलोक में इन्सान यज्ञ से।।
मिलता है आशीर्वाद हमें नित्य ....
जो कुछ भी डालो यज्ञ में, खाते हैं अग्नि देव।
इक-इक के बदले सौ-सौ, दिलाते हैं अग्नि देव।
बादल बनाकर पानी भी, बरसाते हैं अग्नि देव।
पैदा अनाज करते हैं,भगवान् यज्ञ से।।
मिलता है आशीर्वाद हमें नित्य ....
होता है कन्यादान भी, इसी के सामने।
शक्ति व तेज है भरा, इस शुद्ध नाम में।
पूजा है इसको, कृष्ण और भगवान् राम ने।
मिलता है राज्य, कीर्ति और सन्तान यज्ञ से।।
मिलता है आशीर्वाद हमें नित्य ....
इसका पुजारी कोई भी, पराजित नहीं होता।
इसके पुजारी को कभी भी, भय नहीं होता।
होती हैं सारी मुश्किलें, आसान यज्ञ से।।
मिलता है आशीर्वाद हमें नित्य ....
चाहे अमीर है कोई चाहे गरीब है।
जो नित्य यज्ञ करता है वह खुशनसीब है।
होता है सारे विश्व का, कल्याण यज्ञ से।
मिलता है आशीर्वाद हमें नित्य यज्ञ से।

यज्ञोपवीत

यज्ञोपवीत लेकर खुद को निहारना है।
जीवन सुधारने का संकल्प धारना है।
हर झूठ की तरफ से मुँह अपना फेरना है।
सच्चे व्रतों का पालन करने की प्रेरणा है।
तप त्याग साधना को हरदम उभारना है।
जीवन सुधारने का संकल्प ....
गायत्री जाप, सन्ध्या, स्वाध्याय, यज्ञ करना।
दुष्टों की संगति में हरगिज न पांव धरना।
भगवान् को कभी न दिल से विसारना है।
जीवन सुधारने का संकल्प ....
समझो ये तीन ऋण हैं, कन्धे पे तीन धागे।
जब तक हैं प्राण इन से, व्यक्ति कभी न भागे।
माता-पिता गुरु के, ऋण को उतारना है।
जीवन सुधारने का संकल्प ....
पितरों की टहल सेवा, देवों की उचित पूजा।
ऋषियों के संग जैसा, कर्त्तव्य है न दूजा।
निष्कपट स्वच्छ सुन्दर, जीवन गुजारना है।
जीवन सुधारने का संकल्प ....
नेकी के काम करके, फल की चाह न लाना।
निष्काम भाव होकर औरों के काम आना।
शिक्षा का सूत्र है यह, मन में विचारना है।
जीवन सुधारने का संकल्प ....
शुभ चिन्ह आर्यों का, यज्ञोपवीत है यह।
सब श्रेष्ठ लोग पहनें, ऋषियों की रीत है यह।
दुनियां में 'पथिक' इसके, यश को निखारना है।
जीवन सुधारने का संकल्प ....

परोपकार

किसी के काम जो आये उसे इन्सान कहते हैं।
पराया दर्द जो अपनाये उसे इन्सान कहते हैं।।

कभी धनवान है कितना, कभी इन्सान निर्धन है,
कभी सुख है कभी दु:ख है, इसी का नाम जीवन है।
जो मुश्किल में न घबराये, उसे इन्सान कहते हैं।।

यह दुनिया इक उलझन है, कहीं धोखा कहीं ठोकर,
कोई हँस-हँस के जीता है, कोई जीता है रो-रोकर।
जो गिर कर फिर संभल जाये, उसे इन्सान कहते हैं।।

अगर गलती रुलाती है तो यह राह भी दिखाती है,
वशर गलती का पुतला है, यह अक्सर हो ही जाती है।
जो गलती करके पछताये, उसे इन्सान कहते हैं।।

अकेले ही जो खा-खाकर, सदा गुजरान करते हैं,
यों भरने को तो दुनिया में, पशु भी पेट भरते हैं।
'पथिक' जो बांट कर खाये, उसे इन्सान कहते हैं।।

किसी के काम जो आये उसे इन्सान कहते हैं।
पराया दर्द जो अपनाये उसे इन्सान कहते हैं।।

परोपकार

ईश हमें देते हैं सब कुछ, हम भी तो कुछ देना सीखें।
अपने हित तो हम जीते हैं, औरों के हित जीना सीखें।।
हवा प्रकाश हमें मिलता है, मेघों से मिलता है पानी।
यदि हम बदले में कुछ नहीं देते, इसे कहेंगे बेईमानी।
जो दु:ख भोग रहे हैं उनके, दु:ख को, दूर भगाना सीखें।।
ईश हमें देते हैं सब कुछ, हम भी तो .....
तपती धरती पर पथिकों को, पेड़ सदा देता है साया।
अपना फल भी स्वयं न खाकर, जीवन उसने सफल बनाया।
दसवाँ हिस्सा दान में देकर, बाकी स्वयं बरतना सीखें।।
ईश हमें देते हैं सब कुछ, हम भी तो .....
जो अनपढ़ हैं, उन्हें पढ़ाएं, अरु गूँगे को वाणी देवें।
भूखे को पेट भर खिलाएँ, प्यासे जन को पानी देवें।
जो कुछ हमें मिला है प्रभु से, वितरण उसका करना सीखें।।
ईश हमें देते हैं सब कुछ, हम भी तो .....
मानव जीवन अति दुर्लभ है, इसको भय से रहित बनाएँ।
खुशबू खिले फूल देते हैं, वैसा ही हम भी बन जाएँ।
सेवा सुमरन से दीपक बन, नया उजाला करना सीखें।।
ईश हमें देते हैं सब कुछ, हम भी तो .....

परोपकार

अपने दु:ख में रोने वाले मुस्कराना सीख ले।
दूसरों के दर्द में आंसू बहाना सीख ले।।
जो खिलाने में मजा है वो आप खाने में नहीं,
जिन्दगी में तू किसी के, काम आना सीख ले।
अपने दु:ख में रोने वाले, मुस्कराना .....

कर गरीबों का भला और बे-नसीबों पर रहम,
सेवा में भगवान है, तू दर्श पाना सीख ले।
अपने दु:ख में रोने वाले, मुस्कराना .....

कर्म तेरा हो भलाई, धर्म तेरा प्रेम हो,
'वीर' इस जीवन में तू, जीवन बनाना सीख ले।।
अपने दु:ख में रोने वाले, मुस्कराना .....

सुविचार
यकीन करना सीखो शक तो सारी दुनिया करती है।

परोपकार

है वह सच्चा इन्सान, जो किसी के काम आता है।
दु:खी होता दु:खी को देख, आँसू बहाता है।
विषय और वासना में ही, समय अपना गँवाये जो।
कमाये पाप से दौलत, बुराईयों में लुटाये जो।
वह नर इंसानियत के नाम पर, धब्बा लगाता है।।
है वह सच्चा इन्सान जो किसी ....
हजारों आदमी बिन औषधि, बिन अन्न मरते हैं।
न तन पर उनके हैं वस्त्र, न बच्चे उनके पढ़ते हैं।
है वह धनवान सच्चा जो, दु:खी के दु:ख मिटाता है।।
है वह सच्चा इन्सान जो किसी ....
न भाई-बन्धु और बेटे, न पत्नी साथ जायेगी।
कमाई पाप की हरगिज, न तेरे काम आयेगी।
धर्म है एक साथी अन्त में, जो काम आता है।।
है वह सच्चा इन्सान जो किसी ....
धर्म की राह में, तन, मन व धन अपना लुटाये जो।
ऋषिवर की तरह संसार-भर में नाम पाये जो।
उसका नाम फिर, इतिहास के पन्नों में आता है।।
है वह सच्चा इन्सान जो किसी ....
तेरी बातों से ही 'नन्दलाल' बेड़ा न पार होगा।
केवल गीतों के लिखने से, तेरा उद्धार न होगा।
वह होगा पार-तन, मन, धन-धर्म पर जो लुटाता है।।
है वह सच्चा इन्सान जो किसी ....

परोपकार

ऐ दुनिया में रहने वालों, नाम प्रभु का लिया करो।
दिल दु:ख जाए जिससें किसी का, काम न ऐसे किया करो।

नाम प्रभु का लेने वाले, खुशी से सुख दु:ख सहते हैं।
जिस भी हाल में रखे भगवन, उसी हाल में रहते हैं।
तुम भी सीखो सीख के, जख्म किसी के सिया करो।।
ऐ दुनिया में रहने वालों, नाम प्रभु का ....

धर्म कर्म तो साथ चलेंगे, धन दौलत नहीं जाएगा।
लालच करने वाले लालची, अन्त समय पछताएगा।
बन जाते हैं नाम से पहले, शीशे जैसा जिया करो।।
ऐ दुनिया में रहने वालों, नाम प्रभु का ....

दीन-दु:खी की सेवा करके, प्रभु को खुश कर सकते हो।।
पूजा-पाठ तपस्या कर, भव सागर से तर सकते हो।
हो सके तो इन हाथों से, दान, धर्म कुछ किया करो।
ऐ दुनिया में रहने वालों, नाम प्रभु का ....

परोपकार

करजा तू भला कुछ दुनियाँ का, मत हीरा जन्म गँवा प्यारे।
हर दिल में तेरी याद रहे, कोई ऐसा कर्म कमा प्यारे।
जब तक तन में जान रहे
तुझे सेवा का ही ध्यान रहे
हो निन्दा या तारीफ तेरी, उस ओर न कान लगा प्यारे।
करजा तू भला कुछ दुनियाँ का, मत हीरा जन्म गँवा प्यारे।।1।
तुम्हें वीर माता ने जाया है
नहीं ध्यान कभी तुम्हें आया है
इक चमक निराली पैदा कर, दे दुनियाँ को चमका प्यारे।
करजा तू भला कुछ दुनियाँ का, मत हीरा जन्म गँवा प्यारे।।2।
ऋषि दयानंद एक अकेला था।
बस ईश्वर एक सहेला था
बनकर मर्द मैदाँ निकले, दिया सब अन्धकार मिटा प्यारे।
करजा तू भला कुछ दुनियाँ का, मत हीरा जन्म गँवा प्यारे।।3।
ये देख अब कहाँ अंधेरा है?
हुआ साफ ये रास्ता मेरा है
सब काँटे स्वामी ने दूर किये, अब तो हिम्मत दिखला प्यारे।
करजा तू भला कुछ दुनियाँ का, मत हीरा जन्म गँवा प्यारे।।4।

परोपकार

जीवन है ये क्या जीवन, जिसमें न रवानी है।
जिन्दगी और कुछ भी नहीं, दो दिन की कहानी है।।
करे प्यार जो हर दिल से, डूबों को किनारा दे।
गिरतों को उठा ऊपर, बाहों का सहारा दे।।
उपकार के जीवन की, यही श्रेष्ठ कहानी है।
जीवन है ये क्या जीवन, जिसमें न ....
कांटा जो किसी को लगे, चलना पग रुक जाए।
सी सीने से निकले तेरी, और उसके तू काम आए।
इंसा ही नहीं वो जिसकी, आँखों में न पानी है।।
जीवन है ये क्या जीवन, जिसमें न ....
यश कुछ भी कमा न सका, प्रभु के भी न गुण गाए।
वो जीना भी क्या जीना, जो किसी न काम आए।।
जीते जी जीने की, कुछ सार न जानी है।
जीवन है ये क्या जीवन, जिसमें न ....
खुद खाया तो क्या खाया, औरों को खिला न सका।
दो घूँट पानी की, प्यासे को पिला न सका।।
'पथिक' तेरी इस जग को, फिर याद क्यों आनी है।।
जीवन है ये क्या जीवन, जिसमें न ....

परोपकार

ओ३म् नाम लिये जा, तू दान दिये जा।
आने वाली मुश्किलें, आसान किये जा।।
खाना-पीना पहनना और, सोना तो जरूरी है।
तेरे लिये जहाँ सब कुछ, होना भी जरूरी है।
कुछ आगे के लिये भी, सामान किये जा।।1।।
ओ३म् नाम लिए जा, तू दान ....
आत्मा को खुली छोड़, क्योंकि ये आजाद है।
मन विषयों से रोक तू, ये बड़ा नामुराद है।
हर बात में इसको, तू प्रधान किये जा।।1।।
ओ३म् नाम लिए जा, तू दान ....
तेली का वो बैल चाहे, आठों याम काम कर,
दो घड़ी आराम से तू, याद कर प्रभु नाम कर।
इतना तू अपने आप पर, अहसान किये जा।।3।।
ओ३म् नाम लिए जा, तू दान ....
जीवन की तेरी रस्सी के जो, बल थे सारे जल चुके,
जो तीर थे तरकस जवानी के, वो सारे जल चुके।
यूँ ही ना टेढ़ी कमर को, कमान किये जा।।4।।
ओ३म् नाम लिए जा, तू दान ....
गर्दन झुकाये ढूंढ़ता जवानी को हँस हाल में,
कीमत न समझी 'नत्थासिंह' जीवन के अस्सी साल में।
अब भी इस मानव चोले का, सम्मान किये जा।।5।।
ओ३म् नाम लिए जा, तू दान ....

परोपकार

परमेश्वर से प्रीत कर, मन अपने को जीत कर।
पर हित पर उपकार में, जीवन को व्यतीत कर।
परमेश्वर से प्रीत कर, मन अपने ....
इस दुनियाँ में सब से ऊँचा मानव का तन पाया है।
जीने वाले सांस तुम्हारे, जीवन का सरमाया है।
वक्त रहेगा बीत कर, सोच समझ मनमीत कर।
परहित पर उपकार में जीवन ....
तन को तो मजबूत बनाया, मन क्यों मलिन तेरा है।
बाहर तूने दीप जलाए, अन्दर घोर अन्धेरा है।
बातें न विपरीत कर, मन को न भयभीत कर।
परहित पर उपकार में जीवन ....
जीवन है नदिया की धारा, सुख-दु:ख दो किनारे हैं
इसी के अन्दर आते जाते, कितने जन्म गुजारे हैं।
वर्तमान संगीत कर, सफल भविष्य अतीत कर।
परहित पर उपकार में जीवन ....
आलस व अज्ञान के कारण, धर्म कर्म सब भूल गया।
धन-दौलत को सब कुछ समझा, इस झूले पर झूल गया।
शुभ कर्म संगृहित कर, मुक्ति 'पथिक' निर्णीत कर।
परहित पर उपकार में जीवन ....

परोपकार

पागल सब संसार देखा, पागल सब संसार।
ये जग दीवानों की बस्ती, देख सोच विचार।।
कोई देखा धन का पागल, पूजा करता धन की।
धन कारण सुख चैन गवाए, मिटी न इच्छा मन की।।
अन्त समय धन संग न जाए, जोड़-तोड़ गया हार।।
पागल सब संसार देखा, पागल ....
कोई देखा रूप का पागल, यौवन का दीवाना।
पल पल बीती जाए जवानी, जीवन है ढल जाना।
जिस यौवन का मान करे तू, वो यौवन दिन चार।
पागल सब संसार देखा, पागल ....
कोई देखा ज्ञान का पागल, पढ़-पढ़ नैन गंवाए।
प्रेम बिना कभी ज्ञान न उपजा, बिरथा जनम गंवाए।
सच्चा ज्ञान उसी ने पाया, करता जो उपकार।।
पागल सब संसार देखा, पागल ....

सुविचार

सफलता चाहते हैं तो सभी के साथ सौम्य और स्वयं के साथ कठोर रहिए

परोपकार

है वह सच्चा इन्सान, जो किसी के काम आता है।
दु:खी होता दु:खी को देख आँसू बहाता है।
विषय और वासना में ही, समय अपना गँवाये जो।
कमाये पाप से दौलत, बुराईयों में लुटाये जो।
वह नर इंसानियत के नाम पर, धब्बा लगाता है।।
है वह सच्चा इन्सान जो किसी ....
हजारों आदमी बिन औषधि, बिन अन्न मरते हैं।
न तन पर उनके हैं वस्त्र, न बच्चे उनके पढ़ते हैं।
है वह धनवान सच्चा जो, दु:खी के दु:ख मिटाता है।।
है वह सच्चा इन्सान जो किसी ....
न भाई-बन्धु और बेटे, न पत्नी साथ जायेगी।
कमाई पाप की हरगिज, न तेरे काम आयेगी।
धर्म है एक साथी अन्त में, जो काम आता है।।
है वह सच्चा इन्सान जो किसी ....
धर्म की राह में, तन, मन व धन अपना लुटाये जो।
ऋषिवर की तरह संसार-भर में नाम पाये जो।
उसका नाम फिर इतिहास के पन्नों में आता है।।
है वह सच्चा इन्सान जो किसी ....
तेरी बातों से ही 'नन्दलाल' बेड़ा न पार होगा।
केवल गीतों के लिखने से, तेरा उद्धार न होगा।
वह होगा पार-तन, मन धन धर्म पर जो लुटाता है।।
है वह सच्चा इन्सान जो किसी ....

परोपकार

कर कुछ नेकी, पास प्रभु के जाने के लिए।
आया नहीं तू खाने और, मर जाने के लिए।।

चार दिनों का है ये उजाला, रात अंधेरी आये फिर।
उस पर इतना मान न कर तू, आकर के जो जाये फिर।
महल बनाए मिट्टी का, गिर जाने के लिए।।1।।
कर कुछ नेकी पास प्रभु के ....

मस्त हुआ विषयों में ऐसा, मौत को पगले भूल रहा।
धन दौलत ना रहे हमेशा; जिस पर इतना फूल रहा।
खिला है फूल जवानी का, मुरझाने के लिए।।2।।
कर कुछ नेकी पास प्रभु के ....

विषय विकारों में फंस भोले, जीवन को बरबाद न कर।
तुझे मिला अनमोल ये जीवन, अन्त में फिर फरियाद न कर।
आया है तू दुनियां में, कुछ कर जाने के लिए।।3।।
कर कुछ नेकी पास प्रभु के ....

दान

क्र.सं.	दान - भजन/गीत के बोल	पृ. सं.
1.	डरे हुए को अभय दान दो	322

सत्यार्थ प्रकाश

क्र.सं.	सत्यार्थ प्रकाश गीत के बोल	पृ. सं.
1.	सत्यार्थ प्रकाश ऋषि की इक अनमोल	323
2.	पढ़ो सत्यार्थ प्रकाश	326
3.	प्राणो से भी बढ़कर प्यारा सत्यार्थ प्रकाश	328

अविद्या

क्र.सं.	अविद्या भजन/गीत के बोल	पृ. सं.
1.	काम बिगड़े हुए, सब सुधर जायेंगे	330
2.	कैसे अमूरत की मूर्ति बनावें	331

मूर्ति पूजा

क्र.सं.	मूर्ति पूजा भजन/गीत के बोल	पृ. सं.
1.	प्रभु निराकार है लेता न अवतार है	333
2.	देखो दीवाने लोग भी, कैसा कमाल करते हैं	334
3.	मन्दिर में पड़ी मूर्ति कुछ खा न सकेगी	335
4.	ओ३म् को छोड़ पत्थर का करें सम्मान जो	336
5.	क्या कभी लाभ हुआ पूजा से पत्थर के भगवान की	337
6.	कण-कण वासी अन्तर्यामी, प्रभु भुलाना ठीक नहीं	339

दान

डरे हुए को अभय दान दो,
भूखों को अनाज का दान।
प्यासे को जल दान करो,
अपमानित को आदर सम्मान।।1।।

विद्यादान करो अनपढ़ को,
विपद् ग्रस्त को आश्रय दान।
वस्त्र हीन को वस्त्र दान दो,
रोगी को दो औषधि दान।।2।।

धर्म रहित को धर्म सिखाओ,
शोकातुर को धीरज दान।
भूले को सन्मार्ग बता दो,
गृह विहीन को दो गृह दान।।3।।

कर्म करो निष्काम भाव से,
मन में कभी न हो अभिमान।
अपने सम सब ही को मानो,
फिर किस पर किसका अहसान।।4।।

इन पावन फूलों से प्रभु का,
करता है जो अर्चन ध्यान।
निश्चय जानो हृदय पटल में,
प्रकट होते हैं भगवान्।।5।।

सत्यार्थ प्रकाश

सत्यार्थ प्रकाश ऋषि की, इक अनमोल निशानी है।

सब धर्मों की छानबीन कर, लिखा ग्रंथ लासानी है।
सत्यार्थ प्रकाश ऋषि की, इक अनमोल निशानी है।
सत्यार्थ प्रकाश ऋषि की, इक .... ।।1।।

लिखा गया है यह ग्रंथ, यह सजा समूल चौदह समुल्लासों में
सभी धर्मों का सार दिया है, सत्यार्थ प्रकाश में।
किया दूध का दूध है जिसमें, और पानी का पानी है।
सत्यार्थ प्रकाश ऋषि की, इक .... ।।2।।

सर्व मतों के ग्रंथ खोजकर, सच्ची बात है बतलाई।
टीका-टिप्पणी उन पर करके, खोल के रख दी सच्चाई।
ब्रह्मचारी की तर्क शक्ति, सब विद्वानों ने मानी है।
सत्यार्थ प्रकाश ऋषि की, इक .... ।।3।।

ऋषि ने इसके लिखने का, उद्‌देश्य है पहले समझाया।
सत्यासत्य का निर्णय करना, परमधर्म है बतलाया।
इसके हर एक शब्द में देखो, कैसी साफ-बयानी है।
सत्यार्थ प्रकाश ऋषि की, इक .... ।।4।।

दिया प्रभु ने आदि सृष्टि में, मानव को जो ज्ञान है।
उसी वेद का मण्डन इसमें, किया गया गुणगान है।

निरन्तर 324 .....

जिसको पढ़कर हर जिज्ञासु, बनता पंडित, ज्ञानी।
सत्यार्थ प्रकाश ऋषि की, इक .... ।।5।।
उत्तम नाम है ओ३म् प्रभु का, वेद ईश्वरीय ज्ञान है।
वेद पढ़ने का अधिकारी, विश्व में हर इंसान है।
दयानन्द ने सिद्ध किया, यह परमेश्वर की वाणी है।
सत्यार्थ प्रकाश ऋषि की, इक .... ।।6।।
ईश उपासना, सन्ध्या वंदन, इसमें हमें सिखाया है।
जन्म-मरण से रहित ब्रह्म को, निराकार बतलाया है।
कबरें, मढ़ी, मसान जो पूजे, जड़-बुद्धि अज्ञानी है।
सत्यार्थ प्रकाश ऋषि की, इक .... ।।7।।
मदिरा, मांस, नशों का सेवन, इसमें निंदित बतलाया है।
क्या खायें हम, भक्ष्याभक्ष्य को, निर्णय करके समझाया है।
ब्रह्मचर्य, गृहस्थ की महिमा, इसमें खूब बखानी है।
सत्यार्थ प्रकाश ऋषि की, इक .... ।।8।।
जन्म से कोई नहीं ब्राह्मण, ऊँच-नीच इंसान है।
वर्ण का निर्णय करने वाला, कर्म-धर्म बलवान् है।
छुआछूत जो करे किसी से, स्वयं नीच अभिमानी है।
सत्यार्थ प्रकाश ऋषि की, इक .... ।।9।।
मानव चोला मिला हमें यह, उत्तम कर्म कमाने को।
जन्म अमोलक नहीं यह पाया, खाने और मर जाने को।

निरन्तर 325 ....

सब जीवों में तभी कहाता, सर्वश्रेष्ठ यह प्राणी है।
सत्यार्थ प्रकाश ऋषि की, इक .... ।।10।।
नारी-शिक्षा, गोरक्षा, में छुपा हुआ एक मर्म है।
स्वतन्त्रता पर मर मिटना, हर देशभक्त का धर्म है।
आज देश के सब लोगों ने, बात ऋषि की मानी है।
सत्यार्थ प्रकाश ऋषि की, इक .... ।।11।।
फिर शुद्धि की रीति चलाकर, लाखों का उद्धार किया।
पतित हुए बिछुड़े भाइयों पर, खोल वेद का द्वार दिया।
लेखराम और श्रद्धानन्द ने, दी इस पर बलिदानी है।
सत्यार्थ प्रकाश ऋषि की, इक .... ।।12।।
पाप-दुर्ग की नींव हिला दी, खण्डन की तलवार से।
जगा सकल संसार दिया है, सत्यार्थ की शिक्षा से।
हूर, फरिश्ते, भूत-प्रेत का, किस्सा खत्म कहानी है।
सत्यार्थ प्रकाश ऋषि की, इक .... ।।13।।
पाखण्डों का इसके आगे, टिकना बहुत मुहाल है।
आर्य जाति पर करे आक्रमण, किसकी आज मजाल है।
सुप्त हिन्दू को होश में, लाने वाला यह सेनानी है।
सत्यार्थ प्रकाश ऋषि की, इक .... ।।14।।

सत्यार्थ प्रकाश

पढ़ो सत्यार्थ प्रकाश, जब भी मिले तुम्हें अवकाश,
यह मन के मैलों को साफ करने की है उत्तम साबुन,
रखो इसके ऊपर निष्भ्रम पूर्ण विश्वास 1
पढ़ो सत्यार्थ प्रकाश, जब भी मिले तुम्हें ....
अज्ञान, अंधविश्वास, पाखण्ड, दुर्गुण और भ्रम
सभी नष्ट हो जाते, जब करोगे इसे पढ़ने का श्रम
है यह संजीवनी बूटी, रखो अपने पास.............................2
पढ़ो सत्यार्थ प्रकाश, जब भी मिले तुम्हें ....
यह महर्षि दयानन्द कृत है, हैं चारों वेदों का सार,
लिखे इसमें जीवन उन्नत करने के, सभी कारण व प्रकार,
और सभी महत्वपूर्ण बातें, जो हैं खास-खास....................3
पढ़ो सत्यार्थ प्रकाश, जब भी मिले तुम्हें ....
महर्षि ने लिखा इसे, मानव मात्र का करने कल्याण
पढ़ो और इसके अनुसार आचरण करके, बनाओ अपने को बलवान
बन जाओगे महान, जितना महान आकाश........................4
पढ़ो सत्यार्थ प्रकाश, जब भी मिले तुम्हें ....
महर्षि का जीवन था, सुधार और परोपकार के लिए
इसी उद्देश्य के लिए लिखा, उन्होंने यह 'सत्यार्थ प्रकाश'
इसमें भरा वह ज्ञान, जो नहीं होने देता कभी हताश.............5
पढ़ो सत्यार्थ प्रकाश, जब भी मिले तुम्हें ....

निरन्तर 327...

जीवन की परीक्षा में, यदि होना है तुम्हें पास
परिवार तुम्हारा सुखी बने, न आवे कभी खट्टास
तो इसको पढ़ने का, कभी न छोड़ो अभ्यास....................6

पढ़ो सत्यार्थ प्रकाश, जब भी मिले तुम्हें ....

इसको पढ़ने से बनेगा, तुम्हारा जीवन अति पवित्र
स्वास्थ्य, बुद्धि, यश, सफलता, बनेंगे तुम्हारे मित्र
कभी न पढ़ने पर, कोई क्रिया छूट गई, ऐसा हो आभास.......7

पढ़ो सत्यार्थ प्रकाश, जब भी मिले तुम्हें ....

ग्रन्थ यह अमूल्य है, लिखे इसमें बुद्धि पाने के सब काम
यदि धर्म से अर्थ व काम लिया तो, मिलेगा तुम्हें मोक्षधाम
इसकी शिक्षाओं से बढ़ते ही, न होगा कभी हास्य.....8

पढ़ो सत्यार्थ प्रकाश, जब भी मिले तुम्हें ....

गुरुदत्त, श्रद्धानन्द, बिस्मिल ने पढ़ा था सत्यार्थ प्रकाश
महात्मा नारायण स्वामी ने हटवाया प्रतिबन्ध करके सद्प्रयास
जीवन उनका बदल गया, बन गये इसी के दास................9

पढ़ो सत्यार्थ प्रकाश, जब भी मिले तुम्हें ....

यह सद्ज्ञान का पुँज है, करता सत्य का ही प्रकाश
इस अलौकिक ग्रन्थ को पढ़ने की, लगी रहे तुम्हें प्यास
सभी इसे पढ़ते रहें 'खुशहाल' रखता तुमसे यही आश.......10

पढ़ो सत्यार्थ प्रकाश, जब भी मिले तुम्हें ....

सत्यार्थ प्रकाश

प्राणों से भी बढ़कर प्यारा, है सत्यार्थ प्रकाश हमारा।
मोहमाया तम हरने वाला, ज्ञान उजाला करने वाला।
भव्य भावना भरने वाला, दिव्य ज्योति का स्रोत सितारा।।
प्राणों से भी बढ़कर प्यारा, है सत्यार्थ प्रकाश......
वैदिक पाठ पढ़ाने वाला, गत गौरव गुण गाने वाला।
फिर से सतयुग लाने वाला, दयानन्द ऋषि का चमके तारा।।
प्राणों से भी बढ़कर प्यारा, है सत्यार्थ प्रकाश......
शुभ सन्मार्ग सुझाया इसने, बुद्धिवाद दर्शाया इसने।
गुरुडम का गढ़ ढाया इसने, जग में निर्भय भाव प्रचारा।।
प्राणों से भी बढ़कर प्यारा, है सत्यार्थ प्रकाश......
सोता देश जगाया इसने,, प्रेम विवाह बढ़ाया इसने।
स्वावलम्बन सिखलाया इसने, इसने सत्य धर्म विस्तारा।।
प्राणों से भी बढ़कर प्यारा, है सत्यार्थ प्रकाश......
कोटि-कोटि जनता का जीवन, अर्पित है इस पर समोद मन।
त्यागी, सुधी, साधुओं का धन, मानवता का सबल सहारा।।
प्राणों से भी बढ़कर प्यारा, है सत्यार्थ प्रकाश......

निरन्तर 329 ..

यदि इस पर संकट आएँगे, रक्षा हित हम डट जाएँगे।
मर जाएँगे, कट जाएँगे, मिटा न आगे मिटने हारा।।
प्राणों से भी बढ़कर प्यारा, है सत्यार्थ प्रकाश......

जब हम प्रण पर अड़ जाते हैं, कुछ न विरोधी कर पाते हैं।
सबके पाँव उखड़ जाते हैं, मिलता है जिससे बल सारा।।
प्राणों से भी बढ़कर प्यारा, है सत्यार्थ प्रकाश......

वैदिक धर्म ध्वजा फहरावें, बलिदेवी पर शीश चढ़ावें।
मरते-मरते गाते जावें, अजर अमर अक्षय ध्रुव तारे।।
प्राणों से भी बढ़कर प्यारा, है सत्यार्थ प्रकाश......

सुविचार

बहुत गजब नजारा है,
इस अजीब दुनिया का,
लोग सब कुछ बटोरते हैं,
खाली हाथ जाने के लिए।।

अविद्या

काम बिगड़े हुए सब सुधर जायेंगे!
पर अविद्या का परदा उठा दीजिए।(1)
खा रही है तुम्हें घुन की मानिन्द जो।
उन बुराईयों की हस्ती मिटा दीजिए।।
पर अविद्या का पर्दा ....।।2।।
देश के नौजवाँ सो रहे हैं अभी।
जागिये और उनको बता दीजिये।।
पर अविद्या का पर्दा ....।।3।।
अपने बच्चों को शिक्षा भी दो धर्म की।
धर्म पर उनको चलना सिखा दीजिए।।
पर अविद्या का पर्दा ....।।4।।
जिन्दगी कौम की चाहते हो अगर।
तो छुआछूत का गढ़ गिरा दीजिए।।
पर अविद्या का पर्दा ....।।5।।
एक हो जाओ मिल करके छोटे बड़े।
देश में प्रेम-गंगा बहा दीजिए।।
पर अविद्या का पर्दा ....।।6।।
जो तुम्हारा हैं उनको जुदा मत करो।
गैर आये तो अपना बना लीजिए।।
पर अविद्या का पर्दा ....।।7।।
लाज गर 'मुसाफिर' दयानन्द की।
नाद वेदों का घर-घर बजा दीजिए।।
पर अविद्या का पर्दा ....।।8।।

अविद्या

कैसे अमूरत की मूर्ति बनावें।
सर्व देशी को एक देशी ठहरावें।।1।

आवाहन करें तो कहाँ से बुलावें।
विसर्जन करें तो कहाँ को पठावें।।2।।

आसन सिंहासन पे तकिया लगावें।
निराकार को किसके आश्रय बिठावें।।3।।

अचेतन में प्राण-प्रतिष्ठा करावें।
जड़ वस्तु को कैसे चेतन बनावें।।4।।

पाद्यार्घ आचमन किसको करावें।
सदा शुद्ध निर्मल को किसमें निहलावें।।5।।

धूपादि गंधादि क्यों कर सुँघावें।
निर्लेप को लेप कैसे लगावें।।6।।

ज्योति प्रदीपक को दीपक दिखावें।
सूर्य को जुगनू का चाँद बतावें।।7।।

निरन्तर 332 ....

नैवेद्य के पीछे शुद्ध जल चढ़ावें।
क्षुधा को मिटाकर तृषा को मिटावें।।8।।

पान और सुपारी इलायची मिलायें।
यह क्या उनके होठों की रंगत बढ़ावें।।9।।

धनधान्य जिसका है सर्वस्व जिसका।
टका दक्षिणा देके बदला चुकावें।।10।।

प्रदक्षिण में जिसका नहीं अन्त पायें।
फिरें गिर्द उसके सिर्फ चक्र खावें।।11।।

जो जाग्रत स्वप्न और सुषुप्ति से न्यारा।
किसको जगावें व किसको सुलावें।।12।।

अजन्मा को जो आम जन्मा बतायें।
'अमीचन्द' क्यों उनके धोखे में आवें।।13।।

जरूरी नहीं कि हर वक्त,
लबों पर खुदा का नाम आये।
वो लम्हा भी इबादत का होता है,
जब इन्सान किसी के काम आये।।

मूर्तिपूजा

प्रभु निराकार है, लेता ना अवतार है
हर प्राणी में रमा हुआ है, जग का पालनहार है।
जिसने यह संसार रचाया, उसकी रचना करते हैं।
सुन्दर-सुन्दर कपड़े, जेवर, पहनाकर के धरते हैं।
प्रतिमा करते तैयार हैं, कहते यह करतार है,
शंख बजाकर पीतल कटें करते जय-जयकार हैं।।1।।
प्रभ निराकार है, लेता ना ....
जो जग का है पालनकर्ता, उसका पालन करते हैं।
उसकी भूख मिटाने को, भोजन भी आगे धरते हैं।
कैसा गलत विचार आया है, करके बन्द किवार हैं,
भोग लगायें प्रेम से, कहै, पुकार-पुकार।।2।।
प्रभ निराकार है, लेता ना ....
पत्थर तक के कीड़ों को भी, भोजन प्रभु पहुँचाता है।
है बुद्धि मति मन्द उसे, जो प्रतिदिन भोग लगाता है,
वह सच्चा करतार है, जिसको ना एतबार है,
डूबेगा मझधार में, ना होगा बेड़ा पार है।।3।।
प्रभ निराकार है, लेता ना ....
जैसा कोई कर्म करे, प्रभु वैसा न्याय चुकाता है।
छिपा नहीं रह सकता, सारा लिखा वही में पाता है।
जीवन ही बेकार है, प्रभु से ना गर प्यार है,
'राघव' उस अपरम्पारी की, माया अपरम्पार है।।4।।
प्रभ निराकार है, लेता ना ....

मूर्तिपूजा

देखो दीवाने लोग भी, कैसा कमाल करते हैं।
पत्थर को ईश्वर की जगह पर, इस्तेमाल करते हैं।।1।।
देखो दीवाने लोग भी, कैसा ....
खुद ही बना लें मूर्ति, खुद बैठ के पूजा करें,
पूछो तो कह दें आप, यह कैसा सवाल करते हैं।।2।।
देखो दीवाने लोग भी, कैसा ....
मन्दिर का फाटक बन्द कर, ताला लगा दें रात को,
समझें इसे परमात्मा, पर देखभाल करते हैं।।3।।
देखो दीवाने लोग भी, कैसा ....
इतने बड़े संसार का, रखता है खुद ख्याल जो,
कितने गजब की बात है, उसका ख्याल करते हैं।।4।।
देखो दीवाने लोग भी, कैसा ....
पत्थर के हैं ये देवता, फिर इनसे कैसा मांगना,
क्या जड़ पदार्थ भी कभी, देकर निहाल करते हैं।।5।।
देखो दीवाने लोग भी, कैसा ....
चाहे मिलें सौ नमते, चाहे इन्हें कुछ न मिले,
न तो करें यह शुक्रिया, न ही मलाल करते हैं।।6।।
देखो दीवाने लोग भी, कैसा ....
है 'पथिक' सच्ची बात, पूजा ठाकुरों की लोग ये,
बुद्धि को अपने आपसे, बाहर निकाल करते हैं।।7।।
देखो दीवाने लोग भी, कैसा ....

मूर्तिपूजा

मन्दिर में पड़ी मूर्ति, कुछ खा न सकेगी,
पूछो जो कोई बात तो, बतला न सकेगी,
जो बात करोगे तो, वह खामोश रहेगी,
उठकर चले जाओगे तो, यह कुछ न कहेगी।
मन्दिर में पड़ी मूर्ति ....

जड़ वस्तु है वह वहाँ से, कहीं जा न सकेगी,
न भूख लगेगी उसे, न प्यास लगेगी।
न सोयेगी वह रात को, न दिन को जागेगी,
रोयेगी कभी नहीं, न कभी गा ही सकेगी।
मन्दिर में पड़ी मूर्ति ....

रख दोगे अगर खाने को, फल फूल मिठाई,
आ जाएगा चूहा तो, वह कर देगा सफाई।
मक्खी को भी मुखड़े से, वह उड़ा न सकेगी,
मन्दिर में पड़ी मूर्ति ....

सत्य पुरुषों का संग करो, मन शुद्ध बनाओ।
'नन्दलाल' अगर ज्ञान की, गंगा में नहाओ।
मल पापों की फिर, मन पै कभी आ न सकेगी।
मन्दिर में पड़ी मूर्ति ....

मूर्तिपूजा

ओ३म् को छोड़, पत्थर का करें सम्मान जो।
खुद बना पत्थर के टुकड़ों को, कहें भगवान् जो।
सिर झुका पत्थर से माँगे, ऐसे हैं इन्सान जो।।1।।

इनसे अच्छे जानवर चूहे, बिल्ली हैवान यह।
जो समझते हैं यह पत्थर, हैं नहीं भगवान यह।।2।।

पूजा का माल सब खावें, समझें बुत पाषाण यह।
बेधड़क उन पर चढ़ें, मूत करें अपमान यह।।3।।

जानवर होते हुए भी, इनकी अच्छी पहचान यह।
जड़ वस्तु के पूजकों से, इनका अच्छा ज्ञान यह।।4।।

कितनी मूर्ख हो चुकी अब, ऋषियों की सन्तान यह।
देख अवस्था इनकी 'सेवक', हो रहा हैरान यह।।5।।

अगर आसमान वाले से आपके रिश्ते मजबूत हैं, तो जमीन वाले, आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकते।

मूर्तिपूजा

क्या कभी लाभ हुआ, पूजा से पत्थर के भगवान की।
गर पूजा से लाभ हुआ तो, सैनिक जीवन जवान की।।टेक।।

पत्थर के भगवान सदा, शिल्पी से रचाये जाते हैं।
सैनिक वीरों के द्वारा, बिगड़े देश बनाये जाते हैं
पत्थर के भगवान छुप, मन्दिर में बैठाये जाते हैं
सैनिक वीर जवान समर, करने को चढ़ाये जाते हैं
देश की रक्षा करते हैं बाजी लगाकर जान की।।1।।
क्या कभी लाभ हुआ, पूजा से पत्थर के ....
थे सैनिक श्रीरामचन्द्र, उनको भी पत्थर बना दिया
श्रीकृष्ण भी थे सैनिक, उनको संगमरमर बना दिया
हनुमान बजरंग वीर, पशुओं से बदतर बना दिया
त्रिशूलधारी शूरवीर को, भोला शंकर बना दिया
भारत के किस काम में, आई यह मूर्त पाषाण की।।2।।
क्या कभी लाभ हुआ, पूजा से पत्थर के ....
पत्थर पूजा के कारण भगवान् की सत् पूजा छूटी
लुटेरों ने मन्दिर तोड़े, व अरबों की सम्पत्ति लूटी

निरन्तर 338

इन मूर्तियों से मक्खी की, टांग तलक नहीं टूटी
फिर भी अन्धे नहीं समझते, है पत्थर की पूजा झूठी
पत्थर पूजा कारण है, दुर्गति के हिन्दुस्तान की।।3।।
क्या कभी लाभ हुआ, पूजा से पत्थर के ....
सैनिक पूजा करो, छोड़ कर पूजा पीर फकीरों की
घर पर हानि करे ना कोई, वीरों की जागीरों की
रहे सैनिक परिवार सुरक्षित, देखो वीरता वीरों की
कैसे कदर करें फिर सैनिक, भीष्म की तकरीरों की
छाया में रहती आजादी, ताराचन्द्र बलिदानी की।।4।।
क्या कभी लाभ हुआ, पूजा से पत्थर के ....

सुविचार

बहुत से विद्वान, ब्राह्मण मूर्तिपूजा के थोथेपन से भली-भांति परिचय होने पर भी उसी के गीत गाते हैं, क्योंकि मूर्तिपूजा सम्बन्धी कार्य एवं उत्सव ब्राह्मणों को प्रत्येक सुविधा एवं धन देते हैं और उनके भक्त भी आँख बन्द करके विश्वास कर लेते हैं-राजा राममोहन राय (आत्मकथा)

मूर्तिपूजा

कण-कण वासी अन्तर्यामी, प्रभु भुलाना ठीक नहीं।
कर के झूठी मनोकल्पना, मन बहलाना ठीक नहीं।
कण-कण वासी अन्तर्यामी, प्रभु ....
निराकार भगवान कहीं, आँखों से कभी नहीं दिखता।
उस परमेश्वर की प्रतिमा, या चित्र बनाना ठीक नहीं।
कण-कण वासी अन्तर्यामी, प्रभु ....
सूरज-चांद-सितारे जिसने, अरबों दीप जलाये हैं
उसके हेतु किसी तरह का, दीप जलाना ठीक नहीं
कण-कण वासी अन्तर्यामी, प्रभु ....
जिसके हाथ-पाँव मुखमण्डल, गरदन और शरीर नहीं
उसे खिलाना, भोग लगाना, दूध पिलाना ठीक नहीं।
कण-कण वासी अन्तर्यामी, प्रभु ....
धरती अम्बर सागर नदियाँ, जिसका पानी भरते हैं
उसको नित्य स्नान कराना, या नहलाना ठीक नहीं।
कण-कण वासी अन्तर्यामी, प्रभु ....
सुबह-सवेरे मन्दिर में सोया भगवान जगाने को।
शंख नगाड़े घंटे या घड़ियाल बजाना ठीक नहीं।
कण-कण वासी अन्तर्यामी, प्रभु ....
'पथिक' जमाना बीत गया, इन लोगों को समझाने में
न समझे न समझेंगे, फिर समझाना ठीक नहीं।
कण-कण वासी अन्तर्यामी, प्रभु ....

भजनों द्वारा आध्यात्मिक चिन्तन

सुख-दु:ख

क्र.सं.	सुख-दु:ख भजन/गीत के बोल	पृ. सं.
1.	सुख में आनन्द है, दु:ख में आनन्द है	340
2.	दुनियाँ वालों पढ़कर देखो, दुनियाँ खुली किताब है	342
3.	नहीं चाहिए दिल दुखाना किसी का	343
4.	प्रभु भक्ति में मन को लगाइये	344
5.	स्वर्ग नरक है इस धरती पर	345
6.	भरोसा कर तू ईश्वर पर	346
7.	सुख भी मुझे प्यारे हैं	347
	जन्म मरण का चक्र- गीत के बोल	
1.	कोई दुनियाँ में आता है, कोई दुनियाँ से जाता है	348
2.	चली जा रही है यह जीवन की रेल	349
	मृत्यु-जीवन का अटल सत्य - गीत के बोल	
1.	किसी दिन देख लेना तुझको ऐसी नींद आयेगी	350
2.	जब तेरी डोली निकाली जायेगी	351
3.	जायेगा जब यहाँ से, कुछ भी न पास होगा	352
4.	जीवन खत्म हुआ जो जीने का ढंग आया	353
5.	कोई बचा है न कोई बचेगा, मृत्यु रूपी देह विनाश से	354
6.	इस दुनियाँ से आना जाना रहेगा हमेशा जारी	355
7.	दुनियाँ में रहने वाले, क्या तुझको यह खबर है	356
8.	जो प्राणी इस जग में आता, आने वाला	357
	महान पुरुष मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम - विवरण	
1.	श्री रामचन्द्र ने आजीवन, प्रिय वैदिक	358
2.	सत्य पुरुष-पुंगव सत्यवादी, संयमी श्रीराम थे	360
	योगीराज श्री कृष्ण - विवरण	
1.	कृष्ण न भगवान थे, न साधारण इन्सान थे	362
2.	योगीराज श्रीकृष्ण का जीवन-चरित्र पवित्र	363

सुख-दु:ख

सुख में आनन्द है, दु:ख में आनन्द है।
जैसे राखोगे भगवन, दिल रजामन्द है।।
जीवन का गीत है, सुर में ना ताल में।
उलझा क्यूं मानव माया के जाल में।
मुझे तेरा रूखा सूखा दिया ही पसन्द है।।
सुख में आनन्द है, दु:ख में ......
विषयों का तेरे मन पर, मैल चढ़ा है।
झांक ले भीतर सांई, सम्मुख खड़ा है।
पर कैसे दर्शन होगा, खिड़की जो बन्द है।।
सुख में आनन्द है, दु:ख में ......
जीवन मरण का खेला, चलता रहेगा।
पावन ये चोला शायद, फिर ना मिलेगा।
ओ३म् के रंग में रंग दे, साँसे जो चन्द हैं।।
सुख में आनन्द है, दु:ख में ......
फूलों की सेज हो या कांटों का ताज हो।
तेरी भक्ति में मालिक, मेरा संसार हो।
तेरे ही हाथों मेरी डोर पतंग है।।
सुख में आनन्द है, दु:ख में ......
विनती 'जवाहर' की कुछ, ऐसा कर पाऊँ।
वैदिक गीतों को जाकर, घर घर सुनाऊँ।।
मेरी तो प्रेरणा, ऋषि दयानन्द है।।
सुख में आनन्द है, दु:ख में ......

सुख-दुःख

दुनिया वालों पढ़कर देखो, दुनियाँ खुली किताब है।
हर प्राणी के हर सवाल का, मिलता यहीं जवाब है।
दुनिया वालों पढ़कर देखो, दुनियाँ ....
इस दुनिया में ही मिलता है, एक सबक लासानी।
प्रभु दूध का दूध बनाता, और पानी का पानी।
भले-बुरे सबके कर्मों का, उसके पास हिसाब है।
दुनिया वालों पढ़कर देखो, दुनियाँ ....
कर्म-क्षेत्र में हर प्राणी का, इम्तिहान यहाँ होता है।
जब निकले परिणाम, कोई हँसता कोई रोता है।
किसी का पर्चा ठीक हुआ, तो किसी का हुआ खराब है।
दुनिया वालों पढ़कर देखो, दुनियाँ ....
एक सुखी और एक दुःखी, बन पैदा हुआ जन्म से।
अन्तर क्यों है अभी तो दोनों, वाकिफ नहीं करम से।
पूर्वजन्म के पुण्य-पाप का फल ही मिला जनाब है।
दुनिया वालों पढ़कर देखो, दुनियाँ ....
यहाँ हमेशा परमेश्वर का न्याय-चक्र है चलता।
वह अपने निश्चित नियमों को हरगिज नहीं बदलता।
'पथिक' धतूरे की टहनी पर खिलता नहीं गुलाब है।
दुनिया वालों पढ़कर देखो, दुनियाँ ....

सुख-दु:ख

नहीं चाहिए दिल दुखाना किसी का।
सदा न रहा है, सदा न रहेगा, जमाना किसी का।
आएगा बुलावा तो जाना पड़ेगा।
सर तुझको आखिर झुकाना पड़ेगा।
वहाँ न चलेगा, बहाना किसी का।।
नहीं चाहिए दिल दु:खाना ....
शोहरत तुम्हारी बह जाएगी ये।
दौलत तुम्हारी रह जाएगी ये।
नहीं साथ जाता खजाना किसी का।।
नहीं चाहिए दिल दु:खाना ....
सुख और दु:ख में सबर करना सीखें।
अपनी कमाई में गुजर करना सीखें।
न सीखें कभी हक दबाना किसी का।।
नहीं चाहिए दिल दु:खाना ....
एक दूसरे की न पगड़ी उछालें।
खुद की कमी को सदा हम निकालें।
सुनाए न हरदम फसाना किसी का।।
नहीं चाहिए दिल दु:खाना ....

सुख-दुःख

प्रभु भक्ति में मन को लगाइए,
वह सब का पालन हार है।
दुःख दूर करेगा परमात्मा, वह सुखों का भंडार है।।1।।

खाली उसके द्वार से आए, ऐसा कभी नहीं हो सकता।
परमपिता को भूल के प्राणी, सुख से कभी ना सो सकता।
सारी सृष्टि का वह आधार है,
उसकी महिमा का पाया न पार है।
दुःख दूर करेगा परमात्मा, वह सुखों का भंडार है।।2।।

भाई-बन्धुमाल खजाना, साथ तेरे न जायेगा।
धर्म ही है इक अन्त का, साथी काम तेरे जो आयेगा।
शुभ कर्मों से होता बेड़ा पार है।
नाव पापी की डूबे मझधार है।
दुःख दूर करेगा परमात्मा, सब सुखों का भंडार है।3।।

विषयों में फँस करके बन्दे, जीवन को बरबाद न कर।
नर तन चोला उत्तम है यह, पाप न कर, अपराध न कर।
'नन्दलाल' प्रभु निराकार है,
नमस्कार उसे बार-बार है।
दुःख दूर करेगा परमात्मा, सब सुखों का भंडार है।4।।

सुख-दुःख

स्वर्ग नरक है इस धरती पर, नहीं गगन के देखो पार।
अच्छा कर्म तो सुख देवे है, बुरा कर्म है दुःख का सार।1।

जो दुःख पाता प्रभु से कहता, क्यों प्रभु दुःख तुम देते हो।
हमने किया नहीं कुछ ऐसा, फिर क्यों नहीं सुख देते हो।
याद नहीं है उस प्राणी को, जन्म-जन्म के पाप का भार।2।
स्वर्ग नरक है इस धरती पर, नहीं गगन ....

एक फकीर जो नंगा सोने, तन ढकने को नहीं बसन।
दुःख सहकर मन निर्मल होगा, करले-करले पीर सहन।
दंड भोग के पाप कटेगा, कारागार बना संसार।3।
स्वर्ग नरक है इस धरती पर, नहीं गगन ....

सुख-दुःख दोनों एक समान, दोनों प्रभु के हैं वरदान।
अंधकार तो दिन भी संग में, यही प्रभु का परिचय ज्ञान।
प्रभु का सुमिरन नारायण कर, दुःख जो करता संहार।4।
स्वर्ग नरक है इस धरती पर, नहीं गगन ....

सुख-दुःख

भरोसा कर तू ईश्वर पर, तुझे धोखा नहीं होगा।
यह जीवन बीत जायेगा, तुझे रोना नहीं होगा।।

कभी सुख है, कभी दु:ख है, यह जीवन धूप छाया है।
हँसी में ही बिता डाले, बितानी ही यह माया है।।1।।

जो सुख आए तो हँस देना, जो दु:ख आए तो सह लेना।
न कहना कुछ कभी जग से, प्रभु से ही तू कह लेना।।2।।

यह कुछ भी तो नहीं जग में, तेरे बस कर्म की माया।
तू खुद ही धूप में बैठा, लिखे निज रूप की छाया।।3।।

कहाँ ये था कुछ तू था, कभी तो सोच ऐ बन्दे।
झुकाकर शीश को कह दे, प्रभु बन्दे प्रभु बन्दे।।4।।

बू न हो जिस गुल में, उस गुल से बेहतर खार है।
दर्द गर दिल में न हो, ये जिन्दगी बेकार है।।5।।

सुख-दुःख

सुख भी मुझे प्यारे हैं, दुःख भी मुझे प्यारे हैं।
छोड़ूँ मैं किसे भगवन, दोनों ही हमारे हैं।।

सुख दुःख इस जीवन की, गाड़ी को चलाते हैं।
सुख दुःख ही हम सबको, इन्सान बनाते हैं।
संसार की नदिया के, दोनों ही किनारे हैं।।
सुख भी मुझ प्यारे हैं, दुःख भी ....

दुःख चाहे ना कोई भी, सब सुख को तरसते हैं।
दुःख में सब रोते हैं, सुख में सब हँसते हैं।
सुख मिले उसके पीछे, दुःख ही तो सहारे हैं।।
सुख भी मुझ प्यारे हैं, दुःख भी ....

सुख में तेरा शुकर करूँ, दुःख में फरियाद करूँ।
जिस हाल में रखे मुझे, मैं तुझको याद करूँ।
मैंने तो तेरे आगे, ये हाथ पसारे हैं।।
सुख भी मुझ प्यारे हैं, दुःख भी ....

जन्म-मरण

कोई दुनिया में आता है, कोई दुनिया से जाता है।
यह चक्कर रुक नहीं सकता, प्रभु इसको चलाता है।
कोई दुनिया में आता है, कोई दुनिया ....

भलाई कर भला होगा, बुराई कर बुरा होगा,
जो जैसा बीज बोता है, वह फल वैसा ही पाता है।
यह चक्कर रुक नहीं सकता, प्रभु इसको ....

प्रभु का ध्यान करने से, सभी दु:ख दूर हो जाएँ
कभी सुख पा नहीं सकता, जो ईश्वर को भुलाता है।
यह चक्कर रुक नहीं सकता, प्रभु इसको ....

वह कण-कण में समाया है, नजर लेकिन नहीं आता,
वही सृष्टि का कर्त्ता है, वही मुक्ति का दाता है।
यह चक्कर रुक नहीं सकता, प्रभु इसको ....

जिसे हर दम मुनि योगी, तपस्वी याद करते है,
उसी के हो मगन मन से 'पथिक' भी गीत गाता है।
यह चक्कर रुक नहीं सकता, प्रभु इसको ....

जन्म-मरण

चली जा रही है, यह जीवन की रेल।
समझकर खिलौना, इसे यों ना खेल।।
कुशल कारीगर ने है, इसको बनाया।
बड़ी अकलमन्दी से, है इसको चलाया।
पड़े इसके इंजन में कर्मों का तेल।।
चली जा रही है, यह जीवन ....
किसी को चढ़ावे, किसी को उतारे।
घड़ी दो घड़ी के, मुसाफिर हैं सारे।।
यहीं पर जुदाई, यहीं पर हो मेल।।
चली जा रही है, यह जीवन ....
जरा-सी खराबी, अगर इसमें आवे।
कदम एक भी यह, सरकने न पावे।।
सदा के लिए, एक पल में हो फेल।।
चली जा रही है, यह जीवन ....
न अपनी खुशी से, यहाँ लोग आये।
मगर सबने आकर, यहाँ दिन बिताये।।
कोई समझे मंदिर, कोई समझे जेल।।
चली जा रही है, यह जीवन ....
रहे कुछ सफर भर, में रोते-चिल्लाते।
मगर कुछ महापुरुष, हँसते-हँसाते।।
गये हर मुसीबत को, हिम्मत से झेल।।
चली जा रही है, यह जीवन ....
'पथिक' रेलगाड़ी पे जो भी चढ़ा है।
कहीं न कहीं पर, उतरना पड़ा है।।
समय ने डाली है, सभी को नकेल।।
चली जा रही है, यह जीवन ....

मृत्यु

किसी दिन देख लेना, तुझको ऐसी नींद आयेगी।
तू सोया फिर न जागेगा, न तुझे दुनिया जगायेगी।।1।।
किसी दिन देख लेना, तुझको ....
तुझे संसार के खूँटे से, जिसने बाँध रखा है।
तेरे सोते ही ममता की रस्सी वो टूट जायेगी।।2।।
किसी दिन देख लेना, तुझको ....
तेरे घर वाले जिस सूरत से, इतना प्यार करते हैं।
यही सूरत उन्हें फिर, भूत बनके डरायेगी।।3।।
किसी दिन देख लेना, ...
तेरी हस्ती को जिस खलकत ने, पस्ती में गिराया है।
वो ही बेकदर दुनिया, तुझको कंधों पर बिठायेगी।।4।।
किसी दिन देख लेना, तुझको ....
तू आँखें फेरेगा तो, दुनिया भी मुँह फेर जायेगी।
जो आँखों पर बिठाती थी, वो ही आँखें दिखायेगी।।5।।
किसी दिन देख लेना, तुझको ....
जो कहते थे मरेंगे साथ, तो थोड़ा कदम चलकर।
वो मोह की मटकी भी, तिनके तोड़ते ही टूट जायेगी।।6।।
किसी दिन देख लेना, तुझको ....
जिन्हें समझा है 'नत्थासिंह', अपने वो तो लौटेंगे।
तेरी नेकी बदी ही, अन्त तेरे साथ जायेगी।।7।।

मृत्यु

जब तेरी डोली निकाली जायेगी।
बिन मुहूरत के उठा ली जायेगी।।
उन हकीमों से कहो यों बोलकर।
करते थे दवा किताबें खोलकर।
यह दावा हरगिज न खाली जायेगी।।1।। जब तेरी डोली.....
जब सिकन्दर भी यहीं पर रह गया।
मरते दम यह लुकमान भी यों कह गया।।
यह घड़ी हरगिज न टाली जायेगी।।2।। जब तेरी डोली......
क्यों गुल पर हो रही, बुल-बुल निसार।
है खड़ा माली, वो पीछे होशियार।।
मारकर गोली गिरा ली जायेगी।।3।। जब तेरी डोली........
होगा परलोक में, जब तेरा हिसाब।
कैसे मुकरोगे, बता दो ऐ जनाब।।
जब बही तेरी निकाली जायेगी।।4।। जब तेरी डोली.........
मुसाफिर क्यों, पसरता है यहाँ।
किराये का मिला, तुझको यहाँ मकाँ।।
कोठरी खाली करा ली जायेगी।।5।। जब तेरी डोली.........
चेत भैया अब, हरि को भजो।
मोह रूपी निद्रा को, जल्दी तजो।
वरना ये पूँजी उठा ली जायेगी।।6।। जब तेरी डोली..........

मृत्यु

जायेगा जब यहाँ से, कुछ भी न पास होगा।
दो गज कफन का टुकड़ा, तेरा लिबास होगा।।

काँधे पे धर ले जायें, परिवार वाले तेरे।
यमदूत ले पकड़कर, डोलेंगे घेरे-घेरे।
पीटेगा छाती अपनी, कुनबा उदास होगा।।
दो गज कफन का टुकड़ा, तेरा ....

चुन-चुन के लकड़ियों में, रख दें तेरे बदन को।
आकर के झट उठा लें, मेहतर तेरे कफन को।
दे देगा आग तुझमें, बेटा जो खास होगा।।
दो गज कफन का टुकड़ा, तेरा ....

मिट्टी में मिले मिट्टी, बाकी खाक होगी।
सोने सी तेरी काया, जलकर के खाक होगी।
दुनिया को त्याग तेरा, मरघट निवास होगा।।
दो गज कफन का टुकड़ा, तेरा ....

हरि का जो नाम जपते, भव सिन्धु पार होते।
माया मोह में फंसकर, जीवन अमोल खोते।
प्रभु का नाम जप ले, बेड़ा जो पार होगा।।
दो गज कफन का टुकड़ा, तेरा ....

मृत्यु

जीवन खत्म हुआ तो, जीने का ढंग आया।
जब शमां बुझ गई तो, महफिल में रंग आया।।
जीवन खत्म हुआ तो, जीने ....

गाड़ी निकल गई तो, घर से निकला मुसाफिर।
मायूस हाथ मलता, वापस बैरंग आया।।
जीवन खत्म हुआ तो, जीने ....

मन की मशीनरी ने, तब ठीक चलना सीखा।
जब बूढ़े तन के हर एक, पुर्जे पर जंग आया।
जीवन खत्म हुआ तो, जीने ....

आयु ने 'नत्था सिंह' जब हथियार फैंक डाले।
यमराज फौज ले के, करने को जंग आया।।
जीवन खत्म हुआ तो, जीने ....

दान से धन में कोई कमी नहीं आती, दान विपत्तियों को खा जाता है।

मृत्यु

कोई बचा है न कोई बचेगा, मृत्युरूपी देह विनाश से।
राजा हो या रंक हो, सम्बन्ध होगा जलती लाश से।।1।।
जन्म लिया जो इस भूमंडल में, मरना उसका अनिवार्य है।
राजवैद्य हो या सर्जन हो, मृत्यु का रोग अपरिहार्य है।।2।।
बाल वृद्ध युवा न देखता, काल सभी को निगलता है।
अमीर-गरीब नहीं जानता, महाकाल सबको मसलता है।।3।।
ज्ञानी-मूर्ख स्त्री-पुरुष सभी को, यमालय एक दिन जाना है।
स्थान समय कुछ भी निश्चित नहीं, मृत्यु अवश्य आना है।।4।।
पत्रस्थ पानी की बूँद जैसे, वृक्ष के नीचे कभी भी गिरती है।
शरीर में स्थित प्राणवायु को कैसे, मृत्यु कभी भी हरती है।।5।।
सदा जीवित रहूँ संसार में, विचार करता है यह मानव।
जबकि टूट पड़ सकता है कभी भी मौत का दुर्दानव।।6।।
बुलबुले के समान यह जीवन है, नहीं कोई भरोसा।
जिसे देखा आज मंडप में, श्मशान में उसे कल देखा।।7।।
कल रहेगा अथवा नहीं शरीर का न कोई विश्वास।
फिर भी सदा जीवित ही रहूँ, करता है नर आस।।8।।
पके हुए फल को सदा, वृक्ष में न कोई रोक सकता है।
वृद्ध न होवे नष्ट न होवे, शरीर की नहीं यह क्षमता है।।9।।
संसार में मग्न मानव मत भूल, मृत्यु अवश्यम्भावी है।
पाप अधर्म का त्याग कर दे, अंत में यह दु:खदायी है।।10।।
वृद्धावस्था दु:ख रोग की शय्या, मृत्यु की याद दिलाती है।
अविद्याग्रस्त मानव जीवन में, अध्यात्म ज्योति जलाती है।।11।।
एक ईश्वर की भक्ति ही, जन्म-मरण से छुड़ाती है।
प्यारे प्रभु को जान लेने पर, मृत्यु भय न सताती है।।12।।

मृत्यु

इस दुनिया में आना-जाना रहे हमेशा जारी।
संभल मुसाफिर तेरी इक दिन आने वाली बारी।।

दुनिया में रहने वालों से टूटे एक दिन प्यार तेरा।
कोठी बंगला धन सम्पदा पर, रहे नहीं अधिकार तेरा।

इस गाड़ी का न टाइम टेबल, मास दिवस कोई डेट नहीं।
रहे न टीटी देवे न सीटी, कभी भी होती लेट नहीं।
बनी न पटरी, रखे न गठरी, लेती सिर्फ सवारी।।
इस दुनिया में आना जाना रहे ....
क्या राजा क्या रंक सभी इसी गाड़ी में कर गए सफर।
जिसने इस ड्राइवर को जाना, वही नाम कर गए अमर।
संभल गए वे बदल गए 'राघव' जिन बात विचारी।।
इस दुनिया में आना-जाना रहे हमेशा जारी।
संभल मुसाफिर तेरी इक दिन आने वाली बारी।।

गलतियाँ हमेशा माफ की जा सकती हैं, यदि आपके पास उन्हें स्वीकारने का साहस हो।

मृत्यु

दुनिया में रहने वाले, क्या तुझको ये खबर है।
दो दिन की है जिन्दगी, पल भर का ये सफर है।।
जीना जो चाहते थे, वो भी तो जी ना पाए।
घर बार छोड़के सब मिट्टी में जा समाए।।
कल तेरा मेरा सबका अंजाम ये हसर है।
दो दिन की जिन्दगी है, पल भर ....
आँखों ने तूने तुझको, कितने दिखाये मुर्दे।
कंधों पे तूने अपने, कितने उठाये मुर्दे।
फिर भी बना है अंधा, जब के तेरी नजर है।
दो दिन की जिन्दगी है, पल भर ....
जब मौत ने पुकारा, कुछ भी न काम आया।
जाते हुओं को देखो, कोई ना रोक पाया।।
सच्चाई से तूँ इसकी क्यूं आज बेखबर है।
दो दिन की जिन्दगी है, पल भर ....
मत नाज कर तू अपने एहबाब दोस्तों पे।
लौट आएँगे ये तुझको बस खाक में मिलाके।
तेरा वहाँ ना कोई हमदम ना हमसफर है।
दो दिन की जिन्दगी है, पल भर ....
मरने से पहले तौबा, अपने गुनाह से कर ले।
अनजान मान जा तू, राहे खुदा पे चल दे।
मरने के बाद तेरा मुश्किल बहुत सफर है।
दो दिन की जिन्दगी है, पल भर ....

मृत्यु

जो प्राणी इस जग में आता, आने वाला निश्चय जाता।
जाने के पश्चात् वहाँ से, कोई खबर नहीं भिजवाता।।
जाने वाले लोगों का ना जाने, कहाँ ठिकाना है।
ग्राम, प्रान्त, जनपद पत्रालय नहीं किसी ने जाना है।।
टेलीफोन नहीं मिल पाता, कोई पता नहीं बतलाता।
उसको भी तो दया न आती, ऐसा तोड़ गया है नाता।।1।।
जो प्राणी इस जग में आता, आने वाला ....
धीरे-धीरे चले जा रहे, बालक वृद्ध जवान सभी।
किसका नम्बर कब आयेगा, हो न सकी पहचान अभी।।
बाप रहे बेटा मर जाता, बालक छोड़ चली जाए माता।
जाने वाला पुनः लौटकर, सूरत भी न दिखलाता।।2।।
जो प्राणी इस जग में आता, आने वाला ....
बड़े-बड़े बलवान मौत ने अपनी गोद बिठाये हैं।
ज्ञानी, ध्यानी, योगी, साधु बोल नहीं कुछ पाये हैं।।
कोई भी ना शोर मचाता, ना कोई तलवार उठाता।
मृत्यु से लड़ने को कोई, कभी संगठन नहीं बनाता।।3।।
जो प्राणी इस जग में आता, आने वाला ....
जाने क्या लीला ईश्वर की, सबको मौत पछाड़ रही।
कितनों का बना- बनाया, पल में खेल बिगाड़ रही।।
मानव तू फिर क्यों इतराता, यह सब रचता खेल विधाता।
जाना है 'नरदेव' तुझे भी, क्यों ना गीत उसी के गाता।।4।।
जो प्राणी इस जग में आता, आने वाला ....

महान पुरुष – मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम

श्री रामचन्द्र ने आजीवन, प्रिय वैदिक पथ को अपनाया।
नहीं वेद विरुद्ध किसी का भी, उद्‌बोधन उनके मन भाया।।
निज पूज्य पिता की व्रत रक्षा को, राम सहर्ष गये वन में।
राज्य का लोभ, वन का संकट, विक्षोभ न कर पाये मन में।
अनुव्रतः पितुःपुत्रः श्रुति का, पालन करके था दिखलाया।
अपने सम्मानित पिता सदृश, सत्य को स्वयं भी अपनाया।
भौतिक भोगों का चाकचिक्य नहीं, उनको चंचल कर पाया।।
श्री रामचन्द्र ने आजीवन, प्रिय वैदिक पथ .....

माता में तथा विमाता द्वय में, उनकी अनुपम समता थी।
देखी नहीं कभी किसी ने भी, उनमें व्यवहार विषमता थी।
मात्रामवतुसंमाना श्रुति के, वे अद्वितीय आदर्श रहे।
मातृभक्ति के शुभरणहित, उन्होंने क्लेश सहर्ष सहे।
किसी विमाता तक के प्रति, नहीं कुटिलभाव मन में आया।।
श्री रामचन्द्र ने आजीवन, प्रिय वैदिक पथ .....

नहीं कभी भाई के प्रति, मन में दुर्भाव पनप पाया।
सबको समान सम्मान मिले, बस यही मार्ग उनको भाया।

निरन्तर 359.....

भाईयों के हित में लगा रहा, उनका अपना सारा जीवन।
'मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्', यह सफल कर दिया वेद वचन।
सर्वदा भाईयों का गुणगान, सबके समक्ष सादर गाया।।
श्री रामचन्द्र ने आजीवन, प्रिय वैदिक पथ .....

सर्वथा एक पत्नी व्रत ही, पालन कर उसने दिखलाया।
पत्नी के दु:खप्रद रावण को मारा, सब जग को सिखलाया।
'धर्मणाहं गृहपतिस्तव' इस वैदिक प्रण के रक्षक थे।
जो वेद विरुद्ध चले उनके, सब भाँति सर्वदा भक्षक थे।
पर पत्नी को जननी समान, जीवन भर मनवाया।
श्री रामचन्द्र ने आजीवन, प्रिय वैदिक पथ .....

अन्यों की वसुधा पर-वैभव, कर सका उन्हें आकृष्ट नहीं।
रावण की सफल सम्पदा भी, कर पायी मन को भ्रष्ट नहीं।
'मागृध: कस्यस्विद्धनम्' वचन यह श्रुति का था, उसने पाला।
जीवन से भी रही उन्हें अधिक प्रिय, वैदिक मर्यादा माला।
'मर्यादा पुरुषोत्तम' कहकर, उनको सारा जग हर्षाया।
श्री रामचन्द्र ने आजीवन, प्रिय वैदिक पथ ही अपनाया।।

महान पुरुष - मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम

सत्पुरुष-पुंगब सत्यवादी, संयमी श्रीराम थे।
प्रतिभा-निदान, पराक्रमी,धृति-शील, सद्‌गुणधाम थे।
परम प्रतापी, प्रजारंजक, शत्रु विजयी वीर थे।
ज्ञानी, सदाचारी, सुखी धर्मज्ञ, दानी धीर थे।।
कल्याणकर उसके सभी, शुभ लक्षणों को धार लो।
पढ़ मित्र पूर्ण-पवित्र रामचरित्र, जन्म सुधार लो।।1।।

श्रुति-तत्व-वेत्ता, सत्यसंघ, कृतज्ञ, गौरववान थे।
संसार के हित में सदा, तत्पर महाविद्वान् थे।।
निःस्पृह, प्रजाप्रिय, नयनिपुण, अभिराम, अवगुणहीन थे।
आदर्श आर्य, उदार, करुणासिन्धु, शुचिशालीन थे।।
वे सदा सर्व प्रकार से हैं पूजनीय, विचार लो।
पढ़ मित्र पूर्ण-पवित्र रामचरित्र, जीवन सुधार लो।।2।।

श्रीराम ने तो कर दिखाया धर्म के विश्वास में।
ऐसा न कोई उदाहरण है जगत के इतिहास में।।

निरन्तर 361.....

दृढ़ हो उन्हीं के पुण्य-पथ पर, चाहिए चलना हमें।
हम आर्य हिन्दू-मात्र रामचरित्र-कानन में रमें।।
होगा इसी से देश का कल्याण सम्मति सार लो।
पढ़ मित्र पूर्ण-पवित्र जन्म सुधार लो।।3।।

उस सद्‌गुणी की जीवनी को, लक्ष्य अपना मान लें।
आओ, सखे! सत्कर्म का संकल्प मन में ठान लें।।
श्रद्धा-सहित हम उस परमात्मा का निरन्तर नाम लें।
इस लोक से उद्धार पाकर स्वर्ग में विश्राम लें।।
भ्रम त्याग 'रामनरेश' उर में शक्ति-रश्मि पसार लो।
पढ़ मित्र पूर्ण पवित्र रामचरित्र जन्म सुधार लो।।4।

सफलता चलकर नहीं आती, हमें उस तक पहुँचना पड़ता है। ठीक उसी तरह जिस तरह ईश्वर ने हर पक्षी के लिए भोजन तो दिया है लेकिन उसके घोंसले में नहीं।

महान् पुरुष-योगिराज कृष्ण

कृष्ण न भगवान् थे, न साधारण इन्सान थे,
वे वेदज्ञ विद्वान थे, उनके सारे ही काम महान थे

उनका बचपन अद्‌भुत और महान् था,
बारह वर्ष तपस्या ध्यान भी महान था।
राजसूय यज्ञ में सम्मान भी महान् था,
तो चरण धोने का काम भी महान् था।

वे दु:खितजनों के प्राण थे, दुष्टों के लिए घातक बाण थे,
इसीलिए मित्र ही नहीं शत्रु भी करते उनका बड़ा सम्मान थे
कृष्ण न भगवान थे, न ....

उनका दिया गीता-ज्ञान भी महान् था,
युद्ध में सारथी का काम भी महान् था
उनका सन्धि प्रस्ताव का बयान भी महान् था,
तो सब समस्याओं का समाधान भी महान् था।
वे अन्यायियों के लिए काल थे, सत्पुरुषों का रखते बड़ा ख्याल थे,
इसीलिए बाल, तरुण, वृद्ध सब जन गाते उनके गुणगान थे
कृष्ण न भगवान थे, न ....

उनका कष्टों में मुस्कराना भी महान् था
सुखों में न इतराना भी महान था
विपत्तियों में न घबराना भी महान था
अन्याय को मिटाना ही काम प्रधान था।

वे धूर्तों की न चलने देते चाल थे, मस्ती में रहते हमेशा खुशहाल थे,
कंस, शिशुपाल को मार कहलाये सबसे अधिक बुद्धिमान थे।
कृष्ण न भगवान थे, न ....

महान पुरुष-योगीराज श्रीकृष्ण

योगीराज श्रीकृष्ण का, जीवन-चरित्र पवित्र।
बारम्बार निहारिये, यह मनभावन चित्र।।1।।

यह मनभावन चित्र, मित्र जब मिले सुदामा।
छाती लिये लगाये, करी स्वागत की सामा।।2।।

सब विधि से सत्कार, प्यार कर के बैठाये।
देख दीन की दशा अश्रु नयनन भर लाये।।3।।

ऐसे उपकारी महामानव के गुण गायें।
उनके जन्मोत्सव को मिलकर सभी मनायें।।4।।

कौन कहे श्रीकृष्ण जी, पक्के माखन-चोर।
समझ न पाएँ भक्तजन, बुद्धि के कमजोर।।5।।

बुद्धि के कमजोर, शोर यह वृथा मचाया।
वीतराग योगी को चोर-जार बतलाया।।6।।

दूध, घृत, मथुरा में बिकना बन्द कराया।
गोपीन के संग नहीं, कृष्ण ने रास रचाया।।7।।

किया कंस का नाश वंश का नाम मिटाया।
राधा के संग नहीं कृष्ण ने, विवाह रचाया।।8।।

भजनों द्वारा आध्यात्मिक चिन्तन

ऋषि दयानन्द

क्र.सं.	विवरण	पृ. सं.
1.	दुनिया वालों देव दयानन्द, दीप जलाने आया था	366
2.	स्वामी दयानन्द न आते, कल्याण हमारा न होता	367
3.	लूटा था जमाने ने, ऋषिवर ने बचाया था	367
4.	धन्य है तुझको हे ऋषि	369
5.	हे ऋषि दयानन्द तेरी	370
6.	ऐ स्वामी दयानन्द तूने	371
7.	आओ सुने, क्या कहा है ऋषि ने	372
8.	सुनो सुनो ऐ दुनियाँ वालों	374
9.	सूरज बन दूर किया जिसने पापों का घोर अन्धेरा	376
10.	सौ बार जन्म लेंगे, सौ बार फना होंगे	378
11.	ऋषिवर के इतने उपकार हैं	379
12.	भारत के एक संन्यासी की हम कथा सुनाते हैं	380
13.	भारत में जड़-पूजा का घोर अंधेरा	381
14.	आओ युवकों तुम्हें सुनायें गाथा	382
15.	कहो किसने आकर के हमको जगाया	383
16.	दयानन्द ने गर जगाई न होती	384
17.	नगर-नगर और डगर-डगर में	385
18.	नगरी-नगरी द्वारे-द्वारे ऋषि ने	386
19.	ईश्वर का सन्देश सुनाने आये थे	387
20.	वेदों वाले ऋषिवर तेरी शान का	388
21.	ऋषिवर न अपनी मुसीबत पे रोये	390
22.	ऋषि जी के आने से देश का सुधार हो गया	391
23.	अमर पथ वेद का हमको	393
24.	चमकेंगे जब तलक ये	394

गुरु विरजानन्द

क्र.सं.	विवरण	पृ. सं.
1.	विरजानन्द महर्षि गुणों का सारे मिलकर	395
2.	कर स्वामी दयानन्द को, तैयार विरजानन्द को	396

स्वामी श्रद्धानन्द

क्र.सं.	विवरण	पृ. सं.
1.	श्रद्धा और आनन्द की इक खान श्रद्धानन्द थे	397
2.	श्रद्धानन्द की याद सबको दिला दो	398
3.	धन्य है बलिदान श्रद्धानन्द का	399
4.	गोलियाँ सीने पे खाके चल दिये	400
5.	सत्संग में दयानन्द के मुंशीराम जा पहुँचा	401
6.	हे अगरचे स्वर्ग में विश्राम श्रद्धानन्द का	402
7.	श्रद्धानन्द के गीत गाता चला जा	403

आर्य समाज

क्र.सं.	विवरण	पृ. सं.
1.	आर्य समाज हमारे ऋषि की	404
2.	आर्य गर हो तो आर्य समाज में तुम आया करो	405
3.	जग को जगाने वाला आर्य समाज है	406
4.	जिसने महिमण्डल को फिर से वेदों का	408
5.	देश का सेवक आर्य समाज-प्रेरणात्मक नारा	409

ऋषि दयानन्द

दुनिया वालों देव दयानन्द, दीप जलाने आया था।
भूल चुके थे राहें अपनी, वो दिखलाने आया था।

घोर अंधेरा जग में छाया, नजर नहीं कुछ आता था।
मानव मानव की ठोकर से, जब ठुकराया जाता था।
आर्य जाति सोई पड़ी थी, घर-घर जाके जगाता था।
दुनिया वालों देव दयानन्द, दीप जलाने आया था।।1।।

बँट गया सारा टुकड़े-टुकड़े, भारत देश जगीरों में।
शासन करते लोग विदेशी, जोश नहीं था वीरों में।
भारत माँ को मुक्त किया, जो जकड़ी हुई थी जंजीरों में।
दुनिया वालों देव दयानन्द, दीप जलाने आया था।।2।।

जब तक जग में चार दिशाएँ, कुदरत के ये नजारे हैं।
सागर, नदिया, धरती, अम्बर, जंगल, पर्वत सारे हैं।
'पथिक' रहेगा नाम ऋषि का, जब तक चाँद सितारे हैं।
दुनिया वालों देव दयानन्द, दीप जलाने आया था।।3।।
भूल चुके थे राहें अपनी, वो दिखलाने आया था।

ऋषि दयानन्द

स्वामी दयानन्द न आते, कल्याण हमारा न होता।
कांटों से उलझकर रह जाते, और कोई सहारा न होता।।
वो कौन-सा दिल है, ऋषि जिसमें बसा नहीं।
वो सबका देवता है, किसी एक का नहीं।।
वो कौन सा दिल है, ऋषि जिसमें ......
थोड़े से वक्त में भी, इतना काम कर गया।
ऐसा कभी तारीख में, देखा सुना नहीं।।
वो कौन सा दिल है, ऋषि जिसमें ......
जुल्मों सितम की बारिश, लालच की आँधियाँ।
इतने गजब की बात करके, वह पल भर रुका नहीं।।
वो कौन सा दिल है, ऋषि जिसमें ......
ईश्वर के वेद ज्ञान को, घर-घर पहुँचा दिया।
अज्ञान का दामन कहीं दिखता नहीं।।
वो कौन सा दिल है, ऋषि जिसमें ......
वेदों का जाम आदमी, पीता है एक बार।
जीवन से ऊब जाए वो, ऐसा नशा नहीं।।
वो कौन सा दिल है, ऋषि जिसमें ......
यों तो सारे जहान में, कई रहनुमा हुए पर।
स्वामी दयानन्द का, मुकाबला नहीं।।
वो कौन सा दिल है, ऋषि जिसमें ......

ऋषि दयानन्द

लूटा था जमाने ने, ऋषिवर ने बचाया है।
अपने गुरु विरजानन्द का, वचन निभाया है।।
लूटा था जमाने ने, ऋषिवर ने ....
भ्रमजाल में लोगों को, बहकाया मक्कारों ने।
अन्याय पाप पाखण्ड से, दयानन्द ने छुड़ाया है।।
लूटा था जमाने ने, ऋषिवर ने ....
निर्जीव आर्य जाति में, नव प्राण फूंके ऋषि ने।
सौ बार उठाया है, सौ बार बचाया है।।
लूटा था जमाने ने, ऋषिवर ने ....
नारी का नहीं था मान, गौओं को सताया था।
दयानन्द दया सिन्धु, तारक बन आया है।।
लूटा था जमाने ने, ऋषिवर ने ....
क्या सत्य था क्या था असत्य, लोगों का पता न था।
सत्यार्थ प्रकाश रचा, अज्ञान मिटाया है।।
लूटा था जमाने ने, ऋषिवर ने ....
गुरुकुल और आर्य समाज, सींचा था ऋषिवर ने।
आदर्श के फूलों से, आँगन महकाया है।।
लूटा था जमाने ने, ऋषिवर ने ....
जो कुछ था ऋषि के पास, सब बाँट दिया जग को।
हँस के दिये प्राण, क्षमा घातक को दे आया है।।
लूटा था जमाने ने, ऋषिवर ने ....
इस युग में नहीं है कोई, महर्षि दयानन्द सा
निष्काम कर्म ऋषि का, हर मन में समाया है।।
लूटा था जमाने ने, ऋषिवर ने ....

ऋषि दयानन्द

धन्य है तुझको हे ऋषि, तूने हमें जगा दिया।
सो-सो के लूट रहे थे हम, तूने हमें जगा दिया।।
अंधे को आँखें मिल गई, मुर्दों में जान आ गई।
जादू-सा क्या चला दिया, अमृत-सा क्या पिला दिया।
धन्य है तुझको ऋषि, तूने ....
वाणी में क्या तासीर थी, स्वामीजी तेरी बात पर।
कितने शहीद हो गये, कितनों ने सर कटा दिया।।
धन्य है तुझको ऋषि, तूने ....
श्रद्धा से श्रद्धानन्द ने, सीने में खाई गोलियाँ।
हंस-हंस के हंसराज ने, तन मन व धन लुटा दिया।।
धन्य है तुझको ऋषि, तूने ....
तेरे दीवाने जिस घड़ी, दक्षिण दिशा को चल दिये।
वैदिक धरम पे हो फिदा, दुनिया का दिल दहला दिया।।
धन्य है तुझको ऋषि, तूने ....

''अज्ञानी होना गलत नहीं है, अज्ञानी बने रहना गलत है।''- महर्षि दयानन्द

ऋषि दयानन्द

ऐ ऋषि दयानन्द तेरी, युग-युग तक अमर कहानी।
हम भूल नहीं सकते हैं, की तूने जो कुर्बानी।।

तू धर्म का था दीवाना, सचाई का परवाना।
तू झुका सत्य के आगे, तेरे आगे झुका जमाना।।
सुन तेरी अद्‌भुत वाणी, दुनिया हो गई दीवानी।
हम भूल नहीं सकते हैं, की तूने जो कुर्बानी।।1।।

लाखों भूले-भटकों को, तूने मार्ग दिखलाया।
जो श्रद्धा करके आया, उसे श्रद्धानंद बनाया।।
सच तो यह है मुर्दों को, बख्शी तूने जिन्दगानी।
हम भूल नहीं सकते हैं, की तूने जो कुर्बानी।।2।।

बन सच्चा 'सेवक' तूने, की देश धर्म की सेवा।
लाखों तेरे अनुयायी, सबको बाँटा यह मेवा।।
मिलकर जो हम बैठे हैं, सब तेरी मेहरबानी।
हम भूल नहीं सकते हैं, की तूने जो कुर्बानी।।3।।

ऋषि दयानन्द

ऐ स्वामी दयानन्द, तूने कर दिया कमाल।
निर्जीव आर्य जाति में, फिर प्राण दिये डाल।।
अज्ञान अँधेरा था, चारों ओर ही छाया।
पापी पाखण्डियों ने था, अँधेर मचाया।।
देकर सन्देश वेद का, हमको किया निहाल।।
ऐ स्वामी दयानन्द तूने ....
विधवा अनाथ और, अछूतों को बचाया।
शुद्धि का चक्र लाके, तूने ऐसा चलाया।।
लाखों ही लाल जाति के, गिरते लिये सँभाल।।
ऐ स्वामी दयानन्द तूने ....
'नन्दलाल' आने वाला, समय ही बतायेगा।
जब सारा विश्व वेद का, नारा लगायेगा।।
वेदों की शिक्षा रोक सके, ये किसकी है मजाल।।
ऐ स्वामी दयानन्द तूने ....

''दुनिया को अपना सर्वश्रेष्ठ दीजिए और आपके पास सर्वश्रेष्ठ लौटकर आयेगा।''
- ऋषि दयानन्द

ऋषि दयानन्द

आओ सुनें क्या कहा है ऋषि ने।
उपकार कितना किया है ऋषि ने।।

ऋषि ने कहा सत्य क्या है यह जानो,
सुनो सब किसी की, मगर वह ही मानो
जिसे तर्क से, ज्ञान से, सिद्ध पाओ,
उसे शीघ्र निज आत्मा में, बसाओ।
ये सद्ज्ञान हमको दिया है ऋषि ने।।
आओ सुनें क्या कहा है ....

सभी का भला हो, जो यह चाहता है,
वही सच्चे ईश्वर को पहचानता है,
जो सबको ही भाई के सम देखता है,
वही सच्चा मानव, वही देवता है।
यही पुस्तकों में, लिखा है ऋषि ने।।
आओ सुनें क्या कहा है ....

रहे न अशिक्षित धरा पर कोई अब,
बने वेद के ज्ञान से युक्त मानव,
न हो रोग और शोक, घर में किसी के,
हो सन्ध्या-हवन-यज्ञ घर में सभी के।
यही भाव मन में, भरा है ऋषि ने।।
आओ सुनें क्या कहा है ....

निरन्तर 373 .....

किया राष्ट्र-रक्षा में बलिदान तन को,
रखा धैर्य उर में रखा स्वच्छ-मन को।
विष का भी प्याला पिया है ऋषि ने।।

आओ सुनें क्या कहा है ....

हो नारी का सम्मान, घर-घर में सबके,
हो अतिथि का भी मान, घर-घर में सबके,
हो माँ-बाप से प्यार, घर-घर में सबके,
परस्पर हो सत्कार, घर-घर में सबके।
वही घर स्वर्ग सा कहा है ऋषि ने।।

हम सेठ का काम किये बिना उससे वेतन नहीं चाहते तो ईश्वर का काम किये बिना ईश्वर से फल क्यों चाहते हैं? यह तो न्याय नहीं है।

ऋषि दयानन्द

सुनो-सुनो ऐ दुनियाँ वालों, दयानन्द की अमर कहानी।
ऋषिवर इतने पूज्य हैं जग में, जितना गंगा माँ का पानी।।
गुजरात प्रान्त टंकारा ग्राम में, महर्षि ने जन्म लिया
शंकर के सच्चे खोजी को, मूल शंकर नाम दिया
जगे भाग्य भारत के जब, शिवरात्री का व्रत तोड़ा था
सच्चे शिव की चले खोज में, निज गृह से बन्धन तोड़ा था
अपने प्रण पर अटल रहे, और मात-पिता की एक न मानी।।1।।
सुनो-सुनो ऐ दुनियाँ वालों, दयानन्द की ....

भारत भर में भ्रमण किया, पर मिला न कोई सच्चा ज्ञानी
काशी में गुरु विरजानन्द की, सुनी किसी से कहानी
वन-वन भटके, संकट सहके, जब मथुरा में आए
कर प्रणाम वह गुरु चरणों में, फूले नहीं समाए
अन्धकार में भटक रहे थे, भारत भर के प्राणी।।2।।
सुनो-सुनो ऐ दुनियाँ वालों, दयानन्द की ....

हरिद्वार से चलकर ऋषिवर, कर्णवास में आये
कर्णवास में आकर के जब, सत्य सन्देश सुनाये

निरन्तर 375 ......

कर्णवास वासी सुन-सुनकर, फूले नहीं समाये
इस पर क्रोधित राव कर्णसिंह, ले तलवार को धाये
देख के मुस्कराये जब ऋषिवर, नयनों में थी कुछ लाली
छीन कर के तलवार, उन्होंने टूक-टूककर डाली
देख के घबड़ाये तब राव, शर्म से हो गये पानी-पानी।।3।।
सुनो-सुनो ऐ दुनियाँ वालों, दयानन्द की ....

भारत भर में घूम-घूमकर, वेदों का प्रचार किया
जोधपुर में जगन्नाथ ने, महर्षि को जहर दिया
मना रहा था सारा भारत, जगमग जगमग दीवाली
उसी समय भारत माता की, गोदी हो रही खाली
ऐसे महर्षि इस जग में, बार-बार नहीं आते हैं
जो निज जीवन की भेंट चढ़ा, जग को जीवन दे जाते हैं
उस ऋषिवर की सच्ची कीमत, 'गुरुदत्त' ने पहिचानी।।4।।
सुनो-सुनो ऐ दुनियाँ वालों, दयानन्द की ....

'स्वर्ग कामो यजेत'
स्वर्ग की कामना के लिए यज्ञ करें।

ऋषि दयानन्द

सूरज बन दूर किया जिसने, पापों का घोर अन्धेरा।
वह देव दयानन्द मेरा।
वह देव दयानन्द मेरा।।1।।
मथुरा नगरी से उदय हुआ गुरु विरजानन्द का चेरा।
वह देव दयानन्द मेरा।
वह देव दयानन्द मेरा।।2।।
गुरुवर को जो वचन दिया, प्राणों के साथ निभाया।
परोपकार में ही उसने, अपना सर्वस्व लगाया।।
तज भूख-प्यास सरदी गरमी, नहिं देखा साँझ सवेरा।
वह देव दयानन्द मेरा।
वह देव दयानन्द मेरा।।3।।
छूतछात और भेदभाव के, लाखों थे मतवाले।
भोली-भाली जनता को, डसते थे विषधर काले।।
वेद की वीणा बजाके सबको, कर दिया मस्त सपेरा।
वह देव दयानन्द मेरा।
वह देव दयानन्द मेरा।।4।।
लाखों-करोड़ों दु:खी दिलों का, दर्द था जिसके दिल में,

निरन्तर 377.....

ईंटें खाई, जहर पिया, हँसता ही रहा मुश्किल में।
जिसके बदौलत सत्य धर्म ने, डाला फिर से डेरा।।
वह देव दयानन्द मेरा।
वह देव दयानन्द मेरा।।5।।

हर मजबून पै देते थे, वे बड़ी-बड़ी तफसीलें।
सिन्धु से गहरी, नभ से ऊँची गिरि से सुदृढ़ दलीलें।।
जिसने 'पथिक' दुनियाँ भर में, मानवता का रंग बिखेरा।
वह देव दयानन्द मेरा।
वह देव दयानन्द मेरा।।6।।

"धन एक वस्तु है जो ईमानदारी और न्याय से कमाई जाती है। इसका विपरीत है अधर्म का खजाना।"
- ऋषि दयानन्द

ऋषि दयानन्द

सौ बार जन्म लेंगे, सौ बार फना होंगे,
अहसान दयानन्द के, फिर भी न अदा होंगे।।1।।

गुजराज की धरती पर, सूरज की किरण फूटी।
अज्ञान-अविद्या के दानव की कमर टूटी-
पुरनूर हुआ भारत, गुण कैसे बयाँ होंगे।।2।।
सौ बार जन्म लेंगे, सौ बार ....

निराकार की पूजा को, जीवन में उतारा था,
पाषाण का अभिनन्दन, कब उसको गंवारा था,
मुँह मोड़ लिया क्योंकर, पत्थर के खुदा होंगे।।3।।
सौ बार जन्म लेंगे, सौ बार ....

आकाश में रोशन है, ये शम्शो कमर जब तक,
दिन-रात हैं ये जब तक, ये शाम-सुबह जब तक,
अफसाने दयानन्द के, दिल से न जुदा होंगे।।4।।
सौ बार जन्म लेंगे, सौ बार ....

वीर 'आर्य मुसाफिर' से, सेनानी दिये हमको,
और स्वामी श्रद्धानन्द से, बलिदानी दिये हमको,
खूँ जिनकी शहादत के, हर गम की दवा होंगे।।5।।
सौ बार जन्म लेंगे, सौ बार ....

स्वागत के लिये जिनके, पाषाण थे या कंकर,
गम खाके बने हनुमत, विष पीके बने शंकर,
फूल उनके मुकद्दर में, होंगे भी तो क्या होंगे।।6।।
सौ बार जन्म लेंगे, सौ बार ....

ऋषि दयानन्द

ऋषिवर के इतने उपकार हैं।
जिनको गिनाना दुश्वार है।
।। अन्तरा।।
भारत की नैय्या जब मझधार थी।
ऋषि ने सम्भाला पतवार थी।।
आकर भवसागर किया पार है।।।
ऋषिवर के इतने उपकार हैं, जिनको ....
विधवाओं पर जुल्म ढाते थे।
सती के नाम पर जलाते थे।।
उनका किया उद्धार है।।।
ऋषिवर के इतने उपकार हैं, जिनको ....
जिनको हम नीच बताते थे।
वो ही विधर्मी हुए जाते थे।।
उनका किया शुद्धि संस्कार है।।।
ऋषिवर के इतने उपकार हैं, जिनको ....
ऋषिवर ने दिया जो उपदेश है।
उसी को मानता दिव्येश है।
करता उसी का प्रचार है।।।
ऋषिवर के इतने उपकार हैं, जिनको ....

ऋषि दयानन्द

भारत के एक संन्यासी की, हम कथा सुनाते हैं।
सच्चे ईश्वर विश्वासी की, हम व्यथा सुनाते हैं।।
शिवरात्रि का व्रत छोड़ा, पाखण्ड से नाता तोड़ा।
झूठे शिव से तोड़ा नाता, सच्चे शिव से जोड़ा।।
वन-वन में फिरे भूख भी, रहे महादु:ख पाया-
सुनकर के जिनकी व्यथा, नैन आँसू भर आते हैं।।
भारत के एक सफल संन्यासी की हम कथा ....
जब गुरु मिला नहीं ज्ञानी, काशी जाने की ठानी।
काशी में गुरु विरजानन्द की, किसी से सुनी कहानी।।
तब मथुरा को चले, गुरुवर से मिले बहुत हर्षाये।
कर प्रणाम गुरु चरणों में, फूले नहीं समाते है।।
भारत के एक सफल संन्यासी की हम कथा ....
ऋषि हरिद्वार में आये, वैदिक सन्देश सुनाये।
सुनकर प्रबल गर्जना, ऋषि की पाखंडी घबड़ाये।
यह देख धीरता स्वामी की, मस्तक झुक जाते हैं।।
भारत के एक सफल संन्यासी की हम कथा ....
सत्यार्थ प्रकाश बनाया, मिथ्या विश्वास हटाया।
इतने पर भी जगन्नाथ ने, ऋषि को जहर पिलाया।।
दिये दिवाली जले ऋषि तब, चले मन्द मुस्काये।
यह देख दृश्य गुरुदत्त नास्तिक, आस्तिक बन जाते हैं।।
भारत के एक सफल संन्यासी की हम कथा ....

ऋषि दयानन्द

भारत में जड़-पूजा का, घोर अँधेरा छाया था।
टंकारा का देव दयानन्द, सूरज बनकर आया था।।
सच्चे शिव को उसने ढूँढ़ा, गंगा की मझधारों में।
दूर हिमालय की चोटी पर, विन्ध्याचल की धारों में
घोर तपस्या कर दण्डी के, द्वारे अलख जगाया था।।
भारत में जब जड़ पूजा का घोर ....
गौवें कटती, विधवा रोतीं, देश के वासी सोये थे।
ऋषियों की सन्तान, रूढ़ियों की उलझन में खोये थे।
सिंहनाद से सच्चे ऋषि ने, जागृति-शंख बजाया था।।
भारत में जब जड़ पूजा का घोर ....
वन-वन घूमा, दर-दर भटका, देश-प्रेम की राहों में।
उसने अपनी मुक्ति देखी, दीन दुःखी की आहों में।
जन-जन का उद्धार किया, नव-मुक्ति-मार्ग अपनाया था।
भारत में जब जड़ पूजा का घोर ....
धर्म चक्र का किया प्रवर्तन, पावन-गंगा के तट पर।
धर्म दम्भ का ध्वंस किया, काशी नगरी में मरघट पर।
दिग-दिगन्त भी काँप उठे, जब ऋषि ने नाद गुँजाया था।
भारत में जब जड़ पूजा का घोर ....

ऋषि दयानन्द

आओ युवकों तुम्हें सुनायें, गाथा ऋषि महान की।
जिसकी कृपा से फैली है, ज्योति यहाँ पर ज्ञान की।
भारत में अज्ञान अन्धेरा, चारों ओर ही छाया था,
आजादी का मार्ग, स्वामी ने हमें दिखलाया था,
जाति में भी जान आ गई, जो जाति बेजान थी।
आओ युवकों तुम्हें सुनायें गाथा ऋषि...........
छूत-छात और जात-पांत के, झगड़ों ने बरबाद किया,
फूट की डायन ने था, अंग्रेजों को यहाँ आबाद किया,
वेद को भूले, चर्चा थी - अंजील, कुरान, पुराण की।।
आओ युवकों तुम्हें सुनायें गाथा ऋषि...........
जहर के प्याले पीकर उसने, अमृत हमें पिलाया था,
'नन्दलाल' दुनिया को, मार्ग वेदों का दिखलाया था,
देकर अपनी जान, बचाई जान ऋषि-सन्तान की।
आओ युवकों तुम्हें सुनायें गाथा ऋषि...........

''लोगों को कभी भी चित्रों की पूजा नहीं करनी चाहिए। मानसिक अहंकार का फैलाव मूर्तिपूजा के प्रचलन की वजह से है-ऋषि दयानन्द

ऋषि दयानन्द

कहो किसने आकर के हमको जगाया,
दयानन्द आया, दयानन्द आया।।1।।
लुटेरों से आकर किसने बचाया,
दयानन्द आया, दयानन्द आया।।2।।
अनाथों का कोई ठिकाना नहीं था,
बिलखते थे बच्चे खाना नहीं था।
कहो किसने अनाथालय खुलवाया,
दयानन्द आया, दयानन्द आया।।3।।
थे नारी को पैरों की जूती बताते,
नहीं कोई नारी को विद्या पढ़ाते।
कहो इनको अधिकार किसने दिलाया,
दयानन्द आया, दयानन्द आया।।4।।
अछूतों को ठुकराता सारा जमाना,
बड़ी भूल की थी समझकर बेगाना।
कहो इनको छाती से किसने लगाया,
दयानन्द आया, दयानन्द आया।।5।।
बन जाते थे हिन्दू, मुस्लिम इसाई,
उतारे जनेऊ, थी चोटी कटाई।
शुद्धि की बूटी को, किसने पिलाया,
दयानन्द आया, दयानन्द आया।।6।।
कहो वेद की बंसी, किसने बजायी,
धर्म हेतु मरने की, कला सिखाई।
कहो जड़ की पूजा को, किसने छुड़ाया,
दयानन्द आया, दयानन्द आया।।7।।

ऋषि दयानन्द

दयानन्द ने गर जगाई न होती।
तो वेदार हरगिज खुदाई न होती।।1।।

न कातिल परस्ती जमाने से मिटती।
जो वेदों की बंशी बजाई न होती।।2।।

निशाँ राम का, कृष्ण का मिट चुका था।
ऋषि ने जो हलचल मचाई न होती।।3।।

न इस्लाम के ढोल की पोल खुलती।
जो स्वामी ने हिम्मत दिखाई न होती।।4।।

न बिल बन्द होता किसी बाइबिल का।
खुदावन्द की जग, हँसाई न होती।।5।।

जहन्नुम व जन्नत के खुलते न किस्से।
यों अर्शेबरी की, सफाई न होती।।6।।

पता हिन्दुओं का जहाँ में न मिलता।
जो शुद्धि की बूटी, पिलाई न होती।।7।।

न सुनने को मिलते, वतन के तराने।
अगर देश भक्ति, सिखाई न होती।।8।।

जहालत की काली, घटायें न टलतीं।
जो स्वामी की जलवा, नुमाई न होती।।9।।

'मुसाफिर' अगर, जिन्दगी तू न पाता।
धरम पै जो गर्दन, कटाई न होती।।10।।

ऋषि दयानन्द

नगर-नगर और डगर-डगर में, गीत ऋषि के गाना।
ले लंगोटी निकला घर से, वेदों का दीवाना।।1।।
जंगल, नदियाँ, पर्वत सारे, नगर-नगर को छाना।
कहीं न मिला ठिकाना, गीत ऋषि के गाना।।2।।
सच्चे शिव की खोज में निकला, ऐसी लगन लगाई।
टुकड़े बरफ के खा-खा करके, अपनी भूख मिटाई।।3।।
फिर भी ना घबराना, गीत ऋषि के गाना।।
आखिर पहुँचा मथुरा नगरी, वहाँ भी खोज लगाई।
दूर से देखी टूटी-फूटी, कुटिया उसने पाई।।
वेदों का दीवाना, गीत ऋषि के गाना।।4।।
विरजानन्द ने उससे पूछा कौन? कहाँ से आया?
यही जानना चाहता हूँ मैं, यही जानने आया।।
सुनकर खूब पढ़ाना, गीत ऋषि के गाना।।5।।
पढ़-लिखकर उस योगी ने, वैदिक धर्म फैलाया।
दुष्टों ने फिर मिल-जुलकर के, उसको जहर पिलाया।।
ऐसे ऋषिवर के चरणों में, प्रेमी शीश झुकाना।।6।।
गीत ऋषि के गाना।।

ऋषि दयानन्द

नगरी-नगरी द्वारे द्वारे, ऋषि ने धूम मचाई रे।
किंचित ना घबराये उनसे, बाधाएँ आई रे।
गीत गड़रियों के वेदों को, मूर्ख यहाँ बतलाते थे,
लैला-मजनूँ के किस्से, कहानियाँ ही गीत गाते थे।
वेदों के विषय में भ्रमता, जो थी सभी मिटाई रे।।1।।
नगरी-नगरी द्वारे-द्वारे ऋषि ने ....
निराकार का ध्यान छोड़कर पूजे थे पाषाणों को,
कुत्तों से भी बदतर, समझा जाता था इन्सानों को।
मूर्खता और जहालत की, दीवारें तोड़ गिराई रे।।2।।
नगरी-नगरी द्वारे-द्वारे ऋषि ने ....
अनेकों ही अंड बंड पाखण्ड, यहाँ पर जारी थे
फंसे हुए धूर्तों के, चक्कर में नर-नारी थे।
दूर अब अन्धकार किया, वैदिक ज्योति जलाई रे।।3।।
नगरी-नगरी द्वारे-द्वारे ऋषि ने ....
पोपों का गढ़ तोड़ा, पोल खोली थी पुराण की
धज्जियाँ उड़ाई बाइबिल, इन्जिलों कुरान की।
मियाँ थे घबराये, कांपे यहूदी ईसाई रे।।4।।
नगरी-नगरी द्वारे-द्वारे ऋषि ने ....
विरोधी था संसार जिससे, जूझा वह अकेला था।
संकट विकट वीरेन्द्र, मरदानी से झेला था।
प्रबल युक्तियों के द्वारा, विजय सभी पर पाई रे।।5।।
नगरी-नगरी द्वारे-द्वारे ऋषि ने ....

ऋषि दयानन्द

ईश्वर का सन्देश सुनाने आये थे,
मानवता का पाठ पढ़ाने आये थे।
थी मची धांधले बाजी, आ उस पर रोक लगा दी,
जो जन थे मिथ्यावादी, वेदोक्त उन्हें शिक्षा दी
राह पर लाये थे। मानवता का पाठ पढ़ाने ....
जो जो भी दुखिया पाये, उनके सब कष्ट मिटाए
अपने-पन से अपनाए, खुद संकट लाख उठाए
राह पर लाये थे। मानवता का पाठ पढ़ाने ....
सत्यार्थ प्रकाश बनाया, सारा पाखण्ड मिटाया
जो दोष मतों में पाया, लिख साफ-साफ बतलाया
राह पर लाये थे। मानवता का पाठ पढ़ाने ....
कोई माने या न माने, कोई जाने या न जाने
फिरते बठौर ठिकाने, जो अपने हुए विराने
राह पर लाये थे। मानवता का पाठ पढ़ाने ....

''समाज में जब बुराईयाँ घर कर जाती हैं तो ईश्वर ऐसी विभूतियों को भेजता है। ऐसा महापुरुष मरते नहीं अमर होते हैं।
- सरदार वल्लभ भाई पटेल

ऋषि दयानन्द

वेदों वाले ऋषिवर तेरी शान का
सारी दुनियाँ में कोई बशर न मिला।
हमने इन्सान देखे सुने हैं बड़े
कोई इन्सान तुझसा मगर न मिला।
वेदों वाले ऋषिवर तेरी शान का ....

तूने दिया आनन्द ही सब जगह
सच्चा हमदर्द बन के लुटाता गया।
चुन लिये तूने काँटे सभी राह के
फूल ही फूल इस पर बिछाता गया।
वेद मार्ग हमें तूने दिखला दिया
तेरे जैसा कोई रहबर न मिला।
वेदों वाले ऋषिवर तेरी शान का ....

कितना है पानी यह जानने के लिये
मैं समन्दर में गोता लगाऊँ तो क्या।
या दिखाने को सूरज चमकता हुआ
एक छोटा सा दीपक जलाऊँ तो क्या।
तेरी तारीफ कैसे करूँ मैं बयां
मेरी वाणी को ऐसा असर न मिला।
वेदों वाले ऋषिवर तेरी शान का ....

निरन्तर : 389

तूने दरिया बहाया है जो ज्ञान का
वह प्रलय तक निरन्तर बहेगा यहाँ।
कोई ताकत इसे रोक सकती नहीं
दिन-प्रतिदिन यह बढ़ता रहेगा यहाँ।
जो प्रभावित न हो तेरे उपकार से
देश भर में कोई एक घर न मिला।
वेदों वाले ऋषिवर तेरी शान का ....

धर्म की राह पर मुस्कुराते हुए
जिन्दगी मौत का खेल खेला गया।
तेरी हिम्मत हिमालय से ऊँची बड़ी।
तू हजारों के अन्दर अकेला गया।
न झुका हो 'पथिक' जो तेरे सामने कोई
दिल न मिला कोई सर न मिला।
वेदों वाले ऋषिवर तेरी शान का ....

" स्वामी दयानन्द भारत के मार्गदर्शक थे जिसने देश की पतितावस्था में भी हिन्दुओं को प्रभु भक्ति और मानव समाज की सेवा के सीधे व सच्चे मार्ग का दर्शन कराया" - रवीन्द्र नाथ ठाकुर

ऋषि दयानन्द

ऋषिवर न अपनी मुसीबत पै रोये।
जो रोये तो भारत की हालत पै रोये।।

ऋषियों का भारत कहाँ जा रहा है।
सभ्यता पुरानी को बिसरा रहा है।।
करा जो रहा है हिमाकत पै रोये।।1।।
ऋषिवर न अपनी मुसीबत ....

न एक ईश्वरवाद की बात सूझे।
कबर ताजिये ईंट पत्थरों के पूजे।।
कौम की मूर्खता व जहालत पै रोये।।2।।
ऋषिवर न अपनी मुसीबत ....

अनाथ और बेवाएँ देखीं बिलखतीं।
रोटी के बदले में चोटियाँ कटतीं।।
लुटे लाल जाति के गुरबत पै रोये।।3।।
ऋषिवर न अपनी मुसीबत ....

घृणा द्वेष अपनों से, गैरों से प्रीति।
बचेगी न वह कौम, जिसकी यह नीति।
कवि 'वीर' थोती, सुखावत पै रोये।।4।।
ऋषिवर न अपनी मुसीबत ....

ऋषि दयानन्द

ऋषि जी के आने से देश का सुधार हो गया।
धूर्त्त पाखण्डियों की पोल का साक्षात्कार हो गया।।1।।
अठारह पुराण रचाकर इन्होंने देश को भरमाया,
अपना स्वार्थ सिद्ध करने को रास्ता यह अपनाया,
स्त्री, शूद्रों को वेद पढ़ने का नहीं अधिकार बताया,
जिसने गायत्री भी सुन लिया कानों में शीशा डलवाया,
ऋषिजी ने आकर वेदों का सच्चा अर्थ सुनाया,
सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी,वायु वैसे ही वेद सबका बताया,
आज सब वर्ण के स्त्री पुरुषों को सब विद्या पढ़ने का अधिकार हो गया।
ऋषिजी के आने से देश का सुधार हो गया ... (2)
जाति जन्म से मानी इन्होंने, देश बाग से विरान हो गया,
योग्य पुरुष की उन्नति रुकी, अयोग्य का सम्मान हो गया,
पुरुषार्थ को धक्का लगा, अकर्मण्यता का ही सबको ध्यान हो गया,
मूर्ख समझे जाने लगे विद्वान्, पथ सुदर्शन में व्यवधान हो गया
अविद्या से बढ़ गया अन्धकार, वेद ज्ञान प्रायः लुप्त समान हो गया,
देश-धर्म के प्रति, कर्त्तव्य के स्थान पर, स्वार्थ ही प्रधान हो गया
गुण, कर्म, स्वभाव से होती है जाति बतलाया,
ऋषि ने सबकी उन्नति का खुला द्वार हो गया
ऋषिजी के आने से देश का सुधार हो गया ... (3)

निरन्तर 392

कितने ही बुरे कर्म करो, राम के नाम मात्र से सब माफ होते हैं।
सब किये अन्याय बलात्कार एक गंगा स्नान से ही साफ होते हैं
कितने ही झूठे झगड़े करो, एक व्रत रखने से ही माफ होते हैं,
पत्थर पूजक, तिलकधारी पर ईश्वर कभी नहीं खौफ होते हैं,
ऋषिजी ने वेदों से बतलाया सन्ध्या, हवन योग ही सच्चे जाप होते हैं,
किये कर्मों का फल भुगतना पड़ेगा, नहीं कभी भी माफ होते हैं,
तब आया सद्ज्ञान सद्विचार सत्य सनातन
वैदिक धर्म का प्रचार हो गया
ऋषिजी के आने से देश का सुधार हो गया ... (4)
अपने-अपने स्वार्थ वश, ईश्वर की दुर्दशा कर डाली
कोई कहे राम हैं, कोई कहे कृष्ण हैं खाली,
कोई शंकर को ईश्वर कहे, कोई हनुमान, भैरव, दुर्गा, काली
एक 'ओ३म्' सर्वशक्तिमान बताया, जो सृष्टिकर्त्ता और रखवाली,
सब मत-मतान्तर नष्ट हुए, जो फैलाये गये झूठे जाली,
वैदिक ज्ञान उदय हुआ, जिसमें ईश्वर प्राप्ति की सच्ची प्रणाली,
इन बातों का रखो ख्याल, जिससे बने तुम्हारा जीवन 'खुशहाल',
नहीं तो समझो मनुष्य जीवन बेकार हो गया............
ऋषिजी के आने से देश का सुधार हो गया ... (5)

ऋषि दयानन्द स्वराज्य के सर्वप्रथम संदेशवाहक तथा मानवता के उपासक थे'' - बाल गंगाधर तिलक

ऋषि दयानन्द

अमर पथ वेद का हमको, बताया था दयानन्द ने।
मधुर अमृत का फव्वारा, चलाया था दयानन्द ने।।

थी डगमग देश की नय्या, खिवैया था नही कोई।
दया करके किनारे पर, लगाया था दयानन्द ने।।1।।
अमर पथ वेद का हमको ....

दलित दुखियों, अनाथों, बेजुबानों का रहा हामी।
अखिल आनन्द मुक्ति का, बताया था दयानन्द ने।।2।।
अमर पथ वेद का हमको ....

सुना था ले गया वेदों को शंखासुर धरातल को।
मगर पावन श्रुति दर्शन, कराया था दयानन्द ने।।3।।
अमर पथ वेद का हमको ....

खिला जब ज्ञान का सूरज, तो आँखें 'हंस' ने खोली।
पुनः सदियों से सोतों, को जगाया दयानन्द ने।।4।।
अमर पथ वेद का हमको ....

ऋषि दयानन्द

चमकेंगे जब तलक ये, सूरज व चांद तारे।
हम हैं ऋषि दयानन्द, तब तक ऋणी तुम्हारे।।
भारत की जब ये नैया, मंझधार में पड़ी थी।
तूने ही बनके केवट, पहुँचा दिया किनारे।।
हम हैं ऋषि दयानन्द, तब तक ऋणी तुम्हारे।।1।।
हमको पिलाया अमृत, खुद जहर पी गया तू।
तूने हमारे खातिर, सब कष्ट थे सहारे।।
हम हैं ऋषि दयानन्द, तब तक ऋणी तुम्हारे।।2।।
कातिल को अपने स्वामी, जीवन का दान दे तू।
तेरी जान के भी दुश्मन, तुझे जान से थे प्यारे।।
हम हैं ऋषि दयानन्द, तब तक ऋणी तुम्हारे।।3।।
तू वो दीया था जिसने, लाखों दीये जलाये।
दी रोशनी 'पथिक' वो, घर जगमगाये सारे।।
हम हैं ऋषि दयानन्द, तब तक ऋणी तुम्हारे।।4।।

''वे इतने अच्छे और विद्वान आदमी थे कि प्रत्येक धर्म के अनुयायियों के लिए सम्मान के पात्र थे- सर सय्यद अहमद खां

गुरु विरजानन्द

विरजानन्द महर्षि गुणों का, सारे मिलकर करते गान।
ज्ञानचक्षु महात्मा का, हम करते श्रद्धापूर्वक मान।।

गायत्री के जप से जिनके, हुए सुविकसित अन्तर नेत्र।
इस प्रकार पाया था जिसने, वेदशास्त्र का सच्चा ज्ञान।।
ज्ञानचक्षु महात्मा का, हम ....

दयानन्द आदर्श शिष्य के, जो जग में आदर्शाचार्य।
निगमागम विद्या पारंगत, उन महर्षि का करते यान।।
ज्ञानचक्षु महात्मा का, हम ....
लोभरहित जिन अद्‌भुत गुरु ने, अजब दक्षिणा माँगी।
दूर करो जग का सारा तम, करें क्यों नहीं उनका मान।।
ज्ञानचक्षु महात्मा का, हम ....
आर्ष पुस्तकों को तज करके, लोग भटकते फिरते थे।
उनके पठन तथा पाठन की ओर, जिन्होंने खींचा ध्यान।।
ज्ञानचक्षु महात्मा का, हम ....
श्रद्धांजलि हम अर्पित करते, उस महर्षि के चरणों में।
अग्नि कभी नहीं बुझने पावे, जिसे किया उसने आधान।।
ज्ञानचक्षु महात्मा का, हम ....

गुरु विरजानन्द

कर स्वामी दयानन्द को, तैयार विरजानन्द ने।
किया है सारे विश्व पर, उपकार विरजानन्द ने।।
अन्दर के चक्षु खोल के, देखा तो सारे देश में।
अज्ञान और पाखण्ड का, अन्धकार विरजानन्द ने।।1।।
तब दे के ज्योति वेद की, हाथों से दयानन्द को।
फिर से प्रकाशित कर दिया, संसार विरजानन्द ने।।2।।
तन-मन से दयानन्द ने, गुरुवर की जो सेवा करी।
बदले में दिया ज्ञान का, भण्डार विरजानन्द ने।।3।।
गुरुदक्षिणा में मांगा तो, मांगा ये दयानन्द से।
आयु पर्यन्त वेद का, प्रचार विरजानन्द ने।।4।।
गायत्री माँ की गोद में, श्रद्धा के साथ बैठ के।
परमात्मा का पा लिया था, प्यार विरजानन्द ने।।5।।
सदियों की दासता से 'पथिक' मुक्ति आज मिल गई।
बोया था जिसका बीज ही, फलदार विरजानन्द ने।।6।।

" स्वामी दयानन्द मेरे गुरु हैं। वे मेरे धर्म के पिता हैं और आर्यसमाज मेरी धर्म की माता है।"

- लाला लाजपत राय

स्वामी श्रद्धानन्द

श्रद्धा और आनन्द की इक खान श्रद्धानन्द थे।
धर्म पै जो हो गये बलिदान श्रद्धानन्द थे।।1।।

बिन्दुओं से रक्त के सींची थी वैदिक वाटिका।
महर्षि जो राम थे, हनुमान श्रद्धानन्द थे।।2।।

मनके बिखरे थे माला के, पिरोया उन्हें।
शुद्धि है जीवन तो, इसमें जान श्रद्धानन्द थे।।3।।

चाँदनी के चौक दिल्ली की मिलें हैं साक्षी।
तान जब छाती खड़े, बलवान श्रद्धानन्द थे।।4।।

जामा मस्जिद के चढ़े मिम्बर पै दिल्ली खास में।
देशे पुतले सत्य के श्रीमान श्रद्धानन्द थे।।5।।

''हमें समस्त हिन्दु जाति को एक साथ समरसता के भाव में पिरोना होगा।''
- स्वामी श्रद्धानन्द

स्वामी श्रद्धानन्द

श्रद्धानन्द की याद सब को दिला दो।
यह शुद्धि का डंका जगत में बजा दो।।
ईसाई मुसलमां हमारे हैं भाई।
प्रीति से वेदों की शिक्षा दिला दो।।
श्रद्धानन्द की याद सब को.......
करो यज्ञ घर-घर जा-जाके इनके।
जनेऊ दिला कर सन्ध्या सिखा दो।।
श्रद्धानन्द की याद सब को.......
ये अनमोल मोती जो बिखरे पड़े हैं।
पिरो सूत्र में इनकी माला बना दो।।
श्रद्धानन्द की याद सब को.......
छुआछूत का भूत जड़ से मिटाकर।
हरिजन भी कहना सभी से छुड़ा दो।।
श्रद्धानन्द की याद सब को.......
जो चाहते हो जाति का उद्धार करना।
बनो आर्य वीर और जगत को बना दो।।
श्रद्धानन्द की याद सब को.......
ऋषि के मिशन पै यों छाती अड़ाकर।
श्रद्धानन्द सम गोली खाकर दिखा दो।
श्रद्धानन्द की याद सब को.......

स्वामी श्रद्धानन्द

धन्य है बलिदान श्रद्धानन्द का।
धन्य जीवनदान श्रद्धानन्द का।।1।।
आर्य नर-नारी सभी मिलकर करें।
आज गौरव-गान श्रद्धानन्द का।।
धन्य है बलिदान ....।।1।।
बोल भारत की धरा जयकार तू।
शूरता की शान श्रद्धानन्द का।।
दे दिया सर्वस्व अपने देश को।
काम था निष्काम श्रद्धानन्द का।।
धन्य है बलिदान ....।।2।।
देश के स्वाधीनता संघर्ष में।
नाम है संग्राम श्रद्धानन्द का।।
प्रेम श्रद्धा से मनाएँ पर्व हम।
पीड़ितों के त्राण श्रद्धानन्द का।।
धन्य है बलिदान ....।।3।।
शीश जिज्ञासु झुकाते हैं जिसे।
हैं हमें अभिमान श्रद्धानन्द का।।
धन्य है बलिदान ....।।4।।

'' स्वामी श्रद्धानन्द जी दलितों के सर्वोत्तम हितकर्ता व हितचिन्तक थे।'' - बाबा साहेब अम्बेडकर

स्वामी श्रद्धानन्द

गोलियाँ सीने पे खा के चल दिये।
प्यास कातिल की बुझा के चल दिये।।
रक्त से वैदिक बगीचा सींचकर।
धर्म हित मरना सिखा के चल दिये।1।।
गोलियाँ सीने पे खा ....

झुक रहीं संगीन सीना सामने।
कदम आगे को बढ़ा के चल दिये।
गंगा तट जंगल में मंगल कर दिया।
काँगड़ी गुरुकुल बना के चल दिये।2।।
गोलियाँ सीने पे खा ....

जामा मस्जिद पे खड़े हो इक दिन।
वेद ध्वनि सबको सुनाके चल दिये।।
पाठ समता का पढ़ाया आपने।
चक्र शुद्धि का चला के चल दिये।3।।
गोलियाँ सीने पे खा ....

भाई से भाई मिलाया था गले।
प्रेम की गंगा बहा के चल दिये।4।।
गोलियाँ सीने पे खा ....

स्वामी श्रद्धानन्द

सत्संग में दयानन्द के मुंशीराम जा पहुँचा।
स्वामी के प्रवचनों ने रच दी नई कहानी।।

मुंशीराम तो राम भए बन गए ज्ञानी-ध्यानी।
सब त्याग दिया मुंशी ने पकड़ी वेद की वाणी।।

देख दशा इस देश की, शुद्धि का बाना पहन लिया।
बात बनेगी शिक्षा से, यह मसला भी गहन लिया।।

भारत के बच्चे क्यों कर, ईसा के गीत गाते हैं।
पूर्व की यह सन्तानें, पश्चिम को क्यों जाते हैं।।

खोल गुरुकुल श्रद्धानन्द ने, यह मसला भी हल किया।
दो-दो पत्र निकाल दिए, फिरंगी का दिल दहल गया।।

जामा मस्जिद पहुँच गया वेदों की बोली वाणी।
दो-दो पत्र निकाल दिए, शांतिमय क्रान्ति कर डाली।।

संगीनों पे छाती तानी, अंग्रेजों को ललकारा।
ओ३म् का झण्डा फहराया, बोला वेद का जयकारा।।

शहीद हुए खा के गोली, यूँ चला गया देश का प्यारा।
बोला वेद का जयकारा, बोला वेद का जयकारा।।

स्वामी श्रद्धानन्द

है अगरचे स्वर्ग में विश्राम श्रद्धानन्द का।
प्रलय तक जिन्दा रहेगा नाम श्रद्धानन्द का।।1।।

धर्म की खातिर जिया वो, धर्म की खातिर मरा।
जिस्म आया धर्म के ही, काम श्रद्धानन्द का।।2।।

तज दिया घर वार उसने, 'देश' सेवा के लिये।
कौम के अर्पण था धन, और धाम श्रद्धानन्द का।।3।।

हिन्दुओं के वास्ते, कुर्बान कर दी उसने जान।
मौत ही हो क्यों न खासो, आम श्रद्धानन्द का।।4।।

''अज्ञान, स्वार्थ व प्रलोभन के कारण धर्मांतरण कर बिछुड़े स्वजनों की शुद्धि करना, देश को मजबूत करने के लिए परम आवश्यक है'' - स्वामी श्रद्धानन्द

स्वामी श्रद्धानन्द

श्रद्धानन्द के गीत गाता जा।
तू दुनियाँ को आर्य बनाता चला जा।।
नहीं होने पावे कोई आर्य अधर्मी।
तू वेदों की शिक्षा दिलाता चला जा।।
श्रद्धानन्द के गीत ....
अगर श्रद्धानन्द की है तेरे मन में श्रद्धा।
तू पतितों को छाती लगाता चला जा।।
नहीं रहने पावे दलित भाई कोई।
छुआछूत को तू मिटाता चला जा।।
श्रद्धानन्द के गीत ....
अपने घरों की कुरीति मिटाकर।
तू जाति को ऊँचा उठाता चला जा।।
श्रद्धानन्द के गीत ....

कड़ी मेहनत करें और सब्र करें, आपको आपकी मेहनत का फल जरूर मिलेगा।

आर्य समाज

आर्य समाज हमारे ऋषि की, सबसे अमिट निशानी है।
अग्रगण्य बनकर समाज का, जिसने की कुर्बानी है।
पूज्य दयानन्द स्वामी ने, है इसका निर्माण किया।
दस नियमों में बांध सभी को, इसको जीवनदान दिया।
आदि मूल सबका है ईश्वर, सत् चित् आनन्द रूप अपार।
अजर अमर और अविनाशी विभु, निराकार है सर्वाधार।
पढ़ो, पढ़ाओ नित वेदों को सुनते रहो जुबानी है।
आर्य समाज हमारे ऋषि की सबसे ....
भुला चुके थे हम वेदों को, आर्य ग्रंथ लुप्त हुए।
ढोंगी अन्धविश्वासी ग्रंथ ही, इसकी जगह प्रयुक्त हुए।
सब धर्मों के अलग ग्रंथ थे, सब आपस में लड़ते थे।
एक दूसरे की निन्दा कर, नित स्वपक्ष पर अड़ते थे।
बिगड़ चुकी थी सबकी हालत, जिसकी विषम कहानी है।।
आर्य समाज हमारे ऋषि की सबसे ....
यह वह शक्ति पूज्य है, जिसके भय से बैरी डरते हैं।
देश-धर्म के परवाने, निज आन-बान पर मरते हैं।
मिशन अधूरा है स्वामी का, उसे अभी पूरा करना है।
अभी दूर है मंजिल अपनी,
आज विश्व के हर कोने में ओ३म् ध्वजा फहरानी है।।
आर्य समाज हमारे ऋषि की सबसे ....

आर्य समाज

आर्य गर हो तो, आर्य समाज में तुम आया करो।
संग सत्संग में औरों को भी, तुम लाया करो।।
रूठ बैठे जो तेरे, भाई-भाई से अलग
उनको तुम प्रेम की, भाषा में समझाया करो।।
संग सत्संग में औरों को भी ....
बेखबर चलते हैं जो, वेदों की राहों से अलग
उनको वेदों की सही, राह भी दिखाया करो।।
संग सत्संग में औरों को भी ....
जाति मजहब की खातिर, जो बँटे हिस्सों में।
तुम दयानन्द के उपदेशों से, समझाया करो।।
संग सत्संग में औरों को भी ....
अपनी उन्नति में न केवल, खुश रहना आर्यो।
दूसरों की उन्नति में, शामिल हो जाया करो।।
संग सत्संग में औरों को भी ....
दर्द जो सहते हो खुद के, तो बड़ी बात नहीं।
दर्द गर हो पराया, तुम उसे अपनाया करो।।
संग सत्संग में औरों को भी ....
करके दिखला दो, निष्काम कर्म दुनियाँ को।
त्याग सेवा की लगन, सब में जगाया करो।।
संग सत्संग में औरों को भी ....
जो जहालत की दीवार, गिरी फिर वो खड़ी।
तुम दयानन्द की मेहनत को, न यूँ जाया करो।।
संग सत्संग में औरों को भी ....

आर्य समाज

जग को जगाने वाला आर्य समाज है।
जग की पुकार है व युग की आवाज है।।

ईश की उपासना का रास्ता बता दिया।
जड़ की आराधना के पाप से बचा लिया।।
ढोंग-ढोंग जिनके भय से डोल-रहा आज है।
आर्य समाज है यह आर्य समाज है।।1।।

कौन था जो सोई हुई, जाति को जगा गया।
विधवा अछूतों को, वह गले से लगा गया।।
दया का भण्डार, दयानन्द महाराज है।
आर्य समाज है यह आर्य समाज है।।2।।

ठाकुरों की ठोकरों ने, कर दिया बेहाल था।
दम्भियों का फैला हुआ, चारों ओर जाल था।
दीन देश जाति की, बचाई जिसने लाज है।
आर्य समाज है यह आर्य समाज है।।3।।

नारियाँ भी वेद का, हैं गान आज कर रहीं।
रूढ़ियाँ कुरीतियाँ है, अपने आप मर रहीं।
वेद के प्रकाश का जो कर रहा सुकाज है।
आर्य समाज है यह आर्य समाज है।।4।।

निरन्तर : 407

कौन है जो आर्यों की भावना जगा गया।
कौन है जो मौत से जूझना सिखा गया।।
श्रद्धानन्द, लेखराम, प्यारा हंसराज है।
आर्य समाज है यह आर्य समाज है।।5।।

वार दी देश हित अनेकों की जवानियाँ।
रक्त से लिखी है इसने देश की कहानियाँ।
लाजपत लुटा के आज पा लिया स्वराज है।
आर्य समाज है यह आर्य समाज है।।6।।

कौन भोगवाद से, जो विश्व को बचायेगा।
पाप पुण्य क्या है, कौन विश्व को सुझायेगा।
मानवीय रोग का तो, एक ही इलाज है।
आर्य समाज है यह आर्य समाज है।।7।।

संगठित कार्य, दृढ़ता, उत्साह और समन्वयात्मकता की दृष्टि से आर्य समाज की क्षमता का सामना कोई समाज नहीं कर सकता - सुभाष चन्द्र बोस

आर्य समाज

जिसने महिमण्डल को, फिर से वेदों का सन्देश दिया।
भ्रमित जनों को मार्ग दिखा कर, पावनतम उपदेश दिया।
जिसके संस्थापक थे ऋषिवर दयानन्द से विज्ञाता।
जो आगे बढ़ बना देश का प्रहरी, गौरव उद्‌गाता।
मनुष्यता संपूरित जो है सत्य अहिंसा जिसकी साज।
सत्य-शिवं-सुन्दरता जिसमें, वही हमारा आर्य समाज।।1।।

लेखराम-श्रद्धानन्द जैसे मिले इसे हैं बलिदानी।
भारत के इतिहास पृष्ठ पर, अंकित गाथा लासानी।
जिसके अमर सपूतों ने है, तोड़ा माया का बन्धन।
जिसने नष्ट किया भारत अबलाओं का, दारुण क्रन्दन।
हर्ष! हर्ष!! है पूर्ण किया उसने जीवन शतवर्षीय आज।
सत्य-शिवं-सुन्दरता जिसमें, वही हमारा आर्य समाज।।2।।

भूले भारत के जनगण को, जिसने मार्ग दिखाया है।
वैदिक संस्कृति पुरा काल की, पुनः धरा पर लाया है।
जिसने भूमंडल भर के, अज्ञान तिमिर को ललकारा।
बीच भँवर में फँसी मनुजता को जिसने है उद्धारा।
ढोंगी-ठग मुल्लाओं का सब, जिसने खोल दिया राज।
सत्य-शिवं-सुन्दरता जिसमें, वही हमारा आर्य समाज।।3।।

आर्य समाज बढ़े उन्नति पर, स्वर्ग बनेगी वसुन्धरा।
कण-कण प्रमुदित होगा, निश्चय हर्षित होगी दिव्यधरा।
बढ़ो! सपूतो!! ओ३म् ध्वजा, सारे जग में लहराना है।
शान्ति सफलता-समृद्धि के, संगीत हमें अब गाना है।
दृगोन्मेष कर रहीं दिशाएँ, जाग उठा है अब गिरिराज।
सत्य-शिवं-सुन्दरता जिसमें, वही हमारा आर्य समाज।।4।।

आर्य समाज

देश का सेवक .... आर्य समाज
धर्म का रक्षक ....आर्य समाज
मार्गदर्शक .... आर्य समाज
आनन्दवर्धक ....आर्य समाज
चुनता है काँटे .... आर्य समाज
अमृत बाँटे .... आर्य समाज
काटे जहालत .... आर्य समाज
हरे जलालत .... आर्य समाज
जन हितकारी .... आर्य समाज
पर–उपकारी .... आर्य समाज
सत्यचारी .... आर्य समाज
प्रेमपुजारी .... आर्य समाज
स्कूल चलावे ....आर्य समाज
विद्या पढ़ावे ....आर्य समाज
गुरुकुल खोले ....आर्य समाज
ज्ञान टटोले ....आर्य समाज
शुद्धि करावे ....आर्य समाज
आर्य बनावे ....आर्य समाज
यज्ञ रचावे ....आर्य समाज
सन्ध्या सिखावे ....आर्य समाज

आर्य वीर

क्र.सं.	आर्य वीर - गीत के बोल	पृ. सं.
1.	उठो जवानों करो प्रतिज्ञा, जग को आर्य बनाना है	411
2.	उठो दयानन्द के सिपाहियों समय पुकार रहा है	412
3.	उठो आर्य वीरो, तुम जग को जगा दो	413
4.	आर्य कुमारो, यही व्रत धारो, देश जगाना है	415

देश भक्ति

क्र.सं.	देश भक्ति - गीत के बोल	पृ. सं.
1.	विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झण्डा ऊँचा रहे हमारा	417
2.	अपनी आजादी को हम हरगिज मिटा सकते नहीं	418
3.	आओ बच्चों तुम्हें दिखायें झांकी हिन्दुस्तान की	419
4.	नहीं बिगाड़ा भारत का कुछ विदेशी तलवारों ने	421
5.	भारतवर्ष महान है, ऋषियों की यह शान है	422
6.	कर चले हम फिदां जानों तन साथियों	423
7.	देश धर्म पर हंस कर मरना, भगवान हमें सिखा देना	425
8.	हुए जहाँ नृप दशरथ से सुत रामचन्द्र	426

आदर्श गृहस्थ

क्र.सं.	आदर्श गृहस्थ - गीत के बोल	पृ. सं.
1.	पति, पत्नी का घर में, जो सच्चा प्यार हो जाये	428
2.	जिस घर में एक दूजे की बात जाये मानी	429
3.	धन्य वही परिवार है, जिसमें सद्व्यवहार है	430

आर्य वीर

उठो जवानों करो प्रतिज्ञा जग को आर्य बनाना है।
भूले भटके भ्रान्त पथिक को फिर सन्मार्ग दिखाना है।।
मतवादों का अन्ध कुहांसा, दिशा बोध भूला मानव।
वैदिक सूर्य विभा चमकाकर, निज कर्तव्य निभाना है।।
उठो जवानों करो प्रतिज्ञा ....

मत-पन्थों की पगडंडी में, उलझ रहा मनुपुत्र सखे।
वैदिक राजमार्ग पर लाकर, लक्ष्य सिद्धि तक लाना है।
उठो जवानों करो प्रतिज्ञा...........

एक उपास्य ओ३म् हम सबका, आर्य नाम अति प्यारा है।
गायत्री गुरुमन्त्र, नमस्ते, अभिवादन बतलाना है।।
धर्म ग्रन्थ हैं वेद हमारा, वैदिक धर्म सनातन है।
भाषा संस्कृत, एक एकता, सबको यह सिखलाना है।।
उठो जवानों करो प्रतिज्ञा...........

एक पिता के पुत्र सभी हैं, हम सन्मार्ग भाई भाई।
सुख-दु:ख मिलकर बांटे सारे, यों जग स्वर्ग बनाना है।
उठो जवानों करो प्रतिज्ञा...........

आर्य वीर

उठो दयानन्द के सिपाहियों, समय पुकार रहा है।
देशद्रोह का विषधर फन, फुला फुंकार रहा है।।टेक।।
उठो विश्व की सूनी आँखें, काजल मांग रही हैं।
उठो अनेकों द्रुपद-सुताएँ, आँचल मांग रही हैं।
मरघट को पनघट-सा कर दो, जग की प्यास बुझा दो।
भटक रहे जो मरुस्थलों में, उनको राह दिखा दो।
गले लगा लो उनको, जिनको जग दुत्कार रहा है।
उठो दयानन्द के सिपाहियों ....

तुम चाहो तो खारे जल को, सोम बना सकते हो।
तुम चाहो तो पत्थर को भी, मोम बना सकते हो।
तुम चाहो तो बंजर में भी, बाग लगा सकते हो।
तुम चाहो तो पानी में भी, आग लगा सकते हो।
जातिवाद जग की नस-नस में, जहर उतार रहा है।
उठो दयानन्द के सिपाहियों ....

याद नहीं क्या भूल गए, जो ऋषि को वचन दिया था।
शायद वायदा याद नहीं, जो आपने कभी किया था।
वचन दिया था ओम्-पताका, कभी न बुझने देंगे।
हवन-कुण्ड की अग्नि घरों से, कभी न बुझने देंगे।
लहू शहीदों का, गद्दारों को धिक्कार रहा है।
उठो दयानन्द के सिपाहियों ....

उजली-उजली दिखने वाली, हर चादर मैली है।
लेखराम का लहू पुकारे, आँख जरा तो खोलो।
एक बार मिलकर सारे, ऋषि दयानन्द की जय बोलो।
वेदज्ञान का 'व्यथित' सूर्य तुम्हें निहार रहा है।
उठो दयानन्द के सिपाहियों ....

आर्य वीर

उठो आर्य वीरों, तुम जग को जगा दो।
इन वैदिक नादों को, घर-घर गूंजा दो।।
प्रभु एक है, और सभी नाम हैं गुणवाचक।
वही सृष्टि कर्त्ता, वही है पालक, वही है विनाशक।।
यदि चाहते हो, विश्व को एक राह पर लाना।
तो अनेक काल्पनिक देवी-देवताओं को, मन से भगा दो...(1)
उठो आर्य वीरों तुम जग को ....

राम, कृष्ण, शिव ने भी था, इसी को माना।
योग, साधना से, इसे हृदय में था जाना।।
यदि चाहते हो महापुरुषों के, चरित्र को अपनाना।
तो अवतारवाद के भ्रम को, तुम जड़ से मिटा दो.... (2)
उठो आर्य वीरों तुम जग को ....

वेद ईश्वर की वाणी है, ऋषि ने बताया,
उसकी होती नहीं प्रतिमा, यह वेदों में दर्शाया,
यदि चाहते वेदों को, विश्व भर में फैलाना
तो निराकार है ईश्वर, यह सारे जग को जता दो ..... (3)
उठो आर्य वीरों तुम जग को ....

निरन्तर 414

सन्ध्या, हवन है, ईश्वर उपासना की रीति,
सदाचार, सद्व्यवहार और परहित में हो प्रीति,
यदि चाहते हो ईश्वर प्राप्ति की, एक पद्धति लाना
तो प्रभु पाने की सच्चा राह, अष्टांग योग सब को बता दो..........(4)
उठो आर्य वीरों तुम जग को ....

ऋषि बोध दिवस ही नहीं, वह जग कल्याण दिन था,
हुआ सत्य ज्ञान से प्रेरित, ऋषि दयानन्द का मन था
यदि चाहते हो, प्राणी मात्र को खुशहाल बनाना,
तो यही सत्य वेदों का ज्ञान, जग के जन-जन को सुना दो ....(5)
उठो आर्य वीरों तुम जग को ....

आदमी एक पत्थर को काट कर उसे शक्ल देता है, फिर उसे अपना भगवान् मानता है, फिर उसी से डरता है, क्या यही पूजा है?

आर्य वीर

आर्य कुमारों यही व्रत धारो-देश जगाना है।
आर्य बनाना है जी, आर्य बनाना है।
कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का दे रहा वेद इशारा।
उसे कार्य रूप में लाना है, बस काम तुम्हारा।
चौबीस अक्षरी मन्त्र गायत्री, सबको सिखाना है।।1।।
आर्य बनाना है जी, आर्य बनाना है।।
सब सत्य विद्या, जो पदार्थ विद्या से जाने जाते।
उन सबका है आदि मूल, परमेश्वर यह बतलाते।
जो पत्थर पूजें नाहक जूझें, उन्हें समझाना है।।2।।
आर्य बनाना है जी, आर्य बनाना है।।
वेद का पढ़ना और पढ़ाना, सुनना और सुनाना।
समझें इसको परम धर्म, ना कोई करें बहाना।
जो ग्रंथ अशुद्ध हैं, वेद-विरुद्ध हैं उनको हटाना है।।3।।
आर्य बनाना है जी, आर्य बनाना है।।
पंच यज्ञ घर-घर में करना सीखें, सब नर-नारी।
दुर्व्यसनों से दूर रहें, हो सदाचारी उपकारी।
असली राह है यही भाई, जहाँ तुम्हें जाना है।।4।।
आर्य बनाना है जी, आर्य बनाना है।।

चरित्र और आचार के पक्के, रहें पाप से डर के।
भ्रष्टाचार का नाम न लें, मिटे अन्याय विचर के।
कर्म से, मन से और वचन से, हो एक दिखाना है।।5।।
आर्य बनाना है जी, आर्य बनाना है।।
मातृवत् परदारेषु पर धन को मिट्टी जाने।
वैदिक शिष्टाचार न भूलें, बरतें ढंग पुराने।
था यही गुण अन्दर-जिससे 'वीरेन्द्र' झुका जमाना है।।6।।
आर्य बनाना है जी, आर्य बनाना है।।

संस्कार ही मानव के आचरण की नींव होता है। जितने गहरे संस्कार होते हैं, उतना ही अडिग मनुष्य अपने कर्तव्य पर, अपने धर्म पर, सत्य पर और न्याय पर होता है।

इस दुनियां में बिना स्वार्थ के प्यार सिर्फ माँ ही कर सकती है।

देश भक्ति

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झण्डा ऊँचा रहे हमारा।।
सदा शक्ति बरसाने वाला, प्रेम सुधा सरसाने वाला,
वीरों को हरषाने वाला, मातृ-भूमि का तन मन सारा।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा।।
स्वतन्त्रता के भीषण रण में, लख कर जोश बढ़े क्षण-क्षण में,
काँपे शत्रु देख कर मन में, मिट जाये भय संकट सारा,
झण्डा ऊँचा रहे हमारा।।
इस झण्डे के नीचे निर्भय, राष्ट्रीय शक्ति जगावे निश्चय।
बोलो भारत माता की जय, विश्वशान्ति ध्रुव लक्ष्य हमारा।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा।।
आओ, प्यारे वीरों आओ! देश, धर्म पर बलि-बलि जाओ,
एक साथ सब मिल कर गाओ, प्यारा भारत देश हमारा।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा।।
इसकी शान न जाने पाये, चाहे जान भले ही जाये।
विश्व विजय करके दिखलाये, तब होवे प्रण पूर्ण हमारा।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा, विजयी विश्व तिरंगा प्यारा।।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा।।

देश भक्ति

अपनी आजादी को हम हरगिज मिटा सकते नहीं।
सर कटा सकते हैं लेकिन, सर झुका सकते नहीं।
हमने सदियों से ये आजादी की नेमत पाई हैं,
सैंकड़ों कुरबानियाँ देकर ये दौलत पाई है,
मुस्कराकर खाई हैं सीनों पे अपने गोलियाँ
कितने वीरानों से गुजरे हैं तो जन्नत पाई हैं
खाक में हम अपनी इज्जत को मिला सकते नहीं
अपनी आजादी को हम हरगिज ....
क्या चलेगी जुल्म की, अहले वफा के सामने
आ नहीं सकता कोई शोला हवा के सामने
लाख फौज लेके आये अमन का दुश्मन कोई
रुक नहीं सकता, हमारी एकता के सामने
हम तो पत्थर हैं, जिसे दुश्मन हिला सकते नहीं
अपनी आजादी को हम हरगिज ....
वक्त की आवाज पे, हम साथ चलते जायेंगे
हर कदम पर जिन्दगी का, रुख बदलते जायेंगे
गर वतन में भी मिलेगा, कोई गद्दारे वतन
अपनी ताकत से हम, उसका सर कुचलते जायेंगे।
एक धोखा खा चुके हैं, और खा सकते नहीं।
अपनी आजादी को हम हरगिज ....
हम वक्त के नौजवां हैं, हमसे जो टकरायेगा
वो हमारी ठोकरों से, खाक में मिल जायेगा
वक्त के तूफान में, बह जायेंगे जुल्मों सितम
आसमां पर ये तिरंगा, उम्र भर लहरायेगा
जो सबक नेता जी ने सिखलाया, उसको भुला सकते नहीं
अपनी आजादी को हम हरगिज ....

देश भक्ति

आओ बच्चों तुम्हें दिखायें झाँकी हिन्दुस्तान की।
इस मिट्टी में तिलक करो, यह धरती है बलिदान की।।
उत्तर में रखवाली करता, पर्वत राज विराट है।
दक्षिण में चरणों को धोता, सागर का सम्राट है।।
यमुना के तट को देखो, यह देखो गंगाघाट है।
बाट-बाट में हाट-हाट में, यहाँ निराला ठाठ है।।
देखो ये तस्वीरें अपने गौरव की, अभिमान की।।
इस मिट्टी से तिलक करो, यह ....
यह है अपना राजपूताना, नाज इसे तलवारों पै।
इसने सारा जीवन काटा, बरछी तीर कटारों पै।।
यह प्रताप का वतन पला है, आजादी के नारों से।
कूद पड़ी थीं यहाँ हजारों, पद्मनियाँ अंगारों पै।।
बोल रही कण-कण से, है कुर्बानी राजस्थान की।।
इस मिट्टी से तिलक करो, यह ....
देखो मुल्क मराठों का यह, यहाँ शिवाजी डोला था।
मुगलों की ताकत को जिसने, तलवारों पै तोला था।
हर परवत पै आग जली थी, हर पत्थर इक शोला था।

निरन्तर : 420

बोली हर-हर महादेव की, बच्चा-बच्चा बोला था।
यहाँ शिवाजी ने रक्खी थी, लाज हमारी शान की।।
इस मिट्टी से तिलक करो, यह ....
जलियाँवाला बाग ये देखो, यहाँ चली थीं गोलियाँ।
यह मत पूछो किसने खेलीं, यहाँ खून की होलियाँ।।
एक तरफ बन्दूकें दन-दन, एक तरफ थीं टोलियाँ।
मरने वाले बोल रहे थे, इन्कलाब की बोलियाँ।।
यहाँ लगा दी बहनों ने भी, बाजी अपनी जान की।।
इस मिट्टी से तिलक करो, यह ....
यह देखो बंगाल यहाँ का, हर चप्पा हरियाला है।
यहाँ का बच्चा-बच्चा अपने, देश पै मरने वाला है।।
ढाला है इसको बिजली ने, भूचालों ने पाला है।
मुट्ठी में तूफान बँधा है, और प्राण में ज्वाला है।
जन्म भूमि है यही हमारे, वीर सुभाष महान की।।
इस मिट्टी से तिलक करो, यह ....

लाखों किलोमीटर की यात्रा भी एक कदम से ही शुरू होती है।

देश भक्ति

नहीं बिगाड़ा भारत का, कुछ विदेशी तलवारों ने।
भारत को बरबाद किया है, भारत के गद्दारों ने।

पृथ्वीराज के साथ यदि, जयचन्द गद्दारी करता ना।
सपने में भी मुहम्मद गौरी, कदम इधर को धरता ना।
सोमनाथ पर यदि पुजारी, दिखलाते कायरता ना।
तो गजनी का मुहम्मद, खजाने यहाँ से धन के भरता ना।
दाहर और जयपाल गंवा दिए, खुदगरजी मक्कारों ने....।
नहीं बिगाड़ा भारत का कुछ ....
गद्दारों का छोड़ा हुआ, ना खाली अब तक तीर गया।
अमरसिंह को खत्म किया, प्रताप को बना फकीर गया।
छत्रपाल शिवाजी नलवा, पिंजरे में बन्दा वीर गया।
ब्राह्मणों का स्थान आज, बन यवनों का कशमीर गया।
गोविन्दसिंह की कला छुपा ली, सरहिन्द की दीवारों ने......।
नहीं बिगाड़ा भारत का कुछ ....
ऋषि दयानन्द को जहर पिलाकर, खपा दिया गद्दारों ने।
श्रद्धानन्द को गोली मारकर, मिटा दिया गद्दारों ने।
रंगून की घाटी में, सुभाष को धोखा दिया गद्दारों ने।
अखण्ड भारत को कई हिस्सों में, बांट दिया गद्दारों ने।
यवनों की तादाद बढ़ा दी, बेहूदे प्रचारों ने।।
नहीं बिगाड़ा भारत का कुछ ....

देश भक्ति

भारतवर्ष महान है, ऋषियों की यह शान है।
प्यारा हिन्दुस्तान है, यह प्यारा हिन्दुस्तान है।
उज्जवल मुकुट हिमालय जैसा, पाँव पसारे सागर है।
गंगा, यमुना जैसी नदियाँ, नीला-नीला अम्बर है।
मुक्त हृदय से मिला हुआ परमेश्वर का वरदान है।
भारतवर्ष महान है, ऋषियों की यह ....
चन्दन जैसी मिट्टी इसकी, वायु जिसकी अमृत है।
ठण्डा मीठा जल है इसका, ज्यूँ गुलाब का शरबत है।
शाम-सवेरे मन बहलावे, फसलों की मुस्कान है।
भारतवर्ष महान है, ऋषियों की यह ....
भरी पड़ी इसके आँगन में, इतिहास की है गाथा।
जिसके सम्मुख झुक जाता है, विदेशियों की भी माथा।
मिला पवित्र वेदों का भी, इस धरती को ज्ञान है।
भारतवर्ष महान है, ऋषियों की यह ....
जिसकी गोदी में हम खेले, हम हैं उसके पहरेदार।
इसकी रक्षा हित हम सारे, देंगे अपना तन-मन वार।
बलिदान देकर भी रखनी, भारत-माँ की शान है।
भारतवर्ष महान है, ऋषियों की यह ....
देश, धर्म पर मरने वाला, ही सच्चा इन्सान है।
करता जो गद्दारी इससे, यह काफिर, बेईमान है।
देश-भक्ति से ओतप्रोत यह, 'नन्दलाल' का गान है।।
भारतवर्ष महान है, ऋषियों की यह ....

देश भक्ति

कर चले हम फिदां जाने तन साथियों,
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों।
सांस थमती गयी, नब्ज जमती गयी,
फिर भी बढ़ते कदमों को न रुकने दिया।
कट गए सर हमारे तो कुछ गम नहीं,
सर हिमालय का हमने न झुकने दिया।
मरते–मरते रहा बांकापन साथियों,
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों।(1)

जिन्दा रहने के मौसम बहुत हैं मगर,
जान देने की रुत रोज आती नहीं।
हुस्न और इश्क दोनों को रुसवा करे,
यह जवानी जो खूँ में, नहाती नहीं।
आज धरती बनी हैं दुल्हन साथियों,
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों।(2)

राह कुर्बानियों की न वीरान हो,
तुम सजाते ही रहना नए काफिले।

निरन्तर : 424

फतह का जश्न इस जश्न के बाद है,
जिंदगी मौत से मिल रही है गले।
बांध लो अपने सर पे कफन साथियों,
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों।(3)

खींच दो अपने खूँ से, जमीं पर लकीर,
इस तरफ आने पाए न रावण कोई।
तोड़ दो हाथ, अगर हाथ उठने लगे,
छूने पाये न सीता का, दामन कोई।
राम हो तुम, तुम्हीं लक्ष्मण साथियों,
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों।(4)

औरों के हम दोष न देखें, अपने दोष विचारें।
निन्दा करें न कभी किसी की, यही एक गुण हम धारें।।

''हम आजादी तभी पाते हैं, जब अपने जीवित रहने का पूरा मूल्य चुका देते हैं - रविन्द्रनाथ टैगौर

देश भक्ति

देश धर्म पर हंसकर मरना, भगवान् हमें सिखा देना।
आन पड़ी है नाव भंवर में, उसको पार लगा देना।।
काम क्रोध मद लोभ तजें हम, वेदों के अनुयायी बनें।
सभी जनों का मान करें हम, सब भाई-भाई बनें।
एकता का पीयूष पिलाकर, भगवन्! एक बना देना।।1।।
देश धर्म पर हंसकर मरना, भगवान .....
भीष्म जैसे वीर बनें हम, अर्जुन सम रणधीर बनें।
वीर शिवा राणा, प्रताप, मन्ना झाला हम्मीर बनें।
तन मन धन सब अर्पण करना, भगवान् हमें सिखा देना।।2।।
देश धर्म पर हंसकर मरना, भगवान .....
दयानन्द से ब्रह्मचारी हम, भीम और हनुमान बनें।
मातृभूमि की रक्षा में निज, हँसते-हँसते प्राण तजें।।
पथ में जो बाधाएँ आएँ, भगवन! दूर हटा देना।।3।।
देश धर्म पर हंसकर मरना, भगवान .....
कायरता को दूर हटा दें, विद्या से भरपूर बनें।
परहित में सर्वस्व तजें हम, दु:खियों के दु:ख दूर करें।।
वेद ज्ञान की ज्योति जलाकर, सत्पथ हमें दिखा देना।।4।।
देश धर्म पर हंसकर मरना, भगवान .....

देश भक्ति

हमारा भारत वर्ष महान

हुए जहाँ नृप दशरथ से सुत रामचन्द्र भगवान्।
वन में रहें वर्ष चौदह लौ पितु की आज्ञा मान।।
हमारा भारत वर्ष महान

गौतम, कपिल, कणाद, पतंजलि,जैमिनि, व्यास, सुजान
बाल्मीकि, कवि कालिदास, तुलसी, कबीर, रसखान।।
हमारा भारत वर्ष महान

बुद्ध, शंकराचार्य हुए जहाँ, चाणक्य नीति निधान।
ध्रुव, प्रहलाद, सदृश बालक, प्रभु विश्वासी मतिमान।।
हमारा भारत वर्ष महान

योगिराज श्री कृष्ण हुए जहाँ, भीमार्जुन बलवान।
गुरु गोविन्द, प्रताप शिवाजी, पृथ्वीराज चौहान।।
हमारा भारत वर्ष महान

हुई जहाँ विदुषी गार्गी, सीता पद्मिनी समान।
झाँसी की रानी का जौहर, जाने सकल जहान।।
हमारा भारत वर्ष महान

निरन्तर : 427

कुंवरसिंह स्वातन्त्रय पुजारी श्रद्धानन्द गुणवान।
भगतसिंह, चन्द्रशेखर, बिस्मिल, अशफा उल्ला खान।
हमारा भारत वर्ष महान

दयानन्द ऋषि, लेखराम, श्री सावरकर महान।
देश धर्म हित दिए जिन्होंने, हँसते-हँसते प्राण।।
हमारा भारत वर्ष महान

तिलक, गोखले, जहाँ लाजपत गरजे सिंह समान।
हुए सुभाष, लाला लाजपत राय, स्वदेश पर कुरबान।।
हमारा भारत वर्ष महान

करो 'प्रकाश' प्रेम से नित उन वीरों के गुणगान।
किए जिन्होंने तन, मन, धन, प्रिय स्वदेश हित बलिदान।।
हमारा भारत वर्ष महान

अपने देश की रक्षा करना, केवल सैनिकों का कर्तव्य नहीं, प्रत्येक आम जन का फर्ज है।

आदर्श गृहस्थ

(गृहस्थ सुधार, स्वर्ग का द्वार)

पति, पत्नी का घर में, जो सच्चा प्यार हो जाये।
बहे फिर प्रेम की गंगा, सुख नर–नार हो जाये।।
जहाँ शिक्षित हो देवी, गृहस्थ का कार्य सुन्दर।
मधुर बोलें जहाँ देवी, सुखी परिवार हो जाये।।
पति, पत्नी का घर में जो सच्चा ....
दे शिक्षा ऐसी बच्चों को, बनें विद्वान् सब बालक।
धर्म शिक्षा का गर, इस देश में प्रचार हो जाये।।
पति, पत्नी का घर में जो सच्चा ....
न हो अपमान देवी का, किसी भी महल मैड़ी में।
यदि आदर हो देवी का, सुख घर बार हो जाये।।
पति, पत्नी का घर में जो सच्चा ....
बहू और सास का नाता, हो पुत्री जैसे और माता।
बहू और सास का घर में, फिर पूरा प्यार हो जाये।।
पति, पत्नी का घर में जो सच्चा ....
हों बेटे आज्ञाकारी, व सारे भाई प्रेमी हों।
विवाह गुण कर्म से होवे, सुखी संसार हो जाये।।
पति, पत्नी का घर में जो सच्चा ....
नरक का द्वार जो 'नन्दलाल', कहते गृहस्थ को मूर्ख।
चलें वेदों की शिक्षा पर, तो स्वर्ग का द्वार हो जाये।।
पति, पत्नी का घर में जो सच्चा ....

आदर्श गृहस्थ

जिस घर में एक दूजे की, बात जाय मानी,
उस घर कभी न आये, कोई भी परेशानी।।
आकाश में नहीं है, स्वर्गों की कोई दुनियाँ।
बेकार के भरम में, भटकी हुई है दुनियाँ।।
वो ही घर स्वर्ग है, जिसमें होती है मधुरवाणी।।1।।
जिस घर में एक दूजे की बात ....
माता-पिता की सेवा, भी फर्ज है हमारा।
माँ बाप से ही है, नामों निशा हमारा।।
माँ बाप की ही आज्ञा, जाती है जहाँ मानी ।।2।।
जिस घर में एक दूजे की बात ....
सन्तान पैदा करके, जो आजाद छोड़ देते।
ऐसे माँ बाप एक दिन, सर को पकड़ के रोते।।
बच्चों पे शुरू से ही, रखते जो निगरानी।।3।।
जिस घर में एक दूजे की बात ....
सन्तान जब बड़ी हो, तो डन्डे से न मनाओ।
गर्मी छोड़ करके, फिर प्यार से समझाओ।।
जहाँ प्यार है वहीं है, सुख चैन की निशानी।।4।।
जिस घर में एक दूजे की बात ....

सुखी परिवार

धन्य वही परिवार है, जिसमें सद्व्यवहार है।
घर में ही फिर स्वर्ग सा, सच्चा सौख्य अपार है।।टेक।।
पिता पुत्र भाई-भाई सब, आपस में मिल रहते हैं।
प्रीति प्रतीति हृदय में रखते, कड़वे वचन न कहते हैं।
पिता पुत्र को प्यार करे, पुत्र परम सत्कार करे।
आत्मीयता एकता, जीवन का आधार है।।1।।
धन्य वही परिवार है जिसमें ....
बड़ा भ्रात छोटे भ्राता को, सदा बराबर का जाने।
छोटा भी निज बड़े भ्रात को, पूज्य जान आज्ञा माने।
अगर कोई कुछ कह देवे, दूजा उसको सह लेवे।
सच जानो संसार में, सहनशीलता ही सार है।।2।।
धन्य वही परिवार है जिसमें ....
सास-बहू, ज्येष्ठा-देवरानी, जितनी भी है महिलाएँ।
बोलें ऐसे बैन बज रही हों, मानो मृदु वीणाएँ।
ना झगड़ा, उत्पात करें कभी, न ओछी बात करें।
वहाँ शांत वातावरण, जहाँ न द्वेष विकार है।।3।।
धन्य वही परिवार है जिसमें ....

निरन्तर : 431

सास बहू को समझे पुत्री, बहू सास जी की माता।
जेठानी-देवरानी में हो, सगी बहिन का सा नाता।
सद्गुण वाली देवियाँ, कहलाती हैं लक्ष्मियाँ।
गृहस्थ के उद्धार का, इन पर पूरा भार है।।4।।
धन्य वही परिवार है जिसमें ....
पत्नी पति को देव, और पति समझे देवी पत्नी को।
कभी भूल से भी ना दुखाते, जीवन संगिनी के जी को।
पत्नी भी न दु:खी रखे, पति के प्रति सद्भाव रखे।
दोनों में यदि मेल है, जीवन नैय्या पार है।।5।।
धन्य वही परिवार है जिसमें ....
जहाँ सुशिक्षित सभ्य बड़े हों, सभ्य बच्चे होते है।
जाति सुधारक धर्म प्रचारक, देशभक्त सच्चे होते हैं।
नहीं सिनेमा की लत है, डाली अच्छी आदत है।
जीवन उसका सात्विकी, जिसका उच्च विचार है।।6।।
धन्य वही परिवार है जिसमें ....
सत्पुरुषों का आदर, सन्ध्या-अग्निहोत्र सत्संग करें।
एक ईश आराधना, यम नियमों की साधना करें।।
सहित मन 'लालमन' स्वर्णिम फिर संसार है।।7।।
धन्य वही परिवार है जिसमें ....

माता-पिता

क्र.सं. माता-पिता गीत के बोल **पृ. सं.**

1. हम कभी माता-पिता का, ऋण चुका सकते नहीं 433
2. जो माता-पिता हैं पूज्य अरे! तुम उनको क्यों ठुकराते हो 434
3. तुम भूलना सब कुछ मगर, माँ-बाप को मत भूलना 435

स्त्री-सम्मान

क्र.सं. स्त्री-सम्मान गीत के बोल **पृ. सं.**

जब तक स्त्री जाति का, सत्कार न होगा 437

गौ-सेवा-सम्मान गीत के बोल

गौ और स्त्री जाति का, जब तक मान नहीं होगा 439

मांसाहार-निषेध गीत के बोल

1. वेदवाणी में मानव को प्रभु ने कहा 441
2. देख बन्दे तेरी है यही जिन्दगानी 444

नव वर्ष-गीत के बोल

नव वर्ष में नई-नई ले शुभ कामनाएँ 445

मकर संक्रान्ति पर्व गीत के बोल

उत्तरायण पर्व का प्रारम्भ हो इस पर्व का 446

माता-पिता

हम कभी माता-पिता का, ऋण चुका सकते नहीं।
इनके तो अहसाँ हैं इतने, हम गिना सकते नहीं।।टेक।।
हम कभी माता-पिता का ऋण ....
वो कहाँ पूजा में शक्ति, वो कहाँ फल जाप का।
हो तो हो इनकी कृपा से, खातमा संताप का।
इनकी सेवा से मिले धन, ज्ञान बल लम्बी उमर।
स्वर्ग से बढ़कर है जग में, आसरा माँ बाप का।
इनकी तुलना में कोई, वस्तु भी ला सकते नहीं।।
हम कभी माता-पिता का ऋण ....
देख लें हमको दु:खी तो, भर लें अपने नैन ये।
इक हमारी सुख की खातिर, तड़पते दिन रैन ये।
भूख लगती प्यास ना और, नींद भी आती नहीं।
कष्ट हो तन पर हमारे, हों उठे बेचैन ये।
इनसे बढ़कर देवता भी, सुख दिला सकते नहीं।।
हम कभी माता पिता का, ऋण ....।।2।।
पढ़ लो वेद और शास्त्र का ही, एक यह मर्म है।
योग्यतम सन्तान का यह, सबसे उत्तम कर्म है।
इनके चरणों में यह तन, मन, धन लुटाना धर्म है।
जगत में जब तक रहे, सेवा करें माँ बाप की।
यह 'पथिक' वह सत्य है, जिसको मिटा सकते नहीं।
हम कभी माता पिता का, ऋण ....।।3।।

माता-पिता

जो मात-पिता हैं पूज्य अरे! तुम उनको क्यों ठुकराते हो।
जिसने तुमको पाला पोसा, उनको ही अकड़ दिखाते हो।
बचपन में जब रोते देखा, तो तुम्हें गोद में उठा लिया।
थोड़ा भी देख दु:खी अगर, चूमा पुचकारा प्यार किया।
उपकार अपार किये इन्होंने, क्या उन सबको तुम भूल गये।
सब समर्थ होकर निर्लज्जों! तुम इन पर रौब जमाते हो।
जो मात-पिता हैं पूज्य अरे! तुम उनको क्यों ठुकराते हो।।1।।

हाँ! स्वयं भूख सहकर माँ ने, भर पेट तुम्हें खिलाया था।
खुद तो गीले में सोई माँ, सूखे में तुम्हें सुलाया था।
नस नस में माँ के आँचल का, जो दूध प्रवाहित होता है।
तुम उसे कलंकित करते हो, यह लख पत्थर भी रोता है।
इन्होंने तो फूल बिछाये तुम्हें, तुम कांटे क्यों बिछाते हो।
जो मात-पिता हैं पूज्य अरे! तुम उनको क्यों ठुकराते हो।।2।।

तुम लाखों रोज कमाओ, पर किंचित् भी लाभ नहीं इनको।
तुम दुनिया से आदर पावो, पर इससे क्या मिलता इनको।
तो जग के सारे सुख साधन, काँटे बन जायेंगे तुमको।
इसलिए आशीष लो इनके, क्यों इनका हृदय दु:खाते हो।
जो मात-पिता हैं पूज्य अरे! तुम उनको क्यों ठुकराते हो।।3।।

इन्होंने तो निश्छल प्यार किया, तुम इनसे कटुता रखते हो।
क्यों तुनक-तुनक कटु वचनों से, इनका मन छलनी करते हो।
वैसा ही अपने पुत्रों से, तुम पाओगे लिखकर रख लो।
तुम भी दुत्कारे जाओगे, क्यों अभिमान दिखाते हो।
जो मात-पिता हैं पूज्य अरे! तुम उनको क्यों ठुकराते हो।।4।।

माता-पिता

तुम भूलना सब कुछ मगर, माँ-बाप को मत भूलना।
कर्जा बहुत माँ-बाप का, सिर पर चढ़ा मत भूलना।।टेर।।

मुखड़ा तुम्हारा देखने, पूजे थे बहु-देवी देवता।
जन्मे तो सब हर्षित हुये, इस बात को मत भूलना।।1।।

थाली बजा खुशियाँ मना, एकत्र सबको कर लिया।
घर-घर फिर लड्डू बँटवाये, स्नेह यह मत भूलना।।2।।

बचपन में जब रोगी हुआ, कड़वी दवा माँ खवाती।
टोना किया नजरें उतारी, वह घड़ी मत भूलना।।3।।

माता के कपड़े कीमती, मल-मूत्र से मैले किये।
धो-पोंछ कर छाती लगाया, प्यार वह मत भूलना।।4।।

सरदी की ठण्डी रात में, बिस्तर सभी गीले किये।
तब साफ कर सूखे सुलाया, वह घड़ी मत भूलना।।5।।

गोदी बिठा कर ग्रास अपना, तोड़ कर मुख में दिया।
तू उगल वापस थूक भरता, वह समय मत भूलना।।6।।

निरन्तर : 436

माँ ने सिखाया बैठना तो, तूं लुढ़क गिर जावता।
फिर बोलना चलना सिखाया, वह समय मत भूलना।।7।।

अब तो बड़ी बातें बनाता, देन यह माँ-बाप की।
तुम छेद मत करना कलेजे, युग-युगों मत भूलना।।8।।

कमाया धन बहुत, माँ-बाप को सुख न दिया।
धिक्कार है ऐसी कमाई, बात वह मत भूलना।।9।।

धन से सभी वस्तु मिले, माता-पिता मिलते नहीं।
नित शीश चरणों में झुकाओ, वचन यह मत भूलना।।10।।

थी माता कैकेयी, पिता दशरथ, वचन प्रभु टाला नहीं।
लंका विजय कर आ गये, श्री राम को मत भूलना।।11।।

तुम भूलना सब कुछ मगर, माँ-बाप को मत भूलना।
कर्जा बहुत माँ-बाप का, सिर पर चढ़ा मत भूलना।।

सौ बात की एक बात -
जिस घर में मां-बाप हँसते हैं, उसी घर में भगवान बसते हैं।

स्त्री

जब तक स्त्री जाति का, सत्कार न होगा।
निश्चय जानो देश का, सुधार न होगा।।टेक।।
वेदवेत्ता कर गये, ऋषि बयान, देख लो।
मिलें अनेकों ऐतिहासिक, प्रमाण देख लो।
स्त्रियों का मान वहाँ उत्थान देख लो।
जहाँ इनका अपमान देश की हान देख लो।
पढ़ देखो लेख मनु का, तनिक विचारना होगा।।1।।
जब स्त्री तक जाति का, सत्कार ....

पति पत्नी में जहाँ परस्पर प्यार रहता है।
एक दूसरे की इच्छानुसार रहता है।
ऐसे कुल में कुशल, सभी प्रकार रहता है।
आठों याम नित सुख का ही, संचार रहता है।
यदि चलैं विपरीत तो, बेड़ा पार न होगा।।2।।
जब स्त्री तक जाति का, सत्कार ....

भ्राता पति पति देवर, गर चाहते हो कल्याण।
बहन, सुता, पत्नी, भौजाई, का रखें नित ध्यान।

मधुर भाषण, भोजन वस्त्र से करते रहें सम्मान।
किसी तरह से कभी इन्हें, करें नहीं परेशान
इनके लिए तन-मन-धन, सब कुछ वारना होगा।।3।।
जब तक स्त्री जाति का सत्कार ....

यत्रनार्यस्तु पूज्यन्ते पढो लिखा है खास
जहाँ स्त्रियों की पूजा, वहाँ करें देवता वास।
वरना सब क्रिया निष्फल हो जाता है, कुल नाश।
'ताराचन्द' दु:ख द्वन्द्व बढ़ै, बन्द हो आनन्द प्रकाश।
बुद्धिधर यह स्वरभर, छन्द उच्चारना होगा।।4।।
जब तक स्त्री जाति का सत्कार ....

संसार में उस मनुष्य का सत्कार होता है जो विद्वानों के उत्तम वचनों को सुनकर, सत्य और असत्य का ठीक-ठीक निर्णय कर, असत्य को छोड़कर, सत्य को ग्रहण करके यशस्वी होकर, पुण्य को प्राप्त होता है।

गौ-सेवा

गौ और स्त्री जाति का जब तक मान नहीं होगा
निश्चय जानो तब तक भारत का, उत्थान नहीं होगा।।टेक।।
भारतवासी गऊओं का, जब मान किया करते थे यहाँ
होते थे बलवान्, डेढ़ सौ साल जिया करते थे यहाँ
दूध, दही, घी, मलाई, मक्खन खाया पीया करते थे यहाँ
पहले जैसा जब तक यहाँ पर, खान और पान नहीं होगा।।1।।
गौ और स्त्री जाति का जब तक ....
स्त्री जाति का देखो जब होता था सम्मान यहाँ
वीर विदुषी पैदा करती थीं उत्तम सन्तान यहाँ
रणभूमि में लड़ने का भी, करती थी ऐलान यहाँ
रण से भागे कायर पति में, भर देती थी जान यहाँ
स्त्री शिक्षा की तरफ समझ लो, जब तक ध्यान नहीं होगा।।2।।
गौ और स्त्री जाति का जब तक ....
गऊवों की तरह आज देश में, भैंसों का आदर हो गया
इतना ही नहीं तेज दुधारा, गऊवों के गल पर हो गया
भैंसों का घी दूध खायकर, झोटा हर एक नर हो गया
झोटों में कहाँ मेल रहा बस, यूँ झगड़ा घर-घर हो गया
गौ रक्षा के लिये यदि, तैयार विधान नहीं होगा।।3।।
गौ और स्त्री जाति का ....

निरन्तर : 440

आज स्त्री जाति पर है अत्याचार नहीं छानी
होता दुर्व्यवहार जो उसकी, कहें अपको क्या कहानी
पहले तो लड़की के जन्म पर, कहो खुशी किसने मानी
लालन-पालन में भी बोलते, रहे सदा खोटी वाणी
मात-पिता को निज कर्तव्य का जब तक भान नहीं होगा।।4।।
गौ और स्त्री जाति का ....

यदि आप चाहते हो भारत चढ़ा शिखर में हो
गौ-हत्या बन्द देश में, गौ-सेवा घर-घर में हो
'महावीर' का समझो जब तक, सफल यह गान नहीं होगा।।5।।
गौ और स्त्री जाति का ....

आप प्रसन्न हैं या नहीं-
यह सोचने के लिए
फुर्सत होना ही दुःखी
होने का रहस्य है
और इसका उपाय है -
सदैव व्यस्त रहो।

मांसाहार

वेदवाणी में मानव को प्रभु ने कहा
तू किसी जीव को मार, खाया न कर
दयावान प्रभु ने दया तुझको दी
ताकि जुल्म किसी पे तू ढाया न कर।।
वेदवाणी में मानव को प्रभु ने कहा ....

पशुपक्षियों का है सहारा प्रभु
फिर भी इन बेजुबानों को मारेगा तू
पेट में ना तू जीवों की कब्र बना
मौत के घाट इनको उतारा न कर।।
वेदवाणी में मानव को प्रभु ने कहा ....

तेरी नजरों में मानव बड़ी खोट है
मौत से पहले दे दी इन्हें मौत है
इन बेचारों ने तेरा बिगाड़ा है क्या
बेरहम इनका जीवन मिटाया न कर।।
वेदवाणी में मानव को प्रभु ने कहा ....

जैसे अपनी ही जान है तुझको भली
वैसे उनको भी जीने की आशा बढ़ी
तुझको अगले जन्म में ना मारे कोई

निरन्तर : 442

तू पशु-पक्षियों को मारा न कर।।
वेदवाणी में मानव को प्रभु ने कहा ....

कितने आशियाँ उनके उजाड़े बता
कितने पाले हैं और कितने मारे बता
इतने पापों का कैसे तू देगा हिसाब
काँप जायेगा दिल लोग जब वो खबर।।
वेदवाणी में मानव को प्रभु ने कहा ....

तेरे बच्चों को मारेगा कोई अगर
तेरे दिल पर बता कैसा होगा असर
छीन के तू पशु पक्षियों के बच्चे
कभी बच्चों को अपने खिलाया न कर।
वेदवाणी में मानव को प्रभु ने कहा ....

कितना समझाये तो तू क्या समझे भला
फिर भी काटेगा मासूमों का तू गला
तेरी रग-रग में जब ये हिंसा भरी
फिर अहिंसा का पाठ पढ़ाया न कर।।
वेदवाणी में मानव को प्रभु ने कहा ....

निरन्तर : 443

भीगी आँखों से कहते ये संसार को
बन्द कर दो तुम हिंसा के व्यापार को
सबको रहना है ईश्वर की छाया तले
दीप जलते प्रभु के बुझाया न कर।।
वेदवाणी में मानव को प्रभु ने कहा ....

प्रभु चाहे न बिगड़े किसी का जीवन
इसलिए देता है वो दिलों में रहम
तेरा प्रेम बनेगा जीवों का मरहम
अपने दिल से रहम को भगाया न कर।
वेदवाणी में मानव को प्रभु ने कहा ....

याद रख जैसे जीवन में तेरे करम
वैसा फल पायेगा मन में ना रख भरम
जिसने प्राण दिये वो निष्प्राण करे
तू प्रभु के कभी आड़े आया न कर।।
वेदवाणी में मानव को प्रभु ने कहा ....

एक दिन लोग जानेंगे दया धरम
कोई किसपे करेगा ना जुल्मो सितम
तू 'ललित' प्रेम लाने का करना जतन
इतनी जल्दी यूँ हिम्मत तू हारा न कर।।
वेदवाणी में मानव को प्रभु ने कहा ....

मांसाहार

देख बन्दे तेरी है यही बन्दगी,
तू किसी जीव को भी सताया न कर।
न किसी पे जरा-सी दया कर सके,
तो जुल्म भी किसी पे तू ढ़ाया न कर।।
देख बन्दे तेरी है यही बन्दगी, तू किसी जीव ....
इन बेचारों ने तेरा बिगाड़ा है क्या,
कोई घर-बार तेरा उजाड़ा है क्या।
दो घड़ी दो घड़ी की लहर के लिए,
इन गरीबों के खूं से नहाया न कर।।
देख बन्दे तेरी है यही बन्दगी, तू किसी जीव ....
इन पशु-पक्षियों को तू मारा न कर,
मौत के घाट इनको उतारा न कर।
अपनी छः इंच लम्बी जुबां के लिये,
बे-जुबानों पे छुरियाँ चलाया न कर।।
देख बन्दे तेरी है यही बन्दगी, तू किसी जीव ....
निरपराधों को तकलीफ देता है क्यों,
जिन्दगी दे सके न, तो लेता है क्यों।
जग में इनको भी जीने का अधिकार है,
बेरहम इनका जीवन मिटाया न कर।।
देख बन्दे तेरी है यही बन्दगी, तू किसी जीव ....
जैसे बच्चे हैं सब लाडले आपके,
ये भी वैसे ही प्यारे हैं माँ बाप के।
दीन बच्चे किसी के 'पथिक' मारकर,
अपने बच्चों को हरगिज खिलाया न कर।।
देख बन्दे तेरी है यही बन्दगी, तू किसी जीव ....

नव वर्ष

नए वर्ष में नई-नई ले शुभ आशाएँ।
आओ फिर एकता-स्नेह के दिए जलाएँ।।
आज जरूरत है सुन्दर-सुगठित समाज की,
खुशहाली फैलाने वाले राम-राज की।
उजड़ा-उपवन, बेसुधमाली भला बताओ-
कैसे होगी आस पूर्ण सुन्दर सु-राज की?
रावण का चोला त्यागें अब आओ खुद को राम बनाएँ।।
आओ फिर एकता-स्नेह के दिए ....
अहंकार से नफरत से समाज टूटे हैं,
आतंकी-आलसी सदा पीछे छूटे हैं,
उनको अपने गले लगाओ जो रूठे हैं,
समझो-इस समाज के दलित-सदा खूँटे हैं।
बैर भुला-सबको अपनाकर, आओ अपनी शक्ति बढ़ाएँ।।
आओ फिर एकता-स्नेह के दिए ....
सर्वे भवन्तु सुखिनः भाव हो नव वर्ष में,
राष्ट्र-प्रेम का सदा-चाव हो नए वर्ष में,
सभी फलें-फूलें, अपना तो यही है सपना-
विश्व में भारत का, प्रभाव हो नए वर्ष में।
रूप स्वाभिमानी बनकर, हम फिर से विश्व के गुरु कहाएँ।।
आओ फिर एकता-स्नेह के दिए ....

मकर संक्रान्ति

उत्तरायण पर्व का प्रारम्भ हो इस पर्व से।
उत्तरोत्तर उच्चता का पाठ सीखें पर्व से।।1।।

मकर की संक्रान्ति का यह पर्व उन्नति सिद्ध है।
कदम आगे नित बढ़ाना, सीख लें उस पर्व से।।2।।

रात छोटी दिन बड़े अब, हो यहाँ क्रम से रहे।
ज्योति अन्दर की बढ़ाना, सीख लें इन पर्व से।।3।।

भीष्म से आदित्य का, अब सान इस दिन था हुआ।
ब्रह्मादिक गुणों को, धार लें इस पर्व से।।4।।

मकर संक्रान्ति का त्यौहार सारे भारतवर्ष में 14 जनवरी को मनाया जाता है। इस दिन से सूर्य उत्तरायण हो जाने से प्रकृति में बदलाव शुरू हो जाता है। सूर्य के उत्तरायण होने से शीत ऋतु से राहत मिलना आरम्भ हो जाता है।

मानवता

क्र.सं.	मानवता गीत के बोल	पृ. सं.
1.	इन्सान नहीं इंसान रहा, बन गया है पशु समान	448
2.	इन्सानियत ही सबसे पहले धर्म है इन्सान का	449

ईश्वरीय न्याय व्यवस्था

न्याय व्यवस्था-गीत के बोल

भगवान के घर देर या अन्धेर 450

गृह प्रवेश - बधाई-गीत के बोल

यह सुन्दर भवन बन जाना, बधाई हो 451

जन्म दिवस - बधाई-गीत के बोल

1. अति धन्यवाद परमेश्वर का यह सुन्दर अवसर आया 452
2. शुभ दिन आज है आया, बधाई हो 453

शुभ विवाह - वर्षगांठ - गीत के बोल

शुभ विवाह की वर्षगांठ पर 454

याजिक परिवार - गीत के बोल

सदा फूलता फलता भगवन् यह याजिक परिवार रहे 455

मुण्डन बधाई - गीत के बोल

आज मिलकर देवें बधाई शुभ दिन आया है 456

मानवता

इंसान नहीं इंसान रहा, बन गया है पशु समान।।
मानव-मानवता खो बैठा न रही अपनी पहचान।।
मेरे भगवान, मेरे भगवान!
नित्यकर्म का ज्ञान नहीं, बड़ों का आदर मान नहीं।
राम-भरत और शत्रुघ्न जैसे दीखे, अब संतान नहीं।
अब माता-पिता और गुरुजनों का होने लगा अपमान।।
मेरे भगवान, मेरे भगवान!
वेदों का कुछ ज्ञान नहीं, कहते हैं भगवान नहीं।
सन्ध्या हवन से प्रेम नहीं, और शुभ कर्मों में दान नहीं।
बस एक ही नारा रह गया है, रोटी कपड़ा और मकान।।
मेरे भगवान, मेरे भगवान!
मंदिर में नहीं आते हैं, सिनेमा रोज ही जाते हैं।
अंडे मछली मांस है खाते, व्हिस्की खूब उड़ाते हैं।
युवकों की ऐसी देख दशा, होता है दु:ख महान।।
मेरे भगवान, मेरे भगवान!
द्वार तेरे जो आता है, मुँह मांगा फल पाता है।
मानव, मानव बन जाये, 'नंदलाल' यही अब चाहता है।
विनती है आपसे एक यही, इंसान बने इंसान।।
मेरे भगवान, मेरे भगवान!

मानवता

इन्सानियत ही सबसे पहले, धर्म है इन्सान का।
इसके बाद ही पन्ना खोलो, गीता और कुरान का।

कौन सा धर्म कहता है, यह तेरा है, यह मेरा है,
सबके संत कहते हैं, दुनिया चार दिन का मेला है।
यही चार दिन जीने में, पहला धर्म इन्सान का।।1।।
इन्सानित ही सबसे पहले, धर्म है ....

प्यार ही है इन्सान का मजहब, अलग भाषा का मतलब क्या,
राम, रहीम, मीरा और नानक, सबका यह उपदेश रहा।
धर्म के नाम पर झगड़ा करना, काम है शैतान का।।
इन्सानित ही सबसे पहले, धर्म है ....

जागो वरना दुनियां का गुलशन, वीरान हो जाएगा।
मौत की नींद में हर इक इंसा, बेमतलब सो जाएगा।
इसके बाद ही पन्ना खोलो, गीता और कुरान का।।
इन्सानित ही सबसे पहले, धर्म है ....

न्याय-व्यवस्था

भगवान् के घर देर या अन्धेर नहीं है।
उस ऊँची अदालत में हेरफेर नहीं है, अन्धेर नहीं है।
सुनते हैं घड़ा पाप का, भरता तो खूब जाए।
फिर अपने भार से ही, पल भर में डूब जाए,
इन्साफ में लगती है जो, वह देर नहीं है।
अन्धेर नहीं है, भगवान के घर अन्धेर नहीं है।।(1)
देखो नियत समय पर, सूरज निकलता ढलता,
अनुकूल वक्त लेकर, दुनिया में पेड़ फलता,
बिन वक्त यहाँ शाम और सबेर नहीं है,
अन्धेर नहीं है, भगवान के घर अन्धेर नहीं है।।(2)
बोलो जहाँ में किसका, सिक्का सदा चला है
नामो निशान इक दिन, दुनिया से मिट गया है,
कब रेत की दीवार, बनी ढेर नहीं है।।
अन्धेर नहीं है, भगवान के घर अन्धेर नहीं है।।(3)

ईश्वरीय न्याय एक दार्शनिक सिद्धान्त है। ईश्वर सत्य और न्याय का प्रतीक है और उसकी कर्मफल व्यवस्था एवं न्यायात्मक शक्ति अंततः जीतती ही है।

बधाई (गृह प्रवेश)

यह सुन्दर भवन बन जाना, बधाई हो बधाई।
यह गृह-प्रवेश करवाना, बधाई हो बधाई हो।।1।।

कराया यज्ञ-हवन उत्तम, हुआ जो वेद-मन्त्रों से।
सुगंधित वायु फैलाना, बधाई हो बधाई हो।।2।।

बनाया है भवन सुन्दर, रहे सबको यह सुखकारी।
सभी मित्रों का यहाँ आना, बधाई हो बधाई हो।।3।।

रहे आनंद का वातावरण, प्रभु-कृपा से इस घर में।
यह उद्घाटन का करवाना, बधाई हो बधाई हो।।4।।

प्रभु-कृपा अति भारी, हुआ है यह भवन पूर्ण।
सदा सुख-शांति ही पाना, बधाई हो बधाई हो।।5।।

सदा कल्याण की वर्षा, रहे ईश्वर की कृपा से।
'सेवक' ईश्वर के गुण गाना, बधाई हो बधाई हो।।6।।

बधाई (जन्म दिवस)

अति धन्यवाद परमेश्वर का, यह सुन्दर अवसर आया,
है 'जन्म-दिवस' इस बालक का जो उत्सव आज मनाया।।1।।

ईश्वर-विश्वासी सत्यवादी, वेदों का यह अनुयायी,
दिन-रात फले-फूले, निरोग हो, सुन्दर इसकी काया।
विद्वानों का सम्मान करे, गुरु मात-पिता का सेवक,
दु:खियों के दु:ख को दूर करे, जो वेदों ने बतलाया।
अति धन्यवाद परमेश्वर का, यह सुन्दर ......(2)

सद्ग्रन्थ पढ़ सदाचरण करे, जीवन में ज्योती जगी,
यह कीर्ति अमर होवे इसकी, आवे न मान मद माया।
शुभ गुण सम्पन्न बने बालक, है आशीर्वाद यह सबका,
सबको सुखदायक सदा रहे जो गीत 'देव' ने गाया।
अति धन्यवाद परमेश्वर का, यह सुन्दर ......(3)

वे माता और पिता अपने सन्तानों के पूर्ण वैरी हैं जिन्होंने उन्हें विद्या की प्राप्ति न कराई, वे विद्वानों की सभा में वैसे ही तिरस्कृत और कुशोभित होते हैं जैसे हंसों के बीच में बगुला। अत: सन्तानों को तन, मन, धन से विद्या, धर्म, सभ्यता और उत्तम शिक्षा देनी चाहिए।

बधाई (जन्म दिवस)

शुभ दिन आज है आया, बधाई हो, बधाई हो।
खुशी का रंग छाया है, बधाई हो, बधाई हो।
सुगन्धित हो रहा वातावरण यह यज्ञ से सारा।
ऋचायें वेद की बोली, गुंजा है गगन सारा।
आनन्द परिवार में लहराया, बधाई हो, बधाई हो।
शुभ दिन आज है आया, बधाई हो ....(1)
जिधर देखो उधर मिलते नजारे ही नजारे हैं।
दिलों में फूट कर निकले, खुशियों के फव्वारे हैं।
बाग परिवार लहराया, बधाई हो, बधाई हो।
शुभ दिन आज है आया, बधाई हो ....(2)
जिया सौ साल तुम बच्चे, रहो खुशहाल जीवन में
रहे निरोग यह काया, बधाई हो, बधाई हो।
शुभ दिन आज है आया, बधाई हो ....(3)
बहारें झूम कर आये तुम्हारे दिल के आंगन में,
रहे मन खूब हर्षाया, बधाई हो, बधाई हो।
शुभ दिन आज है आया, बधाई हो ....(4)
जहान में नाम रोशन हो, चमको चाँद सूरज से
मधुर वाणी सदा बोलो, धर्म की राह में चलकर
यही आशीष है सबका, बधाई हो, बधाई हो।
शुभ दिन आज है आया, बधाई हो, बधाई हो।।5।।

शुभ विवाह की वर्षगांठ

शुभ विवाह की वर्षगांठ पर, सौ-सौ बार बधाई हो।
सदा रहो तुम मिलकर ऐसे, जैसे दूध मलाई हो।
तुमने जीवन साथी बनकर इतने वर्ष बिताये हैं।
इक-दूजे का हाथ पकड़कर इस मंजिल तक आये हैं।
आपस की यह प्रीति हमेशा, हर दिन रात सवाई हो।
सदा रहो मिलकर तुम ऐसे, जैसे दूध .... (1)
यह आदर्श जीवन तुम्हारा सबको राह दिखाता है।
सद्-गृहस्थ ऐसा होता है यह सन्देश सुनाता है।
तन-मन-धन से जन-गण-मन की सेवा और भलाई हो।
सदा रहो मिलकर तुम ऐसे, जैसे दूध .... (2)
पति-पत्नी दो पहिये समझो, अपने घर की गाड़ी के
दोनों ही माली हैं सुन्दर, फूलों की फुलवारी के।
जीवन स्वर्ग बने धरती पर, ऐसी नेक कमाई हो।
सदा रहो मिलकर तुम ऐसे, जैसे दूध .... (3)
सुखद स्वास्थ्य का तुम दोनों के, जीवन को आधार मिले
बीते समय प्रभु-भक्ति में, परमेश्वर का प्यार मिले
'पथिक' चलो सुख की राहों पर, ईश्वर सदा सहाई हो
सदा रहो तुम मिलकर ऐसे जैसे दूध मलाई हो
शुभ विवाह की वर्षगांठ पर सौ-सौ बार बधाई हो।
सदा रहो मिलकर तुम ऐसे, जैसे दूध .... (4)

याजक परिवार

सदा फूलता-फलता भगवन्, यह याजक परिवार रहे।
वह प्यार जो किसी से इनका सदा आप से प्यार रहे।।
मिथ्या कर अभिमान कभी न जीवन का अपमान करें।
देवजनों की सेवा करके वेदामृत का पान करें।।
प्रभु आप की आज्ञापालन करता हर नर-नार रहे।।1।।
सदा फूलता-फलता भगवन्, यह ....
मिले सम्पदा जो भी इनको, उसको मानें आप की।
घड़ी न आने पावें इन पर, कोई भी संताप की।
यही कामना प्रभु आप से, कर हम बारम्बार रहे।।2।।
सदा फूलता-फलता भगवन्, यह ....
दुनियादारी रहे चमकती धर्म निभाने वाले हों।
सेवा के सांचे में सबने जीवन अपने पाले हों।
बच्चा-बच्चा परिवार का बनकर, श्रवण कुमार रहे।।3।
सदा फूलता-फलता भगवन्, यह ....
बने रहे संतोषी सारे, जीवन के हर काल में।
हाल चाल हो कैसा इनका, रहे मस्त हर हाल में।
ताकि 'देश' बसाया इनका, सुखदायी संसार रहे।।4।।
सदा फूलता-फलता भगवन्, यह ....

बधाई (मुण्डन)

आज मिल कर देवें बधाई, शुभ दिन आया है।
सबने खुशी मनाई, शुभ दिन आया है।।
फले-फूले यह बालक प्यारा,
माता-पिता की आँख का तारा
होवे दीर्घ आयु, मण्डन कराया है।।1।।
आज मिलकर देवें बधाई ....
नाम करे यह रोशन जग में,
उन्नति करे यह पग-पग में।
वेदों के अनुसार, यज्ञ कराया है।।2।।
आज मिलकर देवें बधाई ....
ब्रह्मचारी, बलवान बने यह,
धन कमा बलवान बने यह।
रहे प्रभु की इस पर सदा ही छाया है।।3।।
आज मिलकर देवें बधाई ....
सत्य धर्म रुचि दिखावे,
जग में आदर मान भी पावे।
वेद विधि अनुसार, मुण्डन कराया है।।4।।
आज मिलकर देवें बधाई ....

विविध

क्र.सं.	विविध-भजनों/गीतों के बोल	पृ. सं.
1.	ऐ मालिक तेरे बन्दे हम, ऐसे हों हमारे करम	458
2.	ये जीवन तुम्हारा, तुम्हीं को है अर्पण	459
3.	मानव तू अगर चाहे, दुनिया को झुका देना	460
4.	मानव तू मानव बन	461
5.	नाम प्रभु का लिया नहीं, धर्म का सौदा किया नहीं	462
6.	कुछ न बिगड़ेगा तेरा, प्रभु की शरण आने के बाद	463
7.	कुछ पल की जिन्दगानी	464
8.	रचा ब्रह्माण्ड है जिसने उसे भगवान कहते हैं	465
9.	थोड़ा सा वो भाग्यहीन है, जिसके घर संतान नहीं	466
10.	सबके गुण अपनी हमेशा गलतियाँ देखा करो	467
11.	सुनने वाला दूर नहीं है, दूर सुनाने वाला है	468
12.	मै नहीं, मेरा नहीं, यह तन किसी का है दिया	469
13.	कबीर के दोहे माटी कहे कुम्हारे से	470
14.	ऋषिवर दयानन्द का सन्देश सुनाने आया हूँ	471
15.	ईश्वर को मानते हैं लोग जानते नहीं	473
16.	उस प्रभु की है कृपा बड़ी, याद कर ले घड़ी दो घड़ी	474
17.	प्रभु कैसा विचित्र संसार है	475
18.	जो पुत्र निज माता-पिता का मान न करें	476
19.	धन खूब कमा, आनन्द मना	477
20.	होंगे कर्म खोटे तो, भजन गाने से	478
21.	देख तेरे संसार की हालत क्या हो गई भगवान	479
22.	हिन्दी अपने देश की भाषा, हिन्दी से हम प्यार करेंगे	480
23.	आदमी में अगर आदमी की तरह	481
24.	तुझमें ओ३म् मुझमें ओ३म्, सबमें ओ३म् समाया	482
25.	जोड़ के हाथ झुका के मस्तक	483

ऐ मालिक तेरे बन्दे हम

ऐ मालिक तेरे बन्दे हम, ऐसे हों हमारे करम
नेकी पर चलें, और बदी से टलें
ताकि हंसते हुये निकले दम।
ऐ मालिक तेरे बन्दे हम ....
बड़ा कमजोर है आदमी, अभी लाखों हैं इसमें कमी
पर तू जो खड़ा, है दयालु बड़ा, तेरी कृपा से धरती थमी
दिया तूने हमें जब जनम, तू ही झेलेगा हम सबके गम
नेकी पर चलें, और बदी से टलें, ताकि हंसते हुए निकले दम
ऐ मालिक तेरे बन्दे हम ....
ये अंधेरा घना छा रहा, तेरा इन्सान घबरा रहा
हो रहा बेखबर, कुछ न आता नजर
जोर जुल्मों से टकरा रहा, सुख का सूरज छुपा जा रहा
है तेरी रोशनी में जो दम, तो अमावस को कर दे पूनम
नेकी पर चलें और बदी से टलें ताकि हंसते हुए निकले दम
ऐ मालिक तेरे बन्दे हम ....
जब जुल्मों का हो सामना, तब तुम ही हमें थामना
वो बुराई करें, हम भलाई करें, नहीं बदले की हो कामना
बढ़ उठे प्यार कर हर कदम, और मिटे बैर का ये भरम
नेकी पर चलें और बदी से टलें ताकि हंसते हुए निकले दम
ऐ मालिक तेरे बन्दे हम ....

ये जीवन तुम्हारा

ये जीवन तुम्हारा तुम्हीं को है अर्पण।
लगा दो किनारे इसे मेरे भगवन्।।
हो करुणा के सागर दया के हो दाता।
तुम्हीं जग के पालक तुम्हीं हो विधाता।।
ये सोया है मानव इसे तुम जगा दो - 2
ये जीवन तुम्हारा तुम ही को है अर्पण।
लगा दो किनारे इसे मेरे भगवन्।।
मैं पथ से गिरुं तो मुझे थाम लेना।
दया करके सद्नाम देते ही रहना।।
जो सच्चा है, रस्ता उसे तुम दिखा दो - 2
ये जीवन तुम्हारा तुम ही को है अर्पण।
लगा दो किनारे इसे मेरे भगवन्।।
तुम्हारे भरोसे ये जीवन की नैया
लगा दो किनारे ओ मेरे खिवैया।।
कहीं डूब जाये न इसे तुम बचा दो-2
ये जीवन तुम्हारा तुम ही को है अर्पण।
लगा दो किनारे इसे मेरे भगवन्।।
दर्श दो बड़ा होगा अहसां तुम्हारा।
भटकता ही रहता है ये मनवा हमारा।
इसे बस में करने की युक्ति बता दो-2
ये जीवन तुम्हारा तुम ही को है अर्पण।
लगा दो किनारे इसे मेरे भगवन्।।

मानव तू अगर चाहे ....

मानव तू अगर चाहे दुनिया को झुका देना।
बस ईश्वर के आगे, सर अपना झुका देना।।
राजी हो प्रभु जिसमें, वह काम सही होगा।
भगवान जो चाहेगा, दुनिया में वही होगा।
उसे अपना बना करके, उलझन को मिटा देना।
मानव तू अगर चाहे दुनिया ....
रक्षक है अनाथों का, दुखियों का सहारा है।
भव पार किया उसने, जिसने ही पुकारा है।
उसे अपना बना करके, उलझन सुलझा लेना।।
मानव तू अगर चाहे दुनिया ....
धरती और सागर के, रत्नों को जो पाना हो।
आकाश में उड़ना हो, पाताल में जाना हो।
डोरी परमेश्वर को, पहले पकड़ा देना।।
मानव तू अगर चाहे दुनिया ....
चाहेंगी सदा तुझको, खुशियाँ और आशाएँ।
चूमेगी चरण मेरे, सब ओर सफलताएँ।
जीवन को 'पथिक' उसकी राहों पर लगा देना।।
मानव तू अगर चाहे दुनिया ....

मानव तू मानव बन

मानव तू मानव बन, ये छोड़ दे पागलपन।
अनमोल है जीवन, प्रभु नाम लिये जा।।
शुभ काम किये जा, शुभ काम ....

मानव हो कुछ मनन करो, क्या करना है।
कांटों की राहों में संभलकर, पग धरना है।।
दुनिया दुरेगी है, सही पहचान किये जा।।
शुभ काम किये जा, शुभ काम ....

गोरी, गजनी, शाह, सिकन्दर आये थे।
लूट मार कर बहुत जुल्म ढाये थे।
दुश्मन की सेनाओं से, सदा संग्राम किये जा।।
शुभ काम किये जा, शुभ काम ....

बड़े-बड़े योद्धा आये, और चले गये।
काल चक्र की चक्की में, सब दले गये।।
खाली गये सारे, यही पैगाम किये जा।।
शुभ काम किये जा, शुभ काम ....

योगः कर्मषु कौशलम्
कर्मों में कुशलता ही योग है।

नाम प्रभु का लिया नहीं

नाम प्रभु का लिया नहीं, धर्म का सौदा किया नहीं।
ऐसा मानव दुनियाँ में, जी करके भी जिया नहीं।
ऐसा मानव दुनियाँ में जी करके भी .... ।।1।।
जो कुछ भी इस दुनियाँ में, देता है दिखलाई।
ईश्वर है कण-कण में समाया, वेद ने बात बताई।
वेद का अमृत पिया नहीं, धर्म का सौदा किया नहीं।
ऐसा मानव दुनियाँ में जी करके भी .... ।।2।।
यह धन किस के पास रहा है, किस के पास रहेगा।
पानी का तो काम है बहना, यह हर हाल बहेगा।
धन निर्धन को दिया नहीं, धर्म का सौदा किया नहीं।
ऐसा मानव दुनियाँ में जी करके भी .... ।।3।।
लालच मत कर लोभ छोड़ दे, लालच बुरी बला है।
तू कर ले सन्तोष इसी में, जो तिल फूल मिला है।
फटा हुआ दिल सिया नहीं, धर्म का सौदा किया नहीं।
ऐसा मानव दुनियाँ में जी करके भी .... ।।4।।

लोभ वो अवगुण है जो कि प्रतिदिन तब तक बढ़ता जाता है जब तक यह मनुष्य का नाश न कर दे।

कुछ न बिगड़ेगा तेरा

कुछ न बिगड़ेगा तेरा, प्रभु की शरण आने के बाद।
हर खुशी मिल जाएगी, चरणों में झुक जाने के बाद।
जब तलक है भेद मन में, कुछ नहीं बन पाएगा।
रंग लाएगी ये भक्ति, भेद मिट जाने के बाद।
कुछ न बिगड़ेगा तेरा, प्रभु की शरण ....
फूलों से पूछो के उन पर, कैसे छाई है बहार।
कब तलक कांटों पे सोया, डाल कर आने के बाद।
प्रेम की मंजिल में राही, कष्ट आते हैं जरूर।
बीज फलता है सदा, मिट्टी में मिल जाने के बाद।।
कुछ न बिगड़ेगा तेरा, प्रभु की शरण ....
कौन करता है किसी को, याद मर जाने के बाद।
सूंघता कोई नहीं है फूल मुरझाने के बाद।।
देख कर काली घटा को, ए भौंरे मत हो उदास।।
बंद कलियाँ भी खिलेंगी, रात ढल जाने के बाद।।
कुछ न बिगड़ेगा तेरा, प्रभु की शरण ....
जिन्दगी विषयों में खोई, हरि भजन भी न किया।
होश में आया है इंसा, ठोकरें खाने के बाद।।
जिस खुशी को ढूंढ़ता फिरता है दुनिया में सदा।
वो खुशी मिल जाएगी, प्रभु चरणों में झुक जाने के बाद।।
कुछ न बिगड़ेगा तेरा, प्रभु की शरण ....

कुछ पल की जिन्दगानी

कुछ पल की जिन्दगानी, एक रोज सबको जाना।
वर्षों की तू क्यों सोचे, पल का नहीं ठिकाना।
मल-मल के तूने अपने, तन को जो है निखारा।
इत्रों की खुशबुओं से, महके शरीर सारा।
काया न साथ जानी, ये बात न भुलाना।।
कुछ पल की जिन्दगानी, एक रोज .....
मन है हरि का दर्पण, मन में इसे बसा ले।
करके तू कर्म अच्छे, कुछ पुण्य धन कमा ले।
कर दान और धर्म तू, रब को अगर है पाना।।
कुछ पल की जिन्दगानी, एक रोज .....
आएगी वो घड़ी जब, कोई न साथ होगा।
कर्मों का तेरे सारे, एक एक हिसाब होगा।
ये सोच ले अभी तू, ये वक्त फिर न आना।।
कुछ पल की जिन्दगानी, एक रोज .....
कोई नहीं है तेरा, क्यों करता है मेरा मेरा
खुल जाए नींद जब भी, समझो वहीं सवेरा।
हर भोर की किरण संग, हरि का भजन तू गाना।।
कुछ पल की जिन्दगानी, एक रोज .....

रचा ब्रह्माण्ड है जिसने

रचा ब्रह्माण्ड है जिसने, उसे भगवान् कहते हैं।
जो है उपदेश वेदों का, उसे सत्य ज्ञान कहते हैं।।1।।
हैं गिरतों को उठाता जो, उसे दयावान् कहते हैं।
जो भूलों को दिखाये पथ, उसे महान् कहते हैं।।2।।
जो निर्बल की करे रक्षा, उसे बलवान् कहते हैं।
सताये जो गरीबों को, उसे शैतान कहते हैं।।3।।
पिता-माता को जो दु:ख दे, उसे सन्तान मत कहना।
करे निज कुल को जो रोशन, उसे सन्तान कहते हैं।।4।।
करे कल्याण जो जग का, उसे विज्ञान कहते हैं।
करे जो नष्ट दुनियाँ को, उसे अज्ञान कहते हैं।।5।।
जो कंजूस, मक्खीचूस, उसे धनवान् मत समझो।
करे जो दान हाथों से, उसे धनवान् कहते हैं।।6।।
जहाँ इन्सान बसते हों, शहर घर ग्राम कहते हैं।
जहाँ रहता नहीं मानव, उसे बियावान कहते हैं।।7।।
कफन हम उसको कहते हैं, जो मुर्दे पर पड़ा देखा।
जहाँ मुर्दे ही जलते हों, उसे श्मशान कहते हैं।।8।।
जो गुण को धार लेता है, उसे गुणवान् कहते हैं।
जो चलता चाल है टेढ़ी, उसे हैवान कहते हैं।।9।।
करे व्यवहार जो झूठा, बना कपटी छली, द्वेषी।
ऐसे नर नीच पापी, को बेईमान कहते हैं।।10।।
मुसीबत में जो हँसता है, उसे इन्सान कहते हैं।
जो रो-रो करके जीता है, उसे नादान कहते हैं।।11।।
कर्त्तव्य है 'विश्वप्रेमी' का, धर्म हित जान दे देना।
धर्म पर जो भी मरता है, उसे बलिदान कहते हैं।।12।।

थोड़ा सा वो भाग्यहीन है

थोड़ा सा वो भाग्यहीन है, जिसके घर सन्तान नहीं।
वो पूरा बदकिस्मत समझो, याद जिसे भगवान् नहीं।।

नालायक औलाद से बेहतर, बिल्कुल वे बेऔलाद रहे।
महल से तो झोंपड़ी अच्छी है, सुख से जो आबाद रहे।
दौलत वो किस काम की जिसमें, जगदीश्वर न याद रहे।
काहे का वो धनी जो जिसमें, निर्धन की तस्वीर नहीं।।
वो पूरा बदकिस्मत समझो, याद ....

सूरत सीरत प्यार मुहब्बत, एक की ये जागीर नहीं।
जिसकी इज्जत है जग में, उससे बड़ा अमीर नहीं।
वो मन्दिर किस काम का जिसमें, निर्धन की तस्वीर नहीं।
बेईमान कहलायेगा वो, जिसका धर्म, ईमान नहीं।।
वो पूरा बदकिस्मत समझो, याद ....

मानव को अपने पल पल को आत्मचिन्तन में लगाना चाहिए क्योंकि हर क्षण हम परमेश्वर द्वारा दिया गया समय खो रहे हैं।

सबके गुण अपनी हमेशा

सबके गुण अपनी हमेशा गलतियाँ देखा करो।
जिन्दगी की हू-ब-हू तुम झलकियाँ देखा करो।
इच्छाएँ महलों की गर, तुमको सताएँ आन कर।
कुछ गरीबों की भी जाकर, बस्तियाँ देखा करो।
सबके गुण अपनी हमेशा गलतियाँ ....
खाने से पहले अगर तुम, हक पराया सोच लो।
कितने भूखों की हैं इनमें, रोटियाँ देखा करो।।
सबके गुण अपनी हमेशा गलतियाँ ....
आ दबोचे गर कहीं तुमको, सिकन्दर सा अभिमान।
हाथ खाली आते जाते, अर्थियाँ देखा करो।।
सबके गुण अपनी हमेशा गलतियाँ ....
ये जवानी की अकड़ सब, खाक में मिल जाएगी।
जल चुके जो शव हैं, उनकी अस्थियाँ देखा करो।।
सबके गुण अपनी हमेशा गलतियाँ ....
विषयों का विष पान कर, झूठे नशे में चूर हो।
ओ३म् का इक जाम पीकर, मस्तियाँ देखा करो।।
सबके गुण अपनी हमेशा गलतियाँ ....
जिन्दगी में चाहते हो सुख, अगर अपने लिये।
दूसरों के गम में, अपनी सिसकियां देखा करो।
सबके गुण अपनी हमेशा गलतियाँ ....

सुनने वाला दूर नहीं है

सुनने वाला दूर नहीं है, दूर सुनाने वाला है।
पाल रहा जो दूर नहीं है, दूर बुलाने वाला है।।
सर्वव्यापी, अन्तर्यामी, दर्शन उसका दूर नहीं।
वह तो हरदम पास, दूर ही दर्शन पाने वाला है।।
सुनने वाला दूर नहीं है, दूर ....
पर उपकारी सर्व स्नेही, करता है उपकार सदा।
भूल रहा है आप जीव, जो लाभ उठाने वाला है।।
सुनने वाला दूर नहीं है, दूर ....
अमर सखा है जीवन साथी, कहते बंधु मात-पिता।
सर्व सुखों की वर्षा करके, कष्ट मिटाने वाला है।।
सुनने वाला दूर नहीं है, दूर ....
डाल जरा दृष्टि रचना पर, शक्ति देख नियन्ता की।
अरे देख नियमों के अन्दर, कौन चलाने वाला है।।
सुनने वाला दूर नहीं है, दूर ....

न देवानामति व्रतं शतात्मा चन जीवति। ऋ.
देवों के नियम तोड़ कर कोई सौ वर्ष नहीं जी सकता।

मैं नहीं, मेरा नहीं

मैं नहीं, मेरा नहीं, यह तन किसी का है दिया।
जो भी अपने पास है, वह धन किसी का है दिया।।

देने वाले ने दिया, वह भी दिया किस शान से।
'मेरा है' यह लेने वाला, कह उठा अभिमान से।
'मैं मेरा' यह कहने वाला, मन किसी का है दिया।।
मैं नहीं, मेरा नहीं, यह तन ....
जो मिला है वह हमेशा, पास रह सकता नहीं।
कब बिछुड़ जाये यह कोई, राज कह सकता नहीं।
जिन्दगी का खिला मधुबन, किसी का है दिया।।
मैं नहीं, मेरा नहीं, यह तन ....
जग की सेवा, खोज अपनी, प्रीति उनसे कीजिए।
जिन्दगी का राज है, यह जानकर जी लीजिए।
साधना की राह पर, साधन किसी का है दिया।।
मैं नहीं, मेरा नहीं, यह तन ....

जिस मनुष्य में सन्तुष्टि के अंकुर फूट गये हों, वो संसार के सुखी मनुष्यों में गिना जाता है।

कबीर के दोहे

1. माटी कहे कुम्हार सूं तू क्या रौंदे मोय।
   एक दिन ऐसा आएगा मैं रोदूंगी तोय।।
2. आए हैं सो जाएंगे, राजा रंक फकीर।
   एक सिंहासन चढ़ चले, एक बंधे जंजीर।।
3. मेरा मुझमें कुछ नहीं, जो कुछ है सो तोर।
   तेरा तुझको सौंपते, क्या लागे है मोर।।
4. पत्ता टूटा डाली से, ले गई पवन उड़ाय।
   अब के बिछड़े कब मिले, दूर पड़ेंगे जाय।।
5. तुम्हारी चाही में प्रभो, है मेरा कल्याण।
   मेरी चाही मत करो, मैं मूरख नादान।।
6. चलती चक्की देख के, दिया कबीर रोय।
   दो पाटन के बीच में, साबुत बचा न कोय।।
7. हाड़ जले ज्यूं लकड़ी, केश जले ज्यूं घास।
   सब जग जलता देख के, भये कबीर उदास।।
8. निर्बल को न सताइए, जाकी मोटी हाय।
   बिना जीव की खाल से, लोहा भस्म हो जाय।।
9. कबिरा जब हम पैदा हुए, जग हंसा तू रोए।
   ऐसी करनी कर चलो, तू हंसे जग रोए।।

ऋषि दयानन्द का सन्देश

ऋषिवर दयानन्द का, संदेश सुनाने आया हूँ।
जागो जागो आर्य वीरों, तुम्हें जगाने आया हूँ।।
सदियों से सोते भारत को, ऋषि ने आन जगाया था।
गुण गौरव सब भूल चुके थे, फिर से याद दिलाया था।
वेदों के प्रचार हेतु, यह आर्य समाज बनाया था।
पाखण्ड खण्डनी ध्वजा फहराकर, वैदिक नाद गुँजाया था।
ऋषि दयानन्द के भक्तों को, फिर याद दिलाने आया हूँ।।1।।
जागो जागो आर्य वीरो, तुम्हें ....
जग को बतला दो ईश्वर का, होता नहीं कोई अवतार।
नसनाड़ी बन्धन से न्यारा, रूप रंग न कोई आकार।
जन्म मरण से रहित प्रभु है, कभी न आता तन को धार।
मात-पिता नहीं पत्नी उसके, पुत्र पौत्र न कोई परिवार।
भूले भटके भ्रमित जनों को, राह दिखाने आया हूँ।।2।।
जागो जागो आर्य वीरो, तुम्हें ....
मंदिर मस्जिद अरु गिरजे में, नहीं ईश्वर का डेरा।
पुरी, द्वारिका, रामेश्वर, काशी, मथुरा में जा हेरा।
भक्ति भाव से खूब लगाया, सकल तीर्थों का फेरा।
हुए न दर्शन कहीं प्रभु के, ढूंढ़ लिया जग बहुतेरा।
सर्वज्ञ, सर्वव्यापी प्रभु घट में, यह समझाने आया हूँ।।3।।
जागो जागो आर्य वीरो, तुम्हें ....

निरन्तर : 472

निराकर प्रभु की उपासना, भूल गया यह संसार।
सन्ध्या या सावित्री तजकर, जड़ पूजा करते नर-नार।
हाथों से भगवान् बनाकर, बेच रहे हैं सरे बाजार।
लगे स्वार्थी जन यहाँ करने, ईश्वर भक्ति का व्यापार।
मन मंदिर में ईश भक्ति की, ज्योति जगाने आया हूँ। ।4 ।।
जागो जागो आर्य वीरो, तुम्हें ....
जीवित माता-पिता अरु गुरुजन, सभी पितर हैं कहलाते।
श्रद्धा से भोजन दो इनको, यही शास्त्र हैं समझाते।
जीवित पितर को न पानी पाते, मरे पै भोजन पहुँचाते।
जीते दंगा मरे पै गंगा, लोग कहावत हैं गाते।
घोर अवैदिक मृतक श्राद्ध को, बन्द कराने आया हूँ। ।5 ।।
जागो जागो आर्य वीरो, तुम्हें ....
ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र की, कर्मों से होती पहचान।
गुण कर्मों से वर्ण व्यवस्था, वेद शास्त्र में लिखा विधान।
जन्म जाति से ऊँच-नीच नहीं, छोड़ें यह मिथ्या अभिमान।
कल्याण वैदिक वाणी का, जन जन में भर दो शुभ ज्ञान।
छुआ-छूत अरु भेद-भाव का, भूत भगाने आया हूँ। ।6 ।।
जागो जागो आर्य वीरो, तुम्हें ....
उगे वेद का सूर्य, भगे अज्ञान निशा की अंधियारी।
अभय सदा हो पल्लवित पुलकित, ऋषि-मुनियोंकी फुलवाड़ी।
जगत् गुरु भारत बने, फिर से यह दुनिया सारी।
हो जाए हर भारतवासी, मातृभूमि पै बलिहारी।
सकल विश्व में पावन वैदिक, नाद गुँजाने आया हूँ। ।7 ।।
जागो जागो आर्य वीरो, तुम्हें ....

ईश्वर को मानते हैं लोग

ईश्वर को मानते हैं लोग, जानते नहीं।
मृत्यु को जानते हैं, मगर मानते नहीं।
कैसा अंधेर है यह, कि छोटी-छोटी बात की,
असलियत जानते हुए भी, जानते नहीं।।1।।
ईश्वर को मानते हैं लोग ....
दुनिया को लूटते हैं बड़े इल्मो हुनर से,
चादर फरेब की ये, कभी तानते नहीं।।
तिनका किसी की आँख का, देखें ये बार-बार,
अपनी में हो शहतीर भी, तो मानते नहीं।।2।।
ईश्वर को मानते हैं लोग ....
सच्चाई जिन्दगी में, भूलकर न आ सकी,
कहने को कभी झूठ, ये बखानते नहीं।
मतलब पड़े तो लोग, इर्द-गिर्द घूमते।
जब वक्त निकल जाये, तो पहचानते नहीं।।3।।
ईश्वर को मानते हैं लोग ....
बस एक ही को जानकर, उसी के हो गए,
दर-दर की खाक हम तो 'पथिक' छानते नहीं।।4।।
ईश्वर को मानते हैं लोग जानते नहीं।
मृत्यु को जानते हैं, मगर मानते नहीं।

उस प्रभु की है कृपा बड़ी

उस प्रभु की है कृपा बड़ी, याद कर ले घड़ी दो घड़ी।
घंटी बज जाए कब कूच की, मौत हरदम सिरहाने खड़ी।।

किन शुभ कर्मों का फल है ये, तुझे मानव का चोला मिला।
जो आया है जायेगा वो, बन्द होगा ना ये सिलसिला।
वेद की कहती हर एक कड़ी।
उस प्रभु की है कृपा बड़ी, याद ....

जो कुछ करना है ले आज कर, कुछ खबर प्यारे कल की नहीं।
मानव चोले को कर ले सफल, ढील दे इसमें पल की नहीं।
टूटे श्वांसों की जाये लड़ी।।
उस प्रभु की है कृपा बड़ी, याद ....

इस जवानी पै इतरा ना तू, बातों-बातों में ढल जायेगी।
उभरा सीना सुकड़ जायेगा, और कमर तेरी झुक जायेगी।
हाथों लेकर चलेगा छड़ी।
उस प्रभु की है कृपा बड़ी, याद ....

प्रभु कैसा विचित्र संसार है

प्रभु कैसा विचित्र संसार है, कहीं खुशियाँ कहीं हाहाकार है।
तेरी रचना का मेरे परमात्मा, नहीं पाया किसी ने पारावार है।।1।।
पृथ्वी, सूर्य, चाँद, सितारे, जल, वायु, पर्वत सारे।
रंग-बिरंगे फूल सुगन्धित, पशु पक्षी न्यारे-न्यारे।
सारी सृष्टि का तू आधार है, नमस्कार तुझे बार-बार है।।
तेरी रचना का मेरे परमात्मा, नहीं पाया ....(2)
खाली पेटी वालों की, मिनटों में पेटी भर देता।
भरी हुई पेटी को भी तू, फौरन खाली कर देता।
जो निर्धन था उसके पास कार है, कारवाला हुआ बेकार है।।
तेरी रचना का मेरे परमात्मा, नहीं पाया ....(3)
झोपड़ियों में रहने वाले, रोते और चिल्लाते हैं।
रोटी कपड़े से हैं वंचित, भीख माँगकर खाते हैं।
पूजा-पाठ भी उनका बेकार है, जो न दु:खियों की सुनता पुकार है।।
तेरी रचना का मेरे परमात्मा, नहीं पाया ....(4)
धन वालों इस धर पर, न भूल के भी अभिमान करो।
निर्धन दु:खियों बेचारों को, अन्न-वस्त्र प्रदान करो।
इस दौलत का क्या एतबार है, बिन मालिक हो जाए बेकार है।
तेरी रचना का मेरे परमात्मा, नहीं पाया ....(5)
छोटा सा परिवार हमारा, इसको सुखी बना देना।
'नंदलाल' कहे इस नगरी में, खुशी के फूल खिला देना।
सुनी जाती जहाँ पुकार, दाता तेरा ही एक दरबार है।।
तेरी रचना का मेरे परमात्मा, नहीं पाया ....(6)

जो पुत्र निज माता-पिता का

जो पुत्र निज माता-पिता का मान न करे
वह बाप जो सन्तान को गुणवान न करे
गाली-गलौज सभी से तकरार है जिसे
धिक्कार है उसे-धिक्कार है उसे।।1।।

पत्नी जो पति की आज्ञा को मानती नहीं
मतिमन्द पतिव्रत धर्म क्या जानती नहीं
नीम सम कड़वा लगे भरतार है जिसे
धिक्कार है उसे-धिक्कार है उसे।।2।।

जो छोड़ वैदिक धर्म को, बनता है ईसाई
उस हिन्दू को जो ऊँच-नीच रहा फैलाई
सुहाता नहीं वेद का प्रचार है जिसे
धिक्कार है उसे-धिक्कार है उसे।।3।।

धनवान होकर धर्म हित, जो दान न करे
अच्छे-बुरे कर्मों की जो, पहचान न करे
अपने धर्म और देश से, न प्यार है जिसे
धिक्कार है उसे-धिक्कार है उसे।।4।।

जो आर्य बनकर दुर्व्यसनों का, त्याग न करे
स्वास्थ्य और सत्संग से सही दिमाग न करे
नशा, धूम्रपान का भूत सवार है जिसे
धिक्कार है उसे-धिक्कार है उसे।।5।।

धन खूब कमा आनन्द मना

धन खूब कमा आनन्द मना, पर ऐसा कोई अपराध न कर।
अपना घर–बार बनाने को, औरों का घर बर्बाद न कर।।1।।

करता यदि व्यापार अगर, असली दे दे, न मिलावट कर।
ले उचित दाम जो बनते हों, विरथा ही किसी से विवाद न कर।।2।।

अधिकारी बन अधिकार जमा, रिश्वत का पैसा नहीं कमा।
निष्पक्ष न्याय की नीति बना, और जुल्मों की इमदाद न कर।।3।।

नेता बन पाप कमावे ना, भोली जनता बहकावे ना।
परमार्थ दिल को भावे ना, तो स्वास्थ्य को भी याद न कर।।4।।

निर्बल, असहाय, गरीबों को, ना सता दुःखी 'लालमन' लोगों को
'कह' आर्यभोग सब भोगों को, यश कमा व्यर्थ प्रमाद न कर।।5।।

अदीनाः स्याम शरदः शतम्
सौ वर्ष तक दीनता–रहित होके जीवें।

होंगे कर्म खोटे तो

होंगे कर्म खोटे तो, भजन गाने से क्या होगा?
किया परहेज ना कुछ भी, दवा खाने से क्या होगा।।
समय की ठोकर ही बदल देती है जीवन को।
जो ठोकर से भी न समझे, तो समझाने से क्या होगा।।
होंगे कर्म खोटे, तो भजन गाने ....
समय बीता हुआ हरगिज, कभी ना हाथ आयेगा।
लिया चुग खेत चिड़ियों ने, तो पछताने से क्या होगा।।
होंगे कर्म खोटे, तो भजन गाने ....
मुसीबत तो टले, मर्दानगी के ही थपेड़ों से।
मुकद्दर के भरोसे, बैठ जाने से क्या होगा।।
तू मुट्ठी बाँधकर आया था, खाली हाथ जाएगा।
भला मालिक करोड़ों का भी, कहलाने से क्या होगा।
होंगे कर्म खोटे, तो भजन गाने ....

इंतजार करने वालों को केवल उतना ही मिलता है, जितना कोशिश करने वाले छोड़ देते हैं।

देख तेरे संसार की हालत

देख तेरे संसार की हालत क्या हो गई भगवान्,
कितना बदल गया इन्सान। कितना .....
सूरज न बदला, चाँद न बदला, न बदला रे आसमान।
कितना बदल गया इन्सान। कितना .....
आया समय बड़ा बेढंगा, आज आदमी बना लफंगा।
कहीं पे झगड़ा, कहीं पे दंगा, नाच रहा नर होकर नंगा।
छल और कपट के हाथों अपना, बेच रहा ईमान।
कितना बदल गया इन्सान। कितना .....
राम के भक्त, रहीम के बन्दे, रटते आज फरेब के फंदे।
कितने ये मक्कार ये अंधे, देख लिये इनके भी धंधे।
इन्हीं की काली करतूतों से, हुआ ये मुल्क मशान।
कितना बदल गया इन्सान। कितना .....
जो हम आपस में न झगड़ते, बने हुये क्यों खेल बिगड़ते।
काहे लाखों घर ये उजड़ते, क्यों ये बच्चे माँ से बिछुड़ते।
फूट-फूट कर क्यों रोते, प्यारे ऋषि के प्राण।
कितना बदल गया इन्सान। कितना .....

हिन्दी अपने देश की भाषा

हिन्दी अपने देश की भाषा, हिन्दी से हम प्यार करेंगे।
हिन्दी भाषा में ही अपने जीवन का व्यवहार करेंगे।
हिन्दी अपने देश की भाषा ....
सारा भारत एक राष्ट्र है हिन्दी इसकी भाषा है।
हिन्दी भारत का गौरव है जन-गण-मन की आशा है।
सारी पृथ्वी के ऊपर हम, हिन्दी का विस्तार करेंगे।
हिन्दी अपने देश की भाषा ....
बिखरे मोती मिल जाते हैं, एक सूत्र मिल जाने से।
देश हमारा एक रहेगा, हिन्दी को अपनाने से।
आदरणीय महापुरुषों के सपनों को साकार करेंगे।
हिन्दी अपने देश की भाषा ....
आशा क्या विश्वास है इक दिन, हिन्दी को सम्मान मिलेगा।
माता को अपने बच्चों से, माता का ही स्थान मिलेगा।
हिन्द देश में रहने वाले, हिन्दी का सत्कार करेंगे।
हिन्दी अपने देश की भाषा ....
आओ सारे हिन्दी मिलकर, हिन्दी को अपनाएँ हम।
जो हम वाणी से कहते हैं, वह करके दिखलाएँ हम।
उठो 'पथिक' सौगन्ध उठाकर, हिन्दी का प्रचार करेंगे।
हिन्दी अपने देश की भाषा ....

आदमी में अगर आदमी

आदमी में अगर आदमी की तरह,
आदमियत न आए तो वो क्या करे ?
देने वाले ने दुनिया की हर चीज दी,
पाने वाला न पाए तो वो क्या करे ?

अक्ल दी शक्ल दी और दिया सब जहाँ,
देने वाले ने दी सबको जुबाँ,
हर तरीका दिया हर सलीका दिया,
समझ तू जो न पाए तो वो क्या करे ?

तुझको जीना मिला सबका उपकार कर,
यह है हीरा जन्म न तू बरबाद कर,
जर्रे-जर्रे में वो है समाया हुआ,
देख जो तू न पाए तो वो क्या करे ?

पाने वाले ने पाया अगर कुछ नहीं।
देने वाले ने रखी कसर कुछ नहीं।
उसने हाथों में दी तेरे शक्ति कर्म,
कर्म तू न कमाए तो वो क्या करे ?

तुझमें ओ३म्, मुझमें ओ३म्

तुझमें ओ३म् मुझमें ओ३म्, सबमें ओ३म् समाया।
सबसे कर लो प्यार जगत् में, कोई नहीं पराया।।
कोई नहीं पराया......................

जितने हैं संसार के प्राणी, सबमें है एक ज्योति।
एक बाग के फूल है सारे, एक माला के मोती।
न जाने किस कारीगर ने, एक मिट्टी का बनाया।
सबसे कर लो प्यार जगत में ....

एक बाप के बेटे हैं सारे, एक हमारी माता।
दाना-पानी देने वाला, एक हमारा दाता।
न जाने किस मूरख ने है, लड़ना हमें सिखाया।
सबसे कर लो प्यार जगत में ....

ऊँच-नीच की, जात-पाँत की, दीवारों को तोड़ों।
बदला जमाना तुम भी बदलो, प्रभु से नाता जोड़ो।
जागो और जगाओ सबको, समय है ऐसा आया।।
सबसे कर लो प्यार जगत में ....

जोड़ के हाथ झुका के मस्तक

जोड़ के हाथ, झुका के मस्तक, मांगे यह वरदान प्रभु।
द्वेष मिटाएं प्रेम बढ़ाये, नेक बने इन्सान प्रभु।।

भेद भाव सब मिटे हमारा, सब को दिल से प्यार करें।
जाए नजर जिस ओर हमारी, तेरा ही दीदार करें।
पल पल, छिन छिन करें हमेशा, तेरा ही गुणगान प्रभु।
जोड़ के हाथ, झुका के मस्तक...........

दु:ख में कभी दु:खी न होवें, सुख में सुख की चाह न हो।
जीवन के इस कठिन सफर में, कांटों की परवाह न हो।
रोक सकें न पांव हमारे, विघ्नों के तूफान प्रभु।।
जोड़ के हाथ, झुका के मस्तक...........

दीन दुखी और रोगी सबके, दुखड़े निशदिन दूर करें।
पोंछ के आंसू रोते नैना, हंसने पर मजबूर करें।।
तेरे चरणों की सेवा करते, निकले तन से प्राण प्रभु।।
जोड़ के हाथ, झुका के मस्तक...........

तेरे ज्ञान से इस दुनिया का, दूर अन्धेरा कर दें हम।
सत्य प्रेम के मीठे रस से, सबका जीवन भर दें हम।।
वीर धीर बन जाना सीखें, यह तेरी सन्तान प्रभु।।
जोड़ के हाथ, झुका के मस्तक...........

वेद और योगदर्शन के अनुसार जो मनुष्य ईश्वर को निराकार नहीं मानता, सर्वज्ञ नहीं मानता, सर्व व्यापक नहीं मानता, वेदों के अनुसार उसकी उपासना नहीं करता, उसकी आज्ञाओं का उल्लंघन करता है, ऐसे व्यक्ति को न तो ध्यान व उपासना में सफलता मिलती है और न ही ईश्वरीय आनन्द की प्राप्ति।

अतः ध्यान व उपासना में सफलता के लिए शुद्ध वैदिक ज्ञान का होना, ईश्वर की आज्ञाओं का पालन और निराकार ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना करना अनिवार्य है। निराकार ईश्वर की प्रार्थना, उपासना, ध्यान करना कठिन नहीं है। यह एक भ्रम है।

आइये! इस भ्रम से बाहर निकलें। वेदों की आज्ञा के अनुसार निराकार ईश्वर, सर्वशक्तिमान, सर्व व्यापक व सृष्टिकर्ता की प्रार्थना, उपासना आज से करना शुरू करें। निराकार ईश्वर की प्रार्थना, उपासना व ध्यान करने की सरल विधियों के लिये पढ़ें -मदन अनेजा द्वारा सरल हिन्दी में लिखित निम्न आध्यात्मिक पुस्तकें :-

1. **योग चिन्तन, जप एवं ध्यान** :- ध्यान क्या है? इसका उद्देश्य क्या है? ध्यान किसका करें? ध्यान से लाभ। वेदानुकूल पद्धति क्या है? ध्यान विधि, ईश्वर प्रकृति, जीवात्मा का शुद्ध ज्ञान, अष्टांग योग आदि विषयों का इस पुस्तक में वर्णन है।

2. **वैदिक सन्ध्या व यज्ञ विधि** :- सन्ध्योपासना एवं यज्ञ में प्राणायाम प्रयोग करने का महत्त्व, वैदिक यज्ञ-हवन विधि, गायत्री मन्त्र द्वारा हवन विधि, ओ३म्/गायत्री मंत्र जप विधि आदि विषयों का बोध कराती है।

3. **प्रार्थना उपासना विधि** :- प्रार्थना-उपासना का अर्थ, प्रार्थना की चार प्रभावित विधियाँ, मंत्र उच्चारण में प्राणायाम का प्रयोग आदि प्रसंग का वर्णन है।

4. **जीवन निर्माण व उपासना में ब्रह्मचर्य का महत्त्व** :- ब्रह्मचर्य, वीर्य रक्षा एवं वीर्य नाश सम्बन्धित ज्ञान अत्यन्त सरल हिन्दी भाषा में दिया गया है ताकि प्रत्येक व्यक्ति अपना और अपने बच्चों के स्वास्थ्य की रक्षा कर सके।

5-7 - वैदिक विचार संग्रह भाग 1, 2 और 3 :- वेदाध्ययन से व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक उन्नति होती है, अन्धकार का नाश होता है। वैदिक ज्ञान व वैदिक धर्म से परिचय, ग्रहस्थ जीवन से सम्बन्धित सभी विषयों पर 600 वैदिक विचार, ओ३म् जप, गायत्री जप, ध्यान व सरल वैदिक मन्त्रों द्वारा ईश्वर भक्ति/उपासना आदि सरल भाषा में प्रस्तुत हैं।

8. **वैदिक प्रार्थनाएँ एवं धार्मिक कर्म** :- सभी मांगलिक सुअवसरों पर प्रयोग होने वाले वैदिक मंत्र और वैदिक प्रार्थनाओं का वर्णन है। मंत्र उच्चारण में सहायता और उनका सरल भावार्थ हिन्दी और अंग्रेजी में दिया गया है। आप इस पुस्तक की सहायता से सभी धार्मिक कर्म-यज्ञ आदि स्वयं घर पर कर सकते हैं।

9. **आध्यात्मिक ज्ञान-सरल परिचय** : इसमें वेद, उपनिषद, दर्शन आदि ग्रन्थों के आधार पर ईश्वर, जीव, प्रकृति, सृष्टि, धर्म, योग, ध्यान, उपासना आदि विषयों की जानकारी सरल हिन्दी भाषा में, प्रश्न-उत्तर के रूप में, दी गई है जिससे साधकों की अधिकतर भ्रान्तियाँ समाप्त हो सकें।

उपरोक्त सभी पुस्तकें निम्नलिखित लिंक पर नि:शुल्क उपलब्ध हैं। पढ़कर लाभ लें। - https://drive.google.com/drive/folders/1HkVcnkoqoUY-2DWxn_dY3xTEiCibzxol

मदन अनेजा-मो0 - 9873029000 (Whatsapp only please)

लेखक परिचय

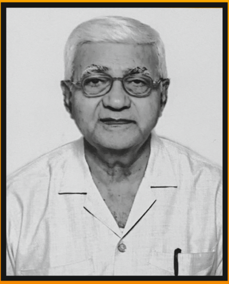

श्री मदन लाल अनेजा का जन्म 10 मार्च 1952 को जिला रामपुर, उत्तर प्रदेश में हुआ। सुप्रीम कोर्ट ऑफ इण्डिया में 22 वर्ष सेवा करने के बाद संयुक्त रजिस्ट्रार के पद से वी0आर0एस0 के अंतर्गत सेवानिवृत्त हुये। 1999 में पुनः राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग में संयुक्त रजिस्ट्रार (विधि) के पद पर 12 वर्ष 6 मास एवं सलाहकार (विधि) के पद पर 2 वर्ष 6 मास तक आयोग की सेवा की।

प्रभु के आशीर्वाद व प्रेरणा से योग व ध्यान में आपकी विशेष रुचि है।

आपके द्वारा लिखित सभी पुस्तकें (1) योग चिन्तन-जप एवं ध्यान, (2) वैदिक सन्ध्या व यज्ञ विधि, (3) जीवन-निर्माण एवं उपासना में ब्रह्मचर्य का महत्त्व,(4) प्रार्थना उपासना विधि एवं (5-7) वैदिक विचार संग्रह भाग-1, भाग-2, भाग-3, (8)वैदिक प्रार्थनाएँ एवं धार्मिक कर्म और (9) आध्यात्मिक ज्ञान (सरल परिचय) पाठकों के बीच काफी लोकप्रिय हो रही हैं। आपकी पुस्तकों में समाज में फैली अनेक भ्रान्तियों और ईश्वर स्तुति, प्रार्थना, उपासना व ध्यान विधि पर सरल भाषा में पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। उपरोक्त पुस्तकों को www.manavsanskar.com से निःशुल्क डाउनलोड करके दूर-दूर तक भारत व विदेशों में साधक इनका स्वाध्याय कर रहे हैं और अपने जीवन को वेदानुसार चलाने में अग्रसर हो रहे हैं।

आशा है सभी साधकों को वैदिक संस्कृति, वेद ज्ञान और ईश्वर स्तुति-प्रार्थना, उपासना व ध्यान व प्राण-साधना की विधियों का लाभ इन पुस्तकों में दिये गये वैदिक विचारों के माध्यम से और अधिक प्राप्त हो सकेगा, ताकि आप जीवन की हर कठिन राह में सफलता के अधिकारी बन सकें।

सी-79, तक्षशिला अपार्टमेन्ट,
प्लाट नं0-57, आई.पी. एक्सटेंशन,
दिल्ली-110092

विक्रान्त अनेजा (मंत्री)
मानव संस्कार फाउन्डेशन